ओम शान्ति

दिव्य गुण माला

भाग - 4

अव्यक्त वाणी संकलन
1969 से 2015

शुभकामनाएँ एवं आशीर्वचन

भाग : 4

इस भाग में 20 गुणों की सूची हैं, जो हमें महीनतासे महानता प्राप्त करने की विधी बताते है। निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी स्थिति के अभ्यास से हम नष्टोमोहा कैसे बन सकते है, यह बताया गया है। सत्यता की शक्ति से हम कैसे निर्भय बन सकते है और निमित्तभाव कैसे नम्रता और मधुरता ला सकता है, यह भी जाना जा सकता है।

जो बच्चे महीनता से पुरूषार्थ करते है, वह महानता जो प्राप्त होते है। निमित्त बन सेवा करनेवालों में नम्रता और निर्माणता का गुण स्वतः आ जाता है। निराकारी स्थिति का अभ्यास हमें ना केवल निर्विकारी और निरहंकारी बनाता है बल्कि हम निद्राजीत भी बन जाते हैं। इस अभ्यास से हम होलीएस्ट भी बनते है जिससे हमारा चेहरा सदैव हर्षितमुख रहता है। जितना हम सत्यता से चलते है उतनी निर्भयता की शक्ति, हिम्मत हमारे अंदर आती है और नष्टोमोहा बनने में मदद मिलती है। अंततः हमारा स्वभाव ही मधुर बन जाता है।

जितना-जितना इन 20 गुणों को हम महीनता से अभ्यास करते है, उतना हम सम्पूर्णता के समीप पहुँचते है और सर्वगुण सम्पन्न अवस्था को प्राप्त कर सकते हैं।

धन्यवाद।

परम आदरणीय नलिनी दीदी जी,
संचालिका, घाटकोपर सबझोन

दिव्य गुण माला -4

सूची

क्र.	गुण	पृष्ठ क्र.
1	लवफुल लॉ-फुल / लॉ-मेकर	1-4
2	लकी और लवली	5-12
3	मधुरता	13-18
4	महीनता / महानता	19-20
5	नम्रता, निर्माणता	21-27
6	नष्टोमोहा, मोहजीत	28-38
7	निद्राजीत	39-51
8	निमित्त	52-120
9	निराकारी निर्विकारी निरंहकारी	121-143
10	निश्चय बुद्धि	144-149
11	निश्चिंतता	150-153
12	न्यारा और प्यारा	154-157

1. लवफुल, लॉ-फुल, लॉ-मेकर

3.5.72.. . अपने को लवफुल और लाफुल दोनों ही समझते हो? जितना ही लवफुल उतना ही लाफुल हो कि जब लवफुल बनते हो तो लॉ-फुल नहीं बन सकते हो वा जब लाफुल बनते हो तो लवफुल नहीं बन सकते हो? क्या दोनों ही साथ-साथ एक ही समय कर्म में वा स्वरूप में दिखाई दे सकते हैं? क्योंकि जब तक ला और लव दोनों ही समान नहीं हुए हैं तब तक कार्य में सदा सफलतामूर्त बन नहीं सकते। सफलता-मूर्त वा सम्पूर्णमूर्त बनने के लिए इन दोनों की आवश्यकता है। लॉफुल अपने आप के लिए भी बनना होता है। न सिर्फ दूसरों के लिए लाफुल बनना पड़ता है लेकिन जो स्वयं अपने प्रति लाफुल बनता है वही दूसरों के प्रति भी लाफुल बन सकता है। अगर स्वयं अपने प्रति कोई भी ला को ब्रेक करता है तो वह दूसरों के ऊपर ला चला नहीं सकता। कितना भी दूसरों के प्रति लॉफुल बनने का प्रयत्न करेगा लेकिन बन नहीं सकेगा। इसलिए अपने आप से पूछो कि मैं अपने प्रति वा अन्य आत्माओं के प्रति लाफुल बना हूं? प्रात: से लेकर रात तक मंसा स्वरूप में अथवा कर्म में सम्पर्क वा एक दो को सहयोग देने में, वा सेवा में कहां भी किस प्रकार का ला ब्रेक तो नहीं किया? जो ला-ब्रेकर होगा वह नई दुनिया का मेकर नहीं बन सकेगा। वा पीस-मेकर, नु-वर्ल्ड-मेकर नहीं बन सकेगा। तो अपने आपको देखो कि मैं नु-वर्ल्ड-मेकर वा पीस-मेकर, ला-मेकर हूं वा ला-ब्रेकर हूं? जो स्वयं ला-मेकर हैं वही अगर ला को ब्रेक करता है, तो क्या ऐसे को ला-मेकर कहा जा सकता है? ईश्वरीय लाज वा ईश्वरीय नियम क्या हैं, वह सभी स्पष्ट जान गये हो वा अभी जानना है? जानने का अर्थ क्या होता है? जानना अर्थात् चलना।

2.8.72.. .. सिद्धि ना प्राप्त होने का मुख्य कारण यह है जो एक ही समय तीनों रूप से सर्विस नहीं करते। तीनों रूपों और तीनों रीति से एक समय करना है। नॉलेजफुल, पावरफुल और लवफुल। लव और लॉ – दोनों साथ-साथ आ जाते हैं। इन तीनों रूप से तो सर्विस करनी ही है लेकिन तीनों रीति से भी करनी है। अर्थात् मन्सा, वाचा, कर्मणा – तीनों रीति से और एक ही समय तीनों रूप से करनी है।

2.8.72.. .. एक ही समय तीनों अगर इक्ट्ठी हों तो सिद्धि ज़रूर मिलेगी। इस रीति से सर्विस करने का अभ्यास और अटेन्शन होना चाहिए। सम्बन्ध में नहीं आते, डीप सम्पर्क में नहीं, ऊपर-ऊपर के सम्पर्क में आते हैं। वह ऊपर का सम्पर्क अल्पकाल का रहता है। भले लव में लाते भी हो लेकिन लवफुल के साथ पावरफुल हो, उन आत्माओं में भी पावर भरे जिससे वह समस्याओं, वायुमण्डल, वायब्रेशन का सामना कर सदाकाल सम्बन्ध में रहें, वह नहीं होता। या तो नॉलेज पर अट्रैक्टिव होते हैं वा लव पर होते हैं। जादा लव पर होते हैं, सेकण्ड नम्बर नॉलेज। लेकिन पावरफुल ऐसा हो जो कोई भी बात सामने आवे तो हिले नहीं, यह कमी अजुन है। जो सर्विसएबल निमित्त बनते हैं उन्हों में भी नॉलेज जादा है, लव भी है लेकिन पावर कम है। पावरफुल स्टेज की निशानी क्या होगी? एक सेकेण्ड में कोई भी वायुमण्डल वा वातावरण को, माया के कोई भी समस्या को खत्म कर देंगे। कब हार नहीं खावेंगे। जो भी आत्मायें समस्या का रूप बन कर आती हैं वह उनके ऊपर बलिहार जावेंगे, जिसको दूसरे शब्दों में प्रकृति दासी कहें। जब 5 तत्व दासी बन सकते हैं तो मनुष्य आत्मायें बलिहार नहीं जावेंगी? तो

पावरफुल स्टेज का प्रैक्टिकल रूप यह है। इसलिये कहा कि एक ही समय तीनों रूपों से सर्विस करने की जब रूपरेखा बन जायेगी तब हरेक कर्त्तव्य में सिद्धि दिखाई देगी।

2.8.73.. .. विधि को चेक करने से सिद्धि ऑटोमेटिकली प्राप्त हो जायेगी। इसमें भी सिद्धि न हो सकने का मुख्य कारण यही है कि जो एक ही समय तीनों रूप से सर्विस नहीं करते हो। तीनों रूपों और तीनों रीति से एक ही समय करना है। नॉलेज़फुल (Knowledgeful), पॉवरफुल (Powerful) और लवफुल (Loveful), इसमें लव (Love) और लॉ (Law) ये दोनों साथ-साथ आ जाते हैं। इन तीनों रूप से तो सर्विस करनी ही है लेकिन इन तीनों रीति से भी करनी है। अर्थात् मनसा, वाचा और कर्मणा इन तीनों ही रीति से और एक ही समय इन तीनों रूपों से करनी है। जब वाणी द्वारा सर्विस करते हो, तो मनसा भी पॉवरफुल हो। पॉवरफुल स्टेज से तो उसकी मनसा को भी चेन्ज कर देंगे और वाणी द्वारा उनको नॉलेजफुल बना देंगे और फिर कर्मणा द्वारा अर्थात् जो भी उनके सम्पर्क में आते हैं तो उससे सम्पर्क ऐसा लवफुल हो कि जो ऑटोमेटिकली (स्वयमेव) वह स्वयं महसूस करे कि यह कोई अपने ईश्वरीय परिवार (गॉडली फेमिली) में ही पहुंच गया है। और अपनी चलन ही ऐसी हो कि जिससे वह स्वयं महसूस करे कि वास्तव में यह ही मेरा असली परिवार है। अगर इन तीनों रीति से उनकी मनसा को भी कन्ट्रोल कर लो और वाणी से नॉलेज दे लाइट, माइट का वरदान दो और कर्मणा अर्थात् सम्पर्क द्वारा अपने स्थूल एक्टिविटि (Activity) द्वारा ईश्वरीय परिवार का अनुभव कराओ तो क्या इस विधि-पूर्वक सर्विस करने से सिद्धि नहीं होगी?

29.1.75.. .. किस समय कैसा वातावरण व वायुमण्डल है और क्या होना चाहिए – इसको परखने के कारण समय-प्रमाण ही स्वयं को भी और अन्य आत्माओं को भी तीव्र-गति में ला सकेंगे और जैसा समय, वैसा स्वरूप धारण करने का उमंग और उत्साह भी भर सकेंगे तथा समय-प्रमाण नॉलेजफुल और लॉफुल (Lawful) या लवफुल (Loveful) भी बन तथा बना सकेंगे और इस प्रकार सदा सफल बन सकेंगे, क्योंकि कभी लॉफुल बनना है और कभी लवफुल बनना है, इसलिये यह परख होने के कारण सदा सहज ही सफल रहेगे।

29.8.75.. .. आजकल सर्व परेशानियों से परेशान निर्बल आत्मायें, मंजिल को ढूँढ़ने वाली आत्मायें और सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिये तड़फती हुई आत्मायें पुरुषार्थ की विधि नहीं चाहतीं, बल्कि विधि के बजाय सहज सिद्धि चाहती हैं। सिद्धि के बाद विधि के महत्व को जान सकेंगी। ऐसी आत्माओं को आप विश्व-कल्याणकारी आत्मा का कौन-सा स्वरूप चाहिए? वर्तमान समय चाहिए प्रेम स्वरूप। लॉफुल (Lawful) नहीं, लेकिन लवफुल (Loveful) पहले लव दो फिर लॉ दो। वे लव के बाद लॉ को भी स्नेह का साधन अनुभव करेंगे क्योंकि बाहर के रूप की चमक वाली दुनिया में व विज्ञान के युग में विज्ञान के साधन बहुत ही हैं, लेकिन जितना भिन्न-भिन्न प्रकार के अल्पकाल की प्राप्ति के साधन निकलते जाते हैं उतना ही सच्चा स्नेह व रूहानी प्यार, स्वार्थ-रहित प्यार

समाप्त होता जा रहा है। आत्माओं से स्नेह समाप्त हो, साधनों से प्यार बढ़ता जा रहा है। इसलिए कई प्रकार की प्राप्ति के होते हुए भी स्नेह की अप्राप्ति के कारण सन्तुष्ट नहीं। और भी दिन-प्रतिदिन यह असन्तुष्टता बढ़ेगी। महसूस करेंगे कि यह साधन मंजिल से दूर करने वाले, भटकाने वाले हैं! ये आत्मा को तड़फाने वाले हैं। अर्थात् जैसे कल्प पहले का गायन है कि अन्धे की औलाद अन्धे, मृग तृष्णा के समान सर्व प्राप्ति से वंचित ही रहे। ऐसा अनुभव समय-अनुसार चारों ओर करेंगे।

विज्ञान के युग में बाहरी चमक-दमक वाले साधन तो बहुत हैं, परन्तु सच्चा रूहानी स्नेह व स्वार्थ-रहित प्यार समाप्त होता जा रहा है। अतएव अब समय लॉफुल का नहीं, बल्कि लवफुल (प्रेम स्वरूप) बनने का है।

15.10.75.. .. सोलह कला अर्थात् सर्व विशेषताओं में सम्पन्न अर्थात् जैसा समय वैसा स्वरूप बना सकें, और जैसा संकल्प वैसा स्वरूप में ला सकें।सर्व बातों में बैलेन्स रख सकें अर्थात् अभी-अभी लवफुल और अभी-अभी लॉ-फुल बन सकें।

25.6.77.. .. जैसे देवियों के चित्र में दो विशेषताएं दिखाते हैं। आंखों में मात्र भावना और हाथों से शस्त्रधारी अर्थात् असुर का संघार करने वाली। मात्र भावना अर्थात् रहम की भावना और संघार की भावना भी। संघार करना अर्थात् उन्होंके आसुरी संस्कारों के खत्म करने का प्लान भी हो और रहम भी हो। लॉफुल (Lawful) और लवफुल (Loveful) का बैलेन्स हो। दोनों साथ-साथ हों।

3.2.79.. .. विश्व कल्याणकारी अर्थात् रहमदिल आत्मायें ही कैसी भी अवगुण वाली आत्मा हो, कड़े संस्कार वाली आत्मा हो, कम बुद्धि वाली आत्मा हो, पत्थर बुद्धि हो, सदा ग्लानि करने वाली आत्मा हो, सर्व आत्माओं के प्रति कल्याणकारी अर्थात् लाफुल और लवफुल होंगे। लक्ष्य सभी का ऐसा ही है लेकिन करते क्या हैं? चलते-चलते रहम के बदले दो बातों में बदल जाते हैं। कोई रहम करने के बदले आत्माओं में वहम भाव पैदा कर देते हैं – यह कभी बदल नहीं सकते, यह हैं ही ऐसे, सब तो राजा बनने वाले नहीं हैं, इस प्रकार के अनेक वहम भाव रहम को खत्म कर देते हैं। दूसरी बात – रहम भाव के बदले अहम् भाव ''मैं ही सब कुछ हूँ – यह कुछ नहीं है। यह कुछ नहीं कर सकते मैं सब कुछ कर सकता हूँ।'' इस प्रकार के अहम् भाव अर्थात मैं-पन का अभिमान रहमदिल बनने नहीं देता। यह दोनों बातें बेहद के विश्व कल्याणकारी बना नहीं सकती।

17.12.79.. .. अमृतबेले की सहज प्राप्ति की बेला को जानते हुए उसका लाभ उठाओ। खुले भण्डारों से प्रारब्ध की झोली भर लो वरदाता और भाग्य विधाता से अमृतबेले के समय जो तकदीर की रेखा खिंचवाना चाहो, वह खींचने के लिए तैयार हैं। तकदीर की रेख वरदाता से सहज व श्रेष्ठ खिंचवा लो। उस समय यह भोले भगवान के रूप में हैं लवफुल है तो लव के आधार से श्रेष्ठ लकीर खिंचवा लो। जो चाहे, जितने जन्मों के लिए चाहे, चाहे अष्ट रत्नों में चाहे 108 की माला में, बाप-दादा की खुली आफर हैं – और क्या चाहिए!

17.3.91.. .. मन्सा द्वारा पॉवरफुल, वाणी द्वारा नॉलेजफुल, सम्बन्ध-सम्पर्क अर्थात् कर्म द्वारा लवफुल। यह तीनों अनुभूतियाँ एक ही समय पर इकट्ठी हों। इसको कहा जाता है – तीव्र गति की सेवा।

31.3.90.. .. ब्राह्मण-आत्माओं को दूर की नजर बड़ी तेज है। और नजदीक की नजर थोड़ी कमजोर है इसलिए दूसरों की कमी जल्दी दिखाई देती है और अपनी कर्मी देरी से दिखाई देती है।

तो रहम की भावना लवफुल भी हो और मर्सीफुल भी हो। इससे दिल से वैराग आयेगा।

2. लकी और लवली

17.05.69.. .. .एक होता है मंथन करना। दूसरा होता है मग्न रहना। वह होती है बिल्कुल लवलीन अवस्था।
05.04.70... ...बापदादा ने कौन से नाम रखे हैं? लक्की सितारे हो। अपने को लक्की समझते हो? लक्की तो सभी हैं जब से बाप के बने हो। लेकिन लक्की में भी सदैव सफ़लता के सितारे। कोई समीप के सितारे, कोई उम्मीद के सितारे। वह हरेक का अपना है। अब सोचना है कि मैं कौन हूँ? अपने को सफ़लता का सितारा समझना है। प्रत्यक्षफल की कामना नहीं रखने वाले सफ़लता पाते हैं।
25.03.71... तो सदैव अपने सम्पूर्ण स्वरूप का आह्वान करने से आवागमन से छूट जायेंगे अर्थात् इन व्यर्थ बातों से किनारा करने से सदैव चमकता हुआ लक्की सितारा बन जायेंगे।
27.04.72... लवली भी हो और लक्की भी हो, यह दोनों ही अपने में समझते हो तो सदा निर्विघ्न, लग्न में मग्न अवस्था का अनुभव करेंगे। अगर सिर्फ लक्की हैं लेकिन लवली नहीं हैं तो भी सदा लगन में मग्न रहेंगे लेकिन निर्विघ्न अवस्था का अनुभव नहीं करेंगे। और सिर्फ लवली हैं, लक्की नहीं तो भी जो अवस्था सुनाई उसका अनुभव नहीं कर पायेंगे। इसलिए दोनों की आवश्यकता है। लवली और लक्की – दोनों की प्राप्ति के लिए मुख्य तीन बातें आवश्यक हैं। अगर वह तीनों बातें अपने में अनुभव करेंगे तो लक्की और लवली ज़रूर होंगे। वह तीन बातें कौन-सी हैं जिससे सहज ही यह दोनों स्थिति अनुभव कर सकते हो? लक्की और लवली बनने के लिए तीन बातें आवश्यक हैं वह कौन-सी? पहले सोचो-लक कैसे बन सकता है? अपने को ही देख लो कि हम लक्की, लवली हैं? अपने लक को क्यों नहीं जगा सकते हो? उसका मूल कारण–नालेजफुल नहीं हो। नालेजफुल में सभी प्रकार की नालेज आ जाती है। जितना जो नालेजफुल होगा उतना लकी जरूर होगा। क्योंकि नालेज की लाइट और माइट से आदि-मध्य-अन्त को जानकर जो भी पुरुषार्थ करेगा उसमें उनको सफलता अवश्य प्राप्त होगी। सफलता प्राप्त होना यह एक लक की निशानी है। यह तो वह नालेजफुल होगा अर्थात् फुल नालेज होगी। फुल में अगर कोई भी कमी है तो लकीएस्ट में भी नम्बरवार है। नालेजफुल है तो लकीएस्ट भी नम्बरवन होगा। कर्म की भी नालेज होती है और अपनी रचयिता और रचना की भी नालेज होती है। चाहे परिवार, चाहे ज्ञानी आत्माओं के सम्पर्क में कैसे आना चाहिए उसकी भी नालेज होती है। नालेज सिर्फ रचाता और रचना की नहीं लेकिन नालेजफुल अर्थात् हर संकल्प और हर शब्द हर कर्म में ज्ञान स्वरूप होगा। उनको ही नालेजफुल कहते हैं। दूसरी बात-जितना नालेजफुल होगा उतना ही केयरफुल भी होगा। जितना केयरफुल होगा उतना ही उसकी निशानी चियरफुल होगा। अगर कोई केयरफुल नहीं तो भी लवली नहीं लगेगा। अगर कोई चियरफुल नहीं तो भी लवली नहीं लगेगा। जो केयरफुल नहीं रहता है उनसे समय-प्रति-समय अपनी वा दूसरों के सम्पर्क में आने से कोई न कोई छोटी-बड़ी भूल होने कारण न स्वयं लवली रहेगा, न दूसरों का लवली बन सकेगा। इसलिए जो केयरफुल होगा वह चियरफुल ज़रूर होगा। ऐसा नहीं समझना कि केयरफुल जो होगा वह अपने पुरुषार्थ में अधिक मग्न होने कारण चियरफुल नहीं रह सकता, ऐसी बात नहीं है। केयरफुल की निशानी चियरफुल है। तो यह तीनों ही क्वालिफिकेशन वा बातें अगर हैं तो लक्की और लवली दोनों बन सकते हैं। एक दो के सहयोग से भी अपनी लक्क को बना सकते हो।

बुद्धि भी पांव है जिससे यात्रा करते हो। तो बुद्धि रूपी पांव ज़रा भी मर्यादाओं की लकीर से बाहर निकालते हो, तब यह सभी बातें आती हैं। और क्या बना देती हैं? बाप के लक्की और लवली को फकीर बना देती हैं। जितना जो नालेजफुल होगा उतना लकी जरूर होगा।

अगर कोई केयरफुल नहीं तो भी लवली नहीं लगेगा। अगर कोई चियरफुल नहीं तो भी लवली नहीं लगेगा।

18.07.72... अपने लक्क को भूल जाते हो तो लॉक लग जाता है। अगर लक्क को देखो तो कब भी लॉक नहीं लग सकता है। तो लॉक की चाबी कौनसी है? अपने आपको लक्की समझो। लवली भी हो और लक्की भी हो। अगर लक्क को भूलकर के सिर्फ लवली बनते हो, तो भी अधूरे रह जाते हो। लवली भी हूँ और लक्की भी हूँ – यह दोनों ही स्मृति में रहने से कब माया का लॉक नहीं लग सकता।

माया अब तक भी इस स्मृति में ताला लगाती है क्या? जब ताला लग जाता है तो क्या बना देती है? बेताला। सभी के ताले खोलने वाले भी बेताले बन जाते हैं। यह स्मृति को ताला क्यों लगता है? अपने लक्क को भूल जाते हो तो लॉक लग जाता है। अगर लक्क को देखो तो कब भी लॉक नहीं लग सकता है। तो लॉक की चाबी कौनसी है? अपने आपको लक्की समझो। लवली भी हो और लक्की भी हो। अगर लक्क को भूलकर के सिर्फ लवली बनते हो, तो भी अधूरे रह जाते हो। लवली भी हूँ और लक्की भी हूँ – यह दोनों ही स्मृति में रहने से कब माया का लॉक नहीं लग सकता। इसलिये अपने कल्प पहले के यादगारों को फिर से याद में रह कर रिपीट करें।

22.11.72... मधुबन निवासियों से ही मधुबन की शोभा है। फिर भी बहुत लक्की हो। अपने को जानो न जानो, फिर भी लक्की हो। कई बातों से बचे हुए हो।

18.01.73... एक तो लव (Love) और दूसरा लवलीन। कर्म में, वाणी में, सम्पर्क में व सम्बन्ध में लव और स्मृति में व स्थिति में लवलीन रहना है। जो जितना लवली (Lovely) होगा, वह उतना ही लवलीन रह सकता है। इस लवलीन स्थिति को मनुष्यात्माओं ने लीन की अवस्था कह दिया है। बाप में लव खत्म करके सिर्फ लीन शब्द को पकड़ लिया है। तो इस मास के अन्दर इन दोनों ही मुख्य विशेषताओं को धारण कर बापदादा समान बनना है। बापदादा की मुख्य विशेषता, जिसने कि आप सबको विशेष बनाया, सब-कुछ भुलाया और देही-अभिमानी बनाया, वह यही थी – लव और लवलीन। लव ने आप सबको भी एक सेकेण्ड में 5000 वर्ष की विस्मृत हुई बातों को स्मृति में लाया है, सर्व सम्बन्ध में लाया है, सर्वस्व त्यागी बनाया है। जबकि बाप ने एक ही विशेषता से एक ही सेकेण्ड में अपना बना लिया तो आप सब भी इस विशेषता को धारण कर बाप-समान बने हो? जबकि साकार बाप में इस विशेषता में परसेन्टेज (Percentage) नहीं देखी, परफेक्ट (Per-fect) ही देखा तो आप विशेष आत्माओं को और बाप समान बनी हुई आत्माओं को भी परफेक्ट होना है। इस मुख्य विशेषता में परसेन्टेज नहीं होनी चाहिए। परफेक्ट होना है, क्योंकि इस द्वारा ही सर्व आत्माओं के भाग्य व लक्क को जगा सकते हो। लक्क (Luck) के लॉक (Lock) की चाबी (Key) कौन-सी है?–'लव'। लव ही लॉक की 'की' (Key) है। यह 'मास्टर-की' (Master-key) है। कैसे भी दुर्भाग्यशाली को भाग्यशाली बनाती है। क्या इसके स्वयं अनुभवी हो? जितना-जितना बापदादा से लव जुटता है, उतना ही बुद्धि का ताला खुलता जाता है। लव कम तो लक्क भी कम। तो सर्व आत्माओं के लक्क के लॉक को खोलने वाली चाबी आपके पास है?

कहीं इस लक्क की चाबी को खो तो नहीं देते हो? या माया भिन्न-भिन्न रूपों व रंगों में इस चाबी को चुरा तो नहीं लेती है? माया की भी नजर इसी चाबी पर है। इसलिये इस चाबी को सदा कायम रखना है। लव अनेक वस्तुओं में होता है। यदि कोई भी वस्तु में लव है तो बाप से लव परसेन्टेज में हो जाता है। अपनी देह में, अपनी कोई भी वस्तु में यदि अपनापन है तो समझो कि लव में परसेन्टेज है। अपनेपन को मिटाना ही बाप की समानता को लाना है। जहाँ अपना-पन है, वहाँ बापदादा सदा साथ नहीं हैं।

जितना-जितना बापदादा से लव जुटता है, उतना ही बुद्धि का ताला खुलता जाता है। लव कम तो लक्क भी कम। तो सर्व आत्माओं के लक्क के लॉक को खोलने वाली चाबी आपके पास है? कहीं इस लक्क की चाबी को खो तो नहीं देते हो? या माया भिन्न-भिन्न रूपों व रंगों में इस चाबी को चुरा तो नहीं लेती है? माया की भी नजर इसी चाबी पर है। इसलिये इस चाबी को सदा कायम रखना है। लव अनेक वस्तुओं में होता है। यदि कोई भी वस्तु में लव है तो बाप से लव परसेन्टेज में हो जाता है। अपनी देह में, अपनी कोई भी वस्तु में यदि अपनापन है तो समझो कि लव में परसेन्टेज है। अपनेपन को मिटाना ही बाप की समानता को लाना है। जहाँ अपना-पन है, वहाँ बापदादा सदा साथ नहीं हैं।

21.04.73... मधुबन निवासी मोस्ट लक्की स्टार्स हैं। जितना लक्की हो उतना सर्व के लवली भी बनो। सिर्फ लक्क में खुश न होना। लक्की की परख लवली से होती है। जो लक्की होगा वह सर्व का लवली ज़रूर होगा।

01.06.73... जैसे स्टार्स दिखाते हैं उनमें भी नम्बरवार होते हैं। जिन के पास स्टॉक जमा है वही लक्की स्टार्स (Lucky stars) के रूप में चमकते हुए विश्व कि आत्माओं के बीच नजर आयेंगे।

जैसे स्टार्स में भी नम्बरवार होते हैं, इसी प्रकार ज्ञान सितारों में भी नम्बरवार होते हैं। जिन के पास शक्तियों का स्टॉक जमा हो वही लक्की स्टार्स के रूप में चमकते हुए विश्व की आत्माओं के बीच नजर आयेंगे।

28.06.73... जिनके पास शक्तियों का स्टॉक जमा है वही लक्की स्टार्स के रूप में विश्व की आत्माओं के बीच चमकते हुये नजर आयेंगे।

14.07.74... लक्की सितारे विशेष रूप से बाप के स्नेही, बाप के चरित्र, बाप के सर्व-सम्बन्धों के रस में ज्यादा मग्न रहते हैं। उनके संकल्प भी ज्यादा शक्तिशाली नहीं, लेकिन स्नेही होंगे।

लक्की सितारों के बोल होंगे, हाँ मैं समझता हूँ यह अवश्य होगा, बाप मददगार बनेगा।

उन्हें बाप के सहयोग के कारण मेहनत कम करनी पड़ती है और प्राप्ति अधिक होती है। वह सदैव ऐसा अनुभव करते हैं कि मेरा लक्क (Luck) अच्छा है; मुझे बाप की एकस्ट्रा (extra) मदद है और मैं तो पार हो ही जाऊंगी। मेरे जैसा स्नेह किसी का भी नहीं है।

08.10.75... तो लक्क (Luck) अर्थात् भाग्य की लॉटरी को गँवा देंगे।

12.10.75... बाप के सर्व-सम्बन्धों का, हर समय प्रमाण सुख नहीं ले पाते हो। जो गोपियों और पोण्डवों के चरित्र गाये हुए हैं। बाप से सर्व- सम्बन्धों का सुख लेना और मगन रहना अथवा सर्व-सम्बन्धों के लव में लवलीन रहना – वह अनुभव अभी किया नहीं है।

21.10.75... बाप के समान बाप के लव में लवलीन होंगे, तब ही बेहद का वैराग्य आयेगा। एक सेकेण्ड भी और एक संकल्प भी इस लवलीन अवस्था से नीचे नहीं आयेंगे। ऐसे लवली बाप के लवली बच्चों का संगठन हो।

उनको कहेगे लवली संगठन। एक तरफ अति लव दूसरी तरफ बेहद का वैराग्य दोनों का संगठन साथ-साथ समान दिखाई देगा, ऐसा संगठन बनाओ तो वह तारीख स्पष्ट दिखाई देगी। यह संगठन ही तारीख को प्रसिद्ध करेगा।

28.10.75 जो सदा बाप में लवलीन अर्थात् याद में समाये हुए हैं, ऐसी आत्माओं के नैनों में और मुख में अर्थात् मुख के हर बोल में बाप समाया हुआ होने के कारण शक्ति-स्वरूप के बजाय सर्वशक्तिवान् नजर आयेगा।

06.12.75... को सारी दुनिया के बीच चमकता हुआ विशेष लक्की (Lucky) सितारा अनुभव करते हो? ऐसे लक्की जिन्हों का स्वयं बाप गायन करते हैं! इससे श्रेष्ठ भाग्य और किसी का हो सकता है? सदा ऐसी खुशी रहती है, जो अपनी खुशी को देखते हुए देखने वालों के गम के बादल व दु:ख की घटायें समाप्त हो जायें, दु:ख को भूल सुख के झूले में झूलने लग जायें!

इस समय नॉलेज के आधार पर तुम समझते हो कि बाप की याद में समा जाना व लवलीन हो जाना, अपने आप को भूल जाना इसी को ही वह एक हो जाना कहते हैं। जब लव में लीन हो जाते हो अर्थात् लगन में मग्न हो जाते हो तो बाप के समान बन जाते हो, इसी को उन्हों को समा जाना कह दिया है। तो ऐसा अनुभव करते हो? आत्मा बाप के लव में अपने को बिल्कुल खोई हुई अनुभव करे, क्या ऐसा अनुभव होता है? जैसे कोई सागर में समा जाय तो उस समय का उसका अनुभव क्या होगा? सिवाय सागर के और कुछ नजर नहीं आयेगा। तो बाप अर्थात् सर्वगुणों के सागर में समा जाना। इसको कहा जाता है लवलीन हो जाना अर्थात् बाप के स्नेह में समा जाना। बाप में नहीं समाना है, लेकिन बाप की याद में समा जाना है। क्या ऐसा अनुभव होता है ना?

28.01.76... लक्की सितारों में भी नम्बर हैं। लक्की सितारों की विशेषता यह है कि वे जो भी संकल्प व कर्म करेंगे, उसमें निमित्त-मात्र मेहनत होगी, लेकिन फल की प्राप्ति मेहनत के हिसाब से ज्यादा होगी। लक्की सितारे अपने लक्क को जानते हुए हर समय बाप-दादा का लाख-लाख शुक्रिया मानेंगे कि मेरे लक्क (luck) का लॉक (lock) खोल दिया। लक्की सितारे की वाणी में महान् बनाने वाले बाप की महिमा दिल से स्वत: ही निकलती रहेगी और उनके रूप में खुशी की झलक विशेष दिखाई देगी। उनका विशेष प्लैन – सदा बाप का नाम बाला कर, रिटर्न करने का अर्थात् बाप का हर कार्य अपने जीवन द्वारा प्रत्यक्ष करने का होगा। सदा बाप के स्नेही रहने वाले और बाप के स्नेही बनाने वाले होंगे। सदैव यही स्लोगन (slogan) स्मृति और वाणी में होगा कि वाह बाबा और वाह तकदीर! ऐसे अपने को लक्की सितारे समझते हो?

23.01.77... मातायें और कन्यायें तो विशेष लक्की हैं। क्योंकि ये सबसे गरीब हैं। बाप को भी गरीब-निवाज गाया हुआ है। साहुकार-निवाज नहीं। तो गरीब जल्दी पद पा सकते हैं। साहुकार नहीं। तकदीर वान गरीब ही हैं। तो कुमारियाँ और मातायें तकदीरवान हैं जो संगमयुग पर कुमारी वा माता बनी हैं। चरित्र भी ज्यादा गोपी वल्लभ के साथ गोपियों के ही गाये गये हैं, गोपों के कम। तो लक्की हो जो गोपी तन में हो।

01.02.76... फर्स्ट नम्बर हैं लवलीन परवाने अर्थात् बाप के समान स्वरूप और शक्तियाँ धारण करने वाले, बाप के सर्व खजाने स्वयं में समाने वाले, समान बनने अर्थात् समा जाने अर्थात् मर मिटने वाले।

11.02.78... लकी हो जो ड्रामा अनुसार अपने जीवन से, वाणी से, कर्म से सर्व रीति से सेवा करने के निमित्त हो और आगे भी बन सकते हो।

14.02.78... लकी तो सभी हो जो बाप ने अपना बना दिया। बाप ने बच्चों को स्वीकार किया अर्थात् अधिकारी बनाया। यह अधिकार तो सबको मिल ही गया।

जैसे दुनिया वाले बताते हैं कि एक-एक सितारे में दुनिया है, उन सितारों में तो दुनिया नहीं लेकिन आप जो लकी सितारे हो उन एक एक सितारों में दुनिया है अर्थात् अपनी-अपनी राजधानी है। तो एक-एक को अपनी-अपनी राजधानी स्थापन करनी है।

01.12.78... जो बाप की याद में रहते उनके ऊपर सदा बाप का हाथ हैं। सभी मोस्ट लकी हो। घर बैठे भगवान मिल जाए तो इससे बड़ा लक और क्या चाहिए।

01.12.78... जो बाप की याद में रहते उनके ऊपर सदा बाप का हाथ हैं। सभी मोस्ट लकी हो। घर बैठे भगवान मिल जाए तो इससे बड़ा लक और क्या चाहिए। जो स्वप्न में न हो और साकार हो जाए तो और क्या चाहिए। बाप आप के पास पहले आया – पीछे आप आये हो। इसी अपने भाग्य का वर्णन करते सदा खुश रहो भगवान को मैंने अपना बना लिया। कहीं भी रहें लेकिन बाप का सदा साथ हर कर्म, हर दिनचर्या में सदा बाप के साथ का अनुभव करो।

02.01.79... जो बाप के प्यार में लवलीन रहते हैं, खोये हुए होते हैं उन्हें माया आकर्षित कर नहीं सकती। जैसे वाटरप्रूफ कपड़ा होता है तो एक बूँद भी टिकती नहीं, ऐसे जो लगन में रहते, लवलीन रहते वह मायाप्रूफ बन जाते हैं। माया का कोई वार-वार नहीं कर सकता। बाप का प्यार अविनाशी और निस्वार्थ है, इसके भी अनुभवी हो और अल्पकाल के प्यार के भी अनुभवी हो। वह प्यार इस प्यार के आगे कुछ भी नहीं है। बाप और मैं तीसरा न कोई, ऐसी स्थिति रहती है। तीसरा बीच में आना अर्थात् बाप से अलग करना। तीसरा आता ही नहीं तो अलग हो नहीं सकते। जो सदा बाप की याद में लवलीन रहते वह सिद्धि का पा लेते हैं।

01.02.79... तो ऐसे खिले हुए रुहानी गुलाब हो जो बाप के ऊपर बलिहार हो सकें। सदा यह याद है कि हम किस बागवान के बगीचे के फूल हैं। डायरेक्ट बाप फूलों को अपने स्नेह का पानी दे रहे हैं, तो कितने लकी हो गये!

05.02.79... लवलीन आत्मा को याद में रहने का पुरुषार्थ नहीं करना पड़ेगा। लेकिन स्वत: योगी होगा। सिवाय बाप और सेवा के कुछ दिखाई नहीं देगा। जब बुद्धि को एक ही ठिकाना मिल जाता तो बुद्धि का भटकना स्वत: ही बन्द हो जाता। लवलीन आत्मा सर्व प्राप्तियों में रह औरों को प्राप्ति कराने में तत्पर होगी।

14.11.79... एक-एक बच्चे की कितनी महिमा करें। जितनी आप सबने द्वापर से बाप की महिमा गाई है उतनी बाप अभी आप बच्चों की गाते हैं। रोज़ नया टाइटिल देते हैं तो महिमा हुई ना। बहुत-बहुत लकी हो।

15.12.79... आप बाप को याद करते हो वैसे बाप भी आपको याद करते हैं। आप लोगों ने तो बाप को इनडायरेक्ट जड़ चित्रों द्वारा चैतन्य को मालायें पहनाने की कोशिश की और बाप सदा बच्चों के गुणों की माला सुमिरण करते रहते हैं। तो कितने लकी हो!

25.01.80... भक्त आत्मायें प्रेम में लीन होना चाहती हैं और कोई आत्मायें ज्योति में लीन होना चाहती हैं। दोनों ही लीन होना चाहती हैं। ऐसी आत्माओं को सेकेण्ड में बाप का परिचय, बाप की महिमा और प्राप्ति सुनाए, सम्बन्ध की लवलीन अवस्था का अनुभव कराओ। लवलीन होंगे तो सहज ही लीन होने के राज़ को भी समझ जायेंगे। तो वर्तमान समय 'लवलीन' का अनुभव कराओ। भविष्य लीन का रास्ता बताओ।

04.02.80... सभी अपने को मोस्ट लकीएस्ट समझते हो? ऐसे अनुभव करते हो कि हमने जो देखा, हमने जो पाया वह विश्व की आत्मायें नहीं पा सकती। वह एक बूँद के लिए भी प्यासी हैं और आप सब मास्टर सागर बन गये तो मोस्ट लकीएस्ट हुए ना!

11.03.81... एक बाप से अटूट प्यार। बाप सिवाए और कुछ दिखाई न दे। संकल्प में भी बाबा, बोल में भी बाबा, कर्म में भी बाप का साथ। ऐसी लवलीन आत्मा एक शब्द भी बोलती है तो उसके स्नेह के बोल दूसरी आत्मा को भी स्नेह में बाँध देते हैं। ऐसी लवलीन आत्मा का एक बाबा शब्द ही जादू की वस्तु का काम करता है। लवलीन आत्मा रूहानी जादूगर बन जाती है। एक बाप का लव अर्थात् लवलीन आत्मा।

13.04.81... बाप तो सदा हर बच्चे को लवली बच्चा ही कहते हैं। तो लवली भी हो, लकीएस्ट भी हो।

28.11.81... सेवा का चान्स मिला अर्थात् लाटरी का लकी नम्बर खुल गया। सेवाधारी अर्थात् लकी नम्बर वाले। लकी नम्बर हैं ना? लकी नम्बर बहुत थोड़ों का निकलता है और लकी नम्बर में सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति होती है। लकी नम्बर अर्थात् स्वयं लकी बन गये।

06.04.82... बिन्दी बन बिन्दी में लवलीन हो जायेंगे। तो सोचों जाल में बेहोश होने की स्थिति अच्छी वा बिन्दी बन बिन्दी में लवलीन होना अच्छा! तो बाप की मर्जी क्या हुई? लवलीन हो जाओ।

13.04.82... कोई भी कार्य करते बाप की याद में लवलीन रहो। लवलीन आत्मा कर्म करते भी न्यारी रहेगी। कर्मयोगी अर्थात् याद में रहते हुए कर्म करने वाला सदा कर्मबन्धन मुक्त रहता है। ऐसे अनुभव होगा जैसे काम नहीं कर रहे हैं लेकिन खेल कर रहे हैं। किसी भी प्रकार का बोझ वा थकावट महसूस नहीं होगी। तो कर्मयोगी अर्थात् कर्म को खेल की रीति से न्यारे होकर करने वाला। ऐसे न्यारे बच्चे कर्मेन्द्रियों द्वारा कार्य करते बाप के प्यार में लवलीन रहने के कारण बन्धनमुक्त बन जाते हैं।

11.04.83... सहज पुरुषार्थी सिर्फ लव में नहीं लेकिन लव में लीन रहता। ऐसी लवलीन आत्मा सहज ही चारों ओर के वायब्रेशन से वायुमण्डल से दूर रहती है।

19.12.83... सदा स्नेह स्वरूप बन स्नेह के सागर में समाए हुए। जिसको 'लवलीन बच्चे' कहते। लवली और लवलीन दोनों में अन्तर है। बाप का बनना अर्थात् स्नेही, लवलीन बनना।

25.12.83... ज्ञान अमृत का नशा लवलीन बना देता है।

10.04.84... सिर्फ़ सुनना और जानना यह है किनारे पर खड़ा होना। मानना और समय जाना यह है प्रेम के सागर में लवलीन होना।

24.12.84... लवलीन आत्मा को कभी स्वप्न मात्र भी माया का प्रभाव नहीं पड़ सकता है। क्योंकि लवलीन अवस्था माया प्रूफ अवस्था है।

21.02.85... यह लवलीन रहने की स्थिति सदा हर बात में सहज ही बाप समान बना देती है। क्योंकि बाप के लव में लीन हैं तो संग का रंग लगेगा ना। मेहनत वा मुश्किल से छूटने का सहज साधन है - लवलीन रहना। यह लवलीन अवस्था लकी है, इसके अन्दर माया नहीं आ सकती है।

04.03.86... स्नेह में जब लवलीन हो जाते तो स्नेह के कारण बाप का हर बोल स्नेही लगता। क्वेश्चन समाप्त हो जाते।

14.1087... सिमरण करते-करते उसमें खो जाते हैं अर्थात् लवलीन हो जाते हैं।

06.01.88... कोई व्यक्ति वा वैभव में लगाव तो नहीं है अर्थात् लीकेज तो नहीं है? यह लीकेज़ लवलीन स्थिति का अनुभव नहीं करायेगी। वैभव का प्रयोग भले करो लेकिन योगी बन प्रयोग करो।

27.03.88... सभी सितारों को सदा यही ईशारा देते हैं कि लक्की और लवली - यह तो सभी बने हो, अब आगे अपने को यही देखो कि सदा समीप रहने वाले, सहज सफ़लता अनुभव करने वाले सफ़लता के सितारे कहाँ तक

बने हैं? अभी गिरने वाले तारे तो नहीं हो वा पूँछ वाले तारे भी नहीं हो। लक्की और लवली के साथ सफ़लता - यह श्रेष्ठता सदा अनुभव करते रहो।

13.02.82... जो सच्चे दिल वाले के प्यारे हैं वो सदा लव में लीन रहने वाले लवलीन हैं। तो जो लव में लीन आत्मायें हैं ऐसे लवलीन आत्माओं के आगे किसी के भी समीप आने की, सामना करने की हिम्मत नहीं है। अगर लीन नहीं है तो डगमग हो सकते हैं। लव है लेकिन लव में लीन नहीं है। अभी किसी से भी पूछेंगे - आपका बाप से लव है, तो सभी हाँ कहेंगे ना। लेकिन सदा लव में लीन रहते है? तो क्या कहेंगे ? इसमें हाँ नहीं कहा। सिर्फ लव है-इस तक नहीं रह जाना। लीन हो जाओ। इसी श्रेष्ठ स्थिति को लीन हो जाने को ही लोगों ने बहुत श्रेष्ठ माना है।

ऐसे नहीं समझो कि कर्मयोगी जीवन में लवलीन अवस्था नहीं हो सकती। होती है। साथ का अनुभव अर्थात् लव का प्रैक्टिकल सबूत साथ है। तो सहजयोगी सदा के योगी हो गये ना ! लवर अर्थात सदा सहजयोगी।

24.09.92... तो जो सदा बिज़ी रहते हैं वे बहुत लक्की हैं। इसलिये अपने को फ्री नहीं करना। चलो, बहुत समय कर लिया, अब फ्री हो जायें। बिज़ी रहना खुशनसीब की निशानी है। खुशनसीब हो ना। अपने को सदा बिज़ी रखना। अच्छा! मधुबन निवासियों को पहला चांस मिला है। यह भी लक्क है।

10.12.92... देखो, कितने लक्की हो जो कल्याणकारी युग में आये और कल्याणकारी बाप मिला। आपका भी आक्यूपेशन है विश्व-कल्याणकारी।

क्योंकि आधा कल्प राज्य करेंगे, आधा कल्प पूज्य बनेंगे। तो यह भी लक्क ही है।

23.12.93... तो जहाँ प्यार है वहाँ सब-कुछ है, और जहाँ सब-कुछ है और प्यार नहीं है वहाँ कुछ नहीं है। तो आप कितने लक्की हो परमात्म पार के पात्र बन गये! और कितना सहज!

17.11.94... आगे चलकर वृद्धि होगी तो बदलेगा ना, फिर भी आप लक्की हो क्योंकि टूलेट के टाइम पर नहीं आये हो। लेट के टाइम पर आये हो।

07.03.95... आप कितने लक्की हो जो भगवान रोज़ वरदान देते हैं। पालना ही वरदानों से हो रही है।

22.12.95... बहुत लक्की हो जो कोने-कोने से बापदादा ने आप सबको निकाला है। प्यार से ढूँढ कर आपको अपना बनाया है।

18.01.96... देखो आप जो पीछे आये हो वो बहुत लक्की हो। क्यों? अभी सेवा के बने बनाये साधनों के समय पर आये। मक्खन निकाला 60 वर्ष वालों ने और मक्खन खाने वाले आप आ गये।

10.03.96... यह बहुत आपका भाग्य है जो इस समय भाग्य प्राप्त करने के स्थान पर पहुंच गये हो। यह भाग्य बनने का स्थान है। समझा। तो लक्की हैं और इस लक्क को बढ़ाते रहेंगे तो सफ़लता पाते रहेंगे।

11.11.2000... लकीएस्ट कितने हो? कोई ज्योतिषि ने आपके भाग्य की लकीर नहीं खींची है, स्वयं भाग्य विधाता ने आपके भाग्य की लकीर खींची।

15.11.05...बापदादा को बच्चों की मेहनत नहीं अच्छी लगती। आधाकल्प मेहनत की है, अभी मौज करो। मुहब्बत में लवलीन हो, अनुभव के मोती ज्ञान सागर के तले में अनुभव करो। सिर्फ डुबकी लगाकर निकल नहीं आओ सागर से, लवलीन रहो।

परमात्म प्यारे कोई भी व्यक्ति वा साधनों की आकर्षण में नहीं आ सकते क्यों कि परमात्म आकर्षण, परमात्म प्यार ऐसा अनुभव कराता जो सदा प्यार के कारण लवलीन रहते हैं, जिसको लोगों ने परमात्मा में लीन

होना समझ लिया। परमात्मा में लीन नहीं होता लेकिन परमात्म प्यार में लवलीन हो जाता। बापदादा चारों ओर के बच्चों को दे खते हैं - परमात्म प्यारे तो सभी बने हैं लेकिन एक हैं लवली बच्चे , दूसरे हैं लवली न बच्चे। तो अपने आपसे पूछो लवली तो सभी हैं, लेकिन लवलीन कहाँ तक रहते हैं? लवलीन बच्चों की निशानी है वह सदा परमात्म फरमान में सहज चलते हैं।

संस्कार परिवर्तन में मेहनत का कारण है - लवली बने हैं , लवलीन नहीं बने हैं।

18.01.06... लवली बच्चे तो सभी हैं लेकिन एक हैं लवली बच्चे दूसरे हैं लवलीन बच्चे। लवलीन बच्चे हर संकल्प, हर श्वांस में, हर बोल, हर कर्म में स्वत: ही बाप समान सहज रहते हैं।

3. मधुरता

09.11.69... मधुबन के फूलों में विशेषतायें क्या होनी चाहिए? नाम ही है मधुबन। तो पहली विशेषता है मधुरता। मधुरता ऐसी चीज है जो कोई को भी हर्षित कर सकते हैं। मधुरता को धारण करने वाला यहाँ भी महान् बनता है, और वहाँ भी मर्तबा पाता है। मधुरता वालों को सभी महान रूप से देखते हैं। तो यह मधुरता का विशेष गुण होना चाहिए। मधुरता से ही मधुसूदन का नाम बाला करेंगे। यह मधुबन नाम है। मधु अर्थात् मधुरता और बन में क्या विशेषता होती है? बन में वैराग्य वृत्ति वाले जाते हैं। तो बेहद की वैराग्य बुद्धि भी चाहिए। फिर इससे सारी बातें आ जायेंगी। और आप सभी को कॉपी करने के लिए यहाँ आयेंगे। सभी साचेंगे य ह कैसे ऐसे बने हैं। सभी के मुख से निकलेगा कि मधुबन तो मधुबन ही है। तो यह दो विशेषतायें धारण करनी हैं – मधुरता और बेहद की वैराग्य वृत्ति। दूसरे शब्दों में कहते हैं स्नेह और शक्ति। आप सभी का सभी से जास्ती स्नेह है ना! बापदादा से। और बापदादा का मधुबन वालों से विशेष स्नेह रहता है। क्योंकि भल कैसे भी हैं लेकिन सर्वस्व त्यागी हैं। इसलिए आकर्षित करते हैं। लेकिन सर्वस्व त्यागी के साथ अब स्नेह और शक्ति भी भरनी है। समझा-किस विशेषता को भरना है।

23.01.70... मधु अर्थात मधुरता यानि स्नेह और शक्ति दोनों ही वरदान पूर्ण रूप से प्राप्त करना। यहाँ मधुबन में दोनों-चीज़ वरदान रूप में मिलती हैं। फिर बाहर में जायेंगे तो इन दोनों चीज़ के लिो अपना पुरुषार्थ करना पड़ेगा। इसलिए यहाँ वरदान रूप में प्राप्त जो हो रहा है उनको ऐसा प्राप्त करना जो अविनाशी रहे।

26.01.70... मधुबन का विशेष गुण है मधुरता। मधु अर्थात् मधुरता। स्नेही। जितना स्नेही होंगे उतना बेहद का वैराग्य होगा। ाह है मधुबन का अर्थ। अति स्नेही और इतना ही बेहद की वैराग्य वृत्ति। अगर मधुबन के विशेष गुण जीवन में धारण करके जाों तो सहज ही सम्पूर्ण बन सकते हैं।

ाहाँ मधुबन के दो विशेष गुण अपने साथ ले जाना। जैसे स्थूल मधु ले जाते हो ना। वैसे यह सूक्ष्म मधुरता की मधु ले जाना। फिर सफ़लता ही सफ़लता है। असफ़लता आपके जीवन से मिट जायेगी। सफ़लता का सितारा अपने मस्तक में चमकते हुए देखेंगे।

23.3.70... जब यह रंग लग जाता है तो फिर मधुरता का गुण स्वत: ही आ जाता है। अपने वा दूसरे की बीती को न देखने से सरल चित हो जाते हैं और जो सरलचित बनता है उसका प्रत्यक्ष रूप में गुण क्या देखने में आता है? मधुरता। उनके नयनों से मधुरता, मुख से मधुरता और चलन से मधुरता प्रत्यक्ष रूप में देखने में आती है। तो इस रंग से मधुरता आती है इसलिए मिठाई का नियम है। होली पर और क्या करते हैं? (मंगल-मिलन) मंगल मिलन का अर्थ क्या हुआ? यहाँ मंगल मिलन कैसे मनायेंगे? मधुरता आने बाद मंगल मिलन क्या होता है? संस्कारों का मिलन होता है। जब यह संस्कार मिलन हो जायेगा तब जयजयकार होगी।देवियां स्वयं सिद्धि प्राप्त की हुई हैं। तब दूसरों को रिद्धि सिद्धि दे सकती हैं। तुम्हारे पुरुषार्थ की सिद्धि तब होगी जब संस्कारों का मिलन होगा।

27.7.70...मधुबन में रहते मधुरता और बेहद की वैराग्यवृत्ति को धारण करना है। यह है मधुबन का मुख्य लक्षण। इसको ही मधुबन कहा जाता है।

28-4-77 ...बाप-दादा सदैव कहते हैं कि कहाँ भी रहते हो लेकिन अपने को सदा परमधाम निवासी व मधुबन निवसी समझो। निराकार स्थिति के हिसाब से परमधाम निवासी, साकार स्थिति के हिसाब से मधुबन निवासी। मधुबन कहने से ही वैराग्य वृत्ति और मधुरता दोनों ही आ जाती है। स्थिति में बेहद की वैराग्य वृत्ति और सम्पर्क में मधुरता दोनों ही चाहिए। स्थान से स्थिति का कनेक्शन (Connection;सम्बन्ध) है। .

10.12.78... निराकार बाप को भी इस साकार भूमि से विशेष स्नेह है - ऐसे भूमि के निवासी स्वयं को भी सदा ऐसे अनुभव करते हैं मधुबन अर्थात् मधुर भूमि। वृत्ति की भी मधुरता – वाणी की भी मधुरता और हर कर्म में भी सदा मधुरता।

10.12.78... ईश्वरीय परिवार में आई हुई आत्मा में कोई विशेषता न हो यह हो नहीं सकता। तो अपनी विशेषता को जान उसको कर्म में लगाओ। जो भी गुण अथवा विशेषता हो चाहे कर्मणा का गुण हो चाहे मधुरता का गुण हो – स्नेह का हो उसको कार्य में लगाओ। जैसे लोहा पारस से लग पारस बन जाता है वैसे एक गुण या विशेषता सेवा में लगाने से सेवा का फल एक का लाख गुणा मिलने से वह एक विशेषता अनेक समय का फल देने के लायक बन जाती।

14.01.79... विशेष मिलने के लिए आए ब्राह्मण जीवन में संस्कार ही परिवर्तन हो जाते हैं। मन्सा में सदा श्रेष्ठ स्मृति – आत्मिक स्वरूप अर्थात् भाई-भाई की रहती है – इस स्मृति के आधार पर मन्सा प्यूरिटी के मार्क्स मिलते हैं। वाचा में सदा सत्यता और मधुरता – विशेष इस आधार पर वाणी की मार्क्स मिलती हैं। कर्मणा में सदा नम्रता और सन्तुष्टता इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी, इस विशेषता के आधार पर कर्मणा में मार्क्स मिलती हैं। अब तीनों को सामने रखते हुए अपने आपको चैक करो कि हमारा नम्बर कौनसा होगा। विदेशी आत्माओं का नम्बर कौनसा है? आज विशेष मिलने के लिए आए हैं – कोई आत्माओं के कारण बाप को भी विदेशी से ब्राह्मण जीवन में संस्कार ही परिवर्तन हो जाते हैं। मन्सा में सदा श्रेष्ठ स्मृति – आत्मिक स्वरूप अर्थात् भाई-भाई की रहती है – इस स्मृति के आधार पर मन्सा प्यूरिटी के मार्क्स मिलते हैं। वाचा में सदा सत्यता और मधुरता – विशेष इस आधार पर वाणी की मार्क्स मिलती हैं। कर्मणा में सदा नम्रता और सन्तुष्टता इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी, इस विशेषता के आधार पर कर्मणा में मार्क्स मिलती हैं। अब तीनों को सामने रखते हुए अपने आपको चैक करो कि हमारा नम्बर कौनसा होगा

30.01.79...सदा अपने सम्पूर्ण स्वरूप को सामने रखने से माया का सामना करना बहुत सहज होगा। बाप-दादा यही रिज़ल्ट देखने चाहता – इस रिज़ल्ट को प्रैक्टिकल में लाने के लिए विशेष धारणायें याद रखो – 1. मधुरता 2. नम्रता। इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी महादानी वरदानी बन जावेंगे – और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे। समझा – अभी क्या करना है?

05.02.79... जब बाम्ब फटता है तो सब हिल जाते हैं ना। तो सबकी बुद्धि को हिलावे यह किसकी महिमा है! यह किसकी अथार्टी से बोल रहे हैं, यह क्या और किसका सन्देश दे रहे हैं – अथार्टी भी हो, मधुरता भी हो – शब्दों की मधुरता हो लेकिन अन्दर समाई हुई अथार्टी हो – शब्द भी रहमदिल की भावना के हों – स्पष्ट भी करते रहें लेकिन स्पष्ट करते हुए बाप की महिमा करते हुए सम्बन्ध भी जोड़ते जाएं। हम यह क्यों कहते, इससे क्या प्राप्ति होगा, हम लोगों का अनुभव क्या है। एक घड़ी की भी प्राप्ति क्या है। ऐसे बीच-बीच में निज़ी अनुभव का आवाज़ लगे – सिर्फ भाषण नहीं लगे – लगन में मगन मूर्त अनुभव हो – यह नवीनता है – लोग कहते हैं लेकिन स्वरूप नहीं बनते – आपका बोल और स्वरूप दोनों साथसाथ हों – स्पष्ट भी हों, स्नेह भी हो, नम्रता भी, मधुरता भी और महानता भी हो, सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष करना है। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – दोनों बातों का बैलेन्स हो – जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है और वह शब्द कड़े नहीं, मीठे लगते हैं तो अथार्टी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ। इसको कहा जाता है बाप की प्रत्यक्षता का साधन।

28.4.82... वाणी में सदा निरअहंकारी अर्थात् सदा रूहानी मधुरता और निर्मानता।

09.1.85...मधुबन निवासी अर्थात् सदा अपने मधुरता से सर्व को मधुर बनाने वाले और सदा अपने बेहद के वैराग वृत्ति द्वारा बेहद का वैराग दिलाने वाले। यही मधुबन निवासियों की विशेषता है। मधुरता भी अति और वैरागवृत्ति भी अति। ऐसे बैलेन्स रखने वाले सदा ही सहज और स्वत: आगे बढ़ने का अनुभव करते हैं। मधुबन की इन दोनों विशेषताओं का प्रभाव विश्व में पड़ता है। चाहे अज्ञानी आत्मायें भी हैं लेकिन मधुबन लाइट हाउस, माइट हाउस है। तो लाइट हाउस की रोशनी कोई चाहे न चाहे लेकिन सबके ऊपर पड़ती है। जितना यहाँ का यह वायब्रेशन होता है उतना वहाँ समझते हैं कि यह कुछ न्यारे हैं।

मधुबन वालों का हर बोल मोती है। बोल नहीं हो लेकिन मोती हो। जैसे मोतियों की वर्षा हो रही है, बोल नहीं रहे हैं, मोतियों की वर्षा हो रही है। इसको कहा जाता है – 'मधुरता'। ऐसा बोल बोलें जो सुनने वाले सोचें कि ऐसा बोल हम भी बोलेंगे। सबको सुनकर सीखने की प्रेरणा मिले, फ़ालो करने की प्रेरणा मिले। जो भी बोल निकलें वह ऐसे हों जो कोई टेप करके फ़िर रिपीट करके सुने। अच्छी बात लगती है तब तो टेप करते हैं ना – बार-बार सुनते रहें। तो ऐसे मधुरता के बोल हों। ऐसे मधुर बोल का वायब्रेशन विश्व में स्वत: ही फैलता है। यह वायुमण्डल वायब्रेशन को स्वत: ही खींचता है। तो आपका हर बोल महान हो। हर मंसा संकल्प हर आत्मा के प्रति मधुर हो, महान हो।

30-3-85 ... बाप का स्वभाव क्या है? सदा हर आत्मा के प्रति कल्याण वा रहम की भावना का स्वभाव। हर एक को ऊँचा उठाने का स्वभाव, मधुरता का स्वभाव। निर्मानता का स्वभाव। मेरा स्वभाव ऐसा है यह कभी नहीं

बोलना। मेरा कहाँ से आया। मेरा तेज़ बोलने का स्वभाव है, मेरा आवेश में आने का स्वभाव है। स्वभाव के कारण हो जाता है। यह माया है। कईयों का अभिमान का स्वभाव, ईर्ष्या का, आवेश में आने का स्वभाव होता है, दिलशिकस्त का स्वभाव होता है। अच्छा होते भी अपने को अच्छा नहीं समझते। सदैव अपने को कमज़ोर ही समझेंगे। मैं आगे जा नहीं सकती। कर नहीं सकती। यह दिलशिकस्त स्वभाव यह भी रांग है। अभिमान में नहीं आओ। लेकिन स्वमान में रहो इसी प्रकार के स्वभाव को कहा जाता है कमज़ोर स्वभाव। तो तीनों बातों का अटेन्शन सारा वर्ष रखना।

25.12.85... बापदादा 'किसमिस डे' कहते हैं। किसमिस डे अर्थात् मधुरता का दिन। सदा मीठा बनने का दिन। मीठा ही ज़्यादा खाते और खिलाते हैं ना। मुख मीठा तो थोड़े समय के लिए होता है लेकिन स्वयं ही मीठा बन जाए तो सदा ही मुख में मधुर बोल रहें। जैसे मीठा खाने और खिलाने से खुश होते हो ना ऐसे मधुर बोल स्वयं को भी खुश करता दूसरे को भी खुश करता। तो इससे सदा सर्व का मुख मीठा करते रहो, सदा मीठी दृष्टि, मीठा बोल, मीठे कर्म। यही किसमिस डे मनाना हुआ। मनाना अर्थात् बनाना। किसी को भी दो घड़ी मीठी दृष्टि दे दो। मीठे बोल बोल लो तो उस आत्मा को सदा के लिए भरपूर कर देंगे। इन दो घड़ी की मधुर दृष्टि, बोल उस आत्मा की सृष्टि बदल लेंगे। यह दो मधुर बोल सदा के लिए बदलने के निमित्त बन जायेंगे। मधुरता ऐसी विशेष धारणा है जो कड़वी धरनी को भी मधुर बना देती है। आप सभी को बदलने का आधार बाप के दो मधुर बोल थे ना! मीठे बच्चे, तुम मीठी शुद्ध आत्मा हो। इन दो मधुर बोल ने बदल लिया ना। मीठी दृष्टि ने बदल लिया। ऐसे ही मधुरता द्वारा ओरों को भी मधुर बनाआ। यह मुख मीठा करो। समझा – क्रिसमस डे मनाया ना। सदा इन सौगातों से अपनी झोली भरपूर कर ली? सदा मधुरता की सौगात को साथ रखना। इसी से सदा मीठा रहना और मीठा बनाना।

बापदादा सभी मीठे ते मीठे बच्चों को इस बड़े दिन पर सदा मधुरता से श्रेष्ठ बनो और श्रेष्ठ बनाओ, इसी वरदान के साथ स्वयं भी वृद्धि को प्राप्त होते रहो और सेवा को भी वृद्धि में लाते रहो। सभी बच्चों को बड़े-बड़े बाप की बड़ी-बड़ी यादप्यार और साथ-साथ स्नेह भरी मुबारक हो। गुडमार्निंग हो। सदा मीठे बनने की बधाई हो।

1 8.1.87... मधुबन निवासी अर्थात् सदा मधुरता द्वारा बाप के समीपता का साक्षात्कार कराने वाले। संकल्प में भी मधुरता, बोल में भी मधुरता, कर्म में भी मधुरता – यही बाप की समीपता है। इसलिए बाप भी रोज़ क्या कहते हैं और बच्चे भी रेसपाण्ड रोज़ क्या करते हैं, जानते हो? बाप भी कहते हैं – 'मीठे-मीठे बच्चो' और बच्चे भी रेसपाण्ड करते – 'मीठे-मीठे बाप'। तो यह रोज़ का मधुरता का बोल मधुर बना देता है। तो सदा मधुरता को प्रत्यक्ष करने वाले मधुबन निवासी श्रेष्ठ आत्मायें हैं। मधुरता ही महानता है। जिसमें मधुरता नहीं तो महानता नहीं अनुभव होती। फ़िर कभी सुनायेंगे कि संकल्प की मधुरता क्या है।

31.12.87...जैसे हर एक आत्मा ''बाबा'' कहते मधुरता वा खुशी का अनुभव करती है। 'वाह बाबा' कहने से मुख मीठा होता है क्योंकि प्राप्ति होती है। ऐसे हर ब्राह्मण आत्मा, कोई भी ब्राह्मण का नाम लेते ही खुश हो जाए।

1-12-89...जहाँ मधुरता है वहाँ ही पवित्रता है। बिना पवित्रता के मधुरता आ नहीं सकती। तो सदा मधुर रहने वाले और सदा खुशबहार रहने वाले।

17.03.91... इस समय सभी मधुबन निवासी हो ना! अभी मधुबन को साथ ले जाना। क्योंकि मधुबन अर्थात् मधुरता। मधुबन आपके साथ होगा तो सदा ही सम्पूर्ण और सदा ही सन्तुष्ट रहेंगे। ऐसे नहीं कहना कि मधुबन में तो बहुत अच्छा था। अभी बदल गये। मधुबन का बाबा भी साथ है। तो मधुबन की विशेषता भी साथ है। तो सदा अपने को मास्टर सर्व शक्तिवान अनु- भव करेंगे।

31.12.92...सदा उत्सव में खुशी में नाचते रहना और बाप के गुणों के गीत गाते रहना।
मधुरता की मिठाई से स्वयं का मुख मीठा करते रहना और मधुर बोल, मधुर संस्कार, मधुर स्वभाव द्वारा दूसरों का भी मुख मीठा कराते रहना। ऐसे नये वर्ष की पद्म गुणा मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो।
26.3.93...विशेष मधुबन निवासियों को बहुत-बहुत मुबारक हो। सारा सीज़न अपनी मधुरता और अथक सेवा से सर्व की सेवा के निमित्त बने। तो सबसे पहले सारी सीजन में निमित्त सेवाधारी विशेष मधुबन निवासियों को बहुत-बहुत मुबारक। मधुबन है ही मधु अर्थात् मधुरता। तो मधुरता सर्व को बाप के स्नेह में लाती है। इसलिए चाहे हाल में हो, चाहे चले गये हो लेकिन सभी को विशेष एक-एक डिपार्टमेन्ट को बापदादा विशेष मुबारक सेवा की दे रहे हैं और ''सदा अथक भव, मधुर भव'' के वरदानों से बढ़ते, उड़ते चलो।
30.03.2002... बापदादा ने देखा है कि एक संस्कार या नेचर कहो, नेचर तो हर एक की अपनी-अपनी है लेकिन सर्व का स्नेही और सर्व बातों में, सम्बन्ध में सफल, मन्सा में विजयी और वाणी में मधुरता तब आ सकती है जब इज़ी नेचर हो। अलबेली नेचर नहीं। अलबेलापन अलग चीज़ है। इज़ी नेचर उसको कहा जाता है - जैसा समय, जैसा व्यक्ति, जैसा सरकमस्टांश उसको परखते हुए अपने को इज़ी कर देवे। इज़ी अर्थात् मिलनसार।
31.12.2001... आज ग्रेट-ग्रेट ग्रैण्ड फ़ादर ब्रह्मा बाप की एक शुभ आशा रही, ब्रह्मा बाप बोले कि मेरे ग्रेट ग्रेट ग्रैण्ड सन्स को विशेष एक बात कहनी है, वह क्या? कि सदा हर बच्चे के चेहरे पर, सदा एक तो रूहानियत की मुस्कराहट हो, सुना! अच्छी तरह से कान खोल के सुनना। और दूसरा - मुख में सदा मधुरता हो। एक शब्द भी मधुरता के बिना नहीं हो। चेहरे पर रूहानियत हो, मुख में मधुरता हो और मन-बुद्धि में सदा शुभ भावना, रहमदिल की भावना, दातापन की भावना हो। हर कदम में फालो फादर हो। तो यह कर सकतो है
05.4.2002... बापदादा अब इशारा देते हैं कि मनसा सेवा अपनी श्रेष्ठ स्टेज द्वारा, वाणी की सेवा मधुरता, निर्माणता और रूहानियत द्वारा और कर्मणा में कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सर्व शक्तियों, गुणों की विशेषता द्वारा सेवा करने में ही सहज सफलता है।
28.03.2006... बापदादा को सभी बच्चों से अति प्यार है, बापदादा यही चाहते हैं कि सभी बच्चों का जमा का खाता भरपूर हो। धारणा में भी, धारणा की निशानी है हर कर्म, गुण सम्पन्न होगा। जिस समय जिस गुण की आवश्यक्ता है वह गुण चेहरे, चलन में इमर्ज दिखाई दे। अगर कोई भी गुण की कमी है, मानों सरलता के गुण

की कर्म के समय आवश्यकता है, मधुरता की आवश्यकता है, चाहे बोल में, चाहे कर्म में अगर सरलता, मधुरता के बजाए थोड़ा भी आवेशता या थकावट के कारण मधुर नहीं है, बोल मधुर नहीं है, चेहरा मधुर नहीं है, सीरियस है तो गुण सम्पन्न तो नहीं कहेंगे ना। कैसे भी सरकामस्टॉन्स हो लेकिन मेरा जो गुण है, वह मेरा गुण इमर्ज होना चाहिए।

20.10.2008... जो लक्ष्य आपने रखा वह तो होता नहीं है इसलिए अपने मन्सा संकल्प और वाणी अर्थात् बोल और सम्बन्ध-सम्पर्क सदा मीठा, मधुरता अर्थात् महान बनाओ क्योंकि वर्तमान समय लोग प्रैक्टिकल लाइफ देखने चाहते हैं, अगर वाणी से सेवा करते हो तो वाणी की सेवा से प्रभावित हो नज़दीक तो आते हैं, यह तो फायदा है लेकिन प्रैक्टिकल मधुरता, महानता, श्रेष्ठ भावना, चलन और चेहरे को देख स्वयं भी परिवर्तन के लिए प्रेरणा ले लेते हैं और जैसे जैसे आगे समय की हालातें परिवर्तन होनी हैं तो ऐसे समय पर आप सबको चेहरे और चलन से ज्यादा सेवा करनी पड़ेगी। इसलिए अपने आपको चेक करो - आत्माओं के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना की वृत्ति और दृष्टि के संस्कार नेचर और नेचरल हैं? बापदादा हर एक बच्चे को माला का मणका, विजयी माला का मणका देखने चाहते हैं।

4. महीनता , महानता

13.11.69... ...कोई भी कार्य में चाहे पुरुषार्थ, चाहे सर्विस में मेहनत लगने का कारण यह है कि बातें तो सभी बुद्धि में हैं लेकिन इन बातों की महीनता में नहीं जाते। महीन बुद्धि को कभी मेहनत नहीं लगती। मोटी बुद्धि कारण बहुत मेहनत लगती है। श्रीमत पर चलने के लिए भी महीन बुद्धि चाहिए। महीनता में जाने का अभ्यास करना है। दूसरे शब्दों में यह कहेंगे कि जो सुना है वह करना है अर्थात् उसकी महीनता में जाना है। जैसे दही को बिलोरकर महीन करते हैं तब उसमें मक्खन निकलता है। तो यह भी महीनता में जाने की बात है। महीनता की कमी के कारण मेहनत होती है। महीनता में जाने की बजाए उस बात को मोटे रूप में देखते हैं। सर्विस के समय भी महीन बुद्धि हो, ज्ञान की महीनता में जाकर उसको सुनायें और उसज्ञान की महीनता में ले जायें तो उनको भी मेहनत कम लगे। और अपने को भी कम लगे।

20.12.69... ...जो महीन बुद्धि होंगे उनकी विशेषता क्या होगी? महीन बुद्धि वाले कैसी भी परिस्थिति में अपने को मोल्ड कर सकेंगे। जैसी परिस्थिति उसमें अपने को मोल्ड कर सकेंगे। सामना करने का उनमें साहस होगा वह कभी घबरायेंगे नहीं। लेकिन उसकी गहराई में जाकर अपने को उसी रीति चला येंगे। तो जब हल्के होंगे तब ही मोल्ड हो सकेंगे। नर्म और गर्म दोनों ही होंगे तब मोल्ड होंगे। एक की भी कमी होगी तो मोल्ड नहीं हो सकेंगे।

18.04.71... ...महानता लाने के लिए ज्ञान की महीनता में जाना पड़े। जितना-जितना ज्ञान की महीनता में जा-येंगे उतना अपने को महान् बना सकेंगे। महानता कम अर्थात् ज्ञान की महीनता का अनुभवी कम। तो अपने को चेक करो। महान् आत्मा का कर्त्तव्-ा क-ा होता है -- वह स्मृति में रखो।

24.04.73... ...महानता की कमी के कारण जानते हो? जो मुख्य मान्यता सदैव सुनाते भी रहते हो। उस मान्यता की महीनता नहीं है। महीनता आने से महावीरता आ जाती है। महावीरता अर्थात् महानता। तो फिर कमी किस बात की रही – महीनता की। महीन वस्तु तो किसी में भी समा सकती है। बिना महीनता के कोई भी वस्तु जहाँ जैसा समाना चाहे वैसे समा नहीं सकती। जितनी जो वस्तु महीन होती है उतनी माननीय होती है। पॉवरफुल होती है।

23.01.77... ...सेल्फ कन्ट्रोल अर्थात् जिस समय जैसे चाहे, वहाँ बुद्धि लगा सके तब ही महीन बुद्धि बन जायेंगे। 'महीनता ही महानता है।' जैसे शरीर की रीति से हल्कापन परसनैलिटी (Personality) है; वैसे बुद्धि की महीनता व आत्माओं का हल्कापन ब्राह्मण जीवन की परसनैलिटी है।

08.01.86... ...लक्ष्मी को धन देवी कह करके पूजते हैं। ऐसे अपने में सर्वगुण, सर्वशक्तियाँ होते भी एक विशेषता में विशेष रिसर्च कर स्वयं को प्रभावशाली बनाओ। इस वर्ष में हर गुण की, हर शक्ति की रिसर्च करो। हर गुण की महीनता में जाओ। महीनता से उसकी महानता का अनुभव कर सकेंगे। याद की स्टेजेस का, पुरुषार्थ

की स्टेजेस का महीनता से रिसर्च करो। गुह्यता में जाओ। डीप अनुभूतियाँ करो। अनुभव के सागर के तले मे जाओ। सिर्फ ऊपर-ऊपर की लहरों में लहराने के अनुभवी बनना यही सम्पूर्ण अनुभव नहीं है। और अन्तर्मुखी बन गुह्य अनुभवों के रत्नों से बुद्धि को भरपूर बनाओ।

5. नम्रता, निर्माणता

18.6.69..... सर्विस की सफलता का मुख्य गुण कौन सा है? नम्रता। जितनी नम्रता उतनी सफलता। नम्रता आती है निमित्त समझने से। निमित्त समझकर सर्विस करना। नम्रता के गुण से सब आप के आगे नमन करेंगे। जो खुद झुकता है उसके आगे सभी झुकते हैं। निमित्त समझकर कार्य करना है। जैसे बाप शरीर का आधार निमित्त मात्र लेते हैं। वैसे आप समझो कि निमित्त मात्र शरीर का आधार लिया है। एक तो शरीर को निमित्त मात्र समझना है और दूसरा सर्विस में अपने को निमित्त सम- झना। तब नम्रता आयेगी। फिर देखो सफलता आप के आगे चलेगी। जैसे बापदादा टेम्प्रेरी देह में आते हैं ऐसे देह को निमित्त आधार समझो।

20.12.69..... शक्तिरूप में है मालिकपना और नम्रता में सेवागुण। सेवा भी और मालिकपना भी। सेवाधारी भी हो और विश्व के मालिकपने का नशा भी हो। जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे।

8.5.73.....जितना बुद्धि में नशा होगा, उतनी ही कर्म में नम्रता–इस नशे की निशानी यह है। नशा भी ऊँचा होगा लेकिन कर्म में नम्रता रहेगी। नयनों में सदैव नम्रता होगी। इसलिए इस नशे में कभी नुकसान नहीं होता है। समझा? सिर्फ नशा नहीं रखना। एक तरफ अति नशा, दूसरी तरफ अति नम्रता। जैसे सुनाया कि ऊँच-ते ऊँच बाप भी बच्चों के आगे गुलाम बन कर आते हैं तो नम्रता हुई ना? जितना ऊँच उतनी ही नम्रता–ऐसा बैलेन्स रहता है? अथवा जिस समय नशे में रहते हो, तो कुछ सुझता ही नहीं? क्योंकि जब अपने इस स्वमान के नशे में रहते हैं कि हम विश्व के रचयिता के भी मालिक हैं तो ऐसे नशे में रहने वाले का कर्त्तव्य क्या होगा? विश्व का कल्याण नम्रता के बिना हो नहीं सकता। बाप को भी अपना तब बनाया जब बाप भी नम्रता से बच्चों का सेवाधारी बना। ऐसे ही फॉलो फादर।

9.9.75..... हर बोल में नम्रता, निर्माणता और उतनी ही महानता होगी।

11.10.75.....जो अपने को निमित्त बनी हुई समझती हैं, उन्हों में मुख्य यह विशेषता होगी – जितनी महानता उतनी नम्रता। दोनों का बैलेन्स होगा। तब ही निमित्त बने हुए कार्य में सफ़लतामूर्त बनेंगे। जहाँ नम्रता के बजाय महानता ज्यादा है या महानता की बजाय नम्रता ज्यादा है तो भी सफ़लतामूर्त नहीं बनेंगे। सफ़लतामूर्त बनने के लिए दोनों बातों का बैलेन्स चाहिए।

6.2.76... .. .. जो बच्चे करावनहार बाप को स्मृति में रखते हुए निमित्त करनहार बनते हैं, उन के कर्म में न्यारेपन और निरहंकारीपन और नम्रतापन तथा नव निर्माण की श्रेष्ठता भरी हुई होगी।

9.2.76... .. ...यहाँ जितनों के आगे झुकेंगे अर्थात् नम्रता के गुण को धारण करेंगे तो सारा कल्प ही सर्व आत्मायें मेरे आगे नमन करेंगी।

14.1.79... मन्सा में सदा श्रेष्ठ स्मृति – आत्मिक स्वरूप अर्थात् भाई-भाई की रहती है – इस स्मृति के आधार पर मन्सा प्यूरिटी के मार्क्स मिलते हैं। वाचा में सदा सत्यता और मधुरता – विशेष इस आधार पर वाणी की मार्क्स मिलती हैं। कर्मणा में सदा नम्रता और सन्तुष्टता इसका प्रत्यक्ष फल सदा हर्षितमुखता होगी, इस विशेषता के आधार पर कर्मणा में मार्क्स मिलती हैं।

30.1.79.. .. ... बाप-दादा यही रिज़ल्ट देखने चाहता – इस रिज़ल्ट को प्रैक्टिकल में लाने के लिए विशेष धारणायें याद रखो – 1. मधुरता 2. नम्रता। इन विशेष दो धारणाओं से सदा विश्व कल्याणकारी महादानी वरदानी बन जावेंगे – और सहज ही स्नेह का सबूत दे सकेंगे।

5.2.79... .. ..आपका बोल और स्वरूप दोनों साथसाथ हों – स्पष्ट भी हों, स्नेह भी हो, नम्रता भी, मधुरता भी और महानता भी हो, सत्यता भी हो लेकिन स्वरूप की नम्रता भी हो, इसी रूप से बाप को प्रत्यक्ष करना है। निर्भय हो लेकिन बोल मर्यादा के अन्दर हों – दोनों बातों का बैलेन्स हो – जहाँ बैलेन्स होता है वहाँ कमाल दिखाई देती है और वह शब्द कड़े नहीं, मीठे लगते हैं तो अथार्टी और नम्रता दोनों के बैलेन्स की कमाल दिखाओ।

23.11.79... .. ..अगर आप से कोई टक्कर लेता है तो आप उसे अपने स्नेह का पानी दो, इससे अग्नि समाप्त हो जायेगी। अगर कहते – 'यह क्यों' 'ऐसा क्यों' तो उस पर तेल डाल देते हो। सदेव नम्रता की ड्रेस पड़ी रहे। यह नम्रता हैं कवच। कवच उतार देते हो। जहाँ नम्रता होगी वहाँ स्नेह और सहयोग अवश्य होगा। जहाँ स्नेह और सहयोग है वहाँ तेल नहीं डालते। तो हरेक क्या करेंगे इस वर्ष? संस्कार तो भिन्न-भिन्न रहेंगे ही लेकिन उन संस्कारों का अपने ऊपर प्रभाव न हो। संस्कार तो अन्त तक किस के दासी के रहेंगे, किसी के राजा के। 'संस्कार बदल जाएँ' यह इन्तज़ार न करो लेकिन मेरे ऊपर किसी का प्रभाव न हो।

11.11.81..... .. रूहानी नशा सदा जितना ऊंचा उतना नम्र बनायेगा। देहभान का नशा होगा थोड़ा लेकिन घमण्ड से, अभिमान से ऊंचा समझेंगे। सच्चे नशे में रहने वाले सदा नम्रचित होंगे। नम्रता से ही सबको अपने आगे झुकायेंगे। सुखदाता, नम्रचित आत्मा बन सकती है। अभिमान नम्रचित बनने नहीं देता। नम्रचित नहीं तो सेवा हो नहीं सकती। तो सेवाधारी की विशेषता – सदा नम्रचित, स्वयं झुका हुआ होगा तब औरों को झुका सकेगा। तो रूहानी सेवाधारी! 'रूहानी' शब्द सदा याद रखो। चलते-फिरते, बोलते... कर्म में रूहानियत दिखाई दे। साधारणता नहीं, रूहानियत।

6.4.82.. .. ...**सदा नम्रता द्वारा निर्माण करते रहेंगे।**

12.3.85.. . ... जैसे मुरलियों को सुनते हुए कोई भी अभिमान नहीं कहेगा। अथार्टी से बोलते हैं, यह कहेंगे। भल शब्द कितने ही सख्त हों लेकिन अभिमान नहीं कहेंगे! अथार्टी की अनुभूति करते हैं। ऐसे क्यों होता है? जितनी ही अथार्टी है उतनी ही नम्रता और रहम भाव है। ऐसे बाप तो बच्चों के आगे बोलते हैं लेकिन आप सभी इस विशेषता से स्टेज पर इस विधि से स्पष्ट कर सकते हो।

9.4.86... .. .. सच्चे सेवाधारी की निशानी है – त्याग अर्थात् नम्रता, और तपस्या अर्थात् एक बाप के निश्चय, नशे में दृढ़ता। यथार्थ सेवा इसको कहा जाता है।

20.3.87... .. अथॉर्टी का अर्थ अभिमान नहीं है। जितना बड़े-ते-बड़ी अथॉर्टी, उतना उनकी वृत्ति में रूहानी अथॉर्टी रहती है। वाणी में स्नेह और नम्रता होगी – यही अथॉर्टी की निशानी है।

25.10.87... .. .. कोई भी सेवा में सफलता का साधन नम्रता भाव है, निमित्त भाव है। तो इन्हीं विशेषताओं से सेवा की? ऐसी सेवा में सदा सफलता भी है और सदा मौज है।

निर्माणता

4.3.69...उसके साथ निरंहकारी, निर्माण और साथ-साथ प्रेम स्वरूप। यह चारों ही बातें उनके हर चलन से देखने में आयेंगी। अगर चारों में से कोई भी कम है तो कुछ स्टेज की कमी है।

20.12.69.. .. कोई भी चीज को गर्म कर नर्म किया जाता है। फिर मोल्ड किया जाता है। यहाँ कौनसी नर्माई और गर्माई है। नर्माई है निर्माणता, गर्माई है – शक्ति रूप। निर्माणता अर्थात् स्नेह रूप। जिसमें हर आत्मा प्रति स्नेह होगा वही निर्माणता में रह सकेंगे। स्नेह नहीं है तो न रहमदिल बन सकेंगे न नम्रचित। इसलिए निर्माणता और फिर शक्ति रूप अर्थात् जितनी निर्माणता उतना ही – फिर मालिकपना। शक्तिरूप में है मालिकपना और नम्रता में सेवागुण। सेवा भी और मालिकपना भी। सेवाधारी भी हो और विश्व के मालिकपने का नशा भी हो। जब यह नर्माई और गर्माई दोनों रहेंगे तब हर बात में मोल्ड हो सकेंगे। हरेक को यह देखना है कि हमारी बुद्धि की तराजू गर्म और नर्म दोनों में एक समान रहती है। कहाँ-कहाँ अति निर्माणता भी नुकसान करती है और कहाँ अति मालिकपना भी नुकसान करता है, इसलिए दोनों की समानता चाहिए। जितनी समानता होगी उतनी महानता भी। अब समझा कि किस एक बात में पास विद आनर होंगे?

05.4.70.. .. स्वमान कैसे प्राप्त होता है? जितना निर्माण उतना स्वमान। और जितना-जितना बापदादा के समान उतना ही स्वमान। निर्माण भी बनना है समान भी बनना है। ऐसा ही पुरुषार्थ करना है। निर्माणता में भी कमी नहीं तो समानता में भी कमी नहीं। फिर स्वमान में भी कमी नहीं। अपनी स्वमान की परख समानता से देखनी है।

3.10.71.. .. सदैव यह स्मृति में रहे कि हम सभी मास्टर विश्व-निर्माता हैं। यही स्मृति सदैव रहने से कौनसा विशेष गुण आटोमेटिकली आ जायेगा? निर्माणता का। समझा? और जहाँ निर्माणता अर्थात् सरलता नेचरल रूप में रहेगी वहाँ अन गुण भी आटोमेटिकली आ ही जाते हैं। तो सदैव इस स्मृति- स्वरूप में स्थित रह कर फिर हर संकल्प वा कर्म करो। फिर यह जो भी छोटी- छोटी बातें सामना करने के लिए आती हैं, यह बातें ऐसे ही अनुभव होंगी जैसे कोई बुजुर्ग के आगे छोटे-छोटे बच्चे अपने बचपन के अलबेलेपन के कारण कुछ भी बोल देवें वा कुछ भी ऐसा कर्त्तव्य भी करें तो बुजुर्ग लोग समझते हैं कि यह निर्दोष, अनजान छोटे बच्चे हैं। कोई असर नहीं होता है। ऐसे ही जब मास्टर विश्व-निर्माता अपने को समझेंगे तो यह माया के छोटे-छोटे विघ्न बच्चों के खेल समान लगेंगे।

26.10.71.. .. अगर चरित्र में निर्माणता है तो कर्त्तव्य भी विश्व-निर्माण का आटोमेटिकली चलेगा। निर्माणता अर्थात् निरहंकारी। तो निर्माणता में देह का अहंकार स्वत: ही खत्म हो जाता है। ऐसे निर्माण स्थिति में रहने वाला सदा निर्वाण स्थिति में स्थित होते हुए भी वाणी में आयेंगे तो वाणी भी यथार्थ और पावरफुल अर्थात् शक्तिशाली होगी। कोई भी चीज़ जितनी अधिक शक्ति- शाली होती है उतनी क्वान्टिटी कम होती है लेकिन क्वालिटीज अधिक होती हैं। ऐसे ही जब निर्माण स्थिति में स्थित होकर वाणी में आयेंगे तो वाणी में भी शब्द कम लेकिन शक्तिशाली जादा होंगे। अभी विस्तार जादा करना पड़ता है, लेकिन जैसे-जैसे शक्तिशाली स्थिति बनाते जायेंगे

तो आपके एक शब्द में हजारों शब्दों का रहस्य समाया हुआ होगा, जिससे व्यर्थ वाणी आटोमेटिकली समाप्त हो जायेगी।

निर्माणता अर्थात् निरहंकारी। तो निर्माणता में देह का अहंकार स्वत: ही खत्म हो जाता है। ऐसे निर्माण स्थिति में रहने वाला सदा निर्वाण स्थिति में स्थित होते हुए भी वाणी में आयेंगे तो वाणी भी यथार्थ और पावरफुल अर्थात् शक्तिशाली होगी।

03.02.72.. .. जितना स्वमान उतनी निर्माणता। इसलिए उनको अभिमान नहीं रहेगा। जैसे निश्चय की विजय अवश्य है, इसी प्रकार ऐसे निश्चयबुद्धि के हर कर्म में विजय है; अर्थात् हर कर्म संयम के प्रमाण है तो विजय है ही है। ऐसे अपने को चेक करो – कहाँ तक इस स्टेज के नजदीक हैं? जब आप लोग नजदीक आयेंगे तब फिर दूसरों के भी नम्बर नजदीक आयेंगे।

9.9.75.. .. श्रेष्ठ तकदीर बनाने वालों की निशानी क्या होगी? जानते हो? ऐसा तकदीरवान हर संकल्प में, हर बोल में, कर्म में फालोफादर (Follow Father) करता होगा। संकल्प भी बाप समान विश्व कल्याण की सेवा अर्थ होगा। हर बोल में नम्रता, निर्माणता और उतनी ही महानता होगी। स्मृति स्वरूप में एक तरफ बेहद का मालिकपन, दूसरी तरफ विश्व की सेवाधारी आत्मा होगी।

27.11.78.. .. जब विश्व को परिवर्तन करने की चैलेन्ज करते हो तो यह क्या बड़ी बात है - इसका सहज साधन है – लेने वाला नहीं लेकिन देने वाला दाता बनो। दाता के आगे सब स्वयं ही झुकते हैं। वैसे भी कोई चीज़ दो तो वह अपना सिर और आंखे नीचे कर लेते हैं – निर्माणता दिखाने लिए ऐसे करते हैं। वह स्थूल युक्ति है और यहाँ संस्कार स्वभाव से झुकेंगे। तब तो दुश्मन भी बलिहार जायेंगे। तो ऐसी शक्ति सेना तैयार है!

15.4.92.. .. असभ्यता की निशानी है जिद और सभ्यता की निशानी है निर्माण। सत्यता को सिद्ध करने वाला सदैव स्वयं निर्माण होकर सभ्यतापूर्वक व्यवहार करेगा। समझा - सरी होशियारी! ऐसे होशियार नहीं बनना। तो यह भी होमवर्क है कि ऐसे होशियारी को छोड़कर निर्माण बनो। बिल्कूल निर्माण। मैं राईट हूँ, यह रांग है यह निर्माणता नहीं है। दुनिया वाले भी कहते हैं कि सत्य को अगर कोई सिद्ध करता है तो कुछ न कुछ समाया हुआ है। कई बच्चों की भाषा हो गई है मैं बिल्कुल सच बोलता हूँ, 100% सत्य बोलता हूँ। लेकिन सत्य को सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं है। सत्य ऐसा सूर्य है जो छिप नहीं सकता। चाहे कितनी भी दीवारें कोई आगे लाये लेकिन सत्यता का प्रकाश कभी छिप नहीं सकता। सच्चा आदमी कभी अपने को यह नहीं कहेगा कि मैं सच्चा हूँ। दूसरा कहे कि आप सच्चे हो और भी हंसी के बात सुनाएं? सुनने का इन्टरेस्ट अच्छा है। करने का भी है ना?
3.11.92.. .. गुप्त पुरुषार्थी की झलक और फलक वा रूहानी रॉयल्टी की चमक औरों को अनुभव जरूर करायेगी। स्वयं, स्वयं को चाहे कितना भी गुप्त रखें लेकिन उनके बोल, उनका सम्बन्ध-सम्पर्क, रूहानी व्यवहार का प्रभाव उनको प्रत्यक्ष करता है। जिसको साधारण शब्दों में दुनिया वाले बोल और चाल कहते हैं। तो स्वयं,

स्वयं को प्रत्यक्ष नहीं करते, गुप्त रखते–यह निर्माणता की विशेषता है। लेकिन दूसरे उनके बोल-चाल से अनुभव अवश्य करेंगे। दूसरे कहें कि यह गुप्त पुरुषार्थी है।

26.3.93.. .. महानता की निशानी है निर्माणता। जितना निर्माण उतना सबके दिल में महान् स्वत: ही बनेंगे। बिना निर्माणता के सर्व के मास्टर सुखदाता बन नहीं सकते। निर्माणता निरहंकारी सहज बनाती है। निर्माणता का बीज महानता का फल स्वत: ही प्राप्त कराता है। निर्माणता सबके दिल में दुआयें प्राप्त कराने का सहज साधन है। निर्माणता सबके मन में निर्माण आत्मा के प्रति सहज प्यार का स्थान बना देती है। निर्माणता महिमा योग्य स्वत: ही बनाती है। तो निरहंकारी बनने की विशेष निशानी है– निर्माणता। वृत्ति में भी निर्माणता, दृष्टि में भी निर्माणता, वाणी में भी निर्माणता, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी निर्माणता। ऐसे नहीं कि मेरी वृत्ति में नहीं था लेकिन बोल निकल गया। नहीं। जो वृत्ति होगी वो दृष्टि होगी, जो दृष्टि होगी वो वाणी होगी, जो वाणी होगी वही सम्बन्ध-सम्पर्क में आयेगा। चारों में ही चाहिए। तीन में है, एक में नहीं है–तो भी अहंकार आने की मार्जिन है। इसको कहा जाता है फरिश्ता। तो समझा, बापदादा क्या चाहते हैं और आप क्या चाहते हो? 'चाहना' दोनों की एक है, अभी 'करना' भी एक करो।

25.11.93.. .. जो जितना महान् होता है, महानता की निशानी जितना महान् उतना निर्माण। क्योंकि सदा भरपूर आत्मा है। जैसे वृक्ष के लिये कहते हैं ना जितना भरपूर होगा उतना झुका हुआ होगा और निर्माणता ही सेवा करती है। जैसे वृक्ष का झुकना सेवा करता है, अगर झुका हुआ नहीं होगा तो सेवा नहीं करेगा। तो एक तरफ़ महानता है और दूसरे तरफ़ निर्माणता है। और जो निर्माण रहता है वह सर्व द्वारा मान पाता है। स्वयं निर्माण बनेंगे तो दूसरे मान देंगे। जो अभिमान में रहता है उसको कोई मान नहीं देते। उससे दूर भागेंगे। तो महान् और निर्माण है या नहीं है–उसकी निशानी है कि निर्माण सबको सुख देगा। जहाँ भी जायेगा, जो भी करेगा वह सुखदायी होगा। इससे चेक करो कि कितने महान् हैं? जो भी सम्बन्ध-सम्पर्क में आये सुख की अनुभूति करे।

3.4.97.. .. निर्माणता अलग चीज है, कोमलता अलग चीज है। निर्माण भले बनो, कोमल नहीं बनो।

23.3.2002.. .. बापदादा एक विशेष श्रीमत दे रहे हैं - है कामन बात लेकिन टाइम बहुत वेस्ट जाता है। बोल में निर्माण बनो। बोल में निर्माणता कम नहीं होनी चाहिए। भले साधारण शब्द बोलते हैं, समझते हैं, इसमें तो बोलना ही पड़ेगा ना! लेकिन निर्माणता के बजाए अगर कोई अथॉरिटी से, निर्माण बोल नहीं बोलते तो थोड़ा कार्य का, सीट का, 5 परसेन्ट अभिमान दिखाई देता है। निर्माणता ब्राह्मणों के जीवन का विशेष शृंगार है। निर्माणता मन में, वाणी में, बोल में, सम्बन्ध-सम्पर्क में....हो। ऐसे नहीं तीन बातों में तो मैं निर्माण हूँ, एक में कम हूँ तो क्या हुआ! लेकिन वह एक कमी पास विद आनर होने नहीं देगी। निर्माणता ही महानता है। झुकना नहीं है, झुकाना है। कई बच्चे हंसी में ऐसे कह देते हैं क्या मुझे ही झुकना है, यह भी तो झुके। लेकिन यह झुकना नहीं है वास्तव में परमात्मा को भी अपने ऊपर झुकाना है, आत्मा की तो बात ही छोड़ो। निर्माणता निरंहकारी स्वत: ही बना देती है। निरंहकारी बनने का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ता है। निर्माणता हर एक के मन में, आपके लिए प्यार का स्थान बना देती है। निर्माणता हर एक के मन से आपके प्रति दुआयें निकालेगी। बहुत दुआयें मिलेंगी। दुआयें, पुरुषार्थ में लिफ्ट से भी राकेट बन जायेंगी। निर्माणता ऐसी चीज़ है। कैसा भी कोई होगा, चाहे बिजी हो, चाहे कठोर दिल वाला हो, चाहे क्रोधी हो, लेकिन निर्माणता आपको सर्व द्वारा सहयोग दिलाने के निमित्त बन जायेगी। निर्माण, हर एक के संस्कार से स्वयं को चला सकता है। रीयल गोल्ड होने के कारण स्वयं को मोल्ड करने की विशेषता होती है। तो बापदादा ने देखा है कि बोल-चाल में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी, सेवा में भी एक दो के साथ निर्माण

स्वभाव विजय प्राप्त करा देता है। इसलिए इस वर्ष में विशेष बापदादा इस वर्ष को निर्माण, निर्मल वर्ष का नाम दे रहे हैं। वर्ष मनायेंगे ना। मनाना माना बनना। सिर्फ कहना नहीं, हाँ यह वर्ष है। बनना है। बनना है ना?

5.4.2002.. .. बापदादा अब इशारा देते हैं कि मनसा सेवा अपनी श्रेष्ठ स्टेज द्वारा, वाणी की सेवा मधुरता, निर्माणता और रूहानियत द्वारा और कर्मणा में कर्म और योग के बैलेन्स द्वारा, सम्बन्ध-सम्पर्क में सर्व शक्तियों, गुणों की विशेषता द्वारा सेवा करने में ही सहज सफलता है।

15.12.2002.. .. बापदादा सिर्फ छोटा-सा सहज पुरुषार्थ बताते हैं कि सदा मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में लास्ट मन्त्र तीन शब्दों का (निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी) सदा याद रखो। संकल्प करते हो तो चेक करो - महामन्त्र सम्पन्न है? ऐसे ही बोल, कर्म सबमें सिर्फ तीन शब्द याद रखो और समानता करो। यह तो सहज है ना? सारी मुरली नहीं कहते हैं याद करो, तीन शब्द। यह महामन्त्र संकल्प को भी श्रेष्ठ बना देगा। वाणी में निर्माणता लायेगा। कर्म में सेवा भाव लायेगा। सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति बनायेगा।

6. नष्टोमोहा, मोहजीत

15.9.69... अब नष्टोमोहा बनना है। नष्टोमाहा तब बनेगी जबकि सच्ची स्नेही होगी। जैसे कोई भी चीज को आग में डालने के बाद उसका रूप-रंग सब बदली हो जाता है। तो जो भी थोड़े आसुरी गुण, लोक-मर्यादायें है, कर्मबन्धन की रस्सियां, ममता के धागे जो बंधे हुए हैं उन सबको जलाना है। इस स्नेह की अग्नि में पड़ने से यह सब छूट जायेगा। तो अपना रंग-रूप सब बदलना है। इस लगन की अग्नि में पड़कर परिवर्तन लाने के लिए तैयार हो?

18.9.69...मोह किस कारण आता है? मोह मेरा से होता है। लेकिन आप सबका वायदा क्या है? शुरू-शुरू में आप सब-जब आये तो आपका वायदा क्या था? मैं तेरी तो सब कुछ तेरा। पहला वायदा ही यह है। मैं भी तेरी और मेरा सब कुछ भी तेरा। सो फिर भी मेरा कहाँ से आया? तेरे को मेरे से मिला देते हो। इससे क्या सिद्ध हुआ कि पहला वायदा ही भूल जाते हो। पहला-पहला वायदा ही सब यह कहते है:- जो कहोगे, वो करेंगे, जो खिलायेंगे, जहाँ बिठायेंगे ....। यह जो वायदा है, वह वायदा याद है? तो बाप तुमको अव्यक्त वतन में बिठाते हैं। तो आप फिर व्यक्त वतन में क्यूं आ जाते हो? वायदा तो ठीक नहीं निभाया। वायदा है जहाँ बिठायेंगे वहाँ बैठेंगे। बाप ने तो कहा नहीं है कि व्यक्त वतन में बैठो। व्यक्त में होते अव्यक्त में रहो। पहला-पहला पाठ ही भूल जायेंगे तो फिर ट्रेनिंग क्या करेंगे। ट्रेनिंग में पहला पाठ तो पक्का करवाओ। यह याद रखो कि जो वायदा किया है

जिसने मन दे दिया उसकी अवस्था क्या होगी? मनमनाभव। उसका मन वहाँ ही लगा रहेगा। इस मंत्र को कभी भूलेंगे नहीं। जो मनम-नाभव होगा उसमें मोह हो सकता है? तो मोहजीत बनने के लिए अपने वायदे याद करो

23.1.70.. ..जितना नष्टोमोहा बनेंगे उतना स्मृति रूप बनेंगे। तो स्मृति को सदा कायम रखने के लिए साधन है नष्टोमोहा बनना। नष्टोमोहा बनना सहज है वा मुश्किल है? जब अपने आप को समर्पण कर देंगे तो फिर सभी सहज होगा।

29.4.71 .. ..जब सभी कुछ विल कर दिया तो क्या बन जायेंगे? नष्टोमोहा। जब मोह नष्ट हो जाता है तो बन्धनमुक्त बन जाते हैं और बन्धनमुक्त ही योगयुक्त व जीवनमुक्त बन सकता है।

24.5.72 .. ..स्मृति-स्वरूप का सुख वा स्मृति-स्वरूप की खुशी का अनुभव क्यों नहीं होता है? उसका मुख्य कारण क्या है? अभी तक सर्व रूपों से नष्टोमोहा नहीं हुए हो। नष्टोमोहा हैं तो फिर भले कितनी भी कोशिश करो लेकिन स्मृतिस्वरूप में आ जाएंगे। तो पहले ''नष्टोमोहा कहां तक हुए हैं'' – यह अपने आपको चेक करो। बार-बार देहअभिमान में आना यह सिद्ध करता है -- देह की ममता से परे नहीं हुए हैं वा देह के मोह को नष्ट नहीं किया है। नष्टोमोहा ना होने कारण समय और शक्तियां जो बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हो रही हैं, उन्हों को भी नष्ट कर देते हो, काम में नहीं लगा सकते हो। मिलती तो सभी को हैं ना। जब बच्चे बने तो जो भी बाप की प्रापर्टी वा वर्सा है उसके अधिकारी बनते हैं। तो सर्व आत्माओं को सर्व शक्तियों का वर्सा मिलता ही है लेकिन उस सर्व शक्तियों के वर्से को काम में लगाना और अपने आप को उन्नति में लाना, यह नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार होता है।

बार-बार देहअभिमान में आना यह सिद्ध करता है कि -- देह की ममता से परे नहीं हुए हैं वा देह के मोह को नष्ट नहीं किया है। नष्टोमोहा ना होने कारण समय और शक्तियाँ जो बाप द्वारा वर्से में प्राप्त हो रही हैं, उन्हों को भी नष्ट कर देते हो, काम में नहीं लगा सकते, इसलिए देही-अभिमानी बनो।

22.7.72.. .. स्मृति-स्वरूप तब बनते हैं जब नष्टोमोहा हो जाते हैं। तो ऐसे नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप बने हो कि अभी विस्मृति स्वरूप हो। स्मृति स्वरूप से विस्मृति में क्यों आ जाते हो? ज़रूर कोई-न-कोई मोह अर्थात् लगाव अब तक रहा हुआ है। तो क्या जो बाप से पहल-पहला वायदा किया है कि और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे; क्या यह पहला वायदा निभाने नहीं आता है? पहला वायदा ही नहीं निभायेंगे तो पहले नम्बर के पूज्य में, राज-अधिकारी वा राज के सम्बन्ध में कैसे आवेंगे? क्या सेकेण्ड जन्म के राज्य में आना है? जो पहला वायदा 'नष्टोमोहा होने का' निभाते हैं वही पहले जन्म के राज में आते हैं।

22.7.72.. .. जैसे स्थूल शरीर में कोई भी अन्तर मालूम होता है तो आइने में देखने से फौरन ही इसको ठीक कर देते हैं। वैसे ही इस अलौकिक दर्पण में जो वास्तव का स्वरूप है इसको देखते हुये जो देह-अभिमान में आने से व्यर्थ संकल्पों का स्वरूप, व्यर्थ बोल का स्वरूप वा व्यर्थ कर्म वा सम्बन्ध का स्वरूप स्पष्ट देखने से वर्थ को समर्थ में बदल लेते फिर यह मोह रहेगा क्या। और जब नष्टोमोहा हो जावेंगे तो नष्टोमोहा के साथ सदा स्मृति-स्वरूप स्वत: ही हो जाायेंगे।

जैसे बाप के 3 रूप बताते हो वैसे आप के 5 रूप हैं – (1) मैं बच्चा हूँ (2) गॉडली स्टूडेन्ट हूँ (3) रूहानी यात्री हूँ (4) योद्धा हूँ और (5) ईश्वरीय वा खुदाई-खिदमतगार हूँ। यह 5 स्वरूप स्मृति में रहें। सवेरे उठने से बाप के साथ रूह-रूहान करते हो ना। बच्चे रूप से बाप के साथ मिलन मनाते हो ना। तो सवेरे उठने से ही अपना यह स्वरूप याद रहे कि मैं बच्चा हूँ। तो फिर गृहस्थी कहाँ से आवेगी? और आत्मा बाप से मिलन मनावे तो मिलन से सर्व प्राप्ति का अनुभव हो जाये। तो फिर बुद्धि यहाँ-वहाँ क्यों जावेगी? इससे सिद्ध है कि अमृतवेले की इस पहले स्वरूप की स्मृति की ही कमज़ोरी है। इसलिये अपने गिरती कला के रूप स्मृति में आते हैं। ऐसे ही सारे दिन में अगर यह पाँचों ही रूप समय- प्रति-समय भिन्न कर्म के प्रमाण स्मृति में रखो तो क्या स्मृति-स्वरूप होने से नष्टोमोहा: नहीं हो जावेंगे? इसलिो बताया -- मुश्किल का कारण यह है जो सिकल को नहीं देखती हो। तो सदैव कर्म करते हुए अपने दर्पण में इन स्वरूपों को देखो कि इन स्वरूपों के बदली और स्वरूप तो नहीं हो गया। रूप बिगड़ तो नहीं गया। देखने से बिगड़े हुए रूप को सुधार लेंगे और सहज ही सदाकाल के लिये नष्टोमोहा: हो जावेंगे।

19.9.72.. .. तो जो बेहद के वैरागवृति में रहने वाले हैं वह कब घबराते हैं क्या? डगमग हो सकते हैं? हिल सकते हैं?कितना भी जोर से हिलावें लेकिन बेहद के वैराग्यवृति वाले 'नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप' होते हैं। तो नष्टोमोहा स्मृतिस्वरूप हो? कि थोड़ा-बहुत देख कर कुछ अंश मात्र भी स्नेह कहो वा मोह कहो, लेकिन स्नेह का स्वरूप क्या होता है, इसको तो जानते हो ना? जिसके प्रति स्नेह होता है तो उसके प्रति सहयोगी बन जाना होता है। बाकी कोई रीति-रस्म से स्नेह का रूप प्रकट करना, इसको स्नेह कहेंगे वा मोह कहेंगे? तो इसमें मधुबन निवासी पास हुए? मधुबन का वायुमण्डल, मधुबन निवासियों की वृति, वायब्रेशन – लाइट-हाऊस होने कारण चारों ओर एक सेकेण्ड में फैल जाती है। तो ऐसे समझ कर हर पार्ट बजाते हो?

16.5.73.. .. गीता के भगवान् के द्वारा गीता-ज्ञान सुनने के बाद फाईनल स्टेज कौन-सी वर्णन करते हो? (नष्टोमोहा.....स्मृतिर्लब्धा) भक्त आपकी स्टेज का वर्णन तो करते हैं ना? तो लास्ट पेपर का क्वेश्चन कौन-सा है? स्मृति स्वरूप किस स्टेज तक बने हो और नष्टोमोह: कहाँ तक बने हो?–यही है लास्ट क्वेश्चन। इस लास्ट क्वेश्चन को पूर्ण रीति से प्रैक्टिकल (Practical) में करने के लिए यही दो शब्द प्रैक्टिकल में लाने हैं। अभी तो सभी पास विद् ऑनर (Pass with honour) बन जायेंगे ना? जबकि फ़ाईनल रिजल्ट से पहले ही क्वेश्चन एनाउन्स (Announce) हो रहा है। फिर भी 108 ही निकलेंगे। इतना मुश्किल है क्या? पहले दिन से यह क्वेश्चन मिलता है। जिस दिन जन्म लिया उस दिन ही लास्ट क्वेश्चन सुनाया जाता है। अभी आप लोग जो श्रेष्ठ आत्माएं बैठे हो वह तो पास होने वाले हो ना? सुनाया था कि पास होने के लिये इस 'पास' शब्द को दूसरे अर्थ से प्रैक्टिकल में लाओ। जो कुछ हुआ वह पास हो गया। जो बीत चुका उसको अगर पास समझ कर चलते चलो तो क्या पास नहीं होंगे? इसी पास शब्द को हिन्दी भाषा में प्रयोग करो तो पास अर्थात् साथ। बापदादा के पास हैं। तो इस एक शब्द को तीनों ही रूप से स्मृति में रखो। पास हो गया, पास रहना है और पास होना है। तो रिजल्ट (Result) क्या निकलेगी? संगठन की यादगार जो विजय माला के रूप में गाई हुई है उसी विजय माला के मणके अवश्य बन जायेंगे।

23.6.73.. .. फास्ट पुरुषार्थ एक सेकेण्ड का ही होना चाहिए। क्योंकि सुनाया था कि लास्ट पेपर की जो रिजल्ट आउट (Result out) होना है। लास्ट पेपर का समय क्या मिलेगा? एक सेकेण्ड। लास्ट पेपर का टाइम भी फिक्स है और पेपर भी फिक्स है। पेपर सुनाया था ना–नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप। एक सेकेण्ड में ऑर्डर हुआ -- नष्टोमोहा बन जाओ तो एक सेकेण्ड में अगर नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप न बने, अपने को स्वरूप बनाने अर्थात् युद्ध करने में ही समय गंवा दिया और बुद्धि को ठिकाने लगाने में समय लगा दिया तो क्या हो जायेंगे?–फ़ेल (Fail)। तो समय भी एक सेकेण्ड का मिलना है। यह भी पहले ही सुन रहे हैं। पेपर भी पहले सुन रहे हैं तो कितने पास होने चाहिये? फास्ट पुरुषार्थ की विधि है – प्रतिज्ञा, प्रतिज्ञा से अपने को प्रख्यात करो। बाप को प्रख्यात करो अर्थात् प्रतिज्ञा से प्रत्यक्षता करो।

8.7.74 .. ..नष्टोमोहा बनने के लिए सहज युक्ति कौन-सी है? इसके तो अनुभवी हो ना?–सदैव अपने सामने सर्व-सम्बन्धों से बाप को देखना और सर्व-सम्बन्धों द्वारा सर्व-प्राप्तियों को देखना।

25.10.75 .. ..सब स्थूल, सूक्ष्म साधनों से बेहद का वैराग्य। ऐसी धरनी बनी है अथवा थोड़ा सेन्टर्स से चेन्ज करें तो हिलेंगी? जिज्ञासुओं पर तरस नहीं पड़ेगा? जरा भी उन्हों के प्रति संकल्प नहीं आयेगा? ऐसे अपने को चेक करना चाहिए कि ऐसा पेपर आये तो नष्टोमोहा हैं? वह है लौकिक सम्बन्ध और यह है सेवा का सम्बन्ध। यदि उस सम्बन्ध में मोह जाये तो आप लोग वाणी चलाती हो। यह अलौकिक सेवा का सम्बन्ध है, इसमें यदि आपका मोह होगा तो आने वाले स्टूडेण्ट्स इस पर वाणी चलायेंगे। तो अपनी महीन रूप से चेकिंग करो कि अभी कोई ऑर्डर हो तो एवररेडी हैं? इस सेन्टर की सर्विस अच्छी है, तो सर्विस अच्छी से भी लगाव तो नहीं है? जब सबसे उपराम हों तब बेहद की वैराग्य वृत्ति कहेगे। अपने शरीर से भी उपराम। जैसे कि निमित्त सेवा-अर्थ चलाते हैं।

29.5.77.. .. सब कुछ बाप का है, मेरा नहीं। मेरेपन का अधिकार छोड़ना, इसी को ही समर्पण कहा जाता है। इसी को ही नष्टोमोहा स्टेज कहा जाता है। स्मृति स्वरूप न होने का कारण, वा व्यर्थ संकल्प चलने का कारण, उदास वा दास बनने का कारण, मेरेपन से नष्टोमोहा नहीं हैं।

05.06.77.. .. नष्टोमोहा बनने की सहज युक्ति कौनसी है? सदैव अपने घर की स्मृति में रहो। आत्मा के नाते, आपका घर 'परमधाम' है और ब्राह्मण जीवन के नाते, साकार सृष्टि वृक्ष में यह 'मधुबन' आपका घर है, क्योंकि ब्रह्मा बाप का घर मधुबन है। यह दोनों ही घर स्मृति में रहे, तो नष्टोमोहा हो जायेंगे। क्योंकि जब अपना परिवार, अपना घर कोई बना लेते तो उसमें मोह जाता, अगर उसको दफ्तर समझो तो मोह नहीं जाएगा। सदैव बुद्धि में रहे, सेवा स्थान पर सेवा के निमित्त रूप आत्माएं हैं – न कि मेरा कोई लौकिक परिवार है। सब अलौकिक सेवाधारी हैं; कोई सेवा करने के निमित्त हैं, कोई की सेवा करनी है। लौकिक सम्बन्ध भी सेवा के अर्थ मिला है – 'यह मेरा लड़का या लड़की है' नहीं। सेवा के निमित्त यह सम्बन्ध मिला है। मैं पति हूँ, पिता हूँ, चाचा हूँ – यह सम्बन्ध समाप्त हो जाए, तो ट्रस्टी हो जायेंगे। स्मृति विस्मृति का रूप तब लेती जब मेरापन है। अगर मेरापन खत्म हो जाए, तो नष्टोमोहा हो जाएंगे। 'नष्टोमोहा अर्थात् स्मृति स्वरूप।' हैं

14.2.78.. ..सदा स्वयं को हर कर्म करते हुए तन के भी, धन के भी, प्रवृत्ति के भी ट्रस्टी समझ कर चलते हो? ट्रस्टी की विशेषता क्या होती है? एक शब्द में कहें – ट्रस्टी अर्थात् नष्टोमोहा। तो सदा देही अभिमानी बनने का अर्थात् नष्टोमोहा बनने का सहज साधन क्या हुआ? ट्रस्टी हूँ, मैं ट्रस्टी हूँ। कल्प पहले के यादगार में भी अर्जुन का जो यादगार दिखाया है – उसमें अर्जुन को मुश्किल कब लगा? जब मेरापन आया। मेरा खत्म तो नष्टोमोहा। अर्थात् स्मृति स्वरूप हो गए। मेरा पति, मेरी पत्नी, मेरा घर, मेरे बच्चे, मेरी दुकान, मेरा दफ्तर – यह मेरा-मेरी सहज को मुश्किल कर देता है। सहज मार्ग का साधन है – 'नष्टो मोहा अर्थात् ट्रस्टी।' इस स्मृति से स्वयं और सर्व को सहज योगी बनाओ। समझा?

01.12.78.. .. निर्मोही हो? नष्टोमोहा हो ना। माताओं को विशेष विघ्न मोह का ही आता है। नष्टोमोहा अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ। अगर ज़रा भी मोह चाहे देह के सम्बन्ध में है तो तीव्र पुरुषार्थी के बजाए पुरुषार्थी में आ जाते। तीव्र पुरुषार्थी हैं फर्स्ट नम्बर, पुरुषार्थी हैं सेकेण्ड नम्बर। क्या भी हो – कुछ भी हो खुशी में नाचते रहो, ''मिरुआ मौत मलूका शिकार'' इसको कहते हैं नष्टोमोहा। नष्टोमोहा वाले ही विजय माला के दाने बनते हैं। मोह पर विजय प्राप्त कर ली तो सदा विजयी। पास हो या फुल पास हो? पेपर बहुत आयेंगे, पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। अगर इम्तहान ही न हो तो क्लास चेन्ज कैसे होगा। इसलिए फुल पास होना है – न कि पास होना है। अच्छा

07.12.78.. .. निर्मोही हो? नष्टोमोहा हो ना। माताओं को विशेष विघ्न मोह का ही आता है। नष्टोमोहा अर्थात् तीव्र पुरुषार्थ। अगर ज़रा भी मोह चाहे देह के सम्बन्ध में है तो तीव्र पुरुषार्थी के बजाए पुरुषार्थी में आ जाते। तीव्र पुरुषार्थी हैं फर्स्ट नम्बर, पुरुषार्थी हैं सेकेण्ड नम्बर। क्या भी हो – कुछ भी हो खुशी में नाचते रहो, ''मिरुआ मौत मलूका शिकार'' इसको कहते हैं नष्टोमोहा। नष्टोमोहा वाले ही विजय माला के दाने बनते हैं। मोह पर विजय प्राप्त कर ली तो सदा विजयी। पास हो या फुल पास हो? पेपर बहुत आयेंगे, पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। अगर इम्तहान ही न हो तो क्लास चेन्ज कैसे होगा। इसलिए फुल पास होना है – न कि पास होना है। अच्छा

6-1-79 .. ..जो भी काम हो तो साकार साथी न याद आवे पहले बाप याद आवे। सच्चा मित्र भी तो बाप हैं ना, ऐसे सच्चे साथी का साथ लो तो सहज ही सर्व से न्यारा और प्यार बन जायेंगे। एक बाप से लगन है तो नष्टोमोहा हैं।

मातायें सब नष्टोमोहा हो ना। जब बाप के साथ सर्व सम्बन्ध जोड़ लिए तो और किसमें मोह हो सकता है क्या? बिना सम्बन्ध के कोई में मोह नहीं हो सकता। सदा यह याद रखो जब सम्बन्ध नहीं तो मोह कहाँ से आया, मोह का बीज है सम्बन्ध। जब बीज को ही कट कर दिया तो बिना बीज के वृक्ष कैसे पैदा होगा। अगर अभी तक होता है तो सिद्ध है कि कुछ तोड़ा है कुछ जोड़ा है, दो तरफ है। तो दो तरफ वाले को न मंजिल मिलती न किनारा होता। तो ऐसे तो नहीं हो ना। सब नष्टोमोहा हो ना। फिर कभी शिकायत नहीं करना कि क्या करें बन्धन हैं, कटता नहीं...जहाँ मोह नष्ट हो गया तो स्मृति स्वरूप स्वत: हो जाते फिर कटता नहीं मिटता नहीं यह भाषा खत्म हो जाती। सर्व प्राप्ती स्वरूप हो जाते। सदा मनमनाभव रहने वाले मन के बन्धन से भी मुक्त रहते हैं।

30.11.79.. .. मातायें सिर्फ़ बाप के साथ सर्व सम्बन्ध निभाती रहें तो नम्बरवन ले सकती हैं। मातायें अगर नष्टोमोहा में पास हो गई तो बहुत आगे नम्बर ले सकती हैं। माताओं के लिए यही सबजेक्ट ज़रूरी है। बाप-दादा माताओं को एक्स्ट्रा, लिफ़्ट देते हैं, क्योंकि जानते हैं बहुत भटकी हैं, बहुत दु:ख देखे हैं अभी बाप माताओं के पांव दबाते हैं अर्थात् सहयोग देते हैं। बाप को बहुत तरस पड़ता है। सारी जीवन गँवाई, अभी थोड़े समय में पास हो जाओ।

03.12.79...शक्ति सेना क्या समझती है। सदा एक बाप और आप तीसरा न कोई, ऐसे ही रहती हो ना? कोई तीसरी बात याद तो नहीं आती? बस बाप और बच्चा, बाप और मैं, इसी नशे में रहो। शक्ति सेना नष्टोमोहा हो या हद के घर में, बच्चों में मोह है। कुछ भी हो जाए लेकिन निर्मोही, साक्षी होकर ड्रामा की सीन देखते रहो।

05.12.79.. .. जब सेवा समाप्त हो जायेगी तब सभी मधुबन आ जायेंगे। लेकिन वह भी कौन आयेंगे? जो नष्टोमोहा होंगे। जिनकी बुद्धि की लाइन क्लीयर होगी। उस समय टेलीफोन व टेलीग्राम से बुलावा नहीं होगा, लेकिन बुद्धि की लाइन क्लीयर होने से बुलावा पहुँच जायेगा। ऐसी हालतें बनेंगी जो जिस ट्रेन से आपको पहुँचना होगा वही चलेगी, उसके बाद नहीं। अगर लाइन क्लीयर होगी तो साधन भी मिल जावेंगे। नहीं तो कहीं-न-कहीं अटक जायेंगे। इसलिए बहुत काल का निरन्तर योग चाहिए। कवच है, कवच वाला सदा सेफ रहता है। सेफ्टी की ड्रेस है ही – याद का कवच।

10.12.79.. .. बिगुल बजे और भाग आयें। ऐसे नष्टोमोहा हो? ज़रा भी भी अगर मोह की रग होगी तो 5 मिनट देरी लगायेंगे और ख़त्म हो जायेगा। क्योंकि सोचेंगे, निकलें या न निकलें। तो सोच में ही समय निकल जायेगा। इसलिए सदा अपने को चेक करो कि किसी भी प्रकार का देह का, सम्बन्ध का, वैभवों का बन्धन तो नहीं हैं। जहाँ बन्धन होगा वहाँ आकर्षण होगी। इसलिए बिल्कुल स्वतन्त्र। इसको ही कहा जाता है – बाप-समान कर्मातीत स्थिति। सभी ऐसे हो ना?

01.02.80.. .. की स्मृति तो नहीं आती है? नष्टोमोहा हो? अगर थोड़ा भी मोह हुआ तो जैसे मगर मच्छ पहले थोड़ा पकड़ता है फिर सारा ले लेता है, ऐसे माया भी सारा हप कर लेगी। इसी लिए ज़रा भी मोह न हो। सदा निर्मोही।

17.10.81.. .. जीवन को श्रेष्ठ बनाने का सहज साधन कौन सा है? श्रेष्ठ जीवन तब बनती जब अपने को ट्रस्टी समझकर चलते। ट्रस्टी अर्थात् न्यारा और प्यारा। तो सभी को बाप ने ट्रस्टी बना दिया। ट्रस्टी हो ना? ट्रस्टी होकर रहने से गृहस्थी पन स्वत: निकल जाता है। गृह-स्थीपन ही श्रेष्ठ जीवन से नीचे ले आता। ट्रस्टी का मेरापन कुछ नहीं होता। जहाँ मेरापन नहीं वहाँ नष्टोमोहा स्वत: हो जाते। सदा निर्मोही अर्थात् सदा श्रेष्ठ सुखी। मोह में दु:ख होता है। तो नष्टोमोहा बनो।

08.04.82.. .. लौकिक तथा अलौकिक सम्बन्ध आ जाता है। इन दोनों सम्बन्ध में महात्यागी अर्थात् 'नष्टोमोहा'। नष्टोमोहा की निशानी – दोनों सम्बन्धों में न किसी में घृणा होगी, न किसी में लगाव वा झुकाव होगा। घृणा का बीज है स्वार्थ का रॉयल स्वरूप – ''चाहिए''। इसको यह करना चाहिए, यह न करना चाहिए, यह होना चाहिए। तो 'चाहिए' की चाह उस आत्मा से व्यर्थ सम्बन्ध जोड़ देती है। घृणा वाली आत्मा के प्रति सदा व्यर्थ चिन्तन होने के कारण परदर्शन चक्रधारी बन जाते। लेकिन यह व्यर्थ सम्बन्ध भी 'नष्टोमोहा' होने नहीं देंगे।

02.5.82.. .. ब्रह्मा बाप की यही जन्म के पहले दिन की आशा थी। कौन-सी? सदा यह फखुर और नशा रहा – कि मैं भी बाप समान ज़रूर बनूँगा। आदि के ब्रह्मा के बोल याद हैं? ''आ रहा हूँ, समा रहा हूँ,'' यही सदा नशे के बोल जन्म के संकल्प और वाणी में रहे। तो यही आदि के बोल अब कार्य समाप्त कर जो लक्ष्य रखा है उसी लक्ष्य रूप में समा गये। पहले अर्थ मालूम नहीं था लेकिन बनी हुई भावी पहले से बोल रही थी। और लास्ट में क्या देखा? बाप समान व्यक्त के बन्धन को कैसे छोड़ा! साँप के समान पुरानी खाल छोड़ दी ना! और कितने में खेल हुआ? घड़ियों का ही खेल हुआ ना। इसको कहा जाता है बाप समान व्यक्त भाव को भी सहज छोड़ 'नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप'। यह संकल्प भी उठा – मैं जा रहा हूँ, क्या हो रहा है! बच्चे सामने हैं लेकिन देखते भी नहीं देखा। सिर्फ लाइट-माइट, समानता की दृष्टि देते उड़ता पंछी उड़ गया। ऐसे ही अनुभव किया ना! कितनी सहज उड़ान हुई, जो देखने वाले देखते रहे और उड़ने वाला उड़ गया। इसको कहा जाता है – आदि में यही बोल और अन्त में वह स्वरूप ा। ऐसे ही फ़ालो फ़ादर। अच्छा–'

07.04.83.. ..नष्टोमोहा, बेहद सम्बन्ध के स्मृति स्वरूप और दूसरा 'बाप की हूँ', बाप सदा साथी है। बाप के साथ सर्व सम्बन्ध निभाने हैं। यह तो याद पड़ सकेगा ना! बस यही दो बातें विशेष याद रखना। '

13.04.83.. .. गीता ज्ञान अर्थात् स्वचिन्तन। स्वदर्शन चक्रधारी बनना। नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनना।

सर्व सम्बन्धों से बाप को अपना बना लिया है? किसी भी सम्बन्ध में अभी लगाव तो नहीं है? क्योंकि कोई एक सम्बन्ध भी अगर बाप से नहीं जुटाया तो नष्टोमोहा, स्मृति स्वरूप नहीं बन सकेंगे। बुद्धि भटकती रहेगी।

14.02.83.. .. अगर नष्टोमोहा नहीं बनेंगे तो स्मृति स्वरूप भी नहीं बन सकेंगे। कोई भी विकार आने नहीं देना। जब किसी भी विकार को आने नहीं देंगे तब कहेंगे – पवित्र और योगी भव!

19.05.83.. ..सदा याद और सेवा में रहो तो नष्टोमोहा सहज ही बन जायेंगे।

23.05.83.. .. ब्रह्मा बाप बच्चों के स्नेह में बोले, सदा हर कदम में सहज और श्रेष्ठ प्राप्ति का आधार मुझ बाप समान एक बात सदा जीवन में ब्रह्मा बाप की तावीज़ के रूप में याद रखें – ''छोड़ो तो छूटो''। चाहे अपने तन की स्मृति को भुलाए देही अभिमानी बनने में, चाहे सम्बन्ध के लगाव से नष्टोमोहा बनने में, चाहे अलौकिक सेवा की सफलता के क्षेत्र में, चाहे स्वभाव संस्कारों के सम्पर्क में – सभी बातों में – 'छोड़ो तो छूटो'। यह 'मेरे-पन' के हाथ इन डालियों को पकड़ डालियों के पंछी बना देते हैं। इस मेरे-पन के हाथों को छोड़ो तो क्या बन जायेंगे –

'उड़ते पंछी'। छोड़ना तो है नहीं, बनना तो यही है – यह नहीं। लेकिन हे आधार मूर्त श्रेष्ठ आत्मायें ''बन गये'' यह सेरीमनी मनाओ।

25.05.83.. .. चाहे किसी भी प्रकार के सरकमस्टांस बुद्धि रूपी पाँव को हिलाने आवें लेकिन सदा अचल अडोल, नष्टोमोहा और निर्मान रहना। तभी उड़ते पंछी बन उड़ते और उड़ाते रहेंगे। सदा न्यारे और सदा बाप के प्यारे। न किसी व्यक्ति के, न किसी हद के प्राप्ति के प्यारे बनना। ज्ञानी तू आत्मा के आगे यह हद की प्राप्तियाँ ही सोने हिरण के रूप में आती हैं। इसलिए, हे आदि रत्नो, आदि पिता समान 'सदा निराकारी, निर्विकारी, निरअहंकारी रहना'। समझा।

14.01.85.. .. बाप की याद है अर्थात् सदा संग में रहने वाले हैं। रूहानी रंग लगा हुआ है। बाप का संग नहीं तो रूहानी रंग नहीं। तो सभी बाप के संग के रंग में रंगे हुए नष्टोमोहा हो? या थोड़ा-थोड़ा मोह है? बच्चों में नहीं होगा लेकिन पोत्रों-धोत्रों में होगा। बच्चों की सेवा पूरी हुई दूसरों की सेवा शुरू हुई। कम नहीं होती। एक के पीछे एक लाइन लग जाती है। तो इससे बन्धन मुक्त हो!

18.02.85.. .. बाप के साथ वाले सदा निर्मोही होते, उन्हें किसी का मोह सतायेगा नहीं। तो नष्टोमोहा हो? कैसी भी परिस्थिति आवे लेकिन हर परिस्थिति में 'नष्टोमोहा'। जितना नष्टमोहा होंगी उतना याद और सेवा में आगे बढ़ती रहेंगी।

11-11-85.. .. अभी तो अव्यक्त रूप को भी व्यक्त में आना पड़ता है। अव्यक्त रूपधारी बन नष्टोमोहा स्मृतिर्लब्धा अर्थात् स्मृति स्वरूप। अभी यह सेवा रही हुई है। पदयात्रा की सेवा तो कर ली, अब रुहानी यात्रा का अनुभव कराना है। अभी इसी यात्रा की आवश्यकता है।

20.11.85.. .. अपने इस श्रेष्ठ संसार को सदा स्मृति में रखो। इस संसार के इस जीवन की विशेषताओं को सदा स्मृति में रख समर्थ बनो। स्मृति स्वरूप बनो तो 'नष्टोमोहा' स्वत: ही बन जायेंगे। पुरानी दुनिया की कोई भी चीज़ बुद्धि से स्वीकार नहीं करो। स्वीकार किया अर्थात् धोखा खाया। धोखा खाना अर्थात् दु:ख उठाना। तो कहाँ रहना है? श्रेष्ठ संसार में या पुराने संसार में? सदा अन्तर स्पष्ट इमर्ज रूप में रखो कि वह क्या और यह क्या!

25-11-85.. .. निश्चयबुद्धि एक हैं जानने तक, मानने तक और एक हैं चलने तक। मानते तो सभी हो कि हाँ, भगवान मिल गया। भगवान के बन गये। मानना वा जानना एक ही बात है। लेकिन चलने में नम्बरवार हो जाते। तो जानते भी हैं, मानते भी इसमें ठीक हैं लेकिन तीसरी स्टेज है – मान कर, जानकर चलना। हर कदम में निश्चय की वा विजय की प्रत्यक्ष निशानियाँ दिखाई दें। इसमें अन्तर है। इसलिए नम्बरवार बन गये। समझा। नम्बर क्यों बनें हैं। इसी को ही कहा जाता है – 'नष्टोमोहा'। नष्टोमोहा की परिभाषा बड़ी गुह्य है। वह फ़िर कब सुनायेंगे। निश्चयबुद्धि नष्टोमोहा की सीढ़ी है।

01.01.86.. .. संकल्प और स्वरूप दोनों ही समान हो। यही महानता है। इस महानता में 'जो ओटे सो अर्जुन'। वह कौन बनेगा? सब समझते हैं हम बनेंगे। दूसरे अर्जुन बनते है या भीम बनते हैं उसको नहीं देखना है। मुझे नम्बरवन अर्थात् अर्जुन बनना है। हे अर्जुन ही गाया हुआ है। हे भीम नहीं गाया हुआ है। अर्जुन की विशेषता सदा बिन्दी में स्मृति स्वरूप बन विजयी बनना है। ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनने वाला अर्जुन। सदा गीता ज्ञान सुनने और मनन करने वाला अर्जुन। ऐसा विदेही, जीते जी सब मरे पड़े हैं – ऐसे बेहद की वैराग वृत्ति वाले अर्जुन कौन

बनेंगे? बनना है कि सिर्फ बोलना है? नया वर्ष कहते हो, सदा हर सेकण्ड में नवीनता। मन्सा में, वाणी में, कर्म में, सम्बन्ध में नवीनता लाना।

18.01.86.. .. दीदी रूह-रूहान बहुत अच्छी कर रही थी। वह कहती है कि आपने सभी को बिना सूचना दिये क्यों बुला लिया। छुट्टी लेकर तैयार हो जाती। आप छुट्टी देते थे? बापदादा बच्चों से रूह-रूहान कर रहे थे – देह सहित देह के सम्बन्ध, देह के संस्कार सबके सम्बन्ध, लौकिक नहीं तो अलौकिक तो हैं। अलौकिक सम्बन्ध से, देह से, संस्कार से 'नष्टोमोहा' बनने की विधि, यही ड्रामा में नूंधी हुई है। इसलिए अन्त में सबसे नष्टोमोहा बन अपनी ड्यूटी पर पहुँच गई।

18.01.86.. .. आदि से सहयोगी बच्चों को एक्स्ट्रा सहयोग मिलता है। इसलिए कुछ अपनी मेहनत कम भी दिखाई देती हो लेकिन बाप की मदद उस समय अन्त में एक्स्ट्रा मार्क्स दे पास विद आनर बना ही देती है। वह गुप्त होता है – इसलिए क्वेश्चन उठते हैं- कि क्या ऐसा हुआ? लेकिन यह सहयोग का रिटर्न है। जैसे कहावत है ना – 'आईवेल में काम आता है'। तो जो दिल से सहयोगी रहे हैं उन्हों को ऐसे समय पर एक्स्ट्रा मार्क्स रिटर्न के रूप में प्राप्त होती है। समझा – इस रहस्य को? इसलिए नष्टोमोहा की विधि से एक्स्ट्रा मार्क्स की गिफ्ट से सफलता को प्राप्त कर लिया। समझा – पूछते रहे हो ना कि आखिर क्या है? सो आज यह रूह-रूहान सुना रहे हैं।

20.1.86.. .. अभी बहुत काल के पुरुषार्थ का समय समाप्त हो रहा है और बहुत काल की कमज़ोरी का हिसाब शुरू हो रहा है। समझ में आया! इसलिए यह विशेष परिवर्तन का समय है। अभी वरदाता है फिर हिसाब-किताब करने वाले बन जायेंगे। अभी सिर्फ स्नेह का हिसाब है। तो क्या करना है! स्मृति स्वरूप बनो। स्मृति स्वरूप स्वत: ही नष्टोमोहा बना ही देगा। अभी तो मोह की लिस्ट बड़ी लम्बी हो गई है। एक स्व की प्रवृत्ति, एक दैवी परिवार की प्रवृत्ति, सेवा की प्रवृत्ति, हद के प्राप्तियों की प्रवृत्ति – इन सभी से नष्टोमोहा अर्थात् न्यारा बन प्यारा बनो। मैं-पन अर्थात् मोह। इससे नष्टोमोहा बनो। तब बहुतकाल के पुरुषार्थ से बहुतकाल के प्रालब्ध की प्राप्ति के अधिकारी बनेंगे। बहुतकाल अर्थात् आदि से अन्त तक की प्रालब्ध का फल। वैसे तो एक-एक प्रवृत्ति होने का राज़ भी अच्छी तरह से जानते हो और भाषण भी अच्छा कर सकते हो। लेकिन निवृत्त होना अर्थात् नष्टोमोहा होना। समझा!

16.03.86.. .. देह, देह के सम्बन्ध, देह-संस्कार, व्यक्ति या वैभव, वायब्रेशन, वायुमण्डल सब होते हुए भी आकर्षित न करे। इसी को ही कहते हैं – 'नष्टोमोहा समर्थ स्वरूप'। तो ऐसी प्रैक्टिस है? लोग चिल्लाते रहें और आप अचल रहो। प्रकृति भी, माया भी सब लास्ट दाँव लगाने लिए अपने तरफ कितना भी खींचे लेकिन आप न्यारे और बाप के प्यारे बनने की स्थिति में लवलीन रहो। इसको कहा जाता – देखते हुए न देखो। सुनते हुए न सुनो। ऐसा अभ्यास हो। इसी को ही 'स्वीट साइलेन्स' स्वरूप की स्थिति कहा जाता है। फिर भी बापदादा समय दे रहा है। अगर कोई भी कमी है तो अब भी भर सकते हो। क्योंकि बहुतकाल का हिसाब सुनाया। तो अभी थोड़ा चांस है। इसलिए इस प्रैक्टिस की तरफ फुल अटेन्शन रखो।

09.04.86.. .. सन्तुष्टमणियाँ बन सन्तुष्टता की सेवा में नम्बर आगे जाना। 'विघ्न विनाशक' टाइटिल के सेरीमनी में इनाम लेना। समझा! इसी को ही कहा जाता है – **'नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप'**। तो 18 वर्ष की समाप्ति का यह विशेष सम्पन्न बनने का अध्याय स्वरूप में दिखाओ। इसको ही कहा जाता – **'बाप समान बनना'**।

18.1.87.. .. गीता-ज्ञान का **पहला पाठ –** अशरीरी आत्मा बनो और **अन्तिम पाठ –** नष्टोमोहा, स्मृतिस्वरूप बनो। तो पहला पाठ है विधि और अन्तिम पाठ है विधि से सिद्धि।

14.10.87.. .. पाँच हज़ार वर्ष के हिसाब से यह छोटा-सा जन्म कुछ दिनों के हिसाब में हुआ ना। तो थोड़े से दिनों में इतना लम्बे समय का हिसाब पूरा करना है, इसलिए कहते हैं श्वांस-श्वांस सिमरो। भक्त सिमरण करते हैं, आप स्मृति-स्वरूप बनते हो। तो आपको सेकण्ड भी फ़ुर्सत है? कितनी बड़ी प्रवृत्ति है! इसी प्रवृत्ति के आगे वह छोटी-सी प्रवृत्ति आकर्षित नहीं करेगी और सहज, स्वत: ही देह सहित देह के सम्बन्ध और देह के पदार्थ वा प्राप्तियों से नष्टोमोहा, स्मृति-स्वरूप हो जायेंगे। यही लास्ट पेपर माला के नम्बरवार मणके बनायेगा।

04.12.91.. .. अन्तिम पेपर का क्वेश्चन ही यह आना है – नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप। तो अन्तिम पेपर के लिए तो सभी तैयार होना ही है । रिहर्सल करेंगे ना, ज़ोन हेड को भी चेंज करेंगे। पाण्डवों को भी चेंज करेंगे। आपका है ही क्या ? बापदादा ने दिया और बापदादा ने लिया। अच्छा- सभी एवररेडी हैं इसलिए अभी सिर्फ हाथ उठाने की मुबारक हो।

03.10.92.. .. एवररेडी वह है जो नष्टोमोहा स्मृति-स्वरूप है। या उस समय याद आयेगा कि पता नहीं बच्चे क्या कर रहे होंगे, कहाँ होंगे, छोटे-छोटे पोत्रों का क्या होगा? यहीं विनाश हो जाये तो याद आयेंगे? पति का भी कल्याण हो जाये, पोत्रे का भी कल्याण हो जाये, उन्हों को भी यहाँ ले आयें–याद आयेगा? बिजनेस का क्या होगा, पैसे कहाँ जायेंगे? रास्ते टूट जायें फिर क्या करेंगे? देखना, अचानक पेपर होगा। सदा न्यारा और प्यारा रहना–यही बाप समान बनना है। जहाँ हैं, जैसे हैं लेकिन न्यारे हैं। यह न्यारापन बाप के प्यार का अनुभव कराता है। जरा भी अपने में या और किसी में भी लगाव न्यारा बनने नहीं देगा। न्यारे और प्यारेपन का अभ्यास नम्बर आगे बढ़ायेगा। इसका सहज पुरुषार्थ है निमित्त भाव। निमित्त समझने से निमित्त बनाने वाला याद आता है। मेरा परिवार है, मेरा काम है। नहीं,मैं निमित्त हूँ। निमित्त समझने से पेपर में पास हो जायेंगे।

एवररेडी, नष्टोमोहा, स्मृति-स्वरूप–इसमें पास हो?

30.11.92.. नष्टोमोहा बनने की यही सहज युक्ति है कि मेरा घर नहीं समझो। मेरा घर है, मेरा परिवार है– तो नष्टोमोहा नहीं हो सकेंगे। सेवा-स्थान है, घर मधुबन है। तो सदा घर में रहते हो या सेवा-स्थान पर रहते हो? सेवा-स्थान समझने से नष्टोमोहा हो जायेंगे। मेरी जिम्मेवारी, मेरा काम है, मेरा विचार यह है, मेरी फर्जअदाई है...–ये सब मोह उत्पन्न करता है। सेवा के निमित्त हूँ। जो सच्चा सेवाधारी होता है उसकी विशेषता क्या होती है? सेवाधारी सदा अपने को निमित्त समझेगा, मेरा नहीं समझेगा। और जितना निमित्त भाव होगा उतना निर्मान होंगे, जितना निर्मान होंगे उतना निर्माण का कर्तव्य कर सकेंगे। निमित्त भाव नहीं तो देह-भान से परे निर्मान बन नहीं सकेंगे। इसलिए सेवाधारी अर्थात् समर्पणता। सेवाधारी में अगर समर्पण भाव नहीं तो कभी सेवा सफल नहीं हो सकती, मेरापन का भाव सफलता नहीं दिलायेगा।

25.11.93.. .. सहज नष्टोमोहा होना यह बहुत काल के योग के विधि की सिद्धि है। तो नष्टोमोहा, सहज मृत्यु का खेल देखा। इस खेल का क्या रहस्य देखा? देह के स्मृति से भी उपराम। चाहे वाधि द्वारा, चाहे विधि द्वारा - और कोई भी आकर्षण अन्त समय आकर्षित नहीं करे। इसको कहा जाता है सहज चोला बदली करना। तो क्या करना है? नष्टोमोहा, सेन्टर भी याद नहीं आये। (टीचर्स को देखते हुए) ऐसे नहीं कोई जिज्ञासू याद आ जाये, कोई

सेन्टर की वस्तु याद आ जाये, कुछ किनारे किया हुआ याद आ जाये ...। सबसे न्यारे और बाप के प्यारे। पहले से ही किनारे छुटे हुए हों। कोई किनारे को सहारा नहीं बनाना है। सिवाए मंज़िल के और कोई लगाव नहीं हो।

02.12.93.. .. सहज नष्टोमोहा होना यह बहुत काल के योग के विधि की सिद्धि है। तो नष्टोमोहा, सहज मृत्यु का खेल देखा। इस खेल का क्या रहस्य देखा? देह के स्मृति से भी उपराम। चाहे वाधि द्वारा, चाहे विधि द्वारा - और कोई भी आकर्षण अन्त समय आकर्षित नहीं करे। इसको कहा जाता है सहज चोला बदली करना। तो क्या करना है? नष्टोमोहा, सेन्टर भी याद नहीं आये। (टीचर्स को देखते हुए) ऐसे नहीं कोई जिज्ञासू याद आ जाये, कोई सेन्टर की वस्तु याद आ जाये, कुछ किनारे किया हुआ याद आ जाये ...। सबसे न्यारे और बाप के प्यारे। पहले से ही किनारे छुटे हुए हों। कोई किनारे को सहारा नहीं बनाना है। सिवाए मंज़िल के और कोई लगाव नहीं हो।

नष्टोमोहा अर्थात् सर्व से न्यारे और बाप के प्यारे। तो सदा क्या याद रखेंगे? हम ऊंचे ते ऊंचे भाग्यवान हैं। सदा अपने भाग्य का सितारा चमकता हुआ दिखाई दे।

31.12.93.. .. तो नष्टोमोहा अर्थात् न्यारा और प्यारा। रहते हुए भी न्यारा। तो मातायें सभी हिम्मत वाली हो? इस वर्ष में मोह नहीं आयेगा? मोह तो आधा कल्प का साथी है, ऐसे कैसे चला जायेगा! देख लिया ना नष्टोमोहा बनने से क्या होता और मोह रखने से क्या होता? तो देखेंगे अभी इस नो वर्ष में क्या कमाल करते हैं?

18.01.94... नष्टोमोहा की निशानी क्या होगी? कभी कमाने में, धन सम्भालने में दु:ख की लहर नहीं आयेगी। कभी कम, कभी ज़ाादा में दु:ख की लहर आती है? पोत्रा-धोत्रा थोड़ा बीमार हो गया तो दु:ख की लहर आती है? नष्टोमोहा हैं? कुछ भी हो जाये बेफ़िक्र हो? नष्टोमोहा अर्थात् दु:ख और अशान्ति का नाम-निशान नहीं। ऐसे हो या बनना है? तो एक बल, एक भरोसा अर्थात् ज़रा भी दु:ख के लहर की हलचल नहीं हो। सदा ये स्मृति स्वरूप हो कि सदा एक बल, एक भरोसे वाले हैं और आगे भी सदा रहेंगे। खुशी रहे कि मैं ही था, मैं ही हूँ और मैं ही बनूँगा।

18.01.96.. .. ये 18 जनवरी का दिवस ब्रह्मा बाप के सम्पूर्ण नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप का रहा। जैसे गीता के 18 अध्याय का सार है – भगवान ने अर्जुन को नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बनाया। तो ये 18 का यादगार है कि ब्रह्मा बाप कितना ही बच्चों के प्रति अति स्नेही रहे, जो बच्चे अनुभवी हैं कि सदा सेवा के निमित्त बच्चों को कितना याद करते – अनुभव है ना! मोह नहीं रहा लेकिन दिल का प्यार रहा। क्योंकि मोह उसको कहा जाता है जिसमें अपना स्वार्थ हो। तो ब्रह्मा बाप का अपना स्वार्थ नहीं रहा, लेकिन बच्चों में सेवा अर्थ अति स्नेह रहा। फिर भी साथ रहते, बच्चों को सामने देखते भी कोई देह के रूप में याद सताई नहीं। एकदम न्यारा और प्यारा रहा। इसलिए कहा जाता है स्मृति स्वरूप नष्टोमोहा। कोई मेरापन नहीं रहा, देहभान से भी नष्टोमोहा। तो ये दिवस ऐसे फालो फादर का पाठ पढ़ाने का दिवस रहा।

18.01.96.. .. परिस्थिति आपको विशेष दो शक्तियों के अनुभवी बनाती है – एक–सहनशक्ति, न्यारापन, नष्टोमोहा और दूसरा–सामना करने की शक्ति का पाठ पढ़ाती है जिससे आगे के लिए आप सीख लो कि ये परिस्थिति, ये दो पाठ पढ़ाने आई है।

30.7.98.. .. बाबा ने देखो बार-बार इशारा दिया है कि अचानक कुछ होगा, बच्चे रेडी रहो। तो सभी अपने दिल से पूछो कि मैं इतना नष्टोमोहा हुआ हूँ? मेरे सर्व सम्बन्ध एक बाबा से हैं या किसी देहधारी में बुद्धि जाती है? घर चलने की तैयारी है या अभी यहाँ बैठने की, रहने की इच्छा है? घर चलने की तैयारी होगी तो बुद्धि सदा

उपराम रहेगी। कार्य करते हुए भी न्यारे और प्यारे होंगे। ऐसे ही अनुभव होगा जैसे मैं निमित्त मात्र कार्य कर रहा हूँ लेकिन उपराम हूँ, यह अवस्था न केवल आपको ही अनुभव होगी लेकिन आस-पास वालों को भी अनुभव होगी।

24.06.2000.. .. जितना समेटने की शक्ति आयेगी उतना नष्टोमोहा बनेंगे। एक में ही बुद्धि जायेगी।

18.3.2001.. .. मोहजीत परिवार की कहानी सुनाते हैं कि चपरासी सहित, सर्वेन्ट सहित जिससे भी पूछा वह 'नष्टोमोहा' की झलक वाला दिखाई दिया। ऐसे सेवाकेन्द्र का हर एक छोटाबड़ा चाहे सफाई करने वाला हो, चाहे भोजन बनाने वाला हो, चाहे किसी भी ड्युटी वाला हो लेकिन उसका चेहरा, उसके मन की स्थिति ''सन्तुष्टता और प्रसन्नता'' सम्पन्न हो। हर एक के चलन और चेहरे से सन्तुष्टता और प्रसन्नता ही दिखाई दे।

17-03-2003 **.. ..**कई बच्चे पूछते हैं - इस वर्ष में क्या विशेष लक्ष्य रखें? तो बापदादा कहते हैं सदा देही-अभिमानी, स्मृति स्वरूप भव। जीवनमुक्ति तो प्राप्त होनी ही है लेकिन जीवनमुक्त होने के पहले मेहनत मुक्त बनो। यह स्थिति समय को समीप लायेगी और आपके सर्व विश्व के भाई और बहनों को दु:ख, अशान्ति से मुक्त करेगी। आपकी यह स्थिति आत्माओं के लिए मुक्तिधाम का दरवाजा खोलेगी। तो अपने भाई बहनों के ऊपर रहम नहीं आता! कितना चारों ओर आत्मायें चिल्ला रही हैं तो आपकी मुक्ति सर्व को मुक्ति दिलायेगी। यह चेक करो - नेचरल स्मृति सो समर्थ स्वरूप कहाँ तक बने हैं? समर्थ स्वरूप बनना ही व्यर्थ को सहज समाप्त कर देगा। बार-बार मेहनत नहीं करनी पड़ेगी।

7. निद्राजीत

2.2.69 .. ..जैसे साकार में मिलने का समय मालूम होता था तो नींद नहीं आती थी और समय से पहले ही बुद्धि द्वारा इसी अनुभव में रहते थे। वैसे अब भी अव्यक्त मिलन का अनुभव प्राप्त करना चाहते हो तो उसका बहुत सहज तरीका यह है। अव्यक्त स्थिति में स्थित होकर रूह-रूहान करो। तो अनु-भव करेंगे कि सचमुच बाप के साथ बातचीत कर रहे हैं। और इसी रूह-रूहान में जैसे सन्दे-शियों को कई दृश्य दिखाते हैं वैसे ही बहुत गुह्य, गोपनीय रहस्य बुद्धियोग से अनुभव करेंगे। लेकिन एक बात यह अनुभव करने के लिए आवश्यक है। वह कौनसी? मालूम है? अमृतवेले भी अव्यक्त स्थिति में वही स्थित हो सकेंगे जो सारा दिन अव्यक्त स्थिति में और अन्तर्मुख स्थिति में स्थित होंगे। वही अमृतवेले यह अनुभव कर सकेंगे। इसलिए अगर स्नेह है और मिलने की आशा है तो यह तरीका बहुत सहज है। करने वाले कर सकते हैं और मुलाकात का अनोखा अनुभव प्राप्त कर सकते हैं।

25.10.69.. ..विशेष स्नेह है तब तो ऐसे समय भी आये हैं। त्याग भी किया है ना। अपनी नींद का त्याग किया है तो यह भी स्नेह दिखाया। बापदादा अभी स्नेह का रिटर्न देते हैं। अभी जाने के बाद रिजल्ट देखेंगे।

18.7.71.. .. अमृतवेले होता है बालक सो मालिकपन का रूप। फिर कौनसा रूप होता है? गॉडली स्टूडेन्ट लाइफ। फिर तीसरा रूप है सेवाधारी का। यह तीनों रूप सारे दिन में धारण करते कर्त्तव्य करते चलते हो? रूप यह तीन होते हैं। और रात को फिर कौनसा रूप होता है? अन्त में रात को सोते समय स्थिति होती है अपने को चेक करने की और साथ-साथ अपने को वाणी से परे ले जाने वाली स्थिति भी होती है। उस स्थिति में स्थित हो एक दिन को समाप्त करते हो, फिर दूसरा दिन शुरु होता है। तो वह स्थिति ऐसी होनी चाहिए जैसे नींद में इस दुनिया की कोई भी बात, कोई भी आवाज़, कोई भी आकर्षण नहीं होता है, जब अच्छी नींद में होते हो, स्वप्न की दूसरी बात है। इस रीति से सोने से पहले ऐसी स्थिति बनाकर फिर सोना चाहिए। जैसे अन्त में आत्माएं जो संस्कार ले जाती हैं वही मर्ज होते हैं, फिर वही संस्कार इमर्ज होंगे। इस रीति से यह भी दिन को जब समाप्त करते हो तो संस्कार न्यारे और प्यारे पन के हो गए ना। इसी संस्कार से सो जाने से फिर दूसरे दिन भी इन संस्कारों की मदद मिलती है। इसलिए रात के समय जब दिन को समाप्त करते हो तो याद -अग्नि से वा स्मृति की शक्ति से पुराने खाते को समाप्त अथवा खत्म कर देना चाहिए। हिसाब चुक्तू कर देना चाहिए। जैसे बिज़नेसमैन भी अगर हिसाब-किताब चुक्तू न रखते तो खाता बढ़ जाता और कर्ज़दार हो जाते हैं। कर्ज़ को मर्ज़ कहते हैं। इसी रीति से अगर सारे दिन के किये हुए कर्मों का खाता और संकल्पों का खाता भी कुछ हुआ, उसको चुक्तू कर दो। दूसरे दिन के लिए कुछ कर्ज़ की रीति न रखो। नहीं तो वही मर्ज़ के रूप में बुद्धि को कमज़ोर कर देता है। रोज़ अपना हिसाब चुक्तू कर नाा दिन, नई स्मृति रहे। ऐसे जब अपने कर्मों और संकल्पों का खाता क्लीयर रखेंगे तब सम्पूर्ण वा सफलतामूर्त बन जायेंगे। अगर अपना ही हिसाब चुक्तू नहीं कर सकते तो दूसरों के कर्मबन्धन वा दूसरों के

हिसाब-किताब को कैसे चुक्तू करा सकेंगे। इसलिए रोज़ रात को अपना रजिस्टर साफ होना चाहिए। जो हुआ वह योग की अग्नि में भस्म करो। जैसे काँटों को भस्म कर नाम-निशान गुम कर देते हो ना। इस रीति अपने नालेज की शक्ति और याद की शक्ति, विल-पावर और कन्ट्रोलिंग पावर से अपने रजिस्टर को रोज़ साफ रखना चाहिए। जमा न हो। एक दिन के किये हुए व्यर्थ संकल्प वा व्यर्थ कर्म की दूसरे दिन भी लकीर न रहे अर्थात् कर्ज़ा नहीं रहना चाहिए। बीती सो बीती, फुल स्टाप। ऐसे रजिस्टर साफ रखने वाले वा हिसाब को चुक्तू करने वाले सफलतामूर्त सहज बन सकते हैं। समझा? सारे दिन का चेकर बनना।

21.6.72.. .. जैसे साकार बाप को प्रत्यक्ष रूप में देखो – तो रात का नींद का समय अथवा अपने शरीर के रेस्ट का समय भी जादा कहां देते थे? विश्व-कल्याण के कर्त्तव्य में, सर्व आत्माओं के कल्याण प्रति, ना कि अपने प्रति। वाणी द्वारा भी सदा विश्व-कल्याण के संकल्प ही करते थे। इसको कहा जाता है विश्व कल्याणकारी। तो यह मन के विघ्नों से युद्ध करने में ही समय देना – यह तो अपने प्रति व्यर्थ समय देना हुआ ना। इनको आवश्यक नहीं, व्यर्थ कहेंगे। बाप ने आवश्यक समय भी कल्याण प्रति दिया और बच्चे व्यर्थ समय अपने प्रति लगाते रहें तो फालो फादर हुआ? बाप समान बनना है ना। तो सदा यह चेक करो कि जादा से जादा तो क्या लेकिन सदा ही समय और संकल्प विश्व-कल्याण प्रति लगाते हैं? ऐसे सदा विश्व-कल्याण के निमित्त समय और संकल्प लगाने वाले क्या बनेंगे? विश्व-महाराजन्।

19.9.72.. .. आपके जड़ चित्रों के आगे घंटी बजाते हैं। उठाते भी हैं घंटी बजा कर, फिर सुलाते भी हैं घंटी बजा कर। यह भी समय की सूचना – घंटियां बजती हैं। क्योंकि जैसे शास्त्रवादियों ने लम्बा- चौड़ा टाइम बता कर सभी को सुला दिया है। खूब अज्ञान नींद में सभी सो गो हैं क्योंकि समझते हैं अभी बहुत समय पड़ा है। तो यहां फिर जो दैवी परिवार की आत्माएं हैं उन्हों को चलते-चलते माया कई प्रकार के रूप-रंग, रीति-रस्म के द्वारा अलबेला बना कर समय की पहचान से दूर, पुरुषार्थ के ढीलेपन में सुला देती है। जब कोई अलबेला होता है तो आराम से रहता है। ज़िम्मेवारी होने से अटेंशन रहता है कि हमको टाइम पर उठना है, यह करना है। अगर कोई प्रोग्राम में नहीं तो अलबेला ही सो जावेगा। तो यह भी अलबेलापन आ जाता है। जब कोई अलबेले हो ढीले पुरुषार्थ के नींद के नशे में मस्त हो जाते हैं तो क्या करना पड़ता है? उनको हिलाना पड़ता है, हलचल करनी पड़ती है कि उठ जायें। जैसी-जैसी नींद होती है वैसा किया जाता है। बहुत गहरी नींद होती है तो उसको हिलाना पड़ता है लेकिन कोई की हल्की नींद होती है तो थोड़ी हलचल करने से भी उठ जाता है। अभी हिलाया नहीं है, थोड़ी हलचल हुई है। दूसरी चीज को निमित्त रख उसको हिलाया जाता है। तो जागृति हो जाती है। यह भी ड्रामा में निमित बनी हुई जो सूचना-स्वरूप मूर्तियां हैं, उन्हों को थोड़ा हिलाया, हलचल की तो सभी जाग गये। क्योंकि हल्की नींद है ना। जागे तो ज़रूर लेकिन जागने के साथ रड़ी तो नहीं की? ऐसे होता है, कोई को अचानक जगाया जाता है तो वह घबरा जाता है – क्या हुआ? तो कोई यथार्थ रूप से जागते हैं, कोई कुछ घबराने बाद होश में

आते हैं। लेकिन यह होना न चाहिए, ज़रा भी चेहरे पर रूपरेखा घबराने की न आनी चाहिए। आवाज में भी चेंज न हो। आवाज में भी अगर अन्तर आ जाता है वा चेहरे में भी कुछ चेंज आ जाती है तो इसको भी पास कहेंगे? यह तो कुछ सदा श्रीमतरूपी हाथ और साथ का अनुभव करो तो विघ्नों से घबरायेंगे नहीं।

17.5.73 ...अपनी उन्नति के लिए रात का समय तो सभी को है। जब विशेष सर्विस प्लान प्रैक्टिकल में लाते हो तो क्या उन दिनों में निद्राजीत नहीं बनते हो? अपनी उन्नति के प्रति अगर निद्रा का भी त्याग किया तो क्या समय नहीं मिल सकता है? यहाँ तो और कार्य ही क्या है? जैसे और प्लान्स बनाते हो वैसे अपनी उन्नति के प्रति भी कोई विशेष प्लान प्रैक्टिकल में लाना चाहिए।

8.7.73.. ..अमृत वेले अर्थात् आदि काल। उस समय अपने को चेक करो कि हम आदिकाल में आने वाले हैं या कुछ जन्म पीछे आने वाले हैं? यहाँ के घण्टे वहाँ के जन्म। जितने यहाँ घण्टे कम उतने वहाँ जन्म कम हो जायेंगे। कमजोरी इसी की है। बैठ तो जाते हैं सभी। उस समय की सीन देखो तो बड़ा मज़ा आयेगा। उस समय का दृश्य ऐसा होता है जैसे कि जयपुर में एक ही हठयोगियों का म्यूजियम (Museum) है। भिन्न-भिन्न प्रकार के हठयोग दिखाये हुए हैं। तो अमृत वेले भी उस समय की सीन ऐसी होती है, कोई हठ से नींद को कन्ट्रोल करते तो कोई मज़बूरी से टाइम पास करते और कोई उल्टे लटके हुए होते हैं। अर्थात् जिस कार्य के लिये बैठते हैं वह उनसे नहीं होता। जैसे उन हठयोगियों को दिखाते हैं कि कोई एक टांग पर, कोई उल्टे और कोई कैसे होते हैं। यहाँ भी उस समय का दृश्य ऐसा होता है। कोई एक सेकेण्ड तो अच्छा व्यतीत करते हैं, फिर दूसरा सेकेण्ड देखो तो एक टांग पर ठहरते-ठहरते तो दूसरी टांग, फिर गिर जाती। सोचते हैं आज के दिन कुछ जमा करेंगे परन्तु होता नहीं है। वह सीन भी देखने की होती है। कोई फिर सोते-सोते भी योग करते हैं। जैसे वह हठ करते हैं, काँटों पर सोते हैं। यहाँ शेष सइया (शैया) पर होते। यहाँ के उस समय का पोज़ भी वण्डर-फुल होता है। इसलिये सुनाया कि अमृत वेले के महत्व को जानने और उन्हें जानकर जीवन में लाने से महान् बन सकते हो। अगर अमृतवेले अपना प्लान नहीं बनावेंगे तो प्रैक्टिकल में क्या लायेंगे?

24.06.74.. ..जो महारथी हैं अर्थात् 'पास विद ऑनर' होने वाले हैं, तो उनकी नींद का टाइम भी योग-युक्त स्थिति में गिना जाता है। उनकी स्टेज ऐसी होगी, जैसे कि पार्ट समाप्त कर वह स्वयं परमधाम में हैं और उनको योग की ही महसूसता होगी। जैसे गायन सिर्फ़ योगी ही नहीं, बल्कि राजयोगी बनना है। है ना कि ब्रह्मा से ब्राह्मण बने। यहाँ तो ब्राह्मण से देवता बनते हैं। लेकिन यह ब्रह्मा से ब्राह्मण अर्थात् रात को सोते समय बस यही संकल्प होगा, कि अब मैं अपना पार्ट पूरा कर कर्मइन्द्रियों से अलग होकर जाता हूँ अपने पारब्रह्म में और जब अमृत वेले उठेंगे, तो महसूस करेंगे कि मैंने यह आधार लिया है, पार्ट बजाने के लिए, तो गोया ब्रह्म से ब्राह्मण बनकर आये हैं। यहाँ से तो जाकर वे सीधे देवता बनेंगे। लेकिन यह इस समय के ही अष्ट रत्नों का गायन है। जैसे साकार में बाप और माँ सरस्वती को देखा–उन्हें फर्स्ट, सेकेण्ड नम्बर किस आधार पर मिला? उनकी ज्यादा समय की

कमाई तो नींद की ही जमा हुई ना? भले वे सोते भी थे, लेकिन ऐसा अनुभव करते थे कि नींद में नहीं हैं बल्कि हम तो जाग रहे हैं और फिर उनकी थकावट भी दूर हो जाती थी क्योंकि जब आत्मा कमाई में जागृत होती है, तो उसे थकावट भी नहीं होती। तो जैसे मां-बाप ने नींद को योग में बदला तो आप भी फर्स्ट ग्रेड के महारथियों को ऐसा ही फॉलो करना है। अब ऐसा अनुभव तो करते हो कि नींद कम होती जाती है, लेकिन ऐसी अवस्था बनानी है। नींद को योग में बदलो और फॉलो फादर करो। सारा दिन तो वे आपके समान ही साधारण थे ना? यह है फर्स्ट ग्रेड की निशानी–अष्ट रत्नों में आने वालों की। दूसरे हैं सौ वाले और फिर तीसरे हैं 16108 में आने वाले। लेकिन यहाँ महारथी तो सभी हैं, घोड़े सवार कोई नहीं है। लेकिन फर्स्ट, सेकेण्ड और थर्ड नम्बर होते हैं।

महारथी वह, जिसका नींद का टाइम भी योगयुक्त स्थिति में हो।

15.9.74.. .. अभी तो फिर भी रात और दिन में आराम करने का टाइम मिलता है, लेकिन फिर तो यह रेस्ट (rest) लेना, यह भी समाप्त हो जायेगा। लेकिन जितना अव्यक्त लाइट रूप में स्थित होंगे, उतना ही शरीर से परे का अभ्यास होने के कारण यदि दो-चार मिनट भी जैसे कि अशरीरी बन जावेंगे, तो मानों जैसे कि चार घण्टे का आराम कर लिया। ऐसा समय आयेगा जो कि नींद के बजाए चार-पाँच मिनट अशरीरी बन जावेंगे, जैसे कि नींद से शरीर को खुराक मिल जाती है, वैसे ही यह भी खुराक मिल जायेगी। शरीर तो पुराने ही रहेंगे। हिसाब-किताब पुराना तो होगा ही। सिर्फ उसमें यह एडीशन (addition; बढ़ोतरी) होगी। लाइट-स्वरूप के स्मृति को मजबूत करने से हिसाब-किताब चुक्त करने में भी लाइट रूप हो जावेंगे। जैसे इन्जेक्शन लगाने से पाँच मिनट में ही फर्क पड़ जाता है, वैसे ही नींद की गोली लेने से भी परेशानी समाप्त हो जाती है। आप भी ऐसे ही समझो कि यह हम नींद की खुराक लेते हैं। ऐसी स्टेज लाने के लिये ही यह अभ्यास है।

18.1.75.. ..संगमयुग के ब्राह्मण के संस्कार जो त्याग मूर्त के हैं, वह कम इमर्ज (Emerge) होते हैं। त्याग-बिना भाग्य नहीं बनता अच्छा, कर लेंगे, देखा जायेगा – यह आराम पसन्दी के संस्कार हैं। ''ज़रूर करूंगा'' , ये ब्राह्मणपन के संस्कार हैं। लौकिक पढ़ाई में जिसको चिन्ता रहती है, वह पास होता है। उसकी नींद फिट जाती है। जो आराम-पसन्द हैं वे पास क्या होंगे? अभी सोचते हो कि प्रैक्टिकल करना है। चिन्ता लगनी चाहिए, शुभ चिन्तन, सम्पूर्ण बनने की चिन्ता, कमजोरी को दूर करने की चिन्ता और प्रत्यक्ष फल देने की चिन्ता।

10.9.75.. .. साकार बाप की विशेष धारणा क्या थी? जागती-ज्योति बनने के लिये मुख्य धारणा चाहिए 'अथक' बनने की। जब थकावट होती है तो नींद आती है – साकार बाप में अथक-पन की विशेषता सदा अनुभव की। ऐसे फॉलो फादर करने वाले सदा जागती-ज्योति बनते हैं। यह भी चेक करो कि चलते-चलते कोई भी प्रकार की थकावट अज्ञान की नींद में सुला तो नहीं देती? इसीलिये कल्प पहले की यादगार में भी निद्राजीत बनने का विशेष गुण गाया हुआ है। अनेक प्रकार की निद्रा से निद्राजीत बनो। यह भी लिस्ट निकालना कि किस-

किस प्रकार की निद्रा निद्राजीत बनने नहीं देती जैसे निद्रा में जाने से पहले निद्रा की निशानियाँ दिखाई देती है उस नींद की निशानी है उबासी और अज्ञान नींद की निशानी है उदासी। इसी प्रकार निशानियाँ भी निकालना – इसकी दो मुख्य बातें हैं। एक आलस्य, दूसरा अलबेलापन। पहले यह निशानियाँ आती हैं – फिर नींद का नशा चढ़ जाता है। इसलिये इस पर अच्छी तरह से चैकिंग (जाँच) करना। चैकिंग के साथ चेन्ज (परिवर्तन) करना। सिर्फ चैकिंग नहीं करना – चैकिंग और चेन्ज दोनों ही करना, समझा? अच्छा!

23.10.75.. ..माया की चतुराई को अब तक बच्चे परख नहीं सके हैं। इन्तज़ार की मीठी नींद में माया सुला रही है और बच्चे आधे कल्प के सोने के संस्कार-वश हो कर कोई तो सेकेण्ड का झुटका खाते हैं और फिर होश में आते हैं, फिर इन्तज़ाम करने के जोश में आ जाते हैं और कोई तो कुछ मिनटों के लिये सो भी जाते हैं, फिर जोश और होश में आते हैं। तीसरी प्रकार के बच्चे काफी आराम से सोते-सोते बीच-बीच मे ऑख खोल कर देखते रहते हैं कि अभी कुछ हुआ, अभी तक तो कुछ नहीं हुआ है। जब होगा तब देखा जायेगा। यह दृश्य देख क्या हंसी नहीं आयेगी? तीसरा नेत्र मिलते हुए भी माया को परख नहीं सकते, इसलिये माया को अच्छी तरह से परखने के लिये परख-शक्ति को विशेष रूप से अपने में धारण करो।

02.05.77.. .. विश्व सेवाधारी का विशेष लक्षण क्या है? 'विश्व सेवाधारी अर्थात् निर्माण और अथक।' सदा जागती ज्योति होकर रहेगा। जागती ज्योति माना केवल निद्राजीत नहीं लेकिन सर्व विघ्न जीत। उसको कहते हैं जागती ज्योति। स्मृति रहना भी जागना है।

13.1.78.. .. जैसे कोई विशेष कमाई की सीज़न होती तो कमाई के बगैर रह नहीं सकते। नींद का भी समय त्याग देते। तो मधुबन में एक्स्ट्रा लाटरी है कमाई करने की। तपस्वीकुमार हो ना। तपस्वी की तपस्या सिर्फ बैठने के समय नहीं, तपस्या अर्थात् लगन, चलते-फिरते भोजन करते भी लगन है ना। एक की याद में, एक के साथ में भोजन स्वीकार करना यह तपस्या हुई ना। जो भी चान्स मिलता है उसको अच्छी तरह लेकर सम्पन्न बनो और दूसरों को भी बनाओ।

6.11.87.. ..पुराने बच्चों की आशा पूरी हो गई ना। पानी की सेवा करने वाले सेवाधारी बच्चों को आफरीन (शाबाश) है जो अनेक बच्चों की आशाओं को पूर्ण करने में रात-दिन सहयोगी हैं। निद्राजीत भी बन गये तो प्रकृतिजीत भी बन गये। तो मधुबन के सेवाधारियों को, चाहे प्लैन बनाने वाले, चाहे पानी लाने वाले, चाहे आराम से रिसीव करने वाले, भोजन समय पर तैयार करने वाले - जो भी भिन्नभिन्न सेवा के निमित्त हैं, उन सबको थैंक्स देना।

24.1.78.. .. आज बाप-दादा यह रूह रूहान कर रहे थे। आगे के लिए भी जैसे निरन्तर योगी का वरदान बाप द्वारा प्राप्त हुआ है वैसे ही निरन्तर सेवाधारी। सोते हुए भी सेवा हो। सोते हुए भी कोई देखे तो आपके चेहरे से

शान्ति, आनन्द के वायब्रेशन3 अनुभव करें। इसलिए कहा जाता है कि बड़ी मीठी नींद थी। नींद में भी अन्तर होता है। हर संकल्प में हर कर्म में सदा सर्विस समाई हुई हो इसको कहा जाता है निरन्तर सेवाधारी।

10.12.79.. .. जैसे भोजन खाना एक निजी कार्य है न, वह कभी भूलते हो क्या? आराम करना, यह निजी कार्य है ना, अगर एक दिन भी 2-4 घन्टे आराम कम करेंगे तो चिन्तन चलेगा नींद कम की। जैसे उसको इतना आवश्यक समझते हो वैसे स्वचिन्तन और स्व की चैकिंग, इसको आवश्यक कार्य न समझने के कारण अलबेलापन आता है। पहले वह आवश्यक समझते हो यह नहीं। अमृतबेले रोज़ इस आवश्यक कार्य को री-रीफ्रेश करो तभी सारा दिन उसका बल मिलेगा। अगर फिर भी अलबेलापन आता तो 3. अपने-आपको सज़ा दो। जो सबसे प्यारी चीज़ व कत्तव्य लगता हो उससे अपने को किनारा करो। पश्चाताप करना चाहिए। अभी पश्चाताप कर लेंगे तो पीछे नहीं करना पड़ेगा। 4. रोज़ अमृतबेले अपनी महिमा, बाप की महिमा, अपना कर्त्तव्य, बाप का कर्त्तव्य रिवाइज़ करो। एक निजी नियम बनाओ। अलबेलापन तब आता है जब सिर्फ़ डायरेक्शन समझा जाता, नियम नहीं बनाते। जैसे दफतर में जाना जीवन का नियम है तो जाते हो ना? ऐसे नीज-नीज को नियम दो। अमृतबेले उठकर अपने नियम को दोहराओ। मेरे जीवन की क्या विशेषतायें हैं। ब्राह्मण जीवन के क्या नियम हैं। और हर घण्टे चैंकिग करो कि कहाँ तक नियम को अपनाया है। हर समय बार-बार चेकिंग करो, सिर्फ़ रात को नहीं।

28.12.79.. .. सर्विसएबुल कभी भी यह नहीं सोचेंगे कि सर्विस का टाइम नहीं मिलता, चान्स नहीं मिलता। अगर और कोई टाइम न भी हो तो नींद के समय भी सेवा कर सकते हो। ऑलराउण्ड सेवाधारी अर्थात सदा सर्विसएबुल।

1.2.80.. .. मधुबन वाले तो है ही 'चुल पर सो दिल पर', गर्म-गर्म तो मधुबन वालों को मिलता है। सेवा में अथक बनकर अच्छा सबूत दे रहे हैं। मैजॉरिटी निन्द्राजीत का गुण भी अच्छा दिखा रहे हैं। रात की नींद को छोड़ भी सेवा में अच्छे सहयोगी हैं। जी हाज़िर और जी हुजूर का पार्ट बजा रहे हैं। इसलिए मधुबन के सेवाधारियों को नम्बरवार सेवा के सबूत दिखाने वालों को विशेष यादप्यार।

6.2.80.. .. जैसे दीपावली में जगह-जगह ज्योति जगाकर रखते हैं, सफाई भी करते हैं, आह्वान भी करते हैं। 'स्वच्छता, प्रकाश और आह्वान'। वह लक्ष्मी का आह्वान करते और यह लक्ष्मी के रचयिता का आह्वान है। तो ज्योति जगाकर बैठो तब तो बाप आयेंगे। कईयों को जगाते भी हैं फिर सो जाते हैं। आवाज भी अनुभव करते हैं फिर भी अलबेलेपन की नींद में सो जाते हैं। सतयुग में सोना ही सोना है। डबल सोना है। इसलिए अभी जागती ज्योति बनो। ऐसे नहीं कि सोने के संस्कार से वहाँ सोना मिलेगा। जो जागेगा वह सोना पायेगा। अलबेलेपन की नींद भी तब आती है जब विनाशकाल भूल जाते हो। भक्तों की पुकार सुनो। दुःखी आत्माओं के दुःख की पुकार सुनो। प्यासी आत्माओं के प्रार्थना की आवाज़ सुनो। तो कभी भी नींद नहीं आयेगी। तो इस वर्ष अलबेलेपन की

नींद को तलाक देना। तब भक्त लोग आप साक्षात्कार मूर्तियों का साक्षात्कार करेंगे। तो इस वर्ष साक्षात्कार मूर्त बन भक्तों को साक्षात्कार कराओ। ऐसे चक्रवर्ती बनो।

20.1.82.. ..प्रीत की रीति क्या हुई? – गाना और नाचना। जब दोनों से थक जाओ तो तीसरी बात है, सो जाना। यहाँ का सोना क्या है? सोना अर्थात् कर्म से डिटैच हो जाना। तो आप कर्मेन्द्रियों से डीटैच हो जाओ। अशरीरी बनना अर्थात् सो जाना। याद ही बापदादा की गोदी है। तो जब थक जाओ तो अशरीरी बन, अशरीरी बाप की याद में खो जाओ अर्थात् सो जाओ। जैसे शरीर से भी बहुत गाते और नाचते हैं और थक जाते हैं तो जल्दी ही नींद आ जाती है, ऐसे यह रूहानी गीत गाते, खुशी में नाचते-नाचते सोयेंगे और खो जायेंगे। तो समझा – सारा दिन क्या करना है?

27.3.82.. .. सेवा के बिना ब्राह्मण जीवन नहीं। सेवा नहीं तो खुशी नहीं। इसलिए सेवा में तत्पर रहो। रोज़ किसी न किसी को दान ज़रूर करो। दान करने के बिना नींद ही नहीं आनी चाहिए।

3.1.83.. .. बापदादा भी कल्प-कल्प के अधिकारी बच्चों को देख हर्षित होते हैं। ऐसा कब सोचा था! क्रिश्चियन से कृष्णपुरी में आ जायेंगे यह कभी सोचा था! धर्मपिता के फालोअर थे। तना के बजाए टाली में अटक गये। और अब इस वैरायटी कल्प वृक्ष का तना आदि सनातन ब्राह्मण सो देवता धर्म के बन गये। फाउन्डेशन बन गये। ऐसी प्राप्ति को देख छोड़ा क्या? अल्पकाल की निंद्रा को जीता। नींद में सोने को छोड़ा और स्वयं सोना (गोल्ड) बन गये। बापदादा डबल विदेशियो का सवेरे-सवेरे उठ तैयार होना देख मुस्कराते हैं। आराम से उठने वाले और अभी कैसे उठते हैं! नींद का त्याग किया – त्याग के पहले भाग्य को देख, अमृतवेले का अलौकिक अनुभव करने के बाद यह नींद भी क्या लगती है! खान-पान छोड़ा या बीमारी को छोड़ा? खाना पीना छोड़ना अर्थात् कई बीमारियों से छूटना। मुक्त हो गये ना। और ही हैल्थ वैल्थ दोनों मिल गई। इसलिए सुनाया कि पक्के व्यापारी हो।

9.1.83.. ..सभी डबल विदेशी तन से और मन से सन्तुष्ट हो? थोड़ा भी किसको कोई संकल्प तो नहीं है। कोई तन की वा मन की प्राब्लम है? शरीर बीमार हो लेकिन शरीर की बीमारी से मन डिस्टर्ब न हो। सदैव खुशी में नाचते रहो तो शरीर भी ठीक हो जायेगा। मन की खुशी से शरीर को भी चलाओ तो दोनो एक्सरसाइज हो जायेगी। खुशी है 'दुआ' और एक्सरसाइज है 'दवाई'। तो दुआ और दवा दोनों होने से सहज हो जायेगा। (एक बच्चे ने कहा रात्रि को नींद नहीं आती है।) सोने के पहले योग में बैठो तो फिर नींद आ जायेगी। योग में बैठने समय बापदादा गुणों के गीत गाओ। तो खुशी से दर्द भी भूल जायेगा। खुशी के बिना सिर्फ यह प्रयत्न करते हो कि मैं आत्मा हूँ, मैं आत्मा हूँ, तो इस मेहनत के कारण दर्द भी फील होता है। खुशी में रहो तो दर्द भी भूल जायेगा।

5.4.83.. .. सेवाधारी सदा स्वयं का त्याग कर दूसरे की सेवा में हर्षित होते हैं। मातायें तो सेवा की अनुभवी हैं ना! अपनी नींद भी त्याग करेंगी और बच्चे को गोदी के झूले में झुलायेंगी। आप लोगों द्वारा जो वृद्धि को प्राप्त होंगे उन्हों को भी तो हिस्सा दिलावेंगे ना।

10.11.83.. .. अमृतवेले को शक्तिशाली बनाने के लिए सारे दिन में भी, श्रीमत मिलती है उसी प्रमाण चलना बहुत आवश्यक है तो सारा दिन मनन करते चलो। ज्ञान रत्नों से खेलते चलो तो वही खुशी की बातें याद आने से नींद चली जायेगी और खुशी में ऐसे ही अनुभव करेंगे जैसे अभी प्राप्ति की खान खुल गई। तो जहाँ प्राप्ति होती है वहाँ नीद नहीं आती है। जहाँ प्राप्ति नहीं वहाँ नींद आती वा थकावट होती है वा सुस्ती आती है। प्राप्ति के अनुभव में रहो, उसका कनेक्शन है सारे दिन के मनन पर।

16.1.84.. .. अविनाशी नशा है ना। इस नशे को कोई कम कर सकता है क्या, आलमाइटी अथार्टी के आगे और कौन-सी अथार्टी है! सिर्फ अलबेलेपन की गहरी नींद में सो जाते हो तो आपके अथार्टी की चाबी अर्थात् 'स्मृति', माया चोरी कर लेती है। कई ऐसे नींद में सोते हैं जो पता हीं नहीं पड़ता है। यह अलबेलेपन की नींद कभी-कभी धोखा भी दे देती है। और फिर अनुभव ऐसे करते कि मैं सोया हुआ ही नहीं हूँ! जाग रहा हूँ। लेकिन चोरी हो जाती है वह पता नहीं पड़ता है। वैसे जागती ज्योति आलमाइटी अथार्टी के आगे कोई अथार्टी है नहीं। स्वप्न में भी कोई अथार्टी हिला नहीं सकती। ऐसे राज्य अधिकारी हो।

7.5.84.. ..अमृतवेला सदा शक्तिशाली है? अमृतवेला शक्तिशाली है तो सारा दिन शक्तिशाली रहेगा। अमृतवेला कमज़ोर है तो सारा दिन कमज़ोर। अमृतवेले नियम प्रमाण तो नहीं बैठते हो? यह वरदानों का समय है। वरदानों के समय अगर कोई सोया रहे, सुस्ती में रहे वा विस्मृति रहे, कमज़ोर होकर बैठे तो वरदानों से वंचित रह जायेगा। तो अमृतवेले का महत्व सदा याद रहता है ना? उस समय नींद तो नहीं करते हो? झुटके तो नहीं खाते हो ना? कभी-कभी कोई नींद की अवस्था को भी शान्ति की अवस्था समझते हैं। उन्हों से पूछते हैं कैसे बैठे थे तो कहते हैं – बहुत शान्ति में! तो ऐसी चेकिंग करो – कभी भी शक्तिशाली स्टेज के बीच में यह माया तो नहीं आती है। जो शक्तिशाली हैं उसके आगे माया कमज़ोर हो जाती है।

19.11.84.. .. एक थे – चलते-चलते अलबेलेपन की नींद में सोई हुई आत्मायें। जैसे कोई ज़ोर से आवाज़ होता है वा कोई हिलाता है तो सोया हुआ जाग जाता है लेकिन क्या हुआ! इस संकल्प से कुछ समय जागे और फिर धीरे-धीरे वही अलबेलेपन की नींद। यह तो होता ही है, इस चादर को ओढ़ के सो गए। अभी तो रिहर्सल है। फाइनल तो आगे होना है। इससे और मुंह तक चादर ओढ़ ली। दूसरे थे – आलस्य की नींद में सोये हुए। यह तो सब होना ही था वह हुआ, पुरुषार्थ तो कर ही रहे हैं। और आगे भी कर ही लेंगे! संगमयुग में तो पुरूषार्थ करना ही है। कुछ किया है, कुछ आगे कर लेंगे। दूसरों को जागकर देखते रहते। जैसे चादर से मुंह निकाल एक दो को (सोये हुए को) देखते हैं ना। जो नामीग्रामी हैं वह भी इतना ही रफ़्तार से चल रहे हैं। हम भी चल रहे हैं। ऐसे दूसरों

की कमज़ोरियों को देख फ़ालो फ़ादर के बजाए सिस्टर्स और ब्रदर्स को फ़ालो कर लेते हैं और उन्हों की भी कमज़ोरियों को फ़ालो करते हैं। ऐसे संकल्प करने वाले आलस्य की नींद में सोये हुए वह भी जागे ज़रूर। उमंग और उत्साह के आधार से आलस्य की नींद को कईयों ने त्याग भी किया। स्व-उन्नति और सेवा की उन्नति में आगे कदम भी बढ़ाया। हलचल ने हिलाया और आगे बढ़े। लेकिन आलस्य के संस्कार बीच-बीच में फ़िर भी अपनी तरफ़ खींचते रहते हैं। फ़िर भी हलचल ने हिलाया, आगे बढ़ाया।

20.2.86.. .. सभी सेवाधारी हो या सेन्टर पर रहने वाले सेवाधारी हैं? कहाँ भी हैं सेवा के बिना चैन नहीं हो सकती। सेवा ही चैन की निंद्रा है। कहते हैं – चैन से सोना यही जीवन है। सेवा ही चैन की निंद्रा कहो, सोना कहो। सेवा नहीं तो चैन की नींद नहीं। सुनाया ना, सेवा सिर्फ वाणी की नहीं, हर सेकण्ड सेवा है। हर संकल्प में सेवा है।

10.3.86.. ..आप सभी अमृतवेले से बेफ़िकर बादशाह बन दिन आरम्भ करते और बेफ़िकर बादशाह बन हर कार्य करते। बेफ़िकर बादशाह बन आराम की नींद करते। सुख की नींद, शान्ति की नींद करते हो। ऐसे बेफ़िकर बादशाह बन गये।

21.1.87.. .. अभी तो और वृद्धि होगी ना। ऐसे अपने को मोल्ड करने की आदत डालो, जैसा समय वैसे अपने आपको चला सकें। तो पट (जमीन) में सोने की भी आदत पड़ गई ना। ऐसे तो नहीं – खटिया नहीं मिली तो नींद नहीं आई? टेन्ट में भी रहने की आदत पड़ गई ना। अच्छा लगा? ठण्डी तो नहीं लगती? अभी सारे आबू में टेन्ट लगायें? टेन्ट में सोना अच्छा लगा या कमरा चाहिए? याद है, पहले-पहले जब पाकिस्तान में थे तो महारथियों को ही पट में सुलाते थे? जो नामीग्रामी महारथी होते थे, उन्हों को हाल में पट में टिफ़ुटी (तीन फ़ुट) देकर सुलाते थे। और जब ब्राह्मण परिवार की वृद्धि हुई तो भी कहाँ से शुरू की? टेन्ट से ही शुरू की ना। पहले-पहले जो निकले, वह भी टेन्ट में ही रहे। टेन्ट में रहने वाले सेन्ट (महात्मा) हो गये। साकार पार्ट के होते भी टेन्ट में ही रहे तो आप लोग भी अनुभव करेंगे ना। तो सभी हर रीति से ख़ुश हैं?

23.1.87.. .. सहयोगी आत्मा कभी भी माया की योगी हो नहीं सकती, उसका माया से किनारा हो जायेगा। हर संकल्प में 'बाबा' और 'सेवा', तो जो नींद भी करेंगे, उसमें भी बड़ा आराम मिलेगा, शान्ति मिलेगी, शक्ति मिलेगी। नींद, नींद नहीं होगी, जैसे कमाई करके खुशी में लेटे हैं। इतना परिवर्तन हो जाता है!

14.10.87.. .. आप ब्राह्मण आत्माओं की प्रभु से प्रीत निभाने की प्रभु-प्रवृत्ति कितनी बड़ी है! आपकी प्रभु-प्रीत की प्रवृत्ति सोते हुए भी चलती है! अगर योगनिंद्रा में हो तो आपकी निंद्रा नहीं लेकिन 'योगनिंद्रा' है। नींद में भी प्रभु-मिलन मना सकते हो। योग का अर्थ ही है मिलन। योगनिंद्रा अर्थात् अशरीरी की स्थिति की अनुभूति। तो यह भी प्रभु-प्रीत है ना। तो आप जैसी बड़े ते बड़ी प्रवृत्ति किसकी भी नहीं है!

19.3.88.. .. रमणीक ज्ञान है। रमणीक अनुभव स्वत: ही सुस्ती को भगा देता है। यह तो कई कहते हैं ना – वैसे नींद नहीं आयेगी लेकिन योग में नींद अवश्य आयेगी। यह क्यों होता है? ऐसी बात नहीं कि थकावट है लेकिन रमणीक रीति से और नैचरल रूप से बुद्धि को सीट पर सेट नहीं करते हो। तो सिर्फ एक रूप से नहीं लेकिन वैरायटी रूप से सेट करो। वही चीज़ अगर वैराइटी रूप से परिवर्तन कर यूज़ करते हैं तो दिल ख़ुश होती है। चाहे बढ़िया चीज़ हो लेकिन अगर एक ही चीज़ बार-बार खाते रहो, देखते रहो तो क्या होगा? ऐसे, बीजरूप बनो लेकिन कभी लाइट-हाऊस के रूप में, कभी माइट-हाऊस के रूप में, कभी वृक्ष के ऊपर बीज के रूप में, कभी सृष्टि-चक्र के ऊपर टॉप पर खड़े होकर सभी को शक्ति दो। जो भिन्न-भिन्न टाइटल मिलते हैं, वह रोज़ भिन्न-भिन्न टाइटल अनुभव करो। कभी नूरे रत्न बन बाप के नयनों में समाया हूँ - इस स्वरूप की अनुभूति करो। कभी मस्तकमणि बन, कभी तख्तनशीन बन.. भिन्न-भिन्न स्वरूपों का अनुभव करो। वैराइटी करो तो रमणीकता आयेगी।

13.10.92.. .. वो भी दिन आ जायेंगे। खटिया नहीं मिलेगी, तकिया नहीं मिलेगा–फिर नींद कैसे आयेगी? तैयार हो ऐसे सोने के लिए? अपनी बांह को ही तकिया बनाना पड़ेगा, पत्थर पर सोना पड़ेगा। कितने दिन सोयेंगे? अभ्यास सब होना चाहिए। अगर साधन मिलता है तो भले सोओ, लेकिन नहीं मिले तो नींद नहीं आवे–ऐसा अभ्यास नहीं हो। अभी तो किसी को खटिया चाहिए, किसी को अलग कमरा चाहिए। इसलिए ज्यादा नहीं मंगाते। अगर सभी पट पर सोओ तो कितने आ सकते हैं? डबल संख्या हो सकती है ना। फिर कोई नहीं कहेगा–टांग में दर्द है, कमर में दर्द है, बैठ नहीं सकती हूँ? क्या भी मिले, खाना मिले, नहीं मिले–तैयार हो? वो भी पेपर आयेगा। डबल विदेशी पट में सो सकेंगे? इतने पक्के होने चाहिएं–अगर बिस्तरा मिला तो भी अच्छा, नहीं मिला तो भी अच्छा। 'हाय-हाय' नहीं करेंगे। सहन करने में माताएं होशियार होती हैं। पाण्डव भी होशियार हैं। जब इतना साथ होगा तो संगठन की खुशी सब-कुछ भुला देती है। तो निश्चय है ना। ब्राह्मण जीवन अर्थात् मौज ही मौज–उठें तो भी मौज में, सोयें तो भी मौज में।

9.3.94.. .. जितने ज्यादा साधन होंगे उतनी शान्ति की नींद भी नहीं होगी। और आपकी जीवन कितनी शान्त है! कोई अशान्ति है? कभी तन वा मन की अशान्ति तो नहीं है? एवरहेल्दी है ना? माइन्ड भी हेल्दी तो हेल्थ भी हेल्दी। दो पैर की बजाय एक पैर मिले तो भी राजी रहेंगे? बैठेबैठ` सोयेंगे! कइयों को बैठने में नींद अच्छी आती है। सोयेंगे तो नींद नहीं आयेगी। योग में बैठना और सोना शुरु। पांच दिन अखण्ड तपस्या करनी पड़े तो सब तैयार हो? खाना भी नहीं मिले तो चलेगा? कि समझते हो ये होना नहीं है? जो चीज़ वहाँ नहीं खाते वो और ही मधुबन में मिलती है। लेकिन एवररेडी रहना चाहिये। मिले तो बहुत अच्छा, न मिले तो बहुत बहुत अच्छा। क्योंकि सबको अमृतवेले दिलखुश मिठाई तो मिलती ही है और सारा दिन खुशी की खुराक भी मिलती है। तो चल सकता है ना? ये भी ट्रॉयल करेंगे।

23.12.94.. .. सभी आराम से रहे हुए हैं? डबल फॉरेनर्स फिर भी खटाराणे हैं और भारतवासी पटराने। पट में सोना सहज लगता है ना? पलंग याद तो नहीं आते? हाँ, कोई समय ऐसा आयेगा जो सभी को पलंग मिलेगा। लेकिन कब आयेगा? जब सारा आबू अपना बनायेंगे। ये संगठन का सुख पलंग और डनलप से भी ज्यादा है। यहाँ

भी आराम से नींद तो आती है ना? ज्ञान अमृत पीतेपीते सो जाते हो, तो कितनी अच्छी नींद करेंगे। ज्ञान अमृत पीना और ब्रह्मा भोजन खाना।

31.12.94.. .. दादी को संकल्प बहुत आते हैं, सेवा के अच्छे संकल्प, नींद नहीं करने देते हैं। अच्छा है। शुद्ध संकल्पों से नींद की कमजोरी का प्रभाव नहीं पड़ता। वैसे नींद खुल जाये तो कमजोरी या कमी महसूस होती है। जो निमित्त बनता है उसको टचिंग होती है। ब्रह्मा बाप के समान हो। ब्रह्मा बाप को नींद आती थी क्या? तो निमित्त बनने वालों को निमित्त बनने के कारण संकल्प अच्छे आते ही हैं। अच्छा है, आपके सहयोगी भी अच्छे अच्छे हैं।

16.11.95.. .. अगर कोई व्यर्थ वा विकारी स्वप्न, लगाव का स्वप्न आता है तो अवश्य सोने के समय आप अलबेलेपन में सोये। कई कहते हैं कि सारे दिन में मेरा कोई संकल्प तो चला ही नहीं, कुछ हुआ ही नहीं फिर भी स्वप्न आ गया। तो चेक करो–सोने समय बापदादा को सारे दिन का पोतामेल देकर, खाली बुद्धि हो करके नींद की? ऐसे नहीं कि थके हुए आये और बिस्तर पर गये और गये –ये अलबेलापन है। चाहे विकर्म नहीं किया और संकल्प भी नहीं किया लेकिन ये अलबेलेपन की सज़ा है। क्योंकि बाप का फरमान है कि सोते समय सदा अपने बुद्धि को क्लीयर करो, चाहे अच्छा, चाहे बुरा, सब बाप हवाले करो और अपने बुद्धि को खाली करो। दे दिया बाप को और बाप के साथ सो जाओ, अकेले नहीं। अकेले सोते हो ना तभी स्वप्न आते हैं। अगर बाप के साथ सोओ तो कभी ऐसे स्वप्न भी नहीं आ सकते। लेकिन फरमान को नहीं मानते हो तो फरमान के बदले अरमान मिलता है। सुबह को उठकर के दिल में अरमान होता है ना कि मेरी पवित्रता स्वप्न में खत्म हो गई। ये कितना अरमान है! कारण है अलबेलापन। तो अलबेले नहीं बनो। जैसे आया वैसे यहाँ वहाँ की बातें करते-करते सो जाओ, क्योंकि समाचार तो बहुत होते हैं और दिलचश्प समाचार तो व्यर्थ ही होते हैं। कई कहते हैं–और तो टाइम मिलता ही नहीं, जब साथ में एक कमरे में जाते हैं तो लेन-देन करते हैं। लेकिन कभी भी व्यर्थ बातों का वर्णन करते-करते सोना नहीं, ये अलबेलापन है। ये फरमान को उल्लंघन करना है। अगर और टाइम नहीं है और जरूरी बात है तो सोने वाले कमरे में नहीं, लेकिन कमरे के बाहर दो सेकण्ड में एक-दो को सुनाओ, सोते-सोते नहीं सुनाओ। कई बच्चों की तो आदत है, बापदादा तो सभी को देखते हैं ना कि सोते कैसे हैं? एक सेकण्ड में बापदादा सारे विश्व का चक्कर लगाते हैं, और टी.वी. से देखते हैं कि सो कैसे रहे हैं, बात कैसे कर रहे हैं ... सब बापदादा देखते हैं। बापदादा को तो एक सेकण्ड लगता है, ज्यादा टाइम नहीं लगता। हर एक सेन्टर, हर एक प्रवृत्ति वाले सबका चक्कर लगाते हैं। ऐसे नहीं सिर्फ सेन्टर का, आपके घरों का भी टी.वी. में आता है। तो जब आदि अर्थात् अमृतवेला और अन्त अर्थात् सोने का समय अच्छा होगा तो मध्य स्वत: ही ठीक होगा। समझा? और बातें करते-करते कई तो बारह साढ़े बारह भी बजा देते हैं। मस्त होते हैं, उनको टाइम का पता ही नहीं। और फिर अमृतवेले उठकर बैठते हैं तो आधा समय निद्रालोक में और आधा समय योग में। क्योंकि जो अलबेले होकर सोये तो अमृतवेला भी तो अलबेला होगा ना! ऐसे नहीं समझना कि हमको तो कोई देखता ही नहीं है। बापदादा देखता है। यह निद्रा भी बहुत शान्ति वा सुख देती है, इसीलिए मिक्स हो जाता है। अगर पूछेंगे तो कहेंगे–नहीं, मैं बहुत शान्ति का अनुभव कर रहा था। देखो, नींद को भी आराम कहा जाता है। अगर कोई बीमार भी होता है तो डॉक्टर लोग कहते हैं – आराम करो। आराम क्या करो? नींद करो टाइम पर। तो निद्रा भी आराम देने वाली है। फ्रेश तो करती है ना। तो नींद से फ्रेश होकर उठते हैं ना तो कहते हैं आज (योग में) बहुत फ्रेश हो गये। अच्छा!

25.11.95.. .. जितने भी आये हैं, सबका नाम रजिस्टर में तो है ही। रजिस्टर में अपना नाम पक्का कराया है या थोड़ा-थोड़ा कच्चा है? अच्छा, जो भी नये जहाँ से भी आये हैं, टीचर्स के पास तो लिस्ट है ही और प्रेजेन्ट मार्क भी डालते हैं या नहीं डालते? कौन-सा सेन्टर है जहाँ प्रेजेन्ट मार्क नहीं पड़ती हो, कोई सेन्टर है? टीचर सच बताओ। कभी नींद आ जाती होगी, कभी बीमार हो गये, कभी क्लास में पहुँच नहीं सके, तो रोज़ की प्रेजेन्ट मार्क पड़ती है? जो टीचर्स कहती हैं रोज का रजिस्टर और प्रेजेन्ट मार्क है वो हाथ उठाओ। अच्छा, रेग्युलर है या कभी-कभी? कि दो-तीन दिन मिस हो जाता है? सब टीचर्स पास हैं तो ताली बजाओ।

13.12.95 जो भी ब्राह्मण बनते हैं उनकी पूजा होती ज़रूर है लेकिन किसकी विधिपूर्वक होती है और किसकी काम चलाऊ होती है। तो जो ब्राह्मण यहाँ भी योग में बैठते हैं लेकिन काम चलाऊ, कुछ नींद किया, कुछ योग किया, कुछ व्यर्थ सोचा और कुछ शुभ सोचा। तो यह काम चलाऊ हुआ ना! सफेद बत्ती जल गई, काम पूरा हो गया। ऐसे धारणा में भी काम चलाऊ बहुत होते हैं। कोई भी सरकमस्टांस आयेगा तो कहेंगे अभी तो ऐसे करके चलाओ, पीछे देखा जायेगा। तो ऐसों की पूजा काम चलाऊ होती है। देखो लाखों सालिग्राम बनाते हैं लेकिन क्या होता है? विधिपूर्वक पूजा होती है? काम चलाऊ होती है ना! पाइप से नहला दिया और तिलक भी कटोरी भरके पण्डित लोग ऐसे-ऐसे कर देते हैं। (छिड़क देते हैं) तिलक लग गया। तो ये क्या हुआ? काम चलाऊ हुआ ना। पूज्य सभी बनते हो लेकिन कैसे पूज्य बनते हो वो नम्बरवार है।

18.1.97.. .. अच्छी सेवा का सबूत दे रहे हैं। सभी खुशी से सेवा कर रहे हैं। नींद आती है कि रात भी सेवा में गुज़र जाती है? रात दिन सेवा यह महा पुण्य बन रहा है। रात भी हो तो सेवाधारी सेवा के लिए हाजिर हैं। ऐसे है ना महाराष्ट्र? अच्छी रिजल्ट है।

28.2.2003.. .. आप ब्राह्मण भी अज्ञान नींद से जागने का व्रत लेते हो। बीच-बीच में अज्ञान की नींद तो नहीं आती है ना! भक्त लोग आपको कॉपी कर रहे हैं, तो आप पक्के हैं तभी तो कॉपी करते हैं। कभी भी अज्ञान अर्थात् कमजोरी की, अलबेलेपन की, आलस्य की नींद नहीं आये। या थोड़ा-थोड़ा झुटका आवे तो हर्जा नहीं है? झुटका खाते हो? ऐसे अमृतवेले भी कई झुटके खाते हैं। लेकिन यह सोचो कि हमारे यादगार में भक्त लोग क्या-क्या कॉपी कर रहे हैं! वह इतने पक्के रहते हैं, कुछ भी हो जाए, लेकिन व्रत नहीं तोड़ते हैं।

25.2.2007.. .. ''अलबेलेपन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद से जागना ही शिवरात्रि का सच्चा जागरण है''

आज के दिन भक्त जागरण करते हैं, सोते नहीं हैं, तो आप बच्चों का जागरण कौन सा है? कौन सी नींद में घड़ी-घड़ी सो जाते हो, अलबेलापन, आलस्य और बहाने बाजी की नींद में आराम से सो जाते हैं। तो आज बापदादा इन तीन बातों का हर समय जागरण देखने चाहता है। कभी भी देखो क्रोध आता है, अभिमान आता है, लोभ आता है, कारण क्या बताते हैं? एक बापदादा को ट्रेडमार्क दिखाई देती है, कोई भी बात होती है ना! तो क्या कहते हैं, यह तो चलता है, पता नहीं किसने चलाया है? लेकिन शब्द यही कहते हैं यह तो होता ही है, यह तो चलता ही है। यह कोई नई बात थोड़ेही है, यह होता ही है। यह क्या है? अलबेलापन नहीं है? यह भी तो करता है, मैजॉरिटी क्रोध से बचने के लिए यह किया तब हुआ। मैंने किया रांग वह नहीं कहेंगे। यह किया ना, यह हुआ ना, इसलिए हुआ। दूसरे पर दोष रखना बहुत सहज है। यह ना करे तो नहीं होगा। और बाप ने कहा वह नहीं होगा। वह करे तो होगा, बाप की श्रीमत पर क्या क्रोध को नहीं खत्म कर सकते? आजकल क्रोध का बच्चा रोब, रोब भी भिन्न-भिन्न प्रकार के हैं। तो क्या आज चार का भी व्रत लेंगे? जैसे पहली बात का विशेष दृढ़ संकल्प मैजारिटी ने किया

है। क्या ऐसे ही चार का संकल्प, यह बहाना नहीं देना, इसने यह किया तब मेरा हुआ, और बाप जो बार-बार कहता है, वह याद नहीं, उसने जो किया वह याद आ गया, तो यह बहानेबाजी हुई ना! तो आज बापदादा बर्थ डे की गिफ्ट चाहते हैं यह तीन बातें, जो चार को हल्का कर देती हैं। संस्कार का सामना तो करना ही है, संस्कार का सामना नहीं, यह पेपर है। एक जन्म की पढ़ाई और सारे कल्प की प्राप्ति, आधाकल्प राज्य भाग्य, आधाकल्प पूज्य, सारे कल्प की एक जन्म में प्राप्ति, वह भी छोटा जन्म, फुल जन्म नहीं है, छोटा जन्म है।

31.3.2007.. .. इस वर्ष का होमवर्क, इस सीजन का होमवर्क दूसरी सीजन तक कम से कम 8 बारी यह ड्रिल जरूर करनी है। जरूर, देखेंगे नहीं, करनी ही है। चाहे मिस हो जाए तो एक घण्टे में अनेक बार करके पूरा करना। नींद पीछे करना। सोना पीछे। पहले ड्रिल, आठ बारी पूरा करके पीछे सोना। ठीक है ना। टीचर्स! पंखे हाथ में लिये हैं, गर्मी हो रही है। बहुत अच्छा, टीचर्स का वायुमण्डल स्वत: ही फैलेगा।

25.10.2009.. .. बापदादा ने पहले ही सुनाया है कि हर रात्रि को बापदादा को अपने सारे दिन का चार्ट सुनाने के बाद अपना दिमाग खाली करके सोने से आपको नींद भी अच्छी आयेगी और साथ में रोज़ का हालचाल देने से दूसरे दिन याद रहता है कि बाबा को हमने अपना कहा है, तो वह स्मृति सहयोग देती है। धर्मराजपुरी के लिए जाना नहीं पड़ेगा। दे दिया ना और परिवर्तन कर लिया तो धर्मराजपुरी से बच जायेंगे।

25.12.2009.. .. उन्हों का वर्सा है मुक्ति, आपका वर्सा है जीवनमुक्ति। जब तक मुक्ति नहीं देंगे तो आप भी जा नहीं सकते। इसके लिए यह ड्रिल करो। 24 बारी। रात और दिन के 24 घण्टे हैं और 24 बार करना है, नींद के टाइम, नींद भले करो। बापदादा यह नहीं कहते कि नींद नहीं करो। नींद करो लेकिन दिन में बढ़ाओ। जब कोई फंक्शन करते हो तो सारा सारा दिन काम करते हो ना। जागते हो ना! अच्छा।

31.3.2010.. .. दूसरी सीजन में बापदादा हर एक बच्चे में यह परिवर्तन देखने चाहते हैं। हो सकता है? हो सकता है? हाथ उठाओ। हाथ उठाने में तो ठीक। तो क्या करना? अच्छा है बापदादा मुबारक देते हैं, एक दो को अटेन्शन दिलाते रहना। क्या करना? रोज़ रात को सोने के पहले बापदादा को गुडनाइट करने के पहले अपने सारे दिन का पोतामेल देना। अच्छा किया या बुरा किया? जो भी किया वह पोतामेल देके और अपने बुद्धि को खाली करके गुडनाइट करना। बाप से भी और बाप की याद में ही आप भी सो जाना। आपकी नींद बहुत अच्छी होगी। पहले खाली करना अपने को, बुद्धि में कोई बात नहीं रखना, बाप के रूप में सारा पोतामेल सच्ची दिल का दे दिया तो आपको धर्मराजपुरी में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। सच्ची दिल पर साहेब राज़ी हो जायेगा।

8. निमित्त

2.2.69... अगर मैंने किया, मैं-मैं आया तो मालूम है क्या होगा? जैसे **निमित्त बनने से निराकारी, निरंहकारी, निरसंकल्प स्थिति होती है वैसे ही मैं मैं आने से मगरूरी, मुरझाइस, मायूसी आ जायेगी।** उसकी फिर रिजल्ट क्या होगी? आखरीन अन्त में उसकी रिजल्ट यही होती है कि चलते-चलते जीते हुए भी मर जाते हैं। इसलिए इस मुख्य शिक्षा को हमेशा साथ रखना कि मैं निमित्त हूँ। **निमित्त बनने से कोई भी अंहकार उत्पन्न नहीं होगा।** नहीं तो अगर मैं पन आ गया तो मतभेद के चक्र में आ जायेंगे। इसलिए इन अनेक व्यर्थ के चक्करों से बचने के लिए **स्वदर्शनचक्र** को याद रखना।

18.6.69... नम्रता के गुण से सब आप के आगे नमन करेंगे। **जो खुद झुकता है उसके आगे सभी झुकते हैं।** निमित्त समझकर कार्य करना है। जैसे बाप शरीर का आधार निमित्त मात्र लेते हैं। वैसे आप समझो कि निमित्त मात्र शरीर का आधार लिया है। **एक तो शरीर को निमित्त मात्र समझना है और दूसरा सर्विस में अपने को निमित्त समझना। तब नम्रता आयेगी। फिर देखो सफलता आप के आगे चलेगी।** जैसे बापदादा टेम्प्रेरी देह में आते हैं ऐसे देह को निमित्त आधार समझो। बापदादा की देह में अटेचमेन्ट होती है क्या? **आधार समझने से अधीन नहीं होंगे।** अभी देह के अधीन होते हो फिर देह को अधीन करेंगे।

6.7.69 .. ..आज फाउन्डेशन पड़ता है। छोटे बच्चों को तो टीका लगाया जाता है, उनको रास्ता बताना होता है, क्या करना है, कैसे बनना है। **आप सब को रास्ता तो मिल ही गया है। आप औरों को रास्ता बताने निमित्त बने हो।** पहाड़ उठाने कौन निमित्त है? गोप-गोपिकायें। गोपिका भी तब हो सकती जब पूरा कर्तव्य करे। पहाड़ भी तब उठा सकते जब इतना बल हो। तो इन सब बातों की रोशनी देने लिए बाप को आना पड़ा है।

23.7.69.. .. जो निमित्त बने हुये पाण्डव हैं उनको भविष्य में आने वाली बातों को **परखने की शक्ति** चाहिए और **निर्णय करने की शक्ति** भी चाहिये। निर्णय के बाद फिर **निवारण की शक्ति** चाहिए। तभी सामना कर सकेंगे और सामना करने के बाद यज्ञ की प्रत्यक्षता की सफलता पाओगे।

जहाँ पर संगठन का सवाल आता है वहाँ पर निमित्त बने हुए भाई बहिनें जो फाइनल करते हैं, उस समय फिर अपनी बुद्धि को बिल्कुल ही बालकपन में ले आना चाहिए। बालकपने की क्वालिफिकेशन क्या होती हैं? वहीं पर फोर्स में बोलेंगे फिर वहीं पर ही बिल्कुल निरसंकल्प बन जायेंगे तो इसी रीति संगठन के बीच में निमित्त बने हुए के सामने अपनी मालिकपने की बुद्धि बनाकर राय देकर फट से बालकपने की बुद्धि बना लेनी है। इसी में ही फायदा भी है। समय प्रति समय हर एक छोटा, बड़ा अपनी शक्ति और स्वमान को रखने की कोशिश करता है। और आगे चल कर यह कुछ समस्या ज्यादा सामने आने वाली हैं इसलिए ही **जो निमित्त बने हुए हैं उनको बहुत निर्माणचित्त बनना पड़ेगा।**

28.9.69 .. ..सच्चा बनना। सफाई का सबूत चलन में दिखता है। सिर्फ समझना ही नहीं हैं लेकिन कर्म में करके दिखाना है। **जो कर्म हो वो भी दूसरों के सर्विस के निमित्त हो।** अपनी मन्सा, वाचा, कर्मणा को चेक करो।

16.10.69 .. ..समझकर चलना कि **निमित्त मात्र इस शरीर का लोन लेकर ईश्वरीय कार्य के लिए, थोड़े दिन के लिए अवतरित हुये हैं। कार्य समाप्त करके फिर चले जायेंगे।** यह स्मृति, लक्ष्य रख करके, ऐसी स्थिति बनाकर फिर चलना। आप सभी भी समझो कि हम लोन लेकर सर्विस के निमित्त आये हैं – थोड़े समय के लिये। जब ऐसी स्थिति होगी तब बाप का प्रभाव दुनिया के सामने आयेगा।

20.10.69 .. ..कौन-कौन सी पढ़ाई की सबजेक्ट में परिपक्व होना है? एक तो अलौकिक ईश्वरीय ड्रिल की सबजेक्ट और दूसरी यह हिसाब करना, दोनों ही बातें इस भट्ठी में सीखनी हैं। अगर इन दोनों बातों में सम्पूर्ण बन गये तो बाकी क्या रहेगा। सम्पूर्ण तो बन कर ही निकलेंगे। खुद तो बन जायेंगे लेकिन औरों को बनाने का कार्य भी बाकी रहेगा। इसी निमित्त ही जाना है। सम्बन्ध के कारण नहीं जाना है। लेकिन सर्विस के निमित्त जाना है। जाना भी है तो सिर्फ सर्विस के निमित्त। जहाँ भी रहो लेकिन अपने को ऐसा समझकर रहेंगे तो अवस्था न्यारी और प्यारी रहेगी। जैसे **बाप-दादा सर्विस के निमित्त आते जाते हैं ना। तो आप सभी को भी सिर्फ सर्विस के अर्थ निमित्त जाना है** और सर्विस की सफलता पाकर के फिर सम्मुख आना है।

20.12.69 .. .. कोई निमित्त हैं लेकिन बहुत थोड़े,.मैजारिटी नहीं हैं। मैनारिटी हैं, उन्हों के ऊपर यहाँ ही फूल बरसायेंगे। ऐसे जो पास विथ आनर होंगे, उन्हीं के ऊपर जो द्वापर के भक्त हैं वह अन्त में इस साकार रूप में फूलों की वर्षा करेंगे। जो अन्त तक सन शोज़ फादर करके ही जायेंगे। ऐसा सर्विसएबुल मृत्यु होता है। इस मृत्यु से भी सर्विस होती है। **सर्विस के प्रति बच्चे ही निमित्त हैं, ना कि माँ बाप। वह तो गुप्त रुप में हैं।** सर्विस में मात-पिता बैकबोन हैं और बच्चे सामने हैं। इस सर्विस के पार्ट में मात-पिता का पार्ट नहीं है। इस में बच्चे ही बाप का शो करेंगे। यह भी **सर्विस का अन्त में मैडल प्राप्त होता है, ऐसा मैडल ड्रामा में कोई बच्चों को मिलना है।** अभी हरेक अपने आप से जज करे कि हम ऐसा मैडल प्राप्त करने लिए निमित्त बन सकते हैं? अब फिर से ऐसी अलौकिकता सभी को दिखानी है जो सभी महसूस करें कि **जैसे शुरू में भट्ठी से निकली हुई आत्मायें कितनी सेवा के निमित्त बनी, अब फिर से सृष्टि के दृश्य को चेंज करने के निमित्त बनी हैं।**

25.12.69 .. .. रूहानियत कायम न रहने का कारण यह है कि अपने को और दूसरों को जिनके सर्विस के लिये हम निमित्त हूँ, उन्हों को बापदादा की अमानत समझ कर चलना। **जितना अपने को और दूसरों को अमानत समझेंगे तो रूहानियत आयेगी।** अमानत न समझने से कुछ कमी पड़ जाती है।

जो पूरा दैवी परिवार है, उन सर्व आत्माओं के किसी न किसी प्रकार से सहयोगी बनना पड़ेगा। एक होता है सारे कुल के सर्विस के निमित्त बनना। और दूसरा होता है सिर्फ निमित्त बनना।

1 8.1.70 .. ..वक्त में भी अब भी सहारा है। **जैसे पहले भी निमित्त बना हुआ साकार तन सहारा था वैसे ही अब भी ड्रामा में निमित्त बने हुए साकार में सहारा हैं।** पहले भी निमित्त ही थे। अब भी निमित्त हैं। यह पूरे परिवार का साकार सहारा बहुत श्रेष्ठ है।

22.1.70 .. ..शरीर का भान बिल्कुल छोड़कर अशरीरी बन जाना और जब चाहो तब शरीर का आधार लेकर कर्म करना यह अनुभव है? इस अनुभव को अब बढ़ाना है। बिल्कुल ऐसे ही अनुभव होगा जैसे कि यह स्थूल चोला अलग है और चोले को धारण करने वाली आत्मा अलग है, यह अनुभव अब जादा होना चाहिए। सदैव यही याद रखो कि **अब गये कि गये। सिर्फ़ सर्विस के निमित्त शरीर का आधार लिया हुआ है लेकिन जैसे ही सर्विस समाप्त हो वैसे ही अपने को एकदम हल्का कर सकते हैं।**

24.1.70, 1.3.71.. ..जो जगत माता का रूप है उसमें जगत के कल्याण का रहता है। शिवशक्ति रूप में कोई भी कमज़ोरी नहीं रहेगी। तो मैं जगतमाता हूँ और शिवशक्ति हूँ, यह दोनों रूप स्मृति में रखना तब मायाजीत बनेंगे। और **विश्व के कल्याण की भावना से कई आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनेंगे।** मशीन का

काम है कारखाने को चलाना। वैसे हम निमित्त हैं। चलाने वाला जैसे चलावे। हमको चलना है। ऐसा समझने से मुश्किलात नहीं फील होगी।

26.1.70 .. ..अभी सर्विस के निमित्त हैं। सभी कुछ भूले हुए बैठे हैं। उस अव्यक्त स्थिति में मन और तन व्यक्त देश में है। ऐसे अनुभव होता है? एक ही बात याद रहे कि हम परमधाम निवासी आत्मा इस व्यक्त देश में ईश्वरीय कर्त्तव्य करने के निमित्त आये हुए हैं। स्मृति आती है कि **हम ही कल्प पहले थे। अभी भी फिर से हम ही निमित्त बनेंगे। जिसको यह नशा रहता है उनके चेहरे में खुशी और ज्योति रूप देखने में आता है। उनके चेहरे में अलौकिक अव्यक्ति चमक रहती है। उनके नयनों से, मुख से सदैव खुशी ही खुशी देखेंगे। देखने वाला भी अपना दु:ख भूल जाये**। जब कोई दु:खी आत्मा होती है तो अपने को खुशी में लाने लिये खुशी के साधन बनाती है ना। तो दर्पण में चेहरा देखने में आये। तुम्हारे चेहरे से सर्विस हो। न बोलते हुए आपका मुख सर्विस करे।

26.3.70 .. ..बापदादा बच्चों से यही उम्मीद रखते हैं। सभी हैं ही स्नेही सफ़लता के सितारे। पुरुषार्थी सितारे। **सर्विसएबल बच्चों का पुरुषार्थ सफ़लता सहित होता है। निमित्त पुरुषार्थ करेंगे लेकिन सफ़लता है ही है।**

29.5.70 .. ..यह 5 तत्वों का शरीर होते हुए भी लाइट स्वरूप अनुभव करेंगे। सुनाया था ना कि **लाइट शब्द के अर्थ में भी अन्तर होता है। लाइट अर्थात् हल्कापन भी होता है और लाइट अर्थात् ज्योति भी कहा जाता है। बिल्कुल हल्कापन अर्थात् लाइट रूप हो चल रहे हैं, हम तो निमित्त हैं।** अव्यक्त रूप में तो हर बात में मदद मिलती है।

19.6.70 .. ..माया से विदाई होती है। **बापदादा से तो मिलन होता है। यह थोड़े समय का मिलन सदा का मिलन करने के निमित्त बन जाता है।** बाप के साथ गुण और कर्त्तव्य मिलना यही मिलन है। यही प्रयत्न सदैव करते रहना है।

जो कार्य करने जा रहा हूँ वह बापदादा का कार्य है, मैं निमित्त हूँ। निमित्त बन कार्य किया और जब कार्य समाप्त हुआ तो स्वाहा किया।

27.7.70 .. .. जो निमित्त बने हुए हैं उन्हों को मदद भी बहुत अच्छी मिलती है। जितना उदारचित्त उतना सर्व के उद्धार करने का निमित्त बन सकते हैं। उदारचित होने से सहयोग लेने के पात्र बन जाते हैं। ऐसा समझना चाहिए कि **हम सर्व आत्माओं के उद्धार करने के निमित्त हैं।**

23.10.70 .. ..सदैव बापदादा के कर्त्तव्य की स्मृति रखो कि **बापदादा के साथ मैं भी अधर्म विनाश और सतधर्म की स्थापना के कर्त्तव्य अर्थ निमित्त बनी हुई हूँ।** जो अधर्म के विनाश अर्थ निमित्त हैं वह स्वयं फिर अधर्म का कार्य वा दैवी मर्यादा को तोड़ने का कर्त्तव्य कैसे कर सकते हैं। मैं मास्टर मर्यादा पुरुषोत्तम हूँ। तो मर्यादाओं को तोड़ नहीं सकते हैं। ऐसी स्मृति रखने से समान और सम्पूर्ण स्थिति हो जायेगी।

31.12.70.. .. .. **व्यवहार में भी डायरेक्शन प्रमाण निमित्त मात्र शरीर निर्वाह लेकिन मूल आधार आत्मा का निर्वाह, शरीर निर्वाह के पीछे आत्मा का निर्वाह भूल नहीं जाना चाहिए।** व्यवहार करते शरीर निर्वाह और आत्म निर्वाह दोनों का बैलेन्स हो।

मैं सिर्फ व्यवहारी नहीं लेकिन व्यवहारी और परमार्थी अर्थात् जो कर रहा हूँ वह ईश्वरीय सेवा अर्थ कर रहा हूँ। व्यवहारी और परमार्थी कम्बाइंड हूँ। यही परिवर्तन संकल्प सदा स्मृति में रहे तो मन और तन डबल कमाई करते

रहेंगे। स्थूल धन भी आता रहेगा। और मन से अविनाशी धन भी जमा होता रहेगा। एक ही तन द्वारा एक ही समय मन और धन की डबल कमाई होती रहेगी। तो सदा यह याद रहे कि डबल कमाई करने वाला हूँ। इस ईश्वरीय सेवा में सदा निमित्त मात्र का मंत्र वा करनहार की स्मृति का संकल्प सदा याद रहे।

परिवर्तन करो कि साधन विनाशी और साधना अविनाशी। विनाशी साधन के आधार पर अविनाशी साधना हो नहीं सकती। **साधन निमित्त मात्र हैं, साधना निर्माण का आधार है। तो साधन को महत्व नहीं दो साधना को महत्व दो।**

21.1.71 .. ..जो जिसकी सर्विस करने के निमित्त बनते हैं वह उस समय ऐसे ही खाते में जमा होते हैं। **निमित्त बनने से बहुत एक्स्ट्रा बल मिलता है।**

26.1.71.. .. अभी आप लोग निमित्त मूर्तियां हो। तो ऐसे समझो कि जैसे जिस रूप से जहाँ हम कदम उठायेंगे वैसे सर्व आत्मायें हमारे पीछे फालो करेंगी। यह ज़िम्मेवारी है। सर्व के उद्धारमूर्त बनने कारण सर्व आत्माओं की जो आशीर्वाद मिलती है तो फिर हल्कापन भी आ जाता है, मदद भी मिलती है।

जितना-जितना अपने को चार्ज करेंगे उतना इन्चार्ज बनने का कर्त्तव्य सफलतापूर्वक कर सकेंगे। **अपने को निमित्त समझकर कदम उठाना है। क्योंकि सारे विश्व के आत्माओं की नज़र आप आत्माओं के ऊपर है।**जो दैवी परिवार की आत्मायें हैं वह समझ सकती हैं – कौन- कौन समीप रत्न हैं। जिनको जितना समीप आना है वह सरकमस्टांस अनुसार भी इतना समीप ओंगे। जिनको कुछ दूर होना है तो सरकमस्टांश भी बीच में निमित्त बन जायेंगे, जो चाहते हुए भी आ नहीं सकेंगे।

1.2.71 .. ..वरदान भूमि पर आकर वरदाता से वा वरदाता द्वारा निमित्त बनी हुई आत्माओं से ज़ितना जो वरदान लेने चाहें वह ले सकते हैं। निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं से वरदान कैसे लेंगे? यह हिसाब जानते हो? मधुबन में वरदान मिलता है। वायुमण्डल में, पवित्र चरित्र-भूमि में वरदान तो भरा हुआ है लेकिन निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं से वरदान कैसे लेंगे? जो निमित्त बने हुए होने के कारण उन्हों के हर कर्म को देखकर सहज प्रेरणा मिलती है। **जो निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्मायें हैं उन्हों की सर्विस, त्याग, स्नेह, सर्व के सहयोगीपन का प्रैक्टिकल कर्म देखते हुए जो प्रेरणा मिलती है वह वरदान रूप में सहज प्राप्त होती है।**

तो निमित्त बनी हुई आत्माओं को कर्म करते हुए इन गुणों की धारणा में देखते सहज कर्मयोगी बनने की प्रेरणा मिलती है। तो उन एक भी वरदान को छोड़कर नहीं जाना। सर्व वरदान प्राप्त करते-करते स्वयं भी मास्टर वरदाता बन जायेंगे।

13.3.71 .. ..जो भी यहाँ बैठे हैं वह सभी अपने को बन्धनमुक्त आत्मा समझते हैं अर्थात् सभी बन्धनमुक्त बने हैं वा अभी तक कोई-न-कोई बन्धन है? शक्ति सेना बन्धन मुक्त बनी है? जो समझते हैं कि सर्व बन्धनमुक्त बने हैं वह हाथ उठायें। सर्विस के कारण निमित्त मात्र रहे हुए हैं, वह दूसरी बात है। लेकिन अपना बन्धन खत्म किया है? ऐसे समझते हैं कि अपने रूप से बन्धनमुक्त होकर के सिर्फ निमित्त मात्र सर्विस के कारण इस शरीर में कर्त्तव्य अर्थ बैठे हुए हैं?

ऐसी स्थिति अब ज़रूर होनी चाहिए। जो बन्धनमुक्त की स्थिति सुनाई कि शरीर में रहते हुए सिर्फ निमित्त ईश्वरीय कर्त्तव्य के लिए आधार लिया हुआ है। अधीनता नहीं। निमित्त आधार लिया है। **जो निमित्त आधार शरीर को**

समझेंगे वह कभी भी अधीन नहीं बनेंगे। निमित्त आधारमूर्त ही सर्व आत्माओं के आधारमूर्त बन सकते हैं। बन्धनमुक्त होकर के साक्षीपन में निमित्तमात्र इस शरीर में रहकर कर्त्तव्य करना है।

19.4.71 .. .. ऐसे निरन्तर तपस्वी बनना है, जिस भी संस्कार वा स्वभाव वाले चाहे रजोगुणी, चाहे तमोगुणी आत्मा हो। **संस्कार वा स्वभाव के वश हो, आपके पुरुषार्थ में परीक्षा के निमित्त बनी हुई हो लेकिन हर आत्मा के प्रति सेवा अर्थात् कल्याण का संकल्प वा भावना उत्पन्न हो।**

10.6.71 .. ..सदैव यह याद रखना कि **हम आलमाइटी अथॉर्टी के द्वारा निमित्त बने हुए हैं**। आलमाइटी गवर्नमेन्ट के मैसेन्जर हो। कोई से भी डिस्कस में अपना माइन्ड डिस्टर्ब नहीं करना है।

29.6.71 .. ..**जितना शरीर ठीक रखेंगे उतना सर्विस करेंगे। बाकी अपनेपन का कोई स्वार्थ नहीं है। सर्विस के निमित्त करते हो,** यह साक्षीपन हुआ ना।

4.7.71 .. .. कोई भी कार्य करते हो तो समझो – इस कार्य के निमित्त बनाने वाला बैकबोन कौन है! भले मैं निमित्त हूँ, लेकिन बैकबोन कौन है! बिना बैकबोन आप शरीर में ठहर सकते हो? बिना बैकबोन के आप कोई कर्म में सफलता भी नहीं पा सकते। कोई भी कार्य करते सिर्फ यह सोचो – मैं निमित्त हूँ, कराने वाला कौन है। जैसे भक्ति-मार्ग में शब्द उच्चारण करते थे 'करन-करावनहार।' **कराने वाला बाप है, करने वाला निमित्त है।**

11.7.71 .. ..जैसे बाप बेहद का मालिक है वैसे भले कहाँ भी निमित्त बने हुए हो लेकिन हो तो विश्व-कलाणकारी। दृष्टि और वृत्ति अथवा स्मृति में भी विश्व-कलाणकारी की भावना सदैव रहती है

जितना-जितना रहमदिल के साथ रुहाब में रहेंगे तो फिर रोब खत्म हो ही जायेगा। कोई कैसी भी आत्मा हो, रोब दिलाने वाला भी हो, तो रुहाब और रहमदिल बनने से रोब में कभी नहीं आयेंगे। ऐसे नहीं कि सरकमस्टान्सेज ऐसे थे वा ऐसे शब्द बोले तो यह करना ही पड़ा। करना ही पड़ेगा, यह तो होगा ही, अभी तो सम्पूर्ण बने ही नहीं हैं– यह शब्द अथवा भाषा इस संगठन में नहीं होनी चाहिए। क्योंकि आप निमित्त सर्विस के हो इसलिए इस संगठन को मास्टर नालेजफुल और सर्विसएबल, सक्सेसफुल संगठन कहेंगे।

निमित्त बनने वालों को विशेष अपने हर संकल्प के ऊपर भी अटेन्शन रखना पड़े। क्योंकि निमित्त बनी हुई आत्माओं के ऊपर ही सभी की नज़र होती है। अगर निमित्त बने हुए ही ऐसे-ऐसे कारण कहते चलते तो दूसरे जो आपको देख आगे बढ़ते हैं.

अगर **निमित्त बनने वालों में कोई कमी है तो वह छिप नहीं सकते। इसलिए तुम निमित्त बनी हुई आत्माओं को इतना ही विशेष अपने संकल्प, वाणी और कर्म के ऊपर अटेन्शन रखना पड़े।** अगर अटेन्शन कम रहता है तो चेहर पर टेन्शन की रेखाएं दिखाई पड़ती हैं। उस माया के नालेजफुल जान लेते हैं, वह भी कम नहीं। आप लोग अपने आपको भी कभी अलबेले होने कारण परख न सको लेकिन वह लोग इस बात में आप लोगों से तेज हैं। क्योंकि उन्हों का कर्त्तव्य ही यही है। इसलिए निमित्त बने हुए को इतनी ज़िम्मेदारी लेनी पड़े। कोई भी बात मुश्किल लगती है तो कोई कमी है ज़रूर। अब तो ऐसा अटेन्शन रखने का समय है – एक कदम भी बिना पदम की कमाई के न हो। निमित्त बना हुआ ग्रुप है ना। ताजधारी तो होना ही है। अपनी ज़िम्मेवारी का ताज जितना-जितना धारण करेंगे उतना दूसरे की ज़िम्मेवारी का ताज भी धारण कर सकेंगे। जैसे भोग लगाते हो तो बाप के आगे अर्पण करते हो ना। उसमें शक्ति भर जाती है। तो यह भी ऐसे हर संकल्प, हर कदम बाप को अर्पण करो – जो किया, जो सोचा। बाप की याद अर्थात् बाप के कर्त्तव्य की याद। जितना अर्पणमय के संस्कार

उतना पावरफुल दर्पण। हर संकल्प निमित्त बनकर करेंगे। तो **निमित्त बनना अर्थात् अर्पण।** नम्रचित्त जो होते हैं वह झुकते हैं।

28.7.71 .. ..**आत्म-अभिमानी की स्थिति में ही सर्व आत्माओं को साक्षात्कार कराने के निमित्त बनेंगे।** तो यह अटेन्शन रखना पड़े।

दाता का मुख्य गुण कौनसा होता है? उदारचित्त। जो औरों के उद्धार के निमित्त होंगे, तो वह अपना नहीं कर सकेंगे? सदैव ऐसे समझो कि **हम दाता के बच्चे हैं, एक सेकेण्ड भी देने के सिवाय न रहे।** उसी को कहा जाता है महादानी।

20.9.71. .. .जैसे-जैसे बनाने वाले स्वयं एक सेकेण्ड में व्यक्त से अव्यक्त रूप में स्थित होने के अभ्यासी बनते जायेंगे, वैसे ही बनने वालों को भी इतना जल्दी बना सकेंगे। कोई देवता धर्म की आत्मा न भी हो, लेकिन एक सेकेण्ड में किसको मुक्ति, किसको जीवनमुक्ति का वरदान देने के निमित्त बन जायेंगे। सर्व आत्माओं को मुक्ति का वरदान आप ब्राह्मणों द्वारा ही प्राप्त होना है।

3.10.71.. .. .**माया भी अगर किसी आत्मा द्वारा समस्या वा विघ्न वा परीक्षा-पेपर बनकर आती है, तो उन आत्माओं को निर्दोष समझना चाहिए**। माया ही आत्मा द्वारा अपना खेल दिखा रही है। तो निर्दोष के ऊपर क्या होता है? तरस, रहम आता है ना। **इस रीति से कोई भी आत्मा निमित्त बन जाती है, लेकिन है निर्दोष आत्मा।**

9.10.71.. ...जहाँ देखेंगे निमित्त बनी हुई आत्माएं सिर्फ स्नेह मूर्त हैं, तो उन्हों की रचना में भी समस्याओं को सामना करने की शक्ति कम होगी। यज्ञ वा दैवी परिवार के स्नेही, सहयोगी होंगे लेकिन सामना नहीं कर सकेंगे। कारण? रचता का प्रभाव रचना पर पड़ता है।

विशेष आत्मायें जो निमित्त बनी हुई हों, वो ही जादा यह सर्विस कर सकती हैं। यह ग्रुप विशेष आत्माओं का है ना। जैसे सुनाया – माइक बनना बहुत सहज है लेकिन आप लोगों की सर्विस, माइक तो बहुत बन जायेंगे लेकिन माइट भरने वाले आप हो। अभी यह आवश्यकता है। अभी अपने ही पुरुषार्थ में रहने का समय नहीं है, अब अपने पुरुषार्थ द्वारा प्रत्यक्ष होकर प्रभाव निकालने का समय है और वह प्रभाव ही आत्माओं को ऑटोमेटिकली आकर्षण करेगा।

एक तो सर्विस में नवीनता, दूसरा **निमित्त बनी हुई आत्माओं में नवीनता दिखाई दे**। क्योंकि सर्विस का सारा आधार विशेष आत्माओं पर है। अभी तो सब समझते हैं। जैसे साइंस वाले पावरफुल इन्वेन्शन निकाल रहे हैं, वैसे यह शक्ति ग्रुप भी पावरफुल साइलेन्स का श्रेष्ठ शस्त्र तैयार कर दिखायेंगे।

सबको फोर्स देने के निमित्त आत्मायें हो। उन्हों को अव्यक्ति स्थिति में ऐसा चढ़ा दो जो इस धरती की छोटी-छोटी बातों की आकर्षण उन्हों को खींच न सकें। माया-प्रूफ बनाओ। माया-प्रूफ बनाने का प्रूफ दिखाना है। आप हो प्रूफ! विजयी रत्न क्या होते हैं, उनका प्रूफ हो। तो जो प्रूफ हैं उन सबको माया- प्रूफ बनना है।

18.10.71.. .विशेष आत्माएं जो विशेष रूप से निमित्त बनते हैं, उन्हों को विशेष सर्विस क्या करनी है? **विशेष आत्माओं को तो अन्य से विशेष कार्य करना है ना**। क्योंकि जो अन्य आत्माएं भी कर सकती हैं और कर रही हैं वह किया तो बाकी फर्क क्या हुआ? विशेष आत्माओं को विशेष कार्य करना है। बापदादा विशेष दिनों पर विशेष रूप से बच्चों की और भक्तों की तीनों ही रूप से सेवा करते हैं। **विशेष आत्माओं को खास अपने**

यादगार के दिन साक्षात्कारमूर्त बन, साक्षात् बापदादा समान आत्माओं के प्रति अपनी कल्याण की भावना से, अपने रूहानी स्नेह के स्वरूप से, अपने सूक्ष्म शक्तियों द्वारा आत्माओं में बल भरना चाहिए।

24.10.71.. .. ..जब ब्राह्मण अपने स्वस्थिति में, स्व-स्मृति में वा श्रेष्ठ स्मृति में स्थित रहें तो अन्य आत्माओं को स्थित करा सकेंगे। आप सभी इस समय बाप के साथ-साथ इसी कर्त्तव्य के लिए निमित्त हो। हर आत्मा की बहुत समय से इच्छा वा आशा कौनसी रहती है? **निर्वाण वा मुक्तिधाम में जाने की इच्छा अनेक आत्माओं को बहुत समय से रहती आई है। तो उन सभी आत्माओं की बहुत समय की रही हुई आश पूरी कराने के कर्त्तव्य के निमित्त आप ब्राह्मण हो।**

26.10.71.. .. .जैसे यह सलोगन सुनाया कि ''जो कर्म मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे।'' वैसे ही **जो मुझ निमित्त बने हुए आत्मा की वृत्ति होगी वैसा वायुमण्डल बनेगा।** जैसी मेरी वृत्ति वैसा वायुमण्डल। तो वायुमण्डल को परिवर्तन में लाने वाली वृत्ति है। कर्म से वृत्ति सूक्ष्म है। अभी सिर्फ कर्म के ऊपर ध्यान नहीं देना है लेकिन वृत्ति से वायुमण्डल को बनाने का इन्चार्ज भी मैं हूँ।

21.1.72. ...**जो निमित्त बने हुए हैं उन्हों को यह ख्यालात चलना चाहिए कि हमारी इस तरफ की फुलवारी किस बात में कमजोर है।** किसी भी रीति अपने फुलवारियों की कमजोरी पर कड़ी दृष्टि रखनी चाहिए। समय देकर भी कमजोरियों को खत्म करना है। शक्तियों के प्रभाव की कमी होने के कारण चलते-फिरते सभी बातों में ढीलापन आ जाता है। इसलिए विनाश की तयैारियाँ भी फोर्स में होते फिर ढीले हो जाते हैं। जब स्थापना में फोर्स नहीं तो विनाश में फोर्स कैसे भर सकता है? जैसे शुरु में तुमको शक्तिपन का कितना नशा था! अपने ऊपर कड़ी नजर थी! यह विघ्न क्या है! माया क्या है! कितना कड़ा नशा था! अभी अपने ऊपर कड़ी नजर नहीं है। अपने कर्मों की गति पर अटेन्शन चाहिए।

4.3.72.. .. .**निमित्त बने हुए सदैव पुरुषार्थ के उल्लास में रहते हैं तो उन्हें देख और भी उल्लास में रहते हैं।**

3.5.72 ..कहां भी **अगर स्वयं नहीं परख सकते हो तो जो श्रेष्ठ आत्मायें निमित्त हैं उन्हों से सहयोग लो**। वेरीफाय कराओ कि यह श्रीमत है वा मनमत है। फिर प्रैक्टिकल में लाओ।

31.5.72. .. .भक्ति में भी पुकारते हैं ना – एक बार हाथ पकड़ लो। तो बाप हाथ पकड़ते हैं, हाथ में हाथ देकर चलाना चाहते हैं फिर भी हाथ छोड़ देते हैं तो भटकना नहीं होगा तो क्या होगा? तो अब **अपने आपको भटकाने के निमित्त भी स्वयं ही बनते हो।**

21.6.72, 25.5.73.. ...सदा यह चेक करो कि जादा से जादा तो क्या लेकिन सदा ही समय और संकल्प विश्व-कल्याण प्रति लगाते हैं? ऐसे **सदा विश्व-कल्याण के निमित्त समय और संकल्प लगाने वाले क्या बनेंगे? विश्व-महाराजन्।** अगर अपने प्रति ही समय लगाते रहते हैं तो विश्व-महाराजन् कैसे बनेंगे? तो विश्व-महाराजन् बनने के लिए विश्व-कल्याणकारी बनो।

12.7.72.. ...ऐसे समझकर चलो -- **यह जो हद की रचना बाप-दादा ने ट्रस्टी बनाकर सम्भालने के लिए दी है, वह मेरी रचना नहीं लेकिन बाप-दादा द्वारा ट्रस्टी बन इसको सम्भालने के लिए निमित्त बना हुआ हूँ।** ट्रस्टीपन में मेरापन नहीं होता। ट्रस्टी निमित्त होता है।

14.7.72.. ..**असत्य को असत्य सिद्ध करो तब तो सत्य की जय हो।** जय-जयकार होगी ही तब। फिर इतनी मेहनत करने की ज़रूरत नहीं। इसके लिए प्लैन्स चाहिए, तरीका चाहिए और अन्दर में वह नशा चाहिए कि **हम गुप्त अनुचर हैं, इन्हों के पोल सिद्ध करना हमारा काम है, हम ही इसके लिए निमित्त हैं।** यह अन्दर से उमंग-उत्साह आवे, तब यह काम हो सकता है।

19.7.72. .. .बच्चे का वेस्ट टाइम नहीं फील होगा, उनका तो काम ही यह है। **तो आप अब जिस सेवा के अर्थ निमित्त बने हुए हो वह स्टेज ही जगत्-माता की है।** विश्व-कल्याणकारी हो ना। हद का कल्याण करने वाले अनेक है। विश्व-कल्याण की भावना की स्टेज है --जगत्- माता।

2.8.72. .. .लेकिन पावरफुल ऐसा हो जो कोई भी बात सामने आवे तो हिले नहीं, यह कमी अजुन है। **जो सर्विसएबल निमित्त बनते हैं उन्हों में भी नॉलेज जादा है, लव भी है लेकिन पावर कम है। पावरफुल स्टेज की निशानी क्या होगी? एक सेकेण्ड में कोई भी वायुमण्डल वा वातावरण को, माया के कोई भी समस्या को खत्म कर देंगे।** कब हार नहीं खावेंगे। जो भी आत्मायें समस्या का रूप बन कर आती हैं वह उनके ऊपर बलिहार जावेंगे, जिसको दूसरे शब्दों में प्रकृति दासी कहें। जब 5 तत्व दासी बन सकते हैं तो मनुष्य आत्मायें बलिहार नहीं जावेंगी? तो पावरफुल स्टेज का प्रैक्टिकल रूप यह है। इसलिये कहा कि एक ही समय तीनों रूपों से सर्विस करने की जब रूपरेखा बन जावेगी तब हरेक कर्त्तव्य में सिद्धि दिखाई देगी।

12.11.72. ...जो हर संकल्प और सेकेण्ड ईश्वरीय सेवा के सहयोग में लगाते हैं, उसकी कितनी श्रेष्ठ प्राप्ति होगी! ऐसे महादानी सर्वत्यागी सहज ही बन जाते हैं। ऐसे सर्वत्यागी वर्तमान और भविष्य में सर्वश्रेष्ठ भाग्यशाली बनते हैं। न सिर्फ भविष्य लेकिन वर्तमान समय भी ऐसे श्रेष्ठ भाग्यशाली आत्मा के भाग्य को देखते हुये, अनुभव करते हुए अन्य आत्माएं उनके भाग्य के गुण गाते हैं और **अनेक आत्माओं को अपने श्रेष्ठ भाग्य के आधार से भाग्यशाली बनाने के निमित्त बनते हैं**।

20.11.72. .. .जो आत्मा की मुख्य शक्तियां वर्णन करते हो मन, बुद्धि और संस्कार, – इन तीनों स्वयं की शक्तियों के ऊपर विजयी अर्थात् अधिकारी बने हो? अपनी शक्तियों के अधीन तो नहीं होते हो? जो विश्व की सेवा के निमित्त बने हुये हैं, उन्हों की यह स्थिति तो सहज और स्वत: ही होगी ना।

24.12.72.. ...विघ्न-विनाशक बन लग्न में मग्न रहना। लग्न से यह विघ्न भी अपना रूप बदल देंगे। **विघ्न, विघ्न नहीं अनुभव होंगे लेकिन विघ्न विचित्र अनुभवीमूर्त बनाने के निमित्त बने हुए दिखाई देंगे।** विघ्न भी एक खेल दिखाई देंगे। बड़ी बात छोटी-सी अनुभव होगी। 'कैसे' शब्द बदल 'ऐसे' हो जावेगा। 'पता नहीं' शब्द बदल 'सभी पता है' अर्थात् नालेजफुल बन जावेंगे।

11.4.73.. .. .**जो निमित्त बने हुए हैं उन में भी अवश्य हर समय परिवर्तन होता जा रहा है** तभी तो उन के आधार से समय परिवर्तन होता है। समय एक परिवर्तन का आधार है। परिवर्तन करने वालों के ऊपर अर्थात् जो परिवर्तन करने के लिए निमित्त बने हुए हैं, वह अपने में ऐसे अनुभव करते हैं कि हर समय मनसा, वाचा और कर्मणा सभी रूप से परिवर्तन होता जा रहा है। इसको कहेंगे–'चढ़ती कला का परिवर्तन'।

जो मुख्य निमित्त बने हुए महावीर हैं यदि उन को किसी भी बात में परिवर्तन लाने में समय लगता है, तो फाईनल परिवर्तन में भी अवश्य समय लगेगा। निमित्त बने हुए महावीर जो हैं वह हैं मानों समय की घड़ी। जैसे घड़ी समय स्पष्ट दिखाती है, इसी प्रकार महावीर जो बनते हैं, निमित्त बने हुए हैं।

जो विश्व-परिवर्तन के निमित्त बने हुए हैं उन की परिवर्तन की स्टेज भी औरों से ऊंची होगी तो यह चैकिंग (Checking) होनी चाहिए। रात दिन का अन्तर दिखाई दे, इस पर ही लक्की स्टार्स का गायन है। .. .ज्ञान सूर्य, ज्ञान चन्द्रमा तो अपने स्टेज पर हैं, लेकिन सम्पूर्ण परिवर्तन में लक्की स्टार्स का नाम बाला है।

13.4.73 .. ..अपने सहयोग से और अपने महादान देने के कर्त्तव्य के आधार से उन की भावना का फल दिलाने के निमित्त बनना पड़े। **जो विशेष आत्मायें निमित्त बनेंगी उनमें भी सभी शक्तियों का स्टॉक अन्दर अनुभव हो, तब ही समझें कि अब सम्पूर्ण स्टेज की व प्रत्यक्षता का समय नजदीक है।** उस समय कोई याद नहीं होगा। दूसरों के प्रति ही हर सेकेण्ड, हर संकल्प होगा।

8.5.73 .. ..जब आप लोग भी किसी आत्मा को बाप द्वारा मिला हुआ खजाना देने के निमित्त भी बनती हो तो भी स्मृति क्या रहती है? आत्मा के पास अपना कुछ है क्या? बाप के दिये हुए को ही अपना बनाया है। **जब औरों को भी देने के निमित्त बनते हो, उस समय अगर यह स्मृति में नहीं रहता कि बाप का खजाना दे रहे हैं तो उन आत्माओं को श्रेष्ठ सम्बन्ध में जोड़ नहीं सकते हो।**

1.6.73 .. ..**जो निमित्त बनी हुई हैं। सदैव अपनी हर शक्ति का स्टॉक चेक करो।** जिसके पास सर्व-शक्तियों का स्टॉक जमा है वही मुख्य गाये जाते हैं।

6.6.73 .. ..किसी भी प्रकार के संस्कार वाला हो लेकिन बापदादा के समीप होने के कारण, परखने की पॉवर होने के कारण, चुम्बक के समान कितनी भी दूर वाली आत्मा को बापदादा के समीप लाने वाले हैं। बाप के गुणों, बाप के कर्त्तव्यों के समीप लाने वाले हैं। समीप अर्थात् चुम्बक स्वरूप होगा। **चुम्बक समान और चुम्बक के समीप होने के कारण सर्व-शक्तियों के आधार से विश्व के उद्धार करने के निमित्त बनते हैं।** तो समीप आत्मायें विश्व का आधार और विश्व का उद्धार करने वाली हैं – वह मस्तकमणि हैं।

15.7.73 .. ..तो क्या विश्व का नव-निर्माण करने वाली अर्थात् स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्माएं ऐसे एवर-रेडी हैं? अपनी स्थापना का कार्य ऐसे कर लिया है कि जिससे विनाशकारियों को इशारा मिले?

जब आप लोग सर्व-आत्माओं के कल्याण के निमित्त बनते हो, अनेक आत्माओं का बाप से मिलन मनाने के निमित्त बनते हो, तो ऐसी आत्माओं को अपने ऊपर कितनी बड़ी जिम्मेवारी महसूस करनी चाहिए? यदि कोई तड़पती हुई प्यासी आत्मा आपके सामने आये, उनकी तड़प या प्यास को समाप्त कर उसकी प्यास मिटाने के निमित्त कौन हैं? बाप या आप? बाप तो बैकबोन हैं, लेकिन निमित्त शक्ति सेना और पाण्डव सेना ही है। तो **निमित्त बनने वालों के ऊपर इतनी बड़ी जिम्मेवारी है जो किसी भी आत्मा को किसी भी बात से या किसी प्रॉपर्टी से भी वंचित नहीं कर सकते** – क्या ऐसे सर्व के महादानी और वरदानी बने हो? क्या एक सेकेण्ड में किसी को परख सकते हो? अगर किसी को आवश्यकता हो शान्ति की और आप उसको सुख का रास्ता बताओ।

3.2.74 .. ..ऐसे ही आप इन्तज़ाम करने के निमित्त बनी हुई आत्माएं भी, यह तो नहीं सोचती हो, कि जो होगा सो देखा जायेगा? इसको ही अलबेलापन कहा जाता है। अब तो इतना बड़ा कार्य करने के लिए खूब तैयारी चाहिए, पता है कि क्या तैयारी चाहिए?

ड्रामा के अनुसार निश्चित होते हुए भी निमित्त बनी हुई आत्माओं को पुरुषार्थ करना ही पड़ता है। इसी प्रकार अब इस मुक्ति और जीवनमुक्ति के गेट्स खोलने की जिम्मेदारी बाप के साथ-साथ आप सबकी है।

सम्पर्क-सम्बन्ध में रहते हुए कर्मातीत, क्या ऐसी स्टेज रहती है? **कोई भी लगाव न हो और सर्विस भी लगाव से न हो लेकिन निमित्तभाव से हो**; इससे ही कर्मातीत बन जायेंगे।

24.4.74 .. ..**दुनिया की आत्माओं को आजकल कोई नई बात चाहिये जो कि कभी किसी के संकल्प में भी न हो। ऐसा कर्त्तव्य दिखाने के कौन निमित्त बनेंगे? –महारथी।**

स्वयं की और अन्य आत्माओं की दोनों की सेवा साथ-साथ और सदा रही। दोनों का बैलेन्स समान रहे यह दिखाई देता है? दोनों का बैलेन्स विश्व की सर्व-आत्माओं को ब्लिस दिलाने के निमित्त बनेगी।

बाप ने सर्व-शक्तियों का और सर्व-कर्त्तव्यों का आपको निमित्त बना दिया है ना? क्योंकि बाप ने स्वयं को वानप्रस्थी बनाकर आप सबको तख्तनशीन और ताजधारी बना दिया है। जो बाप की ज़िम्मेवारियाँ रही हुई हैं वह अब तुम बच्चों की हैं।

28.4.74 .. ..आप पाण्डवों का संगठन अथवा निमित्त बनी हुई आत्माओं का संगठन सिर्फ स्थूल सर्विस के साधन इकट्ठे करने या उन्हें प्रैक्टिकल में लाने तक ही नहीं है। स्थूल साधनों के साथ-साथ सूक्ष्म साधन और प्लैन (plan) के साथ-साथ प्लेन (plain) स्थिति और स्मृति रहे–इन बातों को अपनी ज़िम्मेवारी समझ कर चलना अर्थात् कर्म करना है। जो भी यहाँ बैठे हैं–वह सब इन बातों की ज़िम्मेवारी अपने को निमित्त समझ उठावेंगे तो क्या विहंग मार्ग की सर्विस का रूप नहीं दिखाई देगा।

आप निमित्त बने हुए पाण्डवों की है क्योंकि विश्व के आगे चैलेन्ज की हुई है कि घर-गृहस्थ में रहते कमल-पुष्प के समान न्यारे और प्यारे रहने की। **कीचड़ में रहते कमल अथवा कलियुगी सम्पर्क में रहते ब्राह्मण इस चैलेन्ज को प्रैक्टिकल रूप में लाने के निमित्त है**।

23.5.74 .. ..महीन पुरुषार्थ अर्थात् महारथी के सामने, पाँच तत्व अपनी तरफ, भिन्न-भिन्न रूप से आकर्षित कर, महीन पाप बनाने के निमित्त बनते हैं। पाँच विकारों को समझना, और उन्हों को जीतना, सहज है, लेकिन पाँच तत्वों के आकर्षण से परे रहना, यह महारथियों के लिए विशेष पुरुषार्थ है।

27.5.74 .. ..विश्व का कल्याण करने के श्रेष्ठ कार्य में निमित्त बनी आप श्रेष्ठ आत्माएं हो आपकी विश्व में विशेष स्थिति है। आपको यह भी चैक करना है कि मेरे द्वारा जो भी बोल निकलते हैं, क्या वह सर्व के व स्वयं के प्रति कल्याणकारी हैं? व्यर्थ की तो बात ही छोड़ दो। लेकिन अभी की स्टेज के अनुसार ऐसा कोई भी शब्द मुख से नहीं निकलना चाहिए जिसमें कल्याण का कार्य समाया हुआ न हो। विश्व के कल्याण के निमित्त अगर आत्मायें न चाहते हुए व न सोचते हुए साधारण रीति से भी किसी आत्मा को श्रापित करने के कार्य में निमित्त बन जाती हैं तो उसको क्या कहेंगे? वरदानी कहेंगे क्या? तो इतना अटेन्शन और महीन चैकिंग वर्तमान समय बहुत आवश्यक है।

30.5.74 .. ..सर्वशक्तियाँ, ऐसे एवर-रेडी के हर समय ऑर्डर मानने वाली सिपाही व साथी रहेंगी। ऑर्डर किया और हर शक्ति जी-हजूर करेगी। उनका मस्तिष्क सदा मस्तक मणि अर्थात् आत्मा की झलक से चमकता हुआ दिखाई देगा। उनके नैन रूहानी लाइट और माइट के आधार से सर्व-आत्माओं को मुक्ति और जीवन-मुक्ति का मार्ग दिखाने के निमित्त बने हुए होंगे।

26.6.74.. .. स्वयं भी बाप द्वारा व सर्व सहयोगी आत्माओं द्वारा सहयोग, स्नेह, हिम्मत, उल्लास, उमंग की इच्छा रखने वाले और कोई भी प्रकार का आधार लेने वाले सर्व-आत्माओं के निमित्त आधार-मूर्त नहीं बन सकते।

अपनी सर्व-सिद्धियों को जानकर उन्हें यूज़ करो। लेकिन निमित्त-मात्र बन कर यूज़ करो। मैं-पन भूल, श्रीमत के आधार से हर सिद्धि को यूज़ करो। अगर मैं-पन में आकर, कोई भी सिद्धि को यूज़ किया, तो क्या कहावत है? ''करामत खैर खुदाई।'' अर्थात् श्रेष्ठ-पद के बजाय, सजा के भागी बन जावेंगे। साक्षीपन नहीं, तो फिर सजा है। इसलिए सदा स्मृति-स्वरूप और सिद्धि-स्वरूप बनो।

30.6.74 .. ..भक्तों की भिन्नभिन्न प्रकार की भावना के अनुसार साक्षात्कार कराने और अब तक भी चारों ओर कल्प पहले वाले छुपे हुए ब्राह्मण आत्माओं को सन्देश पहुंचाने के लिए, बच्चों को निमित्त बनाने के कार्य में, पुरानी दुनिया को समाप्त कराने-अर्थ निमित्त बने हुए, वैज्ञानिकों की देख-रेख करने, .. ज्ञानी तू आत्मा, स्नेही व सहयोगी बच्चों को, सारे दिन के अन्दर ईश्वरीय सेवा का कार्य करने व मायाजीत बनने में 'हिम्मते बच्चे, मददे बाप' के नियम के अनुसार, उनको भी मदद देने के कर्त्तव्य में, ड्रामानुसार निमित्त बने हैं। जैसे विनाश के अर्थ, निमित्त बनी हुई आत्माओं की गति, सूक्ष्म और तीव्र होती जा रही है तो ऐसे ही स्थापना के अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की स्थिति और गति भी सूक्ष्म और तीव्र होनी चाहिये ना? तभी तो दोनों कार्य सम्पन्न होंगे।

कर्म-बन्धन से मुक्त, सम्पन्न हुई आत्मा, इस कल्प के जन्म-मरण के चक्र को समाप्त करने वाली आत्मा, निराकार बाप की फर्स्ट नम्बर साथी आत्मा, विश्व के कल्याण प्रति निमित्त बनी हुई फर्स्ट आत्मा, स्वयं के प्रति और विश्व के प्रति सर्व- सिद्धि प्राप्त हुई आत्मा, जहाँ चाहे और जितना समय चाहे, वह वहाँ स्वतन्त्र रूप में पार्ट बजा सकती है।

4.7.74 .. ..सम्पूर्ण निशाने के नज़दीक पहुंचने की निशानी का डबल (double) नशा उत्पन्न होता है? पहला नशा है–कर्मातीत अर्थात् सर्व कर्म बन्धनों से मुक्त, न्यारे बन, प्रकृति द्वारा निमित्त-मात्र कर्म कराना। ऐसे कर्मातीत अवस्था का अनुभव होगा। न्यारे बनने का पुरुषार्थ बार-बार नहीं करना पड़ेगा। सहज और स्वत: ही अनुभव होगा कि कराने वाला और कराने वाली यह कर्मेन्द्रियाँ स्वयं से, हैं ही अलग। दूसरा नशा है–विश्व का मालिक बनने का, कि ऐसे अनुभव करेंगे।

14.7.74 .. ..आपके भक्त कौन बनेंगे, किस हिसाब से आपके भक्त बनेंगे? जिन आत्माओं को, जिन श्रेष्ठ आत्माओं द्वारा व निमित्त बनी हुई आत्माओं द्वारा कुछ-न-कुछ प्राप्ति का अनुभव होता है, उन द्वारा कोई साक्षात्कार होता है और या कोई वरदान प्राप्ति का अनुभव होता है, तो उस आधार पर, वह उनकी प्रजा और भक्त बनते हैं।

भक्त कभी भी डायरेक्ट (Direct) बाप के कनेक्शन (Connection) में आने की शक्ति नहीं रखते, वे सदा आत्माओं के सम्बन्ध में ही संतुष्ट रहते हैं। उनके बार-बार यही बोल रहेंगे, आप ही हमारे लिए सब-कुछ हो, आपके पास ऐसे भक्त भी आवेंगे। न चाहते हुए भी हरेक निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रजा और भक्त बनते ही रहते हैं।

गायन भी है कि '**जैसे कर्म हम करेंगे, हमको देख और सभी करेंगे' ऐसे उनके हर कर्म, अनेक आत्माओं को, एक पाठ पढ़ाने के निमित्त बन जावेंगे और उनका हर कर्म शिक्षा-स्वरूप होगा।** इसको ही कहा

जाता है–समर्थ-कर्म। ऐसे संकल्प, बोल और कर्म वाला ही हर बात में सदा स्वयं से सन्तुष्ट होगा। सन्तुष्ट होने के कारण ही वह हर्षित भी होगा लेकिन उसे हर्षित बनाना नहीं पड़ेगा बल्कि वह स्वत: ही सदा हर्षित होगा।

18.7.74.. .. **सदैव हर कर्म में व हर संकल्प में चैक करो कि यह संकल्प, बोल व कर्म क्या नव-निर्माण के निमित्त हैं?** ऐसी स्टेज रखने से सर्व-विशेषतायें स्वत: ही आ जावेंगी। यह है वर्तमान समय पुरुषार्थ को तीव्र करने की युक्ति।

साकार रूप द्वारा व अव्यक्त रूप द्वारा शिक्षा और स्नेह की पालना, कितने समय ली है? पालना लेने के बाद, अन्य आत्माओं की पालना करने के निमित्त बन जाते हैं। क्या ऐसी पालना करने के निमित्त बने हो या अभी तक लेने वाले ही हो? अभी तो पुरानों को, आने वाले नये बच्चों की पालना करनी चाहिए अर्थात् अपने शिक्षास्वरूप द्वारा और स्नेह द्वारा उनको आगे बढ़ाने में सहयोगी बनना है और इस कार्य में दिन-रात बिजी रहना चाहिए।

यह तो सब कहेंगे कि सर्विस-अर्थ निमित्त अर्थात् बाप के गुणों को साकार करने के निमित्त–इसको ही सर्विस कहा जाता है।

13.9.74.. .. आजकल की निर्बल आत्माओं को सिर्फ अपना बल नहीं चाहिए क्योंकि वे सिर्फ ज्ञान और योग के आधार से नहीं चल पाते हैं बल्कि उन्हों को निमित्त बनी हुई आत्माओं की शक्ति का सहयोग चाहिए, जिससे कि वह जम्प दे सकें।

ऐसी निर्बल आत्माओं को सिर्फ ज्ञान दे दिया, उन्हें कोर्स करा दिया व योग में बैठा दिया, वे इससे आगे नहीं बढ़ेगी। अब तो निमित्त बनी हुई आत्माओं को, अपनी प्राप्त की हुई शक्तियों के आधार से ही निर्बल आत्माओं को सहयोग देते हुए, आगे बाप के गुणों को साकार करने वाला ही मुरब्बी बच्चा है। बढ़ाना पड़ेगा। इसके लिये अभी से ही अपने में सर्वशक्तियों का स्टॉक जमा करो।

15.9.74.. .. अभी तुम बच्चों का अन्तिम-स्थिति बनाने का अन्तिम पुरुषार्थ चल रहा है। जो महारथी बच्चे निमित्त बने हुए हैं, उन को अपने पुरुषार्थ की रफ्तार में भी सबके आगे निमित्त बनना है।

कर्त्तव्य करते हुए भी कि मैं फ़रिश्ता निमित्त इस कार्य अर्थ पृथ्वी पर पाँव रख रहा हूँ, लेकिन मैं हूँ अव्यक्त देश का वासी, अब इस स्मृति को ज्यादा बढ़ाओ। ''मैं इस कार्य-अर्थ अवतरित हुई हूँ अर्थात् जैसे कि मैं इस कार्य-अर्थ पृथ्वी पर वतन से आई हूँ, कारोबार पूरी हुई, फिर वापस अपने वतन में। जैसे कि बाप आते हैं, तो बाप को स्मृति है ना कि हम वतन से आये हैं, कर्त्तव्य के निमित्त और फिर हमको वापिस जाना है। ऐसे ही आप सबकी भी यह स्मृति बढ़नी चाहिए कि मैं अवतार हूँ अर्थात् मैं अवतरित हुई हूँ, अभी मैं ब्राह्मण हूं और फिर मैं देवता बनूंगी–यह भी वास्तव में मोटा रूप है। यह स्टेज भी साकारी है। अभी आप लोगों की स्टेज आकारी चाहिए, क्योंकि आकारी से फिर निराकारी सहज बनेंगे। जैसे बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।''

जो निमित्त बने हुए मुख्य हैं, सर्विसएबल हैं और राज्यभाग्य की गद्दी लेने वाले हैं, ऐसे अनन्य रत्न लाइट हाउस मिसल घूमते और चारों ओर लाइट देते रहेंगे।चाहे निमित्त-मात्र भले ही उनका एक ठिकाना हो, जैसे लाइट हाउस का निमित्त ठिकाना तो एक है ना? लेकिन सर्विस एक ठिकाने की नहीं करते बल्कि चारों ओर लाइट फैलाते हैं। इसी रीति स्थान भले एक ही होगा, लेकिन जो अपने में विशेषतायें होंगी या शक्तियाँ हैं, उसका लाभ चारों ओर हो।

9.1.75.. .. विनाश की घड़ियों का इन्तजार करने की बजाय तो स्वयं को अभी से सम्पन्न बनाने और बाप-समान बनाने के इन्तजाम में रहना चाहिए। परन्तु इन्तजार में ज्यादा रहते हो। प्रारब्ध भोगने वाले ही इस इन्तजार में रहते हैं तो अन्य आत्मायें, जो साधारण प्रारब्ध पाने वाली हैं, उन तक भी सूक्ष्म संकल्प पहुँचाते हो? रिजल्ट में मैजॉरिटी (Majority) आत्मायें यही शब्द बोलती हैं कि जब विनाश होगा तब देख लेंगे। जब प्रैक्टिकल प्रभाव देखेंगे, तब हम भी पुरुषार्थ कर लेंगे। क्या होगा, कैसे होगा – यह किसको पता? यह वायब्रेशन्स निमित्त बनी हुई आत्माओं का औरों के प्रति भी कमजोर बनाने का व भाग्यहीन बनाने का कारण बन जाता है।

इसलिये अपने कमजोर संकल्पों को भी अब समर्थ बनाओ। यह जो कहावत है कि 'संकल्प से सृष्टि रची', यह इस समय की बात है। जैसा संकल्प वैसी अपनी रचना रचने के निमित्त बनेंगे। इसलिये हर-एक स्टार में अलग-अलग दुनिया का गायन करते हैं।

आधारमूर्त्त के दृढ़ संकल्प में कभी हलचल के संकल्प रहते हैं तो विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं में कभी जोश, कभी होश आ जाता है। आधारमूर्त्त आत्माओं का संकल्प ही विनाश-अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं की प्रेरणा का आधार है। तो अपने-आप से पूछो कि प्रेरक शक्ति-सेना का संकल्प दृढ़ निश्चय-बुद्धि है और स्वयं एवर रेडी हैं? जैसे यज्ञ रचने के निमित ब्रह्मा बाप के साथ ब्राह्मण बने, तो यज्ञ से प्रज्जवलित हुई यह जो विनाशज्वाला है, इसके लिए भी जब तक ज्वाला रूप नहीं बनते, तब तक यह विनाश की ज्वाला भी सम्पूर्ण ज्वाला रूप नहीं लेती है। यह भड़कती है, फिर शीतल हो जाती है। कारण? क्योंकि ज्वाला मूर्त और प्रेरक आधारमूर्त्त आत्माएँ अभी स्वयं ही सदा ज्वाला रूप नहीं बनी हैं। ज्वाला-रूप बनने का दृढ़ संकल्प स्मृति में नहीं रहता है।

स्वयं को ज्ञान-मूर्त, याद-मूर्त और साक्षात्कार-मूर्त बनाओ। जो भी सामने आये, उसे मस्तक द्वारा मस्तक-मणि दिखाई दे, नैनों द्वारा ज्वाला दिखाई दे और मुख द्वारा वरदान के बोल निकलते हुए दिखाई दें। जैसे अब तक बाप-दादा के महावाक्यों को साकार स्वरूप देने के लिए निमित्त बनते आये हो, अब इस स्वरूप को साकार बनाओ।

7.2.75.. .. कैसे भी संस्कारों वाली, असन्तुष्ट रहने वाली आत्मा सम्पर्क में आये, वह भी सम्पर्क में यह अनुभव करे कि मैं अपने संस्कारों के कारण ही असन्तुष्ट रहती हूँ लेकिन इन विशेष आत्माओं में मेरे प्रति स्नेह व सहयोग की व रहमदिल की शुभ भावना सदा नजर आती है। अर्थात् वह अपनी ही कमजोरी महसूस करे। वह कम्पलेन्ट (Complaint) यह न निकाले कि यह निमित्त बनी हुई आत्मायें मुझ आत्मा को सन्तुष्ट नहीं कर सकती। सर्व आत्माओं द्वारा ऐसी सन्तुष्टमणि का सर्टिफिकेट प्राप्त हो, तब कहेगे कि यह सम्पूर्णता के समीप हैं।

निमित्त बनी हुई विशेष आत्माएँ हो ना? तो इसकी परसेन्टेज निकालो, स्वभाव, संस्कार को अपने शस्त्र के स्वरूप में यूज कर सकते हो या यह मुश्किल है? इस बात में सफ़लता की कितनी परसेन्टेज है? दूरबाज खुशबाज वाला नहीं। किनारा करने वाला नहीं। सम्पर्क में आते हुए, सम्बन्ध में रहते हुए स्वयं ही अपना सम्पर्क, सम्बन्ध बढ़ाते सफ़लतामूर्त बने तब नम्बर आगे ले सकते हैं। बेहद के मालिक का बेहद से सम्बन्ध चाहिए ना। वह कैसे होगा? चान्स मिलता नहीं – लेकिन हर कार्य के योग्य स्वयं की योग्यताएं स्वत: ही निमित बना देती हैं।

8.2.75.. .. दिन-प्रतिदिन जितना श्रेष्ठ बनते जा रहे हो उतना विश्व की हर आत्मा की निगाहों में प्रसिद्ध होते जा रहे हो। सबकी नजर आपकी तरफ बढ़ती जा रही हैं। अब सबके अन्दर यह इन्तजार है कि कब स्थापना के निमित्त बने हुए ये लोग सुख-शान्तिमयी नई दुनिया की स्थापना का कार्य सम्पन्न करते हैं, जो यह दु:खदाई दुनिया के स्थापना के आधार पर परिवर्तित हो जायेगी। इन्हों की नजर स्थापना करने वालों में है और स्थापना करने वालों

की नजर कहाँ है? अपने कार्यो में मग्न हो वा विनाशकारियों की तरफ नजर रखते हो? विनाश के साधनों के समाचारों को सुनने के आधार पर तो नहीं चल रहे हो? वह ढीले होते तो आप भी ढीले हो जाते हो? क्या स्थापना के आधार पर विनाश होता है या विनाश के आधार पर स्थापना होनी है? स्थापना करने वाले विनाश की ज्वाला प्रज्वलित करने के निमित्त बने हुए हैं न कि विनाश वाले स्थापना करने वालों के पुरुषार्थ की ज्वाला प्रज्वलित करने कि निमित्त हैं।

अपने रचे हुए अविनाशी ज्ञान यज्ञ, जिसके निमित्त ब्राह्मण बने हुए हो, इस यज्ञ में पहले स्वयं की सर्व कमजोरियों व कमियों की आहुति डालो। तभी सारी पुरानी दुनिया को आहुति पड़ने के बाद समाप्ति होगी। अब दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ। तब यह सम्पन्न होगा।

9.2.75.. .. सदैव यह सोचो कि जब मैं हूँ ही विश्व को परिवर्तन करने के निमित्त, तो स्वयं को परिवर्तन करना, क्या बड़ी बात है? तो फौरन ही परिवर्तन करने की शक्ति आयेगी। कैसे होगा, क्या होगा, होगा व नहीं होगा? यह क्वेश्चन (Question) नहीं उठेगा। दूसरी बात यह स्मृति में रखो कि यह विश्व-परिवर्तन का कार्य कितनी बार किया है? अनगिनत बार किया है, यह तो पक्का है ना? बाप के साथ मैं भी अनेक बार निमित्त बना हूँ। जब अनेक बार की हुई बात होती है तो वह मुश्किल लगती है क्या? अति पुरानी बात को सिर्फ निमित्त बन रिपीट कर रहे हो। रिपीट करना सहज होता है या मुश्किल? तो यह भी स्मृति में रहना चाहिए। कोई जरा भी मुश्किल का संकल्प आये तो यह हिम्मत की बात याद रखो। फिर से अनेक 'अब नहीं तो कब नहीं' — यह स्लोगन सदा याद रहे। फिर से अनेक बार की हुई बात की स्मृति आने से समर्थी आ जायेगी।

एक एक निमित बनी हुई श्रेष्ठ आत्मा को सिर्फ दो चार स्थान नहीं लेकिन आसपास के सर्व स्थानों पर चक्र लगाने के निमित्त बनना है। हर स्थान पर आप समान निमित्त बनाते जाओ और आगे बढ़ते जाओ। उसी स्थान पर बैठ न जाओ। तो इस वर्ष चक्र लगाते विशेष सेवा यह करनी है। सन्देश देते आप समान निमित्त बनाते सारे विश्व को तथा स्वयं के आसपास वालों को सन्देश देना है। अब हैण्डस बनाने का कर्त्तव्य करो। समय प्रमाण जैसे समय की गति तीव्र होती जा रही है, ऐसी सेवा की रिजल्ट का प्रत्यक्ष फल बनी बनाई निमित बनने वाली आत्माएँ सहज ही निकल सकती हैं। सिर्फ लक्ष्य, हिम्मत और परख चाहिए।

2.8.75.. .. जैसे जान (शरीर) के लिए नयन आवश्यक हैं वैसे ही जहान के लिए नूर आवश्यक हैं। अगर ऐसी आत्मायें निमित्त नहीं बनें तो जहान जंगल बन जाता है अर्थात् जहान, जहान नहीं रहता। ऐसे सदा स्वयं को भी सितारा ही समझकर कर्म करते हैं? सितारा भी चमकता हुआ सितारा। ऐसे बच्चे ही बाप-दादा के नयनों में समाये हुए अर्थात् बाप की लगन में सदा मग्न रहने वाले हैं। साथ-साथ उनके नयनों में भी सदा बाप-दादा समाया हुआ रहता है। ऐसे नयनों के नूर सिवाय बाप के और कोई भी व्यक्ति व वस्तु को देखते हुए भी नहीं देखते। ऐसी स्थिति बनी है अथवा अब तक भी और कुछ दिखाई देता है? किसी में भी अंश-मात्र कोई रस दिखाई देता है? असार संसार अनुभव होता है? यह सब मरे ही पड़े है – ऐसा बुद्धि द्वारा अनुभव होता है? मुर्दों से कोई प्राप्ति की इच्छा हो सकती है, क्या कोई सम्बन्ध की अनुभूति होती है?

यह ईश्वरीय प्रत्यक्षता की आवाज विदेश सर्विस ही भारत में नाम-बाला करेगी। तो विदेशी इस कार्यार्थ निमित्त बने हुए हैं। इसलिये अब ऐसी इन्वेन्शन निकालो। कोई ऐसी आत्मा को निमित्त बनाओ जिनके अनुभव का आवाज हो, मुख का आवाज नहीं। अनुभव का आवाज विदेश से भारत तक पहुँचे।

1.10.75.. .. इस समय सभी हर्षित मुख हो – ऐसे ही सदा हर्षित मुख रहो तो स्वयं का भी समये बचायेंगे और निमित्त बनी हुई आत्माओं का भी समय बचा लेंगे। अभी तक गिरने और चढ़ने में, स्वयं को सम्भालने में व बुद्धि को ठिकाने लगाने में समय जो इसमें जाता है तो यह समय बच जायेगा और वह कमाई में जमा हो जायेगा। अब बचत करना सीखो।

3.10.75.. .. अब बेहद के प्लैन्स बनाओ। बेहद के प्लैन्स अर्थात् जिन भी आत्माओं की सेवा करते हो वह हर-एक आत्मा अनेकों के निमित्त बनने वाली हो। **एक-एक आत्मा बेहद की आत्माओं की सेवा के प्रति निमित्त बने।**

8.10.75.. .. आप निमित्त बनी आत्माओं को सदा यह अटेन्शन रहना चाहिये कि मैं तीव्र पुरुषार्थ करुँ। तीव्र पुरुषार्थ का सलोगन क्या है? (जो कर्म मैं करुँगा, मुझे देख दूसरे भी वैसा ही करेंगे) यह तो मध्यम पुरुषार्थ का सलोगन है। तीव्र पुरुषार्थ का सलोगन है – 'जैसा संकल्प मैं करुँगा मेरे संकल्प का वैसा ही वातावरण बनेगा।' संकल्प का भी आधार वातावरण पर और वातावरण का आधार पुरुषार्थ पर है। जो संकल्प करेंगे उसे सभी फॉलो करेंगे। कर्म तो मोटी बात है, लेकिन संकल्प पर भी अटेन्शन (Attention), संकल्प को हल्की बात नहीं समझना, क्योंकि संकल्प है बीज।जब ऐसी चैकिंग करेंगे तब ही आप आगे बढ़ सकेंगे। नहीं तो निमित्त बनने का जो चॉन्स मिला है, उसका लाभ उठा नहीं सकेंगे। अब तो गुह्य महीन पुरुषार्थ होना चाहिए।

11.10.75.. .. हर समय अपने को निमित्त बनी हुई समझती हो? जो अपने को निमित्त बनी हुई समझती हैं, उन्हों में मुख्य यह विशेषता होगी – **जितनी महानता उतनी नम्रता**। दोनों का बैलेन्स होगा। तब ही निमित्त बने हुए कार्य में सफ़लतामूर्त बनेंगे।

11.1075.. .. जैसे शुरू में घर बैठे ब्रह्मा रूप का साक्षात्कार होता था जैसे कि प्रैक्टिकल कोई बोल रहा है, इशारा कर रहा है, ऐसे ही अन्त में भी निमित्त बनी हुई शक्ति सेना का अनुभव होगा।

15.10.75.. .. **आप हर कर्म करके दिखाने के निमित्त हैं।** हर टीचर के पीछे देख कर चलने वाले, करने वाले, आगे बढ़ने वालों की कितनी बड़ी लाइन होती है? तो टीचर सही लाइन पर चलाने के निमित्त है। वह रुकती है तो सारी लाइन रुक जाती है, तुम्हारी लाइन की जिम्मेवारी है। ऐसी जिम्मेवारी समझ कर चले तो हर कर्म कैसा करेंगे? वैसे भी कहा जाता है – ज़िम्मेवारी बड़े से बड़ा टीचर है। जैसे टीचर लाइफ (Life) बनाते हैं ना, वैसे जिम्मेवारी भी लाइफ बनाने की शिक्षा देती है। तो हर टीचर के ऊपर इतनी विशाल जिम्मेवारी है। ऐसा समझने से भी अपने ऊपर अटेन्शन रहेगा। अब अटेन्शन रहेगा तो बाप और सेवा के सिवा और कुछ बुद्धि में रहेगा ही नहीं। जिम्मेवारी बड़ापन लाती है। यदि जिम्मेवारी नहीं तो बचपन हो जाता है। जिम्मेवारी होने से अलबेलापन समाप्त हो जाता है। टीचर को हर संकल्प, हर कदम पीछे, सोचना चाहिए कि मेरे पीछे कितनी जिम्मेवारी है। ऐसे भी नहीं कि यह जिम्मेवारी भारी करेगी-बोझ रहेगा। नहीं, जितनी यह जिम्मेवारी उठायेगे उतना जो अनेकों की आशीर्वाद मिलती है तो वह बोझ खुशी में बदल जाता है। वह बोझ महसूस नहीं होता, हल्के रहते हैं। जैसे ब्रह्मा बाप निमित्त बने वैसे आप सब निमित्त हैं। तो आप सबको ब्रह्मा बाबा को फॉलो करना चाहिए। जिम्मेवारी और हल्कापन दोनों का बैलेन्स था, ऐसे ही फॉलो फादर। टीचर्स का स्लोगन फॉलो फादर। 'फॉलो फादर' नहीं तो सफल टीचर्स नहीं।

20.10.75.. .. **जो निमित्त बनते हैं उनका त्याग महीन रूप में है। कोई भी पोज़ीशन को या कोई भी वस्तु को किसी व्यक्ति द्वारा भी स्वीकार न करना – यह है त्याग।** नहीं तो कहावत है कि जो सिद्धि को

स्वीकार करते तो 'वह करामत खैर खुदाई'। तो यहाँ भी कोई सिद्धि को स्वीकार किया जो ज्ञानयोग से प्राप्त हुआ मान व शान तो यह भी विधि का सिद्धि-स्वरूप प्रालब्ध ही है। तो इनमें से किसी को भी स्वीकार करना अर्थात् सिद्धि को स्वीकार करना हुआ। जो सिद्धि को स्वीकार करता है, उसकी प्रालब्ध यहाँ ही खत्म फिर उसका भविष्य नहीं बनता। तो टीचर्स की चैकिंग बड़ी महीन रूप से हो।

20.10.75.. **टीचर्स को कोई भी सब्जेक्ट में कमजोर नहीं होना चाहिए। अगर टीचर कमज़ोर है तो वह जिनके लिये निमित्त बनी है वह भी कमज़ोर होंगे।** इसलिए टीचर्स को सभी सब्जेक्ट्स में परफेक्ट होना चाहिए।

21.10.75.. .. जब मैजारिटी व मुख्य आत्माओं में ऐसी नवीनता दिखाई दे तब नई दुनिया के आने की तिथि तारीख स्पष्ट हो जायेगी। **जो निमित्त हैं उन मुख्य आत्माओं में नवीनता का और परिवर्तन का अनुभव होगा।** उन्हों के परिवर्तन के आधार पर विश्वपरिवर्तन की तारीख प्रत्यक्ष होगी।

25.10.75.. .. जब सबसे उपराम हों तब बेहद की वैराग्य वृत्ति कहेगे। अपने शरीर से भी उपराम। जैसे कि निमित्त सेवा-अर्थ चलाते

28.10.75.....कुमारियों ने जो बाप से पहला वायदा किया हुआ है कि 'एक बाप, दूसरा न कोई' – वह निभाती हैं? इसी वायदे को सदा निभाने वाली कुमारी विश्व-कल्याण के अर्थ निमित्त बनती हैं।

31.10.75..... प्योरिटी की परिभाषा में सर्व विकारों का अंश-मात्र तक न होना है। संकल्प में भी किसी प्रकार की इमप्योरिटी न हो। आप बच्चे निमित्त बने हुए हो बहुत ऊंचे कार्य को सम्पन्न करने के लिये। निमित्त तो महारथी रूप से बने हुए हो ना। अगर लिस्ट निकालते हैं तो लिस्ट में भी तो सर्विसएबल तथा सर्विस के निमित्त बने ब्रह्मा-वत्स ही महारथी की लिस्ट में गिने हुए हैं।

31.10.75.....इस वर्ष में कोई नई बात ज़रूर होनी है। सन् 76 में जिसका प्लैन बनाया है। लेकिन निमित्त बनना पड़ता है। परन्तु होना तो **ड्रामानुसार है लेकिन जो निमित्त बनता है, उसका सारे ब्राह्मण कुल में नाम बाला होता है**।

8.12.75.....शक्तियों व सिद्धियों को यथार्थ रीति से कार्य में लाना है, न व्यर्थ गँवाना है न व्यर्थ कार्यो में लगाना है। तब यह सिद्धि व शक्ति बहुत कल्याण के निमित्त बनती है

9.12.75..... **ऑर्डर मिले और रेडी।** विशेष निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को ही प्रैक्टिकल में लाना है ना।

18.1.76.....आज के इस यादगार दिवस पर बाप-दादा ने जैसे आदि में बच्चों के सिर पर .. ज्ञान-कलश रखा, साकार द्वारा शक्तियों को तन, मन, धन विल (Will) किया, वैसे ही साकार तन द्वारा साकार पार्ट के अन्तिम समय शक्ति सेना को विश्व-कल्याण के विल-पॉवर की विल की। स्वयं सूक्ष्मवतन निवासी बन साकार में बच्चों को निमित्त बनाया। इसीलिये यह समर्थी-दिवस है।

23.1.76.....प्रत्यक्षता वर्ष मनाने का अर्थ है स्वयं को बाप के समान बनाना। यह स्थूल साधन तो निमित्त मात्र साधन हैं। सदाकाल का साधन सिद्धि-स्वरूप का है। सिद्धि-स्वरूप ही स्वत: सिद्ध करेगा कि ऐसा ऊँचा बनाने वाला ऊँचे से ऊँचा भगवान् है। तो साधनों के साथ-साथ सिद्धि स्वरूप को अपनाओ।

24.1.76.....जैसे समय समीप आ रहा है, तो निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को पुरुषार्थ यह करना है कि समय से तेज दौड़ लगायें। ऐसे नहीं कहना है कि इतना समय पड़ा है, कमी दूर हो ही जाएगी। नहीं। यह बुद्धि में रखना है कि **अभी नहीं तो कभी नहीं**।

24.1.76..... **टीचर्स को अनेकों की आशीर्वाद की लिफ्ट भी मिलती है और किसी को कमज़ोर बनाने के निमित्त बनती है, तो पाप भी चढ़ता है।** जिस बोझ के कारण जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते। बोझ वाला ऊपर उठ नहीं सकेगा। इसलिए चाहते हुए भी चेन्ज नहीं होते तो ज़रूर बोझ है। उस बोझ को भस्म करो – विशेष योग से, मर्यादाओं से और लगन से। नहीं तो बोझ में समय बीत जावेगा, आगे बढ़ न सकोगे।

28.1.76.....लक्की सितारों में भी नम्बर हैं। लक्की सितारों की विशेषता यह है कि वे जो भी संकल्प व कर्म करेंगे, उसमें निमित्त-मात्र मेहनत होगी, लेकिन फल की प्राप्ति मेहनत के हिसाब से ज्यादा होगी।

28.1.76.....उम्मीदवार सितारों में बाप को भी उम्मीद है, कभी भी हाई जम्प दे सकते हैं। कभी भी न-उम्मीद वाले सबकी उम्मीद अपने में रखाने के निमित्त बन जाते हैं। लेकिन यह उम्मीदवार हैं। उम्मीदवार में उम्मीद रखना। यह ड्रामा में किसीकिसी का वण्डरफुल पार्ट भी बना हुआ है।

2.2.76.....**विशेष सेवार्थ निमित्त हो, तो पुरुषार्थ में भी विशेष होना चाहिये।** जब दूसरों को चलते-फिरते यह अनुभव होगा कि आप लोग फरिश्ते हैं, तो दूसरे भी प्रेरणा ले सकेंगे।

6.2.76.....जैसे शरीर के विशेष कार्यकर्ता भुजायें हैं, वैसे बाप-दादा के कर्त्तव्य में कार्यकर्ता निमित्त रूप में आप सब बच्चे हैं। सदैव बाप के सहयोगी अर्थात् स्वयं को बाप की भुजाएँ समझ कार्य करते हो? भुजाओं में भी राइट और लेफ्ट होता है। ऐसे कर्त्तव्य में, सदा यथार्थ रूप में साथ निभाने वाले साथी को व मददगार को भी कहा जाता है कि यह हमारा राइट हैण्ड् है। तो एक है राइट हैण्ड दूसरे हैं लेफ्ट हैण्ड। लेकिन सहयोगी दोनों हैं। इसलिये साकार बाप ब्रह्मा की अनेक भुजायें प्रसिद्ध हैं।

6.2.76.....परिवर्तन के समय की घड़ी आप हो। तो स्वयं की घड़ी में टाइम देखो। सारे विश्व का अर्थात् **सर्व आत्माओं का अटेन्शन अब आप निमित्त बनी हुई समय की घड़ी पर है कि अब और कितना समय रहा हुआ है।** इसलिये इस पुरानी दुनिया के समय को समाप्त करने के निमित्त स्वयं को समझते हुए स्वयं को सम्पन्न बनाओ।

7.2.76.....एक तो महान् पुरुषार्थी अर्थात् महारथी जो भी दृश्य देखेंगे, वह समझेंगे – ड्रामा प्लैन अनुसार अनेक बार का अब फिर से रिपीट हो रहा है, वह 'नथिंग-न्यू' लगेगा। कोई नई बात अनुभव नहीं होगी जिसमें 'क्यों' और 'क्या' का क्वेश्चन उठे। और, दूसरा – ऐसे अनुभव होगा जैसे प्रैक्टिकल में, स्मृति-स्वरूप में अनेक बार देखी हुई सीन अब सिर्फ निमित्त मात्र रिपीट कर रहे हैं। कोई नई बात नहीं कर रहे हैं, लेकिन रिपीट कर रहे हैं।

8.2.76.....सदैव यह स्लोगन याद रखो – शिक्षक अर्थात् शिक्षा-स्वरूप और बैलेन्स रखने वाला। अब क्वॉलिटी की टीचर बनना है। क्वॉन्टिटी पर नज़र न हो। **क्वॉलिटी ही सबके कल्याण के निमित्त बन सकती है।** तो अब टीचर की क्वॉन्टिटी नहीं बढ़ानी है लेकिन क्वॉलिटी बढ़ानी है।

16.1.77.....बाप के साथ तीन सम्बन्ध हैं। बाप, शिक्षक और सतगुरु के स्वरूप से सेवा करते हैं तो निमित्त टीचर्स को एक ही समय में तीन रूपों से सेवा करनी है। तो मास्टर त्रिमूर्ति हो जायेंगे। समझा? जितना-जितना टीचर्स शक्ति सम्पन्न बनेंगी उतना ही सर्व आत्माओं के प्रति निमत्त बन सकेंगी। निमित्त बनने वालों के ऊपर बहुत जिम्मेवारी होती है। **निमित्त बनने वाले का एक सेकेण्ड में एक का पद्मगुण बनना भी है, प्राप्ति का भी चान्स है और फिर अगर निमित्त बने हुए कोई ऐसा कर्म करते जिसको देख और सभी विचलित हों उसकी पद्मगुणा उल्टी प्राप्ति भी होती है।**

11.1.77.....हर एक की विशेषता क्या है और आवश्यकता क्या है? खुशबूदार तो बने, लेकिन वह खुशबू अविनाशी और दूर तक फैलने वाली है? एक फूल होते हैं जिनकी खुशबू सामने से आती है, दूर से नहीं आती। तो यहाँ भी खुशबूदार तो बने हैं, लेकिन जब बाप के सम्मुख वा सेवा के निमित्त आत्माओं के सामने जाते हैं तो खुशबू होती है, लेकिन सेवा के बिना साधारण कर्म करते हुए वा शरीर निर्वाह करते हुए वह खुशबू नहीं रहती।

11.1.77.....वर्तमान समय ऐसे स्वयं की परिवर्तन की मशीनरी फास्ट स्पीड की चाहिए। तब ही विश्व-परिवर्तन की मशीन तेज़ होगी। अभी स्थापना के निमित्त बनी हुई आत्माओं के सोचने और करने में अन्तर है। क्योंकि पुराने भक्ति के संस्कार समय प्रति समय इमर्ज हो जाते हैं। भक्ति में भी सोचना और कहना बहुत होता है। 'यह करेंगे, यह करेंगे' – यह कहना बहुत होता है, लेकिन करना कम होता है।

11.1.77.....जैसे शुरू में बाप से पवित्रता की प्रतिज्ञा की कि मरेंगे, मिटेंगे, सहन करेंगे, मार खायेंगे, घर छोड़ देंगे, लेकिन पवित्रता की प्रतिज्ञा सदा कायम रखेंगे – ऐसी शेरनियों के संगठन ने स्थापना के कार्य में निमित्त बन करके दिखाया, कुछ सोचा नहीं, कुछ देखा नहीं – करके दिखाया, वैसे ही अब ऐसा ग्रुप चाहिए। जो लक्ष्य रखा उस लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए सहन करेंगे, त्याग करेंगे, बुरा-भला सुनेंगे, परीक्षाओं को पास करेंगे लेकिन लक्ष्य को प्राप्त करके ही छोड़ेंगे।

18.1.77.....आप निश्चय बुद्धि से संकल्प रूप में भी संशय-बुद्धि न बनो। रॉयल रूप का संशय है कि 'ऐसा होना तो चाहिए था', पता नहीं बाबा ने क्यों ऐसा कहा था। पहले से ही बाप-दादा बता देते थे। अब सामने कैसे जायेंगे? यह रॉयल रूप का संशय, दुनिया वालों को भी संशय-बुद्धि बनाने के निमित्त बनेगा। ''हाँ! कहा है, अभी भी कहेंगे'' – इसी निश्चय और नशे में रहो तो वो नमस्कार करने आयेंगे कि धन्य है आपका निश्चय।

26.1.77....इस शिवरात्रि पर ऐसी स्थूल और सूक्ष्म स्टेज बनाओ, जिससे आने वाली आत्माओं को अपने स्वरूप रूह और रूहानियत का अनुभव हो। वाणी द्वारा वाणी से परे जाने का अनुभव हो। ऐसे सम्पर्क में आने वाली आत्माओं का विशेष प्रोग्राम रखो। लक्ष्य रखो कि अनुभव कराना है, न कि सिर्फ भाषण करना है, चाहे छोटे-छोटे संगठन बनाओ लेकिन रूहानियत और रूहानी बाप के सम्बन्ध और अनुभव में समीप लाओ। कुछ नवीनता करो। स्थान और स्थिति दोनों से दूर से ही रूहानियत की आकर्षण हो। जनरल सन्देश देने की बात अलग है। वह करना है भले करो, लेकिन यह जरूर करो। इसके लिए निमित्त बनी हुई आत्माओं को अर्थात् सर्विसएबल आत्माओं को विशेष उस दिन एकाग्रता का अन्तर्मुखता का व्रत रखना पड़ेगा। इस व्रत से वृत्तियों को परिवर्तन करेंगे।

28.1.77.....इस महायज्ञ में पुरानी दुनिया की आहुति पड़ने के बाद यज्ञ समाप्त होना है। पहले अपने आपसे पूछो – पुरानी दुनिया की आहुति के पहले निमित्त बने हुए ब्राह्मणों ने अपने पुराने व्यर्थ संकल्प वा विकल्प, जिसको भी संकल्पों की सृष्टि कहा जाता है, इन पुराने संकल्पों की सृष्टि को, पुराने स्वभाव-संस्कार रूपी सृष्टि को महायज्ञ में स्वाहा किया है? अगर अपने हद की सृष्टि को स्वाहा न किया वा अपने पास रही सामग्री की आहुति नहीं डाली तो बेहद की पुरानी सृष्टि की आहुति कैसे पड़ेगी? यज्ञ की समाप्ति का आधार हर एक निमित्त ब्राह्मण है तो चैरिटि बिगेन्स एट होम करना पड़े, तो अपने मन के अन्दर चैक करो कि आहुति डाली है? सम्पूर्ण अन्तिम आहुति कौन-सी है? उसको जानते हो? जैसे आत्मज्ञानी आत्मा का परमात्मा में समा जाना ही आत्मा की सम्पूर्ण स्थिति मानते हैं। इस अन्तिम आहुति का स्वरूप है – मैं-पन समाप्त हो, बाबा! बाबा! बोल मुख से व मन से निकले अर्थात् बाप में समा जाएं। इसको कहा जाता है, 'समा जाना अर्थात् समान बन जाना'।

31.1.77.....बाप-दादा जब विश्व का सैर करते हैं तो भक्तों का भटकना, पुकारना देखते और सुनते हैं तो तरस आता है। आप कहेंगे कि बाप-दादा ही साक्षात्कार करा दे, और भक्तों की इच्छा पूर्ण कर दे। ऐसे सोचते हो? लेकिन ड्रामा में नाम बच्चों का, काम बाप का है। तो बच्चों को निमित्त बनना ही पड़ता है। विश्व के मालिक बच्चे बनेंगे या बाप बनेगा? प्रजा आपकी बनेगी या बाप की बनेगी? तो जो पूज्य होते हैं उनकी प्रजा बनती है, उनके ही फिर बाद में भक्त बनते हैं। तो **अपनी प्रजा को या अपने भक्तों को अब भी निमित्त बन शान्ति और शक्ति का वरदान दो।**

6.2.77....जैसे पॉवर हाउस की छोटी सी हलचल सारे एरिया की लाईट को हिला देती है। वैसे ही टीचर के कनफ्यूज होने से वातावरण में प्रभाव पड़ जाता है और वातावरण का प्रभाव आने वालों पर पड़ता है तो **टीचर्स को अपने-आपको अनेक आत्माओं के चढ़ाने और डगमग करने के निमित्त समझना चाहिए।**

6.2.77.....समानता की भी खुशी होती है। टीचर्स इस खुशी में रहती है कि बाप समान 'मास्टर शिक्षक' हैं, बाप समान निमित्त बने हुए हैं। बाप समान अनेक आत्माओं के कल्याण की जिम्मेवारी भी है तो बाप समान हैं। यह खुशी बहुत आगे बढ़ा सकती है।

16.4.77.....जैसे आजकल मन्दिरों में ऐसे दर्पण रखते हैं जिसमें एक ही सूरत अनेक रूपों में दिखाई देती है। **ऐसे आप सबके चेहरे चारों ओर बाप को प्रत्यक्ष दिखाने के निमित्त बनेंगे।** और भक्त कहेंगे जहाँ देखते तू ही तू। सारे कल्प के संस्कार तो यहाँ ही भरते हैं। तो भक्त इसी संस्कार से मुक्ति को प्राप्त करेंगे।

3.5.77.....वर्तमान समय के प्रमाण महावीर की निशानी हर सेकेण्ड, हर संकल्प में चढ़ती कला का अनुभव करेंगे। जो महावीर नहीं वह कोई सेकेण्ड वा कोई संकल्प में चढ़ती कला का अनुभव, कोई में ठहरती कला का। चढ़ती कला आटोमेटिकली सर्व के प्रति भला अर्थात् कल्याण करने के सेवा निमित्त बना देती। वायब्रेशन वातावरण द्वारा भी कइयों के कल्याण कर सकते हैं। इसलिए कहा जाता है, ''चढ़ती कला तेरे भाने सब का भला।''

5.5.77.....'महादानी' पुरुषार्थ कराने की युक्तियां या हुल्लास, उमंग में लाने की युक्तियां बताते हुए, कमज़ोर आत्माओं द्वारा पुरुषार्थ कराने के निमित्त बनते हैं। स्मृति दिलाते हुए, समर्थी में लाने के निमित्त बनते हैं – अपने शक्तियों का सहयोग नहीं दे पाते, लेकिन रास्ता स्पष्ट दिखाने के निमित्त बनते हैं। ऐसे करो, ऐसे चलो, इस तरह मार्ग दर्शन कराने के निमित्त बनते हैं। 'दानी' बच्चे, जो सुना, जो अच्छा लगा, जो अनुभव किया, वह वर्णन द्वारा आत्माओं को बाप तरफ आकर्षण करने के निमित्त बनते हैं, लेकिन मार्ग दर्शन कराने वाले, वा अपने शक्तियों के सहयोग द्वारा किसी को श्रेष्ठ बनाने वाले, महादानी नहीं बन सकते।

5.5.77.....जितनाजितना चक्रवर्ती बनकर चक्र चलायेंगे, उतना चारों ओर का अवाज़ निकलेगा कि हम लोगों ने ज्योति देखी, चलते हुए फरिश्ते देखे, यह आवाज़ फैलता जायेगा और ज्योति को फरिश्तों को ढूंढ़ने निकलेंगे कि कहां से यह ज्योति आई है, कहाँ से यह फरिश्ते चक्र लगाने आते हैं। जैसे आदि में बाप साक्षात्कार अर्थ निमित्त बने, अब अन्त में बाप सहित बच्चों को भी निमित्त बनना है। जागते हुए जैसे देखेंगे। स्वप्न में जैसे अचानक कई दृश्य आ जाते हैं ना। तो ऐसे अनुभव करेंगे तब ही साईन्स वाले भी इस विचित्र लीला को जानने और देखने के लिए समीप आयेंगे।

14.5.77.....माया बारबार वार करती है, इससे सिद्ध है कि हर कदम फ़रमान पर नहीं है। सदा फ़रमान पर न चलने कारण, माया भी झाटकू रूप में कुर्बान नहीं होती है। इसलिए बार-बार वार करती है। और बार-बार आप लोगों को चिल्लाने के निमित्त बन जाती है। चिल्लाना हुआ ना – माया आ गयी।

16.5.77.....परखने की शक्ति न होने का कारण? बुद्धि की एकाग्रता नहीं है। व्यर्थ संकल्प वा अशुद्ध संकल्पों की हलचल है। एक में सर्व रस लेने की एकरस स्थिति नहीं। अनेक रस में बुद्धि और स्थिति डगमग होती है। इस कारण परखने की शक्ति कम हो जाती है। और न परखने के कारण माया अपना ग्राहक बना देती है। यह माया है, यह भी पहचान नहीं सकते। यह रांग है, यह भी जान नहीं सकते। और ही माया के ग्राहक अथवा माया के साथी बन, बाप को वा निमित्त बनी हुई आत्माओं को भी अपनी समझदारी पेश करते हैं कि – यह तो होता ही है, जब तक सम्पूर्ण बनें तक यह बातें तो होंगी। ऐसे कई प्रकार के विचित्र प्वाइंटस माया के तरफ़ से वकील बनकर बाप के सामने वा निमित्त बने हुए के सामने रखते हैं। क्योंकि माया के साथी बनने के कारण आपोजीशन पार्टी के बन जाते हैं। मायाजीत बनने की पोजीशन छोड़ देते हैं। कारण? परखने की शक्ति कम है।

27.5.77.....पहली बात तो दिल्ली वालों का एक दृढ़ संकल्प संगठित रूप से होना चाहिए कि 'हम सब दिल्ली का किला मजबूत कर सफ़लता होनी ही है, इस संकल्प का व्रत एक हो।' जैसे कोई भी कार्य में सफ़लता के लिए व्रत रखते हैं ना। वह तो स्थूल व्रत रखते हैं, लेकिन यह मन्सा का व्रत है जिस व्रत से निमित्त कोई भी कार्य करेंगे।

28.5.77.....जैसे आप लोगो के सामने समय की घड़ी 'साकार बाप' था। उनकी स्टेज को देखते आप लोग भी समझते थे जैसे कि कुछ होने वाला है। समीपता लग रही थी। जैसा फरिश्ता रूप! साकार नहीं है – ऐसा फील (Feel;अनुभव) होता था। तो समय की घड़ी हो गए ना। ऐसे आप लोग भी जो निमित्त हैं वह भी समय की घड़ी हो। उस नज़र से ही आप लोगों को देखते हैं कि घड़ी क्या दिखा रही है? यह जो विदेश जाने का पार्ट है, यह भी जैसे विशेष घंटी बजी है – ऐसा अनुभव होगा।

31.5.77.....वातावरण प्रभाव क्यों डालता है? उसका भी कारण? अपने पॉवरफुल वृत्ति द्वारा वायुमण्डल को परिवर्तन करने वाले हैं, यह स्मृति भूल जाते हो। जब कहते ही हो विश्व-परिवर्तक हैं तो विश्व के परिवर्तन में वायुमंडल को भी परिवर्तन करना है। अशुद्ध को ही शुद्ध बनाने के लिए निमित्त हो। फिर यह क्यों सोचते हो कि वायुमण्डल ऐसा था, इसलिए कमज़ोर हो गया। जब है ही कलियुगी, तमोप्रधान, आसुरी सृष्टि, उसमें वातावरण अशुद्ध न होगा तो क्या होगा? तमोगुणी सृष्टि के बीच रहते हुए, वातावरण को परिवर्तन करना, यही ब्राह्मणों का कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य की स्मृति में रहने से अर्थात् रचतापन की स्थिति में स्थित रहने से, वातावरण अर्थात् रचना के वश नहीं होंगे।

31.5.77.....माया का आना अर्थात् विजयी बनाने के निमित्त बनना। शक्तियों की प्राप्ति को अनुभव में लाने के लिए निमित्त कारण माया बनती है। अगर दुश्मन न हो तो विजयी कैसे कहा जायेगा? विजयी रत्न बनाने के निमित्त यह माया के छोटे-छोटे रूप हैं। इसलिए मायाजीत समझ, विजयी रत्न समझ, माया पर विजय प्राप्त करो।

2.6.77.....निमित्त तो एक ही बनता है – लेकिन साक्षात्कार तो शक्ति सेना का होगा कि एक का होगा? जैसे बाप द्वारा बच्चों का साक्षात्कार होता है, बच्चों द्वारा बाप का होता है, वैसे ही **निमित्त एक आत्मा द्वारा सर्व सहयोगी आत्माओं का भी साक्षात्कार होता है**।

2.6.77.....तो जैसे निमित्त एक रत्न बना ऐसे और भी रत्न बनेंगे। विशेष इस सेवा का कंगन बाँधना चाहिए। तब ही सर्विस का नया मोड़ प्रैक्टीकल में दिखाई देगा। निमित्त बनी हुई आत्माएं जो पर्दे के अन्दर हैं, वह स्टेज पर आने की हिम्मत दिखायेगी तब तो नया मोड़ होगा। सारा समय पूर्वज की पोजीशन पर स्थित हो, स्वयं को तना समझ सर्व शाखाओं को शक्तियों का जल दो। नहीं तो सूखी पड़ी हुई हैं, उन्होंको फिर फिर से ताजा बनाओ।

5.6.77.....**सदैव बुद्धि में रहे, सेवा स्थान पर सेवा के निमित्त रूप आत्माएं हैं – न कि मेरा कोई लौकिक परिवार है।** सब अलौकिक सेवाधारी हैं; कोई सेवा करने के निमित्त हैं, कोई की सेवा करनी है। लौकिक सम्बन्ध भी सेवा के अर्थ मिला है – 'यह मेरा लड़का या लड़की है' नहीं। सेवा के निमित्त यह सम्बन्ध मिला है। मैं पति हूँ, पिता हूँ, चाचा हूँ – यह सम्बन्ध समाप्त हो जाए, तो ट्रस्टी हो जायेंगे। स्मृति विस्मृति का रूप तब लेती जब मेरापन है। अगर मेरापन खत्म हो जाए, तो नष्टोमोहा हो जाएंगे। 'नष्टोमोहा अर्थात् स्मृति स्वरूप।'

7.6.77.....देने वाला दाता बाप है – लेकिन निमित्त किसको बनाया है? वर्सा बाप द्वारा प्राप्त होता है, लेकिन बाप भी निमित्त बच्चों को बनाते हैं। इतना अटेंशन हर कदम अपने ऊपर रहता है? **कि हम विशेष आत्माओं के आधार से सर्व आत्माओं का भला है। यह स्मृति रखने से अलबेलापन और आलस्य समाप्त हो जाएगा**, जो वर्तमान समय किसी न किसी रूप में मैजारिटी में दिखाई देता है।

7.6.77.....जैसे कहावत भी है 'खाली वस्तु आवाज ज्यादा करती है।' दिखावा बहुत होता है लेकिन अन्दर का धोखा, बाहर का दिखावा होता है। साथ-साथ ऐसे कर्मों का परिणाम अनेक ब्राह्मण आत्माएं और दुनिया की अज्ञानी आत्माओं की डिस-सर्विस करने के निमित्त बन जाते हैं। ऐसे विकर्मों से वा व्यर्थ कर्मों, एक स्वयं से डिससैटिसफायड दूसरा अनेकों की डिससर्विस इस कारण चढ़ती कला की बजाए रुकती कला में आ जाते हैं।

7.6.77.....मनन न करने से शक्तिशाली न बन कमज़ोर हो गए हो। और कमज़ोर होने के कारण बार-बार रुकते हो। चढ़ती कला का अनुभव नहीं कर पाते हो। इसलिए सदा यह याद रखो कि **हम निमित्त बनी हुई आत्माओं की चढ़ती कला से ही सर्व का भला है।**

10.6.77.....वातावरण भी पॉवरफुल बनाने के लिए अब कोई प्लान चाहिए। अभी यह एक लहर चल रही है। एक जनरल विघ्न, दूसरा जिसमें अनेक आत्माओं का अकल्याण है। आजकल जो लहर है – कई आत्माएं अपने आप ही अकल्याण के निमित्त बनी हैं। उनके लिए प्लान बनाओ। महारथियों का संकल्प करना या प्लान बनाना – यह भी वातावरण में फैला है। वातावरण को चेंज करना है। आजकल इस बात की आवश्यकता है जो विघ्न-विनाशक नाम है, वह अपने संकल्प, वाणी, कर्म में दिखाई दे।

14.6.77.....बाप द्वारा सर्व प्राप्तियों की लगन में रहते, वैसे विदेशी आत्माएं भी अपने साइन्स बल द्वारा सृष्टि को स्वर्ग बनाने के इच्छुक हैं। स्वर्ग अर्थात् जहाँ अप्राप्त कोई वस्तु न हो। इसी कार्य के लगन में लगी हुई आत्माएं ड्रामानुसार निमित्त बन अपना कार्य बहुत अच्छी तरह से कर रही हैं। लेकिन आपके लिए ही कर रही हैं।

विदेश द्वारा निमित्त बनी हुई विशेष आत्माएं जिन आत्माओं के अनुभव के आवाज़ से भारतवासी कुम्भकरण जागेंगे। ऐसे निमित्त बनी हुई आत्माओं को बाप के सम्मुख प्रत्यक्ष करें अर्थात् सम्बन्ध व सम्पर्क में लावें। समीप समय की सूचना विदेश द्वारा भारत में फैलावें। इसी एक लगन में दृढ़ संकल्प के कंगन में बंधे हुए परमात्मज्ञानी बच्चों को देखा। उन्हों को भी न दिन, न रात दोनों समान हैं। इस लगन में मगन हैं।

14.6.77.....निमित्त बनी हुई आत्माओं को परमात्मा द्वारा वा गॉड फॉदर द्वारा भेजे हुए अलौकिक फरिश्ते अनुभव करते हैं। थोड़ी सी ली हुई सेवा का भी रिटर्न देने में भी अपनी खुशी अनुभव करते हैं और फौरन रिटर्न करते। थोड़ी सी सेवा का शुक्रिया बहुत मानते हैं। यह वर्तमान समय के परमात्म-ज्ञानियों की वा निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं की इस सेवा के चक्र में चक्रवर्ती बनने की जो ड्रामा की नूंध हैं इसी नूंध में स्थापना और विनाश के रहस्य का बहुत कनेक्शन है। यह थोड़े समय की सेवा देना वा चक्रवर्ती बन अपने दृष्टि द्वारा, वाणी द्वारा, वा सम्पर्क द्वारा, वा सूक्ष्म शुभभावना और शुभकामना के वृत्ति द्वारा अनेक प्रकार के आपकी राजधानी के तैयारी के निमित्त बने हुए सेवाधारी आत्माओं को सेवा के फल में सेवाधारी बनने के कार्य में सर्व श्रेष्ठ आत्मा की नज़र द्वारा सब निमित्त बनने वाली आत्माएं .. ज्ञानी व विज्ञानी प्रसिद्ध हो रही हैं। समझा रहस्य को?

14.6.77.....भारत में तो आपकी भक्त आत्माएं मिलेंगी। लेकिन तीन प्रकार की आत्माएं चाहिए – एक 'ब्राह्मण सो देवता' बनने वाली और प्रजा बनने वाली आत्माएं; दूसरी भक्त आत्माएं; और तीसरी आपकी राजधानी तैयार कर देने वाली आत्माएं। सेवाधारी सर्व सुखों के साधन और सामग्री तैयार करने के निमित्त बनते हैं। और आप प्रालब्ध भोगते हो। यह पाँच तत्व और पाँच तत्वों द्वारा बनी हुई रिफाईन चीज़ें सब आपके सेवा के निमित्त बनेगी।

तीव्र पुरुषार्थी बन स्वयं को भी सम्पन्न बनाओ और निमित्त बने हुए सेवाधारी आत्माओं को भी कार्य में सम्पन्न बनने की प्रेरणा दो। तब विश्व-परिवर्तन होगा।

16.6.77.....सदा बाप और सेवा – यही लगन रहती है। सिवाए बाप और सेवा के और क्या है जहाँ बुद्धि जाए? ट्रस्टी सदा न्यारा रहता है। ट्रस्टी के लिए सिर्फ एक काम है – याद और सेवा। अगर कर्मणा भी करते तो भी सेवा के निमित्त। **गृहस्थी स्वार्थ के निमित्त करता और ट्रस्टी सेवा अर्थ।**

18.6.77.....वाणी से परे स्थिति प्रिय लगती है वा वाणी में आने की स्थिति प्रिय लगती है? वाणी से परे स्थिति शक्तिशाली है और सर्व की सेवा के निमित्त बनाती वा वाणी द्वारा सर्व की सेवा करने से स्थिति शक्तिशाली अनुभव होती है? बेहद की सेवा वाणी से परे स्थिति द्वारा होती है वा वाणी से होती है? अन्तिम सम्पूर्ण स्टेज जिसमें सर्व शक्तियों से सम्पन्न मास्टर सर्वशक्तिवान, मास्टर नॉलेजफुल की स्थिति प्रैक्टिकल रूप में होती है।

18.6.77....मैजारिटी आत्माएं विशेष सब्जैक्ट याद की यात्रा वा योगी बनो कि स्टेज में कमज़ोर दिखाई दे रही हैं। बार-बार एक ही शिकायत बाप-दादा के आगे वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे करते हैं – योग क्यों नहीं लगता वा निरन्तर योग क्यों नहीं रहता? योग की पॉवरफुल स्टेज कैसे बने? अनेक बार अनेक प्रकार की युक्तियां मिलते हुए भी बार-बार यही चिटकियां बाप-दादा के मिलती हैं। उससे क्या समझा जाए? सर्व शक्तिवान के बच्चे बन शक्तिहीन आत्मा होना, जो स्वयं को भी कंट्रोल न कर सके, वे विश्व के राज्य का कन्ट्रोल कैसे करेंगे? कारण क्या है? योग तो सीखा, लेकिन योगयुक्त रहने की युक्तियों को प्रयोग करना नहीं आता है। योग-योग करते परन्तु प्रयोग में लाने का अटेन्शन नहीं रखते।

20.6.77....अपने रूहानी सम्पर्क के महत्व को जानते हुए, श्रेष्ठ समय की सूचना देने का वा समय प्रमाण वर्तमान संगम का एक सेकेण्ड अनेक जन्मों की प्राप्ति के निमित्त बना हुआ है। एक कदम में पद्मों की कमाई भरी हुई है। ऐसे समय के खजाने को जानते हुए औरों को भी समय पर प्राप्ति होने का परिचय दो। हर बात द्वारा सहयोगी बनो, तो सहजयोगी बन ही जायेंगे।

22.6.77.....आप आत्माओं का पुजारीपन आरंभ होना और अन्य धर्म की आत्माओं की स्थापन होना, आप पूर्वज आत्माओं के आधार पर है। यह छोटी-छोटी बिरादरियाँ निकलती हैं, इसलिए यादगार रूप में भी हद के सितारों के आधार पर भविष्यदर्शी बनते हैं। क्योंकि इस समय आप त्रिकालदर्शी बनते हैं, आप चैतन्य सितारे त्रिकालदर्शी हो। हर आत्मा को भविष्य बनाने के निमित्त बने हुए हो। चाहे मुक्ति दो, चाहे जीवन्मुक्ति दो। लेकिन जीवन्मुक्ति के गेट खोलने के निमित्त ज्ञान-सूर्य बाप के साथ ज्ञान-सितारे निमित्त बनते हैं। इसलिए आपकी जड़ यादगार सितारे भी भविष्यदर्शा बने हुए हैं अर्थात् भविष्य दिखाने के निमित्त बने हुए हो।

25.6.77.....स्वयं को स्पष्टता से श्रेष्ठ बनाना है। लेकिन करते क्या हो? कुछ बताते कुछ छिपाते हैं। और बताते भी हैं तो कोई सैलवेशन के प्राप्ति के स्वार्थ के आधार पर। चतुराई से अपना केस सज-धज कर मनमत और परमत के प्लान अच्छी तरह से बनाकर, बाप के आगे वा निमित्त बनी हुई आत्माओं के आगे पेश करते हैं।

सदा अपने को चलते-फिरते लाईट के कार्ब के अन्दर आकारी फरिश्ते के रूप में अनुभव करते हो? जैसे ब्रह्मा बाप अव्यक्त फरिश्ते के रूप में चारों ओर की सेवा के निमित्त बने हैं, ऐसे बाप समान स्वयं को भी लाईट स्वरूप आत्मा और लाईट के आकारी स्वरूप फरिश्ते स्वरूप में अनुभव करते हो? बाप-दादा दोनों के समान बनना है ना? दोनों से स्नेह है ना? स्नेह का सबूत है – 'समान बनना।' जिससे स्नेह होता है तो जैसे वह बोलेगा वैसे ही बोलेगा, स्नेह अर्थात् संस्कार मिलाना। और संस्कार मिलन के आधार पर स्नेह भी होता। संस्कार नहीं मिलता तो कितना भी स्नेही बनाने की कोशिश करो, नहीं बनेगा।

25.6.77....फरिश्ता अर्थात् ऊँची स्टेज पर रहने वाला। कुछ भी इस देह की दुनिया में होता रहे, लेकिन फरिश्ता ऊपर से साक्षी हो सब पार्ट देखता रहे और सकाश देता रहे। सकाश भी देना है क्योंकि कल्याण के प्रति निमित्त है। साक्षी हो देखते सकाश अर्थात सहयोग देना है। सीट से उतर कर सकाश नहीं दी जाती। सकाश देना ही निभाना है। निभाना अर्थात् कल्याण की सकाश देना, लेकिन ऊँची स्टेज पर स्थित होकर देना – इसका विशेष अटेंशन हो।

25.6.77.....नालेजफुल होने के कारण यह नालेज है कि यह ड्रामा है, लेकिन ड्रामा के अन्दर आपका कर्त्तव्य कौन सा है? तो महारथियों की लहर क्या होनी चाहिए? कुछ भी सुनते हो तो 'शुभचिन्तन' चलना चाहिए, परचिन्तन नहीं। आपका शुभचिन्तन उन्हीं की बुद्धियों को शीतल कर सकता है। आप लोग छोड़ देंगे तो वह तो गए। क्योंकि प्रैक्टिकल में निमित्त शक्तियों का पार्ट है।

28.6.77.....जैसे वाणी द्वारा आत्माओं को बाप से सम्बन्ध जुटाने के नम्बरवार निमित्त बनते हो वैसे अपनी सूक्ष्म स्थिति के वा मास्टर सर्व शक्तिवान वा मास्टर ज्ञान सूर्य की स्थिति द्वारा, आत्माओं को स्वयं के स्थिति वा बाप के सम्बन्ध का अनुभव, पॉवरफुल वातावरण, वायब्रेशन वा स्वयं के शक्ति स्वरूप के सम्पर्क से उन्हें भी करा सकते हो? क्योंकि जैसे समय समीप आ रहा है, पाण्डव सेना के प्रत्यक्ष होने का प्रभाव गुप्त रूप में फैलता जा रहा है। सेवा की रूपरेखा समय प्रमाण और सेवा प्रमाण परिवर्तन अवश्य होगी।

28.6.77.....अपने सर्व खजानों की बजट बनाओ। इतनी बड़ी जिम्मेवारी का कार्य उठाने वाली आत्माएं अगर जमा न होगा तो कार्य कैसे सफल कर सकेंगी। ड्रामानुसार होना ही है – यह हुई नॉलेज की बात। लेकिन ड्रामा में मुझे भी निमित्त बन सेवा द्वारा श्रेष्ठ प्राप्ति करनी है, यह लक्ष्य रखते हुए हर खजाने की 'बजट' बनाओ। बजट में लक्ष्य क्या रखना है? सलोगन याद है? 'कम खर्च बाला नशीन'। हर खजाने को चेक करो कितना जमा है? उस जमा के खाते से बेहद के आत्माओं की सेवा हो सकती है। हरेक सब्जेक्ट की भी चेकिंग करो कि हर सब्जेक्ट द्वारा बेहद की सेवा के निमित्त बन सकते हैं, वा सिर्फ ज्ञान द्वारा कर सकते हैं, धारणा द्वारा नहीं? जब फुल पास होना है तो फुल सब्जेक्ट द्वारा सेवा के निमित्त बनना आवश्यक है। अगर एक भी सब्जेक्ट में कमी है तो फुल पास नहीं लेकिन पास होंगे।

28.6.77.....सदैव यह ध्यान पर रखना है कि ज्ञानी तू आत्मा कहलाते अथवा सर्विसएबुल कहलाते ऐसा कोई कर्म वा वातावरण फैलाने के वायब्रेशन उत्पन्न होने के निमित्त न बने जिससे सर्विस के बजाए डिस सर्विस हो। क्योंकि सर्विस भी हो लेकिन एक बार की डिस-सर्विस दस बार की सर्विस को समाप्त कर देती है। जैसे रबड़ मिट जाता है वैसे एक बार की डिस-सर्विस दस बार के सर्विस के खाते को खत्म कर देती है।

एक तो याद में शक्ति वा प्राप्ति का अनुभव नहीं होता। अन्दर की सन्तुष्टता नहीं होगी। हर समय कोई न कोई परिस्थिति वा व्यक्ति वा प्रकृति का वैभव, स्थिति को हलचल में लाने के वा खुशी, शक्ति खत्म करने के निमित्त बनेंगे। बाहर का दिखावा इतना सुन्दर होगा जो अनेक आत्माएं उन्हें न परखने कारण सबसे अच्छा खुश मिजाज और पुरुषार्थी समझेंगे। लेकिन अन्दर बिल्कुल उलझन में खोखलापन होता है।

14.2.78...जितना एक संकल्प में रहेंगे उतनी टचिंग अच्छी होती रहेगी। ज़्यादा संकल्प में रहने से जो ओरीजिनल बाप की मदद है वह मिक्सअप हो जाती है। इसलिए एक ही संकल्प कि **मैं बाबा की, बाबा मेरा। मैं निमित्त हूँ, इस संकल्प से सफलता अवश्य प्राप्त होगी।** चक्रवर्ती बनो तो बहुत अच्छा गुलदस्ता तैयार हो जायेगा। क्वान्टिटी भल न हो लेकिन जर्मन की धरनी से एक भी निकल आया तो नाम बाला हो जायेगा।

1.4.78....हर महारथी को स्वयं को चेक करना है कि वर्तमान समय बाप-दादा के गुणों, नालेज और सेवा में समानता और साथीपन कहाँ तक है, समानता ही समीपता को लायेगी। अभी की स्टेज (अवस्था) और भविष्य स्टेज में और हर सेकेण्ड साथीपन का अनुभव जन्म-जन्मान्तर भी नाम रूप सम्बन्ध से साथ के अनुभव के निमित्त बनेंगे।

जब भी आप प्रोग्राम बनाते हो तो विशेष आवाज़ बुलन्द करने का लक्ष्य रखकर प्लैन बनाते हो। विशेष पर्सनैलिटी आवे जिससे स्वत: आवाज़ बुलन्द हो जाए। तो पर्सनैलिटी साधन बन जाता है। लौकिक पर्सनैलिटी वाले बाहर की आवाज़ फैलाने के निमित्त बनते हैं, वैसे आप विशेष निमित्त बने हुए सेवाधारियों की वर्तमान समय सेवा में पर्सनैलिटी चाहिए।

14.11.78....करन करावनहार है - तो करनहार का भी पार्ट बजाया और अभी करावनहार का भी पार्ट बजा रहे हैं। बाप का तख्त होने के कारण तखतनशीन होने में बोझ अनुभव नहीं होता, क्योंकि बाप का तख्त है ना। और बाप ने स्वयं तख्तनशीन बनाया। इस निमित्त बनने का तख्त कितना सहज है। तख्त की विशेषता है, इस तख्त में ही विशेष जादू भरा हुआ है, जो मुश्किल, सेकेण्ड में सहज हो जाती है। इस निमित्त बनने का तख्त समय प्रमाण, ड्रामा प्रमाण सर्व श्रेष्ठ तख्त और अति सफलता सम्पन्न तख्त गाया हुआ है। जो भी तख्त पर बैठे सफलता मूर्त। यह अनादि आदि वरदान है तख्त को। इस तख्त के तख्तनशीन भी बड़े गुह्य रहस्य और राजयुक्त आत्माएँ ही

बनती हैं। बाप-दादा महारथियों को वर्तमान समय भी डबल तख्तनशीन देखते हैं। दिलतख्त तो है ही लेकिन यह निमित्त बनने का तख्त बहुत थोड़ों को प्राप्त होता है। यह भी राज़ बड़े गुह्य हैं।

इस स्थान और चरित्र का भी परिचय दो तो आत्माएँ खुशी में नाचने लगेंगी। जब भी कोई आते हैं तो विशेष चरित्र भूमि को जानने और अनुभव करने आते हैं तो मधुबन निवासी भागवत द्वारा सर्विस कर सकते हैं कि यहाँ ऐसा होता है। तो आप लोग धरनी की विशेषता का महत्व सुनाने के निमित्त हो।

3.12.78...समय प्रमाण अब व्यर्थ की बातों को छोड़ समर्थी स्वरूप बनो। ऐसे विश्व सेवाधारी बनो। इतना बड़ा कार्य जिसके लिए निमित्त बने हुए हो उसको स्मृति में रखो।

3.12.78...अब तक भी पाप का खाता जमा होगा तो चुक्तू कब करेंगे, अन्य आत्माओं को पुण्य आत्मा बनाने के निमित्त कैसे बनेंगे। इसलिए अलबेलेपन में भी पाप का खाता बनाना बन्द करो। सदा पुण्य आत्मा भव का वरदान लो।

3.12.78....माया का राज्य तो अभी समाप्त होने वाला है, यह तो सिर्फ जैसे कोई हठ से आगे किया जाता है वैसे थोड़ा सा साँस होते हुए माया अपना हठ दिखा रही है। माया शक्तिशाली नहीं। और आप सब हैं मा. सर्वशक्तिवान। मा. सर्वशक्तवान के आगे शक्तिहीन माया क्या कर सकती? जैसे कल्प पहले भी कहा यह सब मरे हुए हैं, ऐसे ही यह माया भी मरी हुई है, जिन्दा नहीं है, सिर्फ निमित्त मात्र विजयी बनना है।

5.12.78....यू.पी. जोन विशेष भाग्यशाली रहा - यू.पी. की विशेषता है ''भावना वाली धरनी'' है। भक्ति की भावना ज्यादा है। ऐसी भक्त धरनी को भक्ति का फल देने के निमित्त बने हुए हैं।

14.12.78....बाप-दादा एक सेकेण्ड का सहज साधन वा किसी भी विघ्न से मुक्त होने की युक्ति जो समय प्रति समय सुनाते रहते हैं वह भूल जाते हैं। सेकेण्ड में स्वयं का स्वरूप अर्थात् आत्मिक ज्योति स्वरूप और कर्म में निमित्त भाव का स्वरूप–यह डबल लाइट स्वरूप सेकेण्ड में हाई जम्प दिलाने वाला है। लेकिन बच्चे क्या करते हैं? हाई जम्प के बजाए पत्थर को तोड़ने लग पड़ते हैं। हटाने लग जाते हैं। जिस कारण जो भी यथा शक्ति हिम्मत और उल्लास है वह उसी में ही खत्म कर देते और थक जाते हैं वा दिलशिकस्त हो जाते हैं।

26.12.78....जैसे मधुबन चरित्र भूमि है, मिलन भूमि है, बाप को साकार रूप में अनुभव कराने वाली भूमि है वैसे देहली की धरनी सेवा को प्रत्यक्ष रूप देने के निमित्त है तब देहली से आवाज निकलेगा।

6.1.79....बीजरूप स्टेज सबसे पावरफुल स्टेज है, उसके बाद सब नम्बरवार स्टेज हैं, यहाँ स्टेज लाइट हाउस का कार्य करती है। सारे विश्व में लाइट फैलाने के निमित्त बनते हैं। जैसे बीज द्वारा स्वत: ही सारे वृक्ष को पानी मिल जाता है ऐसे जब बीजरूप स्टेज पर स्थित रहते तो आटोमेटिकली विश्व की लाइट का पानी मिलता रहता।

जैसे लाइट हाउस एक स्थान पर होते हुए चारों ओर अपनी लाइट फैलाते हैं ऐसे लाइट हाउस बन विश्व कल्याणकारी बन विश्व तक अपनी लाइट फैलाने के लिए पावरफुल स्टेज चाहिए।

12.1.79...फरिश्ता अर्थात् जिसका एक बाप के साथ सर्व रिश्ता हो। अर्थात् सर्व सम्बन्ध हो। एक बाप दूसरा न कोई ऐसे अनुभव होता है कि और भी सम्बन्ध स्मृति में आते हैं, जिसके सर्व सम्बन्ध एक बाप के साथ होंगे उसको और सब सम्बन्ध निमित्तमात्र अनुभव होंगे। वह सदा खुशी में नाचने वाले होंगे। कभी भी थकावट का अनुभव नहीं करेंगे बाप समान स्टेज वाले सदा अथक होंगे, थकेंगे नहीं।

विश्व कल्याणकारी की स्मृति से स्वयं भी हर कदम में कल्याणकारी की स्मृति से स्वयं भी हर कदम में कल्याणकारी वृति से चलेंगे और चलायेंगे। स्वयं प्रति भी हर कदम कल्याणकारी हो तब विश्व का कल्याण हो सकता है, सदा यह याद रहे कि निमित्त मात्र यह कार्य कर रहे हैं मैं पन समाप्त हो जायें और निमित्त पन याद रहे, ऐसे सदा सेवा करने से बाप की याद स्वत: रहती है। जितनी सेवा करते उतनी विश्व की अनेक आत्माओं द्वारा दुआयें मिलती हैं। आशीर्वाद मिलती हैं।

जो हर कदम में पदमों की कमाई जमा करने वाले होंगे उनकी निशानी क्या दिखाई देंगी? उनके चेहरे से सदा प्राप्ति की झलक दिखाई देगी, जैसे स्थूल कोई चीज की चमक दिखाई देती है ना वैसे प्राप्ती की, झलक चेहरे से दिखाई देगी। सम्पर्क में आने वाले भी समझेंगे कि इनको कुछ प्राप्त हुआ है। वह स्वयं ही आकर्षित हो करके आपके सामने आयेंगे, तो आपका सम्पन्न चेहरा सेवा के निमित्त बन जायेगा।

जर्मनी का ग्रुप फालो फादर करने वाला है ना! सर्विस करो लेकिन सम्पर्क के आधार से, इन्डिपिन्डेंट नहीं। जैसे हर डाली का तने से कनेक्शन होता है इसी रीति से विशेष निमित्त आत्माओं से सम्पर्क अच्छा हो फिर सफलता अच्छी मिलती हैं, ऐसा प्लैन बनाना।

16.1.79....जैसे साकार बाप के ऊपर इतनी जिम्मेवारी होते हुए भी सदा डबल लाइट देखी – उसके अन्तर में तो आपके पास भी तो कुछ भी जिममेवारी नहीं है, अपने को सदा निमित्त समझकर चलो, जिम्मेवार बापदादा हैं आप निमित्त हैं, निमित्त समझकर चलने से डबल लाइट हो जायेंगे। बाप भी इतनी बड़ी जवाबदारी संभालते हुए निमित्त समझकर चले, तो फालो फादर।

संगमयुग का भाग्य और कोई भी युग में पा नहीं सकते। **संगमयुग का एक-एक सेकेण्ड अति भाग्यशाली है। एक सेकेण्ड कई जन्मों का भाग्य बनाने के निमित्त बनता है।** तो ऐसे श्रेष्ठ भाग्य को सदा याद रखते, अन्दर में भाग्य को देख करके सदा खुशी में नाचते रहो। वाह मेरा भाग्य – ऐसे अन्दर की खुशी बाहर दिखाई देती है दूसरे भी देखने वाले अनुभव करें कि इन्हों को कुछ मिला है, कुछ पाया है। ऐसे सदा खुश रहो। सदा अटेन्शन रखो तो माया खुशी का खज़ाना छीन नहीं सकती।

18.1.79...बच्चे बाप से पूछते हैं हम सबसे पहले अकेले वतनवासी क्यों? मैजारटी बच्चों का यही स्नेह का सवाल था। बाप बोले – जैसे आदि में स्थापना के कार्य प्रति साकार रूप में निमित्त एक ही बने – अल्फ की तार पहले एक को आई। सेवा अर्थ – सर्वस्व त्यागमूर्त एक अकेले बने। जिसको देख बच्चों ने फालो फादर किया। त्याग और भाग्य दोनों में नम्बरवन बाप निमित्त बने। अब अन्त में भी बच्चों को ऊंचा उठाने के लिए वा अव्यक्त बनाने के लिए बाप को ही अव्यक्त वतनवासी बनना पड़ा। इस साकारी दुनिया से ऊंचा स्थान अव्यक्त वतन अपनाना पड़ा – अभी बाप कहते हैं बाप समान स्वयं को और सेवा को सम्पन्न करो। बाप समान अव्यक्त वतनवासी बन जाओ।

23.1.79....आप सच्ची सुहागिन आत्मायें सदा स्मृति के तिलकधारी और मर्यादाओं के कंगनधारी आत्मायें, सदा दिव्य गुणों के श्रृंगार से सजी सजाई आत्मायें, आप सदा सुहागिन आत्मायें सदा सर्व खजानों से सम्पन्न और विश्व के परिवर्तन के श्रेष्ठ कार्य वा शुभ कार्य के निमित्त हो – संगम- युग के इस श्रेष्ठ वा अविनाशी बेहद के सुहाग की रीति रसम हद के सुहाग में भी चलती आ रही है।

25.1.79.....बापदादा भी साकार सृष्टि पर पार्ट बजाते आदि काल से पहले बच्चों को रिगार्ड दिया। बच्चों को स्वयं से भी श्रेष्ठ मानकर बच्चों के आगे समर्पण हुआ। पहले बच्चे पीछे बाप, बच्चे सिर के ताज बने। बच्चे ही डबल पूज्य बनते – बच्चे ही बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त बनते हैं। बाप ने भी आदिकाल से रिगार्ड रखा – ऐसे ही फालो फादर करने वाले बच्चे आदिकाल से अपना रिगार्ड का रिकार्ड बहुत अच्छा रखते आये हैं। हरेक अपने आपको चैक करो कि हमारा रिकार्ड अब तक कैसा रहा।

3.2.79....जो जितनी आत्माओं को बाप का परिचय देने के निमित्त बनते हैं उतना ही अभी भी खुशी की प्राप्ति होती है और भविष्य में भी राज्य पद की प्राप्ति होती है। वर्तमान और भविष्य दोनों ही काल श्रेष्ठ बन जाते हैं।

3.2.79...प्रवृति वालों को तो दो कार्य निभाने पड़ते, टीचर्स सहज ही एक रस रह सकती हैं। बातें करनी हैं तो भी बाप का परिचय देना है, कर्मणा सेवा करनी है तो भी बाप ने जिसके निमित्त बनाया। तो टीचर्स को नैचुरल गिफ्ट मिली हुई है। इस गिफ्ट का लाभ उठाते रहो। टीचर्स अर्थात् डबल लाइट। **निमित्त बनकर चलना अर्थात डबल लाइट तो सदा इसी स्थिति का अनुभव होना चाहिए। करनकरावनहार करा रहे हैं मैं निमित्त हूँ तब सफलता होती है।** मैं-पन आया अर्थात् माया का गेट खुला, निमित्त समझा अर्थात् माया का गेट बन्द हुआ। निमित्त समझने से मायाजीत भी बन जाते, डबल लाइट भी बन जाते और सफलता भी मिल जाती। तो टीचर्स को यह लिफ्ट है। जितना लाभ उठाना चाहो उतना उठा सकती हो। तो टीचर्स को चैक करना चाहिए – हमारा नम्बर क्या है!

12.11.79....टीचर को तो सदा विघ्न-विनाशक बन करके अनेकों के विघ्न-विनाशक बनने का आधार बनने के निमित्त बनाया है। कोई समस्य ले करके आये और समाधान स्वरूप बन करके जाएं। ऐसी टीचर्स हो ना?

19.11.79....ब्राह्मण बनना माना हर कदम में कमाई। कष्ट भी कष्ट नहीं हैं लेकिन जैसे गुलाब के पुष्प के साथ काँटा भी होता है, वह काँटा उनके बचाव का साधन होता है। वैसे यह **तकलीफ़ें और ही बाप की याद दिलाने के निमित्त बनती हैं।** कोई भी प्रकार का जब दुख आता है तो नास्तिक के मुख से भी – 'हे भगवान' निकलता है। तो दु:ख भी याद दिलाने का साधन हुआ ना। संगम पर कोई कष्ट हो नहीं सकता।

28.11.79....जैसे कहते हैं कि सब की वाणी एक ही होती है, जो एक बोलती वही सब बोलते हैं, ड्रैस भी एक जैसी, वाणी सबकी एक ही ज्ञान के पॉइन्ट्स की होती, भले सुनाने का ढंग अलग हो, सार एक ही होता है। वैसे ऐसा ग्रुप बनाओ जो सब कहें यह अनेक नहीं हैं, एक हैं। यही विशेषता है ना। तो एक्ज़ैम्पल कोई निमित्त बनें जिसको फिर सब फालो करेंगे। इसमें जो ओटे सो अर्जुन। तो कौन अर्जुन बनेगा? जो अर्जुन बनेंगे उसे फ़र्स्ट प्राइज़ मिलेगी। सिर्फ़ एक बात का ध्यान देना पड़ेगा। कौनसी बात? क्या करना पड़ेगा? सिर्फ़ एक दूसरे को सहयोग दें, विशेषता देखते हुए, कमज़ोरियों को न देखना, न सुनना, यह अभ्यास पक्का करना पड़ेगा।

30.11.79....शक्तियाँ अपने शक्ति रूप में आ गई तो सभी को वायब्रेशन्स फैलता रहेगा। गृहस्थी में रहते ट्रस्टी होकर रहेंगी तो न्यारी रहेंगी। अपना और अन्य का जीवन सफ़ल बनाने के निमित्त बनेंगे। सदा इसी नशे में रहो हम कल्प पहले वाली गोपियाँ हैं। बाप मिला गोया सब-कुछ मिला। कोई अप्राप्त वस्तु है ही नहीं। बाप के साथ सदा खुशी में नाचती रहो, दु:ख का नाम-निशान भी खत्म।

3.12.79.....हर कर्म में कल्याणकारी कर्म। तो जैसे बाप के संकल्प वा बोल में, नयनों में सदा ही कल्याण की भावना व शुभ कामना है। ऐसे ही हर बच्चे के संकल्प में विश्व कल्याण की भावना वा कामना भरी हुई हो। **चाहे कोई भी काम कर रहे हो हद की प्रवृत्ति को चलाने अर्थ या कोई भी सेवाकेन्द्र चलाने अर्थ निमित्त हो लेकिन सदा विश्व-कल्याण की भावना हो।** सदा सामने विश्व की सर्व आत्मायें इमर्ज हों।

7.12.79....इस पुरानी देह में रहते देह के भान से न्यारे, इसको कहते हैं – फ़रिश्ता जीवन। यह फ़रिश्ता जीवन सदा हल्का होने के कारण ऊंची स्थिति पर ही रहेंगे। क्योंकि हल्की चीज़ कभी नीचे नहीं आती। अगर नीचे की स्थिति पर आते तो जरूर बोझ है। **फ़रिश्ता अर्थात् निर्बन्धन, कोई भी रिश्ता नहीं देह से रिश्ता नहीं। निमित्त मात्र कार्य के लिए आधार लिया फिर उपराम।**

10.12.79....टीचर्स अर्थात् परिवर्तन करने वाली, न कि स्वयं परिवर्तन होने वाली। जो परिवर्तन करने वाला होता है वह कभी किसी के प्रभाव में स्वयं परिवर्तित नहीं होता है। तो टीचर्स की विशेषता वायुमण्डल को पावरफुल बनाना, कमज़ोरों को स्वयं शक्ति- शाली बन शक्ति का सहयोग देने वाली। दिलशिकस्त का उमंग

हुल्लास बढ़ाने वाली। तो ऐसी टीचर्स हो ना? यह है टीचर्स का कर्त्तव्य या ड्यूटी। ऐसे स्वयं सम्पन्न हो जो औरों को भी सम्पन्न बना सकें। अगर कोई भी शक्ति की कमी होगी तो दूसरे भी उसी बात में कमज़ोर होंगे क्योंकि निमित्त हैं ना।

10.12.79....अगर आप सच्चाई से और सफाई से सनतुष्ट हैं तो बाप भी सन्तुष्ट है। एक होता है वैसे ही कहना कि सन्तुष्ट हैं, एक होता है सच्चाई-सफाई से कहना कि सन्तुष्ट हैं। सदा सन्तुष्ट! यहाँ आई हो, कोई भी कमी हो तो अपने प्रति या सेवा के प्रति, तो जो निमित्त बने हुए हैं उनसे लेन-देन करना। आगे के लिए चढ़ती कला करके ही जाना। कमी को भरने और स्वयं को हल्का करने के लिए ही तो आते हो। कोई भी छोटी-सी बात भी हो जो पुरुषार्थ की स्पीड में रुकावट डालने के निमित्त हो तो उसको खत्म करके जाना।

19.12.79....सर्विसएबुल बच्चों के संकल्प कभी भी व्यर्थ नहीं होने चाहिए क्योंकि आप विश्व कल्याणकारी हो, विश्व की स्टेज पर एक्ट करने वाले हो। आपको सारी विश्व कॉपी करती है। अगर आपका एक संकल्प भी व्यर्थ हुआ तो सभी उसको कॉपी करने वाले हैं। अपने प्रति नहीं किया लेकिन अनेकों के प्रति निमित्त बन गए। जैसे आपको सेवा के लिफ्ट की गिफ्ट मिलती है, अनेकों की सेवा का शेयर मिल जाता है। वैसे ही अगर कोई ऐसा कार्य करते हो तो अनेकों को व्यर्थ सिखाने के निमित्त भी बन जाते हो। इसलिए अब व्यर्थ का खाता समाप्त।

19.12.79....संकल्प, बोल, कर्म व ज्ञान की शक्तियाँ कुछ भी व्यर्थ न जानी चाहिए। तो ऐसे हर संकल्प, कर्म, बोल और सर्व शक्तियों की इकॉनामी करने वाले हो ना? वैसे भी लौकिक रीति से अगर इकॉनामी वाला घर न हो तो ठीक रीति से चल नहीं सकता। ऐसे ही अगर निमित्त बने हुए बच्चे इकॉनामी वाले नहीं हैं तो सेन्टर ठीक नहीं चलता, वह हुई हद की प्रवृत्ति यह है बेहद की। तो चैक करना चाहिए एक्स्ट्रा खर्च क्या-क्या किया – संकल्प में, बोल में, शक्तियों में। फिर उसको चेन्ज करना चाहिए। महीन पुरुषार्थ है सर्व खजानों की इकॉनामी का बजट बनाना और उसी के अनुसार चलना।

26.12.79....बेहद की सेवा की रफ्तार एक ही समय तीनों प्रकार की सेवा इकट्ठी हो, इसको कहा जाता है – तेज़ रफ्तार से बेहद की तीव्रगति वाली सेवा। तीव्रगति से बेहद के सेवाधारी बनो। सिर्फ अपना हद का स्थान नहीं लेकिन जैसे बाप एक स्थान पर रहते भी बेहद की सेवा करते हैं ऐसे निमित्त मात्र एक स्थान है लेकिन अपने को बेहद की सेवा के निमित्त समझ विश्व की आत्मायें सदा इमर्ज रूप में रहें, तब विश्वकल्याणकारी कहलायें जायेंगे।

26.12.79....जितना बिज़ी होंगे, उतना अपने पुरुषार्थ के व्यर्थ से और औरों को भी व्यर्थ से बचा सकेंगे। हर समय चेकिंग हो कि समर्थ है या व्यर्थ। अगर ज़रा भी व्यर्थ का अनुभव हो तो उसी समय परिवर्तन करो। निमित्त बने हुए को देख औरों में भी समर्थ के संकल्प स्वत: ही भरते जायेंगे।

28.12.79.....युगल मूर्त्त अर्थात् सेवा के लिए सैम्पल रूप। प्रवृत्ति में भी इसीलिए रखा हुआ है कि विश्व के आगे सेवा का एक सैम्पल बन जाए। तो प्रवृत्ति में रहते विश्व के शो केस में विशेष शो पीस होकर चलते हो। एक शो पीस अनेकों का सौदा कराने के निमित्त बन जाता है। तो **जो प्रवृत्ति में रहते हैं वह अपने को विशेष शो पीस समझकर रहो तो बहुत सेवा के निमित्त बनेंगे।**

14.1.80.. ..जैसे विनाश का बटन दबाने की देरी है, सेकण्ड की बाज़ी पर बात बनी हुई है, ऐसे स्थापना के निमित्त बने हुए बच्चे एक सेकण्ड में तैयार हो जाएँ ऐसा स्मृति का समर्थ बटन तैयार है? जो संकल्प किया और अशरीरी हुए। संकल्प किया और सर्व के विश्व-कल्याणकारी ऊँची स्टेज पर स्थित हो गए और उसी स्टेज पर स्थित हो साक्षी दृष्टा हो विनाश लीला देख सकें। देह के सर्व आकर्षण अर्थात् सम्बन्ध, पदार्थ, संस्कार इन सबकी आकर्षण से परे, प्रकृति की हलचल की आकर्षण से परे, फ़रिश्ता बन ऊपर की स्टेज पर स्थित हो शान्ति और शक्ति की किरणें सर्व आत्माओं के प्रति दे सकें – ऐसे स्मृति का समर्थ बटन तैयार है? जब दोनों बटन तैयार हों तब तो समाप्ति हो।

आज से अपने को गृहस्थ व्यवहार वाले नहीं समझना। ट्रस्ट व्यवहार है। जिम्मेवार और है, निमित्त आप हो। जब ऐसे संकल्प में परिवर्तन करेंगे तो बोल और कर्म में परिवर्तन हो ही जाएगा। तो यही ग्रुप एक-एक बहुत कमाल कर सकते हैं। कर्मयोगी, सहजयोगी का हरेक सैम्पल अनेक आत्माओं को श्रेष्ठ सौदा करने के निमित्त बना सकते हैं।

डॉक्टर्स के प्रति – जैसे सभी डॉक्टर्स अपने हद की डॉक्टरी के स्पेशालिस्ट होते हैं वैसे रूहानी डॉक्टरी में विशेष किस सेवा के निमित्त बने हुए हो? जैसे हद की डॉक्टरी में कोई आँखों का, कोई विशेष गले का, कोई सर्जन, कोई सिर्फ दवाईयाँ देने वाला होता है। तो इस रूहानी डॉक्टरी में क्या विशेषतायें हैं? एक सेकेण्ड में किसी के पुराने संस्कार रूपी बीमारी को नयनों की दृष्टि द्वारा समाप्त कर दें अर्थात् उस समय उस बीमारी से उसको भुला दें, ऐसी विशेषता वाले डॉक्टर्स हो? जैसे वह आँखें ठीक कर देते हो, ऐसे अपनी दृष्टि द्वारा किसी के पुराने संस्कार को पहले दवा दें फिर समाप्त करा दें, उस समय शान्त कर दें, ऐसी विशेषता वाले डॉक्टर्स हो। यह हुआ आँखों का डॉक्टर जो दृष्टि से परिवर्तन कर दें। जैसे डॉक्टर गोली देकर थोड़े समय के लिए दर्द को दबा देते हैं ऐसे आँखों के डॉक्टर हो जो दृष्टि से उसको सन्तुष्ट कर दो।हद के नहीं, रूहानी। रूहानी आँखों के डॉक्टर अर्थात् रूहानी दृष्टि से शफ़ा देने वाले।

16.1.80.. .. **तीर्थ स्थान का महत्व निमित्त बने हुए सेवाधारी सत्य तीर्थ पर है।** जितना निमित्त सेवाधारी का प्रभाव होगा उतना ही चारों ओर के वायब्रेशन्स और वायुमण्डल होगा।

बाप सदा बालक सो मालिक के रूप में देखते हैं। इसलिए निमित्त बने हुए बच्चों को हर कार्य में बड़ें भाई के सम्बन्ध से देखते हैं। तो भाई-भाई का मिलन कैसे होता है। भाई, भाई से वेरीफाय तो करायेंगे ना। इसलिए बाप-दादा कभी भी अकेले नहीं हैं। सदा बच्चों के साथ है।

सेवा में स्वयं की कन्ट्रोलिंग पॉवर से दूसरों की सेवा के निमित्त बनो। जब दूसरों की सेवा करते हैं तो स्वयं को कन्ट्रोल करने की कन्ट्रोलिंग पॉवर के कारण दूसरे पर उस अचल स्थिति का प्रभाव पड़ता है।

18.1.80.. .. जैसे विनाशकारी बटन दबाने के लिए रुके हुए हैं। वैसे दिव्य जन्म द्वारा स्थापना कराने के निमित्त बनी हुई एडवान्स सेवा की पार्टी टचिंग करने के लिए, मैसेज देने के लिए, प्रत्यक्षता करने के लिए रुकी हुई है।
सर्विसएबुल बच्चों को देखते हुए बाबा बोले – सर्विस के प्लैन तो सभी ने बहुत अच्छे-अच्छे बनाये हैं लेकिन सभी सर्विस के प्लैन सफल तभी होंगे जब निमित्त बने हुए विशेष अटेन्शन देंगे। एक तो जिस आत्मा की जो विशेषता है उस विशेषता को मूल्य देते हुए उनको आगे उमंग उत्साह में लाना, उसके लिए निमित्त बने हुए को भी अथक सेवाधारी बनना पड़े।
23.1.80.. ..जैसे इम्तिहान के हाल में जब पेपर आता है तो कमज़ोर स्टूडेन्ट कन्फ्यूज हो जाते हैं, अच्छे स्टूडेन्ट देखकर खुश होते हैं क्योंकि बुद्धि में रहता है कि यह पेपर देकर वह क्लास आगे बढ़ेगा। उन्हें मुश्किल नहीं लगता। कमज़ोर क्वेश्चन ही गिनती करते रहेंगे। ऐसा क्वेश्चन क्यों आया, ये किसने निकाला, क्यों निकाला तो यहाँ भी कोई निमित्त पेपर बनकर आता है तो यह क्वेश्चन नहीं उठना चाहिए कि यह क्यों करता है, ऐसा नहीं करना चाहिए। जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, अच्छी बात उठा लो। जैसे हँस मोती चुगता है ना, कंकड़ को अलग कर देता है। दूध और पानी को अलग कर देता है। दूध ले लेता है, पानी छोड़ देता है। ऐसे कोई भी बात सामने आये तो पानी समझकर छोड़ दो। किसने मिक्स किया, क्यों किया – यह नहीं, इसमें भी टाइम वेस्ट हो जाता है। अगर क्यों, क्या करते इम्तिहान की अन्तिम घड़ी हो गई तो फेल हो जायेंगे। वेस्ट किया माना फेल हुआ। क्यों-क्या में श्वास निकल जाए तो फेल। कोई भी बात फील करना माना फेल होना। माया शेर के रूप में भी आये तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो, अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज़ भी वार नहीं कर सकती। सदा योगाग्नि जगती रहे तो माया किसी भी रूप में आ नहीं सकती। सब विघ्न समाप्त हो जायेंगे।
4.2.80.. .. निमित्त सेवाधारी बहनों प्रति – सेवाधारी बच्चों की विशेष सेवा ही है – 'स्वयं भरपूर रहना और सर्व को करना'। शक्ति स्वरूप रहना और शक्ति स्वरूप बनाना। तो इसी कार्य में बिज़ी हो? कोर्स कराना, भाषण करना, ये तो 7 दिन के स्टूडेन्ट्स भी कर लेते हैं। जो काम कोई भी न करे वह आपको करना है। आपको निमित्त बनाया ही है विशेष कार्य अर्थ। वह विशेष कार्य है – **बाप द्वारा प्राप्त हुई विशेषताओं को निर्बल आत्माओं में अपनी शुभ भावना और श्रेष्ठ कामना से भरना।**
9.2.80.. .. मधुबन वालों को और भी विशेष लिफ्ट है। बाप-दादा की पालना तो मिलती ही है, लेकिन साकार रूप में निमित्त बनी हुई श्रेष्ठ आत्माओं की भी पालना मिलती है, तो डबल पालना की लिफ्ट है और बना-बनाया सब साधन प्राप्त होता है तो ऐसे श्रेष्ठ भाग्यशाली अपना श्रेष्ठ भाग्य जान सेवा के निमित्त बन चलते हो?
त्याग वालों को भाग्य नैचुरल खुशी के रूप में और हल्केपन की अनुभूति के रूप में उसी समय ही प्राप्त होता रहता है। इस निशानी से हरेक अपने रिज़ल्ट को चेक कर सकते हैं कि कितना समय त्याग और निष्काम भाव रहा, निमित्तपन का भाव रहा या बीच-बीच मे और भी कोई भाव मिक्स हुआ। चेक कर आगे के लिए चेन्ज कर देना, यह है चढ़ती कला का विशेष पुरुषार्थ।
15.3.81.. .. बापदादा विशेष निमित्त आत्माओं को देख क्यों खुश होते हैं? कोई भी बाप अपने बच्चों को तख्त देने के बाद कैसे तख्त पर बैठ राज्य चला रहे हैं। वह इस कलियुगी दुनिया में नहीं देखते हैं लेकिन अलौकिक बाप, पारलौकिक बाप, बच्चे सेवा के तख्तनशीन बन कैसे सेवा का कार्य चला रहे हैं, वह प्रैक्टिकल में देख हर्षित होते हैं।

मधुबन में रिफ्रेश होना अर्थात् सेवा के लिए निमित्त बन करके सेवाधारी बनकर सेवा का चांस लेना। सेवा करने के पहले जो निमित्त बने हुए सेवाधारी हैं उन्हों से सम्पर्क रखते हुए आगे बढ़ते चलो तो सफलता मिलती जायेगी।

16.3.81.. .. जहाँ माया देखती है कि इनकी युनिटी अच्छी है, घेराव है तो वहाँ आने की हिम्मत ही नहीं रखती। एक-एक अपने को सेवा के निमित्त समझकर चलते हैं। एक नहीं लेकिन हम सब निमित्त हैं। **बाप ने निमित्त बनाया है, यह स्मृति रहे तो सफलता होती रहेगी।**

27.3.81.. .. जब मैं-पन आता है तो बोझ सिर पर आ जाता है। मैं क्या करूँ, कैसे करूँ, करना पड़ता है। क्या आप करते हो?वा सिर्फ़ नाम आपका है काम बाप का रहता है। उस दिन खिलौना देखा – वह खुद चल रहा था या कोई चला रहा था? साइन्स चला सकती है, बाप नहीं चला सकता? यह तो बाप बच्चों का नाम बाला करने के लिए निमित्त बना देते हैं। क्योंकि बाप इस नाम रूप से न्यारा है। जब बाप आपको आफ़र कर रहे हैं कि बोझ बाप को दे दो आप सिर्फ़ नाचो, उड़ो फिर बोझ क्यों उठाते हो? कैसे सर्विस होगी, कैसे भाषण करेंगे यह तो क्वेश्चन ही नहीं। **सिर्फ़ निमित्त समझ कने-क्शन पावर हाउस से जोड़कर बैठ जाओ।** फिर देखो भाषण होता है वा नहीं! वह खिलौना चल सकता है, आपका मुख नहीं चल सकता? आपकी बुद्धि में प्लैन नहीं चल सकते? कैसे कहने से जैसे तार के ऊपर रबड़ आ जाता है। रबड़ आ जाने के कारण कनेक्शन जुटता नहीं और प्रत्यक्षफल नहीं दिखाई देता। इसलिए थक जाते हो – पता नहीं क्या होगा! **बाप ने निमित्त बनाया है तो अवश्य होगा।**

27.3.81.. .. ऐसा तो कोई स्थान नहीं जहाँ से एक भी न निकला हो। कहाँ वारिस निकलेंगे, कहाँ प्रजा, कहाँ साहुकार! सब चाहिए ना! सब राजा तो नहीं बनेंगे। प्रजा भी चाहिए। प्रजा बनाने का यह कार्य निमित्त बने हुए बच्चों को ही करना है। या आप रायल फैमली बनायेंगे, बाबा प्रजा बनायेंगे। दोनों ही बनाना है ना। सिर्फ़ दो बातें देखो, एक – लाइन किलियर है। दूसरा – मर्यादाओं की लकीर के अन्दर हैं। अगर दोनों बातें ठीक हैं तो कभी भी दिलशिकस्त नहीं होंगे। जिसका कनेक्शन ठीक है, चाहे बाप से चाहे निमित्त बनने वालों से, वह कभी भी असफल नहीं हो सकता। सिर्फ़ बाप से ही कनेक्शन हो वह भी करेक्ट नहीं। परिवार से भी चाहिए। क्योंकि बाप से तो शक्ति मिलेगी लेकिन सम्बन्ध में किसके आना है। सिर्फ़ बाप से? राजधानी अर्थात् परिवार से सम्पर्क में आना है। तीन सर्टीफिकेट लेने हैं। सिर्फ़ एक नहीं।

सिर्फ़ टीचर कहते हैं तो कभी टीचर का थोड़ा सा रोब भी आ जाता है। लेकिन हम मास्टर शिक्षक हैं। मास्टर कहने से बाप स्वत: याद आता है। बनाने वाले की याद आने से स्वयं स्वत: ही निमित्त हूँ यह स्मृति में आ जाता है। विशेष स्मृति यह रखो कि हम पुण्य आत्मा है। पुण्य का खाता जमा करना और कराना। यह है विशेष सेवा।

जो निमित्त बनते हैं उनके हर संकल्प में, बोल में, कर्म में बाप ही दिखाई दे। जो भी देखें तो उनके मुख से यही निकले कि यह तो बाप समान है। जो कहावत है – 'बड़े ते बड़े, छोटे सुभान अल्ला'। यह कहावत प्रैक्टिकल अनुभव करेंगे।

3.4.81.. .. मैं पन बाबा के लव में लीन हो गया हो, इसको कहा जाता है – 'सच्चे सेवाधारी'। मैं और तू की भाषा ही खत्म। कराने वाला बाबा,हम निमित्त हैं।

अब यह विशेषता चारों ओर लाइट हाउस के मुआफिक फैलाओ। इसको कहा जाता है – एक ने कहा, दूसरे ने माना अर्थात् अनेकों को सुख देने के निमित्त। इसमें यह नहीं सोचो कि मैं कोई नीचे हो गया। नहीं। ग़लती की तभी मैं परिवर्त्तन कर रहा हूँ, यह नहीं सोचो लेकिन सेवा के लिए परिवर्त्तन कर रहा ह। सेवा के लिए स्थूल में भी कुछ मेहनत करनी पड़ती है ना! तो श्रेष्ठ, महान आत्मा बनने के लिए थोड़ा बहुत परिवर्त्तन भी क्या तो हर्जा ही

क्या है? इसमें हे! अर्जुन, बनो। इससे वातावरण बनेगा। एक से दो, दो से तीन अगर कोई ग़लती है और मान ली तो यह कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन ग़लती नहीं है और लोक-संग्रह अर्थ करना पड़ता है। यह है महानता। इसमें अगर कोई समझता भी है कि इसने यह किया अर्थात् नीचे हो गया, तो दूसरों के समझने से कुछ नहीं होता, बाप की लिस्ट में तो आगे नम्बर है ना। इसको दबाना नहीं कहा जाता है। यह भी ब्राह्मणों की भाषा होती है ना – कहाँ तक दबेंगे, कहाँ तक मरेंगे, कब तक सहन करेंगे, अगर यहाँ दबेंगे भी तो अनेक आप के पाँव दबायेंगे। यह दबाना नहीं है लेकिन अनेकों के लिए पूज्य बनना है। महान बनना है।

5.4.81.. .. जैसे लक्ष्य रखते हो मधुबन जाना है, फिर तैयारी कर पहुँच जाते वैसे यह भी सदा लक्ष्य रहे कि कर्मातीत अवस्था में रहना है, निमित्त मात्र कर्म करने के लिए कर्मयोगी बने फिर कर्मातीत।

13.4.81.. टीचर्स के साथ– बापदादा सर्व निमित्त बने हुए सेवाधारियों को किस रूप में देखना चाहते हैं, यह जानते हो? बापदादा सर्व सेवाधा-रियों को सदा अपने समान, जैसे बाप कर्त्तव्य के कारण अवतरित होते हैं वैसे हर सेवाधारी सेवा के प्रति अवतरित होने वाले सब अवतार बन जाएं। एक अवतार ड्रामा अनुसार सृष्टि पर आता तो कितना परिवर्त्तन कर लेता। वह भी आत्मिक शक्ति वाले और यह इतने परमात्म-शक्तिस्वरूप चारों ओर अवतार अवतरित हो जाएं तो क्या हो जायेगा? सहज परिवर्त्तन हो जायेगा।

24.10.81. .. आप सब निमित्त आत्मायें हो ना! जितना आप लोग साथ देंगे और साथ रहेंगे उतना आपको देखकर औरों का भी उंमग उत्साह स्वत: बढेंगा। एक आप अनेकों के निमित्त हो। मैं नहीं लेकिन बाप ने निमित्त बनाया है। मैं-पन तो समाप्त हो गया ना! मैं के बजाए 'मेरा बाबा', मैंने किया, मैंने कहा, यह नहीं, बाबा ने कराया, बाबा ने किया, फिर देखो सफलता सहज हो जायेगी। आपके मुख से ''बाबा-बाबा'' जितना निकलेगा उतना अनेकों को बाबा का बना सकेंगे। सबके मुख से यही निकले कि इनकी तात और बात में बाबा-ही-बाबा है तब औरों को भी तात लग जायेगी।

29.10.81.. ..प्रवृत्ति में रहते भी सदा देह के सम्बन्ध से निवृत्त रहो। तभी पवित्र प्रवृत्ति का पार्ट बजा सकेंगे। मैं पुरुष हूँ, यह स्त्री है – यह भान स्वप्न में भी नहीं आना चाहिए। आत्मा भाई-भाई है तो स्त्री-पुरुष कहाँ से आये? युगल तो आप और बाप हो ना! फिर यह मेरी युगल है – ऐसा कैसे कह सकते? यह तो निमित्त मात्र सिर्फ़ सेवा अर्थ है बाकी कम्बाइन्ड रूप तो आप और बाप हो।

1.11.81.. अधरकुमारों से :– सभी अपने को बाप के स्नेही और सहयोगी श्रेष्ठ आत्मायें समझते हो ना? सदा यह नशा रहता है कि हम श्रेष्ठ-ते-श्रेष्ठ आत्मायें हैं क्योंकि बाप के साथ पार्ट बजाने वाली हैं। सारे चक्र के अन्दर इस समय बाप के साथ पार्ट बजाने के निमित्त बने हो। ऊंच-ते ऊंच पार्ट बजाने के निमित्त बने हो। ऊंचे-ते-ऊंचे भगवान के साथ पार्ट बजाने वाले कितनी ऊंची आत्मायें हो गई। लौकिक में भी कोई पद वाले के साथ काम करते हैं, उनको भी कितना नशा रहता है! प्राइम मिनिस्टर के प्राइवेट सेक्रेटरी को भी कितना नशा रहता! तो आप किसके साथ हो? ऊंचे-ते-ऊंचे बाप के साथ और फिर उसमें भी विशेषता यह है कि एक कल्प के लिए नहीं, अनेक कल्प यह पार्ट बजाया है और सदा बजाते ही रहेंगे। बदली नहीं हो सकता। ऐसे नशे में रहो तो सदा निर्विघ्न रहेंगे।

माताओं को :– प्रवृत्ति में रहते एक बाप दूसरा न कोई इसी स्मृति में रहती हो, यह चेकिंग करती हो? क्योंकि प्रवृत्ति के वायुमण्डल में रहते, उस वायुमण्डल का असर न हो, सदा बाप के प्यारे रहें इसके लिए इसी बात की

चेकिंग चाहिए। निमित्त मात्र प्रवृत्ति है लेकिन बाप की याद में रहना। परिवार की सेवा का कितना भी पार्ट बजाना पड़े लेकिन ट्रस्टी होकर बजाना है।

6.11.81.. .. आजकल फैशन और मजबूरी चश्में की है। तो विशेषता देखने वाला चश्मा पहनो। तो दूसरा कुछ दिखाई नहीं देगा। जब साइंस के साधनों द्वारा लाल चश्मा पहनो तो हरा भी लाल दिखाई दे सकता है। तो इस विशेषता की दृष्टि द्वारा विशेषता ही देखेंगे। कीचड़ को नहीं देख, कमल को देखेंगे और हरेक की विशेषता द्वारा विश्व-परिवर्तन के कार्य में विशेष कार्य के निमित्त बन जायेंगे।

ऐसे समझते हो कि हम अपनी साइलेंस की शक्ति द्वारा स्थापना का कार्य कर रहे हैं। हम ही स्थापना के कार्य के निमित्त हैं तो स्वयं साइलेंस रूप में स्थित रहेंगे तब स्थापना का कार्य कर सकेंगे। अगर स्वयं हलचल में आते तो स्थापना का कार्य सफल नहीं हो सकता।

11.11.81.. .. यह खुशी तो सभी को है ना कि हम विशेष आत्मायें हैं? सारे विश्व में से कितनी थोड़ी सी आत्मायें सदा बाप की सेवा में तत्पर रहने वाली निमित्त बनती हैं। तो जो कोटो में कोई, कोई में कोई आत्मायें निमित्त बनती हैं उसमें हमारा ही पार्ट है, हमारा नाम है, यह कितनी बड़ी खुशी है! कोटों में कोई...यह हमारा गायन है, यह रूहानी नशा रहता है?

21.11.81.. .. तो आज का पाठ क्या पक्का किया? ''छोड़ो तो छूटो?'' पक्का किया ना! डाली को तो नहीं पकड़ेंगे ना! थक जाते हैं ना तो ड़ाली को पकड़कर बैठ जाते हैं। कभी स्वयं से थक जाते हैं, कभी दूसरों से थक जाते हैं, कभी सेवा से थक जाते हैं। तो डाली को पकड़ कर फिर चिल्लाते हैं ''अब छुड़ाओ अब छुड़ाओ।'' पकड़ा खुद ओर छुड़ावे बाप। यह क्यों? इसीलिए बाप सदा छोड़ने की युक्ति बताते। छोड़ेंगे तो खुद ना! करेंगे तो पायेंगे। यह भी बाप करेंगे तो पायेंगे कौन? करें बाप और पायें आप? इसलिये बाप करावनहार बन निमित्त आपको बनाते हैं।

23.11.81, 25.12.82, 15.03.85 .. .. सुनाया ना-आज ऐसे बच्चों के नाम गिन रहे थे। ऐसे भी एकनामी कर अलौकिक कार्य में फ़राख़दिल से लगाते हैं। अपने आराम का समय भी, अपने आराम के लिए नहीं, धन का हिस्सा होते हुए भी 75 अलौकिक कार्य में लगाते हैं और निमित्त मात्र लौकिक कार्य को निभाते हैं। ऐसे त्यागवान बच्चे सदा अविनाशी भाग्यवान हैं।

तो शिक्षक अर्थात् सेवाधारी को यह भी लिफ्ट हो गई ना! याद में रहो और उड़ते रहो। सेवा तो निमित्त हैं। करावनहार करा रहा है तो हल्के भी रहेंगे और सफलतामूर्त भी रहेंगे। क्योंकि जहाँ बाप है वहाँ सफलता है ही।

10.1.82.. .. जो प्रेम और पालना देकर हर बाप के बच्चे को खुशी के झूले में झुलायें। तब बाप के वर्से के अधिकारी बन सकें। बाप से मिलाने के योग्य बनाने में आप निमित्त शक्ति के रूप में ऐसा पवित्र प्रेम और अपनी प्राप्तियों द्वारा श्रेष्ठ पालना दो, योग्य बनाओ अर्थात् योगी बनाओ। मास्टर रचयिता बनना तो सबको आता है।

12.1.82.. .. आप श्रेष्ठ आत्मायें मुक्ति अर्थात् अपने घर का गेट खोलने के निमित्त बनती हो तो सर्व आत्माओं को स्वीट होम का ठिकाना मिल जाता है। बहुत समय का दु:ख और अशान्ति समाप्त हो जाती है क्योंकि शान्तिधाम के निवासी बन जाते हैं। जीवनमुक्ति के वर्से से वंचित आत्माओं को वर्सा प्राप्त हो जाता है। इसके निमित्त अर्थात् आधारमूर्त श्रेष्ठ आत्मायें, बाप – आप बच्चों को ही बनाते हैं।

14.1.82.. .. सदा स्थापना के निमित्त आत्माओं को यह स्मृति रखनी चाहिए कि हमारी गति विनाशकारियों से तेज हो क्योंकि पुरानी दुनिया के विनाश का कनेक्शन नई दुनिया की स्थापना के साथ-साथ है। पहले स्थापना होनी है या विनाश? स्थापना की गति पहले तेज़ होनी चाहिए ना! स्थापना की गति तेज़ करने का विशेष आधार है – सदा अपने को पावरफुल स्टेज पर रखो।

20.1.82.. .. सदा स्वयं को विश्व की स्टेज पर हीरो पार्ट बजाने वाली श्रेष्ठ आत्मायें हैं, यह समझकर चलते रहो। यह भी ड्रामा में चांस मिला है। तो दूसरे के निमित्त बनने से स्वयं स्वत: ही उसी बातों के अटेन्शन में रहते। इसलिए सदा अपने को बापदादा के साथी हैं, सेवा पर उपस्थित हैं, इस स्मृति में रहकर हर कार्य करते रहना।

निमित्त शिक्षक बनना वा रूहानी सेवाधारी बनना अर्थात् फादर को फालो करना। इसलिए बाप समान बाप के सिकीलधे। बापदादा भी सेवाधारियों को देख खुश होते हैं। सभी सदा अपने को निमित्त समझकर चलना और नम्रचित्त होकर चलना। जितना निमित्त और नम्रचित्त होकर चलेंगे उतनी सेवा में सहज वृद्धि होगी।

12.3.82.. ..स्वयं को सदा हल्का रखो। जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं वह अगर कहती हैं तो समझो इसमें हमारा कल्याण है। इसमें आप निश्चिन्त रहो। इसमें जो ज्यादा सोचेंगे – मेरा शायद पार्ट नहीं है, मेरे को क्यों नहीं कहा जाता है, यह फिर व्यर्थ है।

14.3.82.. .. आप सब मैजारिटी सेवा के निमित्त आत्मायें हो ना तो यह विशेषता ज़रूर धारण करनी है। रोज़ कोई न कोई प्वाइन्ट निकालो – शान्त स्वरूप के अनुभूति की प्वाइन्टस क्या हैं? ऐसे प्रेम स्वरूप, आनन्द स्वरूप सबकी विशेष प्वाइन्ट बुद्धि में रखते हुए रोज़ नया-नया अनुभव करो। सदा ऐसे समझो कि आज नया अनुभव करके औरों को कराना है। फिर अमृतवेले बैठने में भी बड़ी रुचि होगी।

27.3.82.. .. शिक्षक अर्थात् सर्व सम्बन्धों का रस एक बाप से अनुभव करने वाली, इसको कहा जाता है – 'सच्चे सेवाधारी'। स्वयं में होगा तो औरों को भी अनुभूति करा सकेंगी। अगर निमित्त बनी हुई आत्माओं में कोई भी रसना की कमी है तो आने वाली आत्माओं में भी वह कमी रह जायेगी। तो सर्व रसनाओं का अनुभव करो और कराओ।

6.4.82.. .. सभी निमित्त आत्मायें हो ना? सदा अपने को सेवार्थ निमित्त आत्मा हूँ – ऐसा समझकर चलते हो? निमित्त आत्मा समझने से सदा दो विशेषतायें साकार रूप मे दिखाई देंगी। 1. सदा नम्रता द्वारा निर्माण करते रहेंगे। 2. सदा सन्तुष्टता का फल खाते और खिलाते रहेंगे। तो मैं निमित्त हूँ– इससे न्यारा और बाप का प्यारा अनुभव करेंगे।

मैंने किया यह भी कभी वर्णन नहीं करेंगे। मैं शब्द समाप्त हो जायेगा। ''मैं'' के बजाए ''बाबा बाबा''। तो बाबाबाबा कहने से सबकी बुद्धि बाप की तरफ जायेगी। जिसने निमित्त बनाया उसके तरफ बुद्धि लगने से आने वाली आत्माओं को विशेष शक्ति का अनुभव होगा क्योंकि सर्वशक्तिवान से योग लग जायेगा। शक्ति स्वरूप का अनुभव करेंगे। नहीं तो कमजोर ही रह जाते हैं। तो 'निमित्त' समझकर चलना यही सेवाधारी की विशेषता है। देखो – सबसे बड़े ते बड़ा सेवाधारी बाप है लेकिन उनकी विशेषता ही यह है – जो अपने को निमित्त समझा। मालिक होते हुए भी निमित्त समझा। **निमित्त समझने के कारण सबका प्रिय हो गया। तो निमित्त हूँ, न्यारी हूँ, प्यारी हूँ, यही सदा स्मृति में रखकर चलो।**

8.4.82.. .. जैसे बाप शिक्षक बन, शिक्षा देने के निमित्त बनते हैं वैसे सेवाधारी आत्मायें बाप समान कर्त्तव्य पर स्थित हो। तो जैसे बाप के गुण वैसे निमित्त बने हुए सेवाधारी के गुण। तो सदा पहले यह चेक करो – कि जो भी

बोल बोलते हैं यह बाप समान हैं? जो भी संकल्प करते हैं यह बाप समान है! अगर नहीं तो चेक करके चेन्ज कर लो।

28.4.82.. .. मैं कल्याणकारी निमित्त आत्मा हूँ। टाइटल विश्व-कल्याणकारी का मिला हुआ हैं न कि सिर्फ स्व-कल्याणकारी वा अपने सेन्टर के कल्याणकारी। दूसरे की कमज़ोरी अर्थात् अपने परिवार की कमज़ोरी है, ऐसे बेहद के निमित्त आत्मा समझेंगे। मैं-पन नहीं, निमित्त मात्र हैं अर्थात् विश्व-कल्याण के आधारमूर्त बेहद के कार्य के आधारमूर्त हैं।

13.6.82.. .. जैसे यह निमित्त बनी हुई हैं ऐसे ही आप भी अपने को हर स्थान की छतरी समझो। जिनके निमित्त बनते हो उन्हों को सेफ्टी का साधन मिल जाए। झुकाव नहीं हो लेकिन सहारा दो।

निमित्त बनकर सहारा, सहयोग देना दूसरी बात है लेकिन सहारे दाता बनकर सहारा नहीं दो। निमित्त बन सहारा देना और सहारे दाता बन सहारा देना, इसमें अन्तर हो जाता है। अगर आप नहीं समझते हो कि मैं सहारा हूँ परन्तु दूसरा आपको समझता है तो भी नाम तो दोनों का होगा ना! सेवा समझ करके निमित्त बन उमंग-उत्साह बढ़ाने का सहारा देना, इस विधि पूर्वक सहारा दे तो कभी भी रिपोर्ट नहीं निकले। सब कुछ उनको ही समझने लग जाते कि यह मेरा सहारा है, इसको कहा जाता है – सहारा दाता बन सहारा दिया। लेकिन सेवा समझ निमित्त बन सहयोग का सहारा देना वह दूसरी बात है। आप सब कौन हो

31.12.82.. .. जैसे स्थापना के आदि में स्वप्न और साक्षात्कार की लीला विशेष रही, ऐसे अन्त में भी यही विचित्र लीला प्रत्यक्षता करने के निमित्त बनेंगी। चारों ओर से ''यही है, यही है'', यही आवाज़ गूजेंगी और यह आवाज़ अनेकों के भाग्य की श्रेष्ठता के निमित्त होगा। एक से अनेक दीपक जग जायेंगे।

9.1.83.. .. मेरा शरीर चल नहीं सकता, यह व्यर्थ संकल्प नहीं चलाओ। इसके बजाए समर्थ संकल्प यह है कि – इसी अन्तिम जन्म में बाप ने हमको अपना बनाया है। कमाल है, बलिहारी इस अन्तिम शरीर की। जो इस पुराने शरीर द्वारा जन्म-जन्म का वर्सा ले लिया। दिलशिकस्त के संकल्प नहीं करो। लेकिन खुशी के संकल्प करो। वाह मेरा पुराना शरीर! जिसने बाप से मिलाने के निमित्त बनाया! वाह वाह कर चलाओ। जैसे घोड़े को प्यार से, हाथ से चलाते हैं तो घोड़ा बहुत अच्छा चलता है अगर घोड़े को बार-बार चाबुक लगायेंगे तो और ही तंग करेगा। यह शरीर भी आपका है। इनको बार-बार ऐसे नहीं कहो कि यह पुराना, बेकार शरीर है। यह कहना जैसे चाबुक लगाते हो। खुशी-खुशी से इसकी बलिहारी गाते आगे चलाते रहो। फिर यह पुराना शरीर कब डिस्टर्ब नहीं करेगा। बहुत .सहयोग देगा।

9.1.83. .. ब्राह्मण आत्माओं में जब हम-शरीक होने के कारण ईर्ष्या उत्पन्न होती है, ईर्ष्या के कारण संस्कारों का टक्कर होता है लेकिन इसमें विशेष बात यह सोचो कि जो हम-शरीक हैं उसको निमित्त बनाने वाला कौन? उनको नहीं देखो – फलाना इस ड्यूटी पर आ गया, फलानी टीचर हो गई, नम्बरवन सर्विसएबुल हो गई। लेकिन यह सोचो कि उस आत्मा को निमित्त बनाने वाला कौन? चाहे निमित्त बनी हुई विशेष आत्मा द्वारा ही उनको ड्यूटी मिलती है लेकिन निमित्त बनने वाली टीचर को भी निमित्त किसने बनाया? इसमें जब बाप बीच में हो जायेगा तो माया भाग जायेगी। ईर्ष्या भाग जायेगी इसमें जब बाप बीच में हो जायेगा तो माया भाग जायेगी। ईर्ष्या भाग जायेगी लेकिन जैसे कहावत है ना – या होगा बाप या होगा पाप। जब बाप को बीच से निकालते हो तब पाप आता है। ईर्ष्या भी पाप कर्म है ना। अगर समझो बाप ने निमित्त बनाया है तो बाप जो कार्य करते उसमें कल्याण ही है। अगर उसकी कोई ऐसी बात अच्छी न भी लगती है, रांग भी हो सकती है, क्योंकि सब पुरुषार्थी हैं। अगर रांग भी है तो

अपनी शुभ भावना से ऊपर दे देना चाहिए। ईर्ष्या के वश नहीं। अगर निमित्त बने हुए कहते हैं कि इस बात को छोड़ दो तो अपना संकल्प और समय व्यर्थ नहीं गँवाओ। ईर्ष्या नहीं करो। लेकिन किसका कार्य है, किसने निमित्त बनाया है, उसको याद करो। किस विशेषता के कारण उनको विशेष बनाया गया है वह विशेषता अपने में धारण करो तो रेस हो जायेगी न कि रीस।

टीचर्स के साथ :– विश्व के शोकेस में विशेष शोपीस हो ना। सबकी नजर निमित्त बने हुए सेवाधारी कहो, शिक्षक कहो, उन्हीं पर ही रहती है। सदा स्टेज पर हो। कितनी बड़ी स्टेज है। और कितने देखने वाले हैं। सभी आप निमित्त आत्माओं से प्राप्ति की भावना रखते हैं। सदा यह स्मृति में रहता है?

11.1.83.. ..निमित्त सेवाधारियों को बापदादा अपना फ्रैन्डस समझते हैं। क्योंकि बाप भी शिक्षक है तो बाप समान निमित्त बनने वाले फ्रैन्डस हुए ना। तो इतनी समीप की आत्मायें हो। ऐसे सदा अपने को बाप के साथ वा समीप अनुभव करती हो? जब भी बाबा कहो तो हजार भुजाओं के साथ बाबा आपके साथ है। ऐसे अनुभव होता है? जो निमित्त बने हुए हैं उन्हीं को बापदादा एकस्ट्रा सहयोग देते हैं। इसीलिए बड़े फखुर से बाबा कहो, बुलाओ, तो हाजिर हो जायेंगे। बापदादा तो ओबीडियन्ट हैं ना। अच्छा

27.3.83.. ..बेहद सेवा का लक्ष्य रखो तो हद के बन्धन स्वत: टूट जायेंगे। लक्ष्य दो तरफ का होता है तो लौकिक अलौकिक दोनों में सफल नहीं हो सकते। लक्ष्य क्लीयर हो तो लौकिक में भी मदद मिलती है। निमित्त मात्र लौकिक, लेकिन बुद्धि में अलौकिक सेवा हो तो मज़बूरी भी मुहब्बत के आगे बदल जाती है।

आप सब कुमारियाँ अपने को विशेष आत्मायें समझती हो ना? विशेष आत्मायें अर्थात् विशेष कार्य के निमित्त। एक-एक विशेष कार्य के निमित्त बनी हुई हो। एक एक कुमारी 21 कुल तारने वाली हैं। जब भी जहाँ भी आर्डर मिले तो हाजिर। ऐसे निर्विघ्न सेवाधारी हो ना! जिस समय जो भी सेवा मिले, हाजिर।

बेहद सेवा का लक्ष्य रखो तो हद के बन्धन स्वत: टूट जायेंगे। लक्ष्य दो तरफ का होता है तो लौकिक अलौकिक दोनों में सफल नहीं हो सकते। लक्ष्य क्लीयर हो तो लौकिक में भी मदद मिलती है। निमित्त मात्र लौकिक, लेकिन बुद्धि में अलौकिक सेवा हो तो मज़बूरी भी मुहब्बत के आगे बदल जाती है।

3.4.93.. .. वैसे तो सभी सेवाधारी हैं लेकिन जन्मते ही सेवा का वरदान और आवश्यकता के समय में निमित्त बनना यह भी किसी-किसी की विशेषता है। जो है ही आवश्यकता के समय पर सेवा के साथी, ऐसी आत्मा की आवश्यकता सदा है।

जो निमित्त सेवाधारी हैं उन्हों की विशेषता यही है कि हरेक महसूस करे, अनुभव करे कि यह हमारे हैं। 4-6 का है, हमारा नहीं यह नहीं। हमारे हैं, हरेक के मुख से यह आवाज न भी निकले तो भी संकल्प में इमर्ज हो कि 'यह हमारे हैं'। इसको ही कहा जाता है – 'फ़ालो फ़ादर'। सबको हमारे-पन की फीलिंग आये। यही पहला स्टैप बाप का है। यही तो बाप की विशेषता है ना।

निमित्त सेवार्थ कहीं भी रहो लेकिन हो तो बेहद सेवा के निमित्त ना। प्लैन भी बेहद का, विश्व का बनाते हो या हरेक अपने-अपने स्थान का बनाते हो। यह तो नहीं करते ना! बेहद का प्लैन बनाते, देश विदेश सबका बनाते हो ना। तो बेहद की भावना, बेहद की श्रेष्ठ कामना यह है – फ़ालो फ़ादर।

7.4.83.. .. जैसे अन्य आत्माओं को सेवा की भावना से देखते हो, बोलते हो, वैसे निमित्त बने हुए लौकिक परिवार की आत्माओं को भी उसी प्रमाण चलाते रहो। हद में नहीं आओ। मेरा बच्चा, मेरा पति इसका कल्याण हो, सर्व का कल्याण हो।

11.4.83.. .. अगर स्व उन्नति नहीं तो विश्व उन्नति के भी निमित्त नहीं बन सकेंगे। स्व उन्नति का साधन है 'याद' और विश्व उन्नति का साधन है 'सेवा'। सदा इसी में आगे बढ़ते चलो।

21.4.83.. .. मैं भी हूँ ही आत्मा, यह भी है ही आत्मा। इस पहली स्मृति की मर्यादा स्वयं को सदा निर्विघ्न बनाती और औरों को भी इस श्रेष्ठ स्मृति के समर्थ पन के वायब्रेशन फैलाने के निमित्त बन जाते हैं, जिससे और भी निर्विघ्न बन जाते हैं।

9.5.83.. .. कोई भी बात आती है तो पहले बाप याद आता या निमित्त आत्मायें याद आती? सदा एक बाप दूसरा न कोई, आत्मायें सहयोगी हैं लेकिन साथी नहीं है, साथी तो बाप है। सहयोगी को अपना साथी समझना यह रांग है। तो सदा सेवा के साथी लेकिन सेवा में साथी बाप है। निमित्त सहयोग देते हैं, ऐसा सदा स्मृति स्वरूप हो! किसी देहधारी को साथी बनाया तो उड़ती कला का अनुभव नहीं हो सकता। इसलिए हर बात में 'बाबा-बाबा' याद रहे।

11.5.83.. .. लोग कहते हैं – दो चार मातायें भी एक साथ इकट्ठी नहीं रह सकतीं और अभी मातायें सारे विश्व में एकता स्थापन करने के निमित्त हैं। वह कहते, रह नहीं सकतीं और बाप कहते मातायें ही रह सकती हैं। ऐसी माताओं का विशेष मर्तबा है।

टीचर्स के साथ :- निमित्त सेवाधारी! निमित्त कहने से सहज ही याद आ जाता कि किसने निमित्त बनाया है। कभी भी सेवाधारी शब्द कहो तो उसके आगे निमित्त ज़रूर कहो। दूसरा **निमित्त समझने से स्वतः ही निर्मान बन जायेंगे**। और जो जितना निर्मान होगा उतना फलदायक होगा। निर्मान बनना अर्थात् फल स्वरूप बनना।

19.5.83.. .. आप सबका घर मधुबन है। मधुबन घर से ही पास मिलेंगी परमधाम घर में जाने की। साकार रीति से मधुबन घर है और निराकारी दुनिया परमधाम है। मधुबन असली घर है, जहाँ आप लोग जा रहे हो, वह सेवा केन्द्र है। घर समझेंगे तो फँस जायेंगे। सेवाकेन्द्र समझेंगे तो न्यारे रहेंगे। जिन आत्माओं के प्रति निमित्त बनते हो उनकी सेवा के सम्बन्ध से निमित्त हो, ब्लड कनेक्शन के सम्बन्ध से नहीं। सेवा का कनेक्शन है। सदा याद और सेवा में रहो तो नष्टोमोहा सहज ही बन जायेंगे।

23.5.83.. .. दूसरे की असन्तुष्टता से स्वयं को असन्तुष्ट नहीं होना है। दूसरा किसी भी प्रकार से असन्तुष्ट करने के निमित्त बने तो स्वयं को किनारा करके आगे बढ़ते जाना है, रूकना नहीं है।

1.6.83.. .. मुख का भाषण करना तो नेताओं से सीखना हो तो सीखो। लेकिन **रूहानी युवा वर्ग सिर्फ मुख से भाषण करने वाले नहीं लेकिन उनके नयन, मस्तक, उनके कर्म भाषण करने के निमित्त बन जाएँ।** कर्म का भाषण कोई नहीं कर सकता है। मुख का भाषण अनेक कर सकते। कर्म बाप को प्रत्यक्ष कर सकता है। कर्म रूहानियत को सिद्ध कर सकता है।

10.11.83.. .. **जो विशेष निमित्त हैं उन्हों का कार्य अभी हर सेकण्ड बाप की पालना में रहना और सर्व को बाप की पालना देना।** जैसे छोटे बच्चे होते हैं तो सदा पालना में रहने के कारण कितने खुश रहते हैं। कुछ भी हो लेकिन पालना के नीचे होने के कारण कितने खुश रहते हैं। ऐसे आप सभी सर्व आत्माओं को प्रभु पालना के अन्दर चलने का अनुभव कराओ। वह समझें कि हम प्रभु की पालना के अन्दर चल रहे हैं। यह हमें प्रभु के पालना की दृष्टि दे रहे हैं। तो अभी पालना की आवश्यकता है। इसी को ही कहा जाता है – 'सम्बन्ध में लाना'।

5.12.83.. .. आप सबका बेहद का पार्ट है। किसक साथ पार्ट बजाने वाले हैं! किसके सहयोगी हैं, किस सेवा के निमित्त हैं, यह स्मृति सदा रहे तो सदा हर्षित, सदा सम्पन्न, सदा डबल लाइट रहेंगे। हर कदम में उन्नति होती

रहेगी। क्या थे और क्या बन गये! 'वाह मैं और वाह मेरा भाग्य!' सदा यही गीत खूब गाओ और औरों को भी गाना सिखाओ। 5 हज़ार वर्ष की लम्बी लकीर खिंच गई तो खुशी में नाचो।

12.12.83.. .. जो सदा हर्षित रहता वह स्वत: ही सर्व को आकर्षित करता है। और सहज ही सेवा के निमित्त भी बन जाता है। हर्षितमुखता खुशी की निशानी है। खुशी का चेहरा देख स्वत: पूछेंगे क्या पाया, क्या मिला! तो सदा खुशी में रहो। क्या थे, क्या बन गये, इससे ही सेवा होती रहेगी।

23.12.83.. .. करावनहार बाप है। निमित्त करने वाले आप हो। सर्वशक्तिवान बाप की शक्ति से अर्थात् स्मृति के कनेक्शन से अभी निमित्त मात्र कार्य करने वाले हो। जैसे लाइट के कनेक्शन से बड़ी-बड़ी मशीनरी चलती है। तो आधार है लाइट। आप सभी हर कर्म करते कनेक्शन के आधार से स्वयं भी डबल लाइट बन चलते रहते हो ना। जहाँ डबल लाइट की स्थिति है वहाँ मेहनत और मुश्किल शब्द समाप्त हो जाता है।

22.1.84.. .. इस वर्ष हर एक सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों को यह लक्ष्य रखना है कि कोई न कोई ऐसा नवीनता का विशेष कार्य करें जो अब तक ड्रामा में छिपा हुआ, नूँधा हुआ है। उस कार्य को प्रत्यक्ष करें। जैसे लौकिक कार्य में कोई विशेषता का कार्य करते हैं तो नामीग्रामी बन जाते हैं। चारों ओर विशेषता के साथ विशेष आत्मा का नाम हो जाता है। ऐसे हरेक समझे कि मुझे विशेष कार्य करना है। विजय का मैडल लेना है। ब्राहमण परिवार के बीच विशेष सेवाधारियों की लिस्ट में नामीग्रामी बनना है। रूहानी नशे में रहना है। नाम के नशे में नहीं। रूहानी सेवा के नशे में निमित्त और निर्माण के सर्टीफिकेट सहित नामीग्रामी होना है।

202.84.. .. चारों ओर के जो भी निमित्त बच्चे हैं, उन्हों को बापदादा विशेष स्नेह के पुष्प भेंट कर रहे हैं। चारों ओर की एकानामी में नीचे ऊपर होते हुए भी इतनी आत्माओं को उड़ाकर ले आये हैं। यही मुहब्बत के साथ मेहनत की निशानी है। यह सफलता की निशानी है। इसलिए हरेक नाम सहित स्नेह के पुष्प स्वीकार करना।

22.2.84.. .. सिर्फ इस कम्बाइण्ड रूप में सदा स्थित रहो तो सहज ही याद और सेवा के सिद्धिस्वरूप बन जाओ। विधि निमित्त मात्र हो जायेगी और सिद्धि सदा साथ रहेगी। अभी विधि में ज़्यादा समय लगता है। सिद्धि यथा शक्ति अनुभव होती है। लेकिन जितना इस अलौकिक शक्तिशाली कम्बाइण्ड रूप में सदा रहेंगे तो विधि से ज़्यादा सिद्धि अनुभव होगी। पुरुषार्थ से प्राप्ति ज़्यादा अनुभव होगी। सिद्धिस्वरूप का अर्थ ही है – हर कार्य में सिद्धि हुई पड़ी है। यह प्रैक्टिकल में अनुभव हो।

26.2.84.. .. ऐसे तो नहीं समझते हो कि यह डबल विदेशी आये हैं तो हम छिप गये हैं? फिर भी निमित्त आप ही हैं। उन्हों को उमंग-उत्साह देने के निमित्त् हो। जो दूसरों को आगे रखता है वह स्वयं आगे है ही। जैसे छोटे बच्चे को सदा कहते हैं आगे चलो, बड़े पीछे रहते हैं। छोटों को आगे करना ही बड़ों का आगे होना है। उसका प्रत्यक्षफल मिलता ही रहता है।

बापदादा भी विशेष आत्माओं का विशेष रिगार्ड रखते हैं। फिर भी सेवा के साथी हैं ना। ऐसे तो सभी साथी हैं फिर भी निमित्त को निमित्त समझने में ही सेवा की सफ़लता है। ऐसे तो सर्विस में कई बच्चे बहुत तीव्र उमंग उत्साह में बढ़ते रहते हैं फ़िर भी निमित्त बनी हुई विशेष आत्माओं को रिगार्ड देना अर्थात् बाप को रिगार्ड देना है और बाप द्वारा रिगार्ड के रिटर्न में दिल का स्नेह लेना है। समझा! टीचर्स को रिगार्ड नहीं देते हो लेकिन बाप से दिल के स्नेह का रिटर्न लेते हो।

1.3.84.. .. एक बाप का परिवार है। एक बाप ने सेवा प्रति निमित्त बनाया है। इसी विधि से अनेकों के सम्बन्ध सम्पर्क में आते, अनेक में भी एक देखते।

7.3.84.. .. जैसे विनाश के साधन रिफाइन होने के कारण तीव्रगति से समाप्ति के निमित्त बनेंगे ऐसे आप वरदानी महादानी आत्मायें अपने कर्मातीत फ़रिश्ते स्वरूप के सम्पूर्ण शक्तिशाली स्वरूप द्वारा सर्व की प्रार्थना का रेसपाण्ड मुक्ति का वर्सा दिलायेंगी। तीव्रगति के इस कार्य के लिए मास्टर सर्व शक्ति- वान, शक्तियों के भण्डार, ज्ञान के भण्डार, याद स्वरूप तैयार हो? विनाश की मशीनरी और वरदान की मशीनरी दोनों तीव्रगति के साथ-साथ चलेंगी। बहुतकाल से अर्थात् अब से भी एवररेडी। तीव्रगति वाले कर्मातीत, समाधान स्वरूप सदा रहने का अभ्यास नहीं करेंगे तो तीव्रगति के समय देने वाले बनने के बजाए देखने वाले बनना पड़े। तीव्र पुरुषार्थी बहुत काल वाले तीव्रगति की सेवा के निमित्त बन सकेंगे। यह है वानप्रस्थ अर्थात् सर्व बन्धनमुक्त, न्यारे और बाप के साथ-साथ तीव्रगति के सेवा की प्यारी अवस्था।

8.4.84.. .. बाप जानते हैं कि सेवा में लगन अच्छी है। कोटों में कोई ऐसे सेवाधारी है। इसलिए सेवा की मेहनत की आन्तरिक खुशी प्रत्यक्षफल के रूप में सदा मिलती रहेगी। यह मेहनत सफलता का आधार है। अगर सभी निमित्त सेवाधारी मेहनत को अपनायें तो भारत का राज्य सदा ही सफ़लता को पाता रहेगा। सफ़लता तो मिलनी ही है। यह तो निश्चित है लेकिन जो निमित्त बनता है, निमित्त बनने वाले को सेवा का प्रत्यक्षफल और भविष्य फल प्राप्त होता है। तो सेवा के निमित्त हो। निमित्त-भाव रख सदा सेवा में आगे बढ़ते चलो। जहाँ निमित्तभाव है, मैं-पन का भाव नहीं है वहाँ सदा उन्नति को पाते रहेंगे। यह निमित्त-भाव शुभ-भावना, शुभ-कामना स्वत: जागृत करता है। आज शुभ-भावना, शुभ-काामना नहीं है उसका कारण निमित्त-भाव के बजाए मैं-पन आ गया है। अगर निमित्त् समझें तो करावनहार बाप को समझें। करनकरावनहार स्वामी सदा ही श्रेष्ठ करायेंगे।

ट्रस्टी हैं, हल्के हैं तो निर्णय शक्ति श्रेष्ठ है। इसलिए सदा ट्रस्टी हैं, निमित्त हैं, यह भावना फलदायक है। भावना का फल मिलता है। तो यह निमित्त-पन की भावना सदा श्रेष्ठ फल देती रहेगी। तो सभी साथियों को यह स्मृति दिलाओं कि निमित्त-भाव, ट्रस्टी-पन का भाव रखो। तो यह राजनीति विश्व के लिए श्रेष्ठ नीति हो जायेगी। सारा विश्व इस भारत की राजनीति को कापी करेगा। लेकिन इसका आधार ट्रस्टीपन अर्थात् – निमित्त-भाव।

10.4.84.. .. **सेवा के निमित्त बनने का चांस मिलना भी एक विशेषता की निशानी है।** जो चांस मिलता है उसी को आगे बढ़ाते रहो। सदा निमित्त बन आगे बढ़ने और बढ़ाने वाली हैं। यह 'निमित्त-भाव' ही सफ़लता को प्राप्त कराता है। निमित्त और निर्मान की विशेषता को सदा साथ रखो। यही विशेषता सदा विशेष बनायेगी। निमित्त बनने का पार्ट स्वयं को भी लिफ़्ट देता है। औरों के निमित्त बनना अर्थात् स्वयं सम्पन्न बनना। दृढ़ता से सफ़लता को प्राप्त करते चलो। सफलता ही है, इसी दृढ़ता से सफलता स्व्यं आगे जायेगी।

17.4.84.. .. एक-एक ब्रह्माकुमार-कुमारी बाप का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी हो। भगवान का सन्देश सुनाने वाले सन्देशी कितने श्रेष्ठ हुए! तो सदा इसी कार्य के निमित्त अवतरित हुए हैं। ऊपर से नीचे आये हैं यह सन्देश देने – यही स्मृति खुशी दिलाने वाली हैं। बस, अपना यही आक्यूपेशन सदा याद रखो कि खुशियों की खान के मालिक हैं। यही आपका टाइटिल है।

24.4.84.. .. वह तो हुए हाईकोर्ट या सुप्रीमकोर्ट का जज। यह है स्प्रिचुअल जज। इस जज बनने में पढ़ाई की वा समय की आवश्यकता नहीं है। दो अक्षर ही पढ़ने हैं – 'आत्मा और परमात्मा'। बस। इसके अनुभवी बन गये तो स्प्रिचुअल जज बन गये। जैसे बाप जन्म-जन्म के दु:खों से छुड़ाने वाले हैं – इसलिए बाप को सुख का दाता कहते हैं, तो जैसा बाप वैसे बच्चे। डबल जज बनने से अनेक आत्माओं के कल्याण निमित्त बन जायेंगे। आयेंगे

एक केस के लिए और जन्मजन्म के केस जीत कर जायेंगे। बहुत खुश होंगे। तो बाप की आज्ञा है– 'स्प्रिचुअल जज बनो'।

29.4.84.. .. जैसा स्वयं जिस विशेषतासे सम्पन्न सितारा है वैसा औरों को भी उसी प्रमाण फल की प्राप्ति कराने के निमित्त बनता है।

3.5.84.. .. ब्राह्मण आत्मायें महान यात्रा – मुक्ति-जीवनमुक्ति की यात्रा कराने के निमित्त हैं। ब्राह्मण आत्मायें सर्व आत्माओं को सामूहिक सगाई बाप से कराने वाली हैं। परमात्म हाथ में हाथ का हथियाला बंधवाने वाली हैं। ब्राह्मण आत्मायें जन्म-जन्म के लिए सदा पवित्रता का बन्धन बाँधने वाली हैं। अमरकथा कर अमर बनाने वाली हैं। समझा – कितने महान हो और कितने ज़िम्मेवार आत्मायें हो! पूर्वज हो।

7.5.84.. .. बहुत बड़ी, बहुत अच्छी सेवा की यह स्वमान तो अच्छा है लेकिन जितना स्वमान उतना निर्मान भाव रहे। करावनहार बाप ने निमित्त बन सेवा कराई। यह है निमित्त, निर्मान भाव। निमित्त बने, सेवा अच्छी हुई, वृद्धि हुई, सफ़लता स्वरूप बनें, यह स्वमान तो अच्छा है लेकिन सिर्फ़ स्वमान नहीं, निर्मान भाव का भी बैलेन्स हो। यह बैलेन्स सदा ही सहज सफ़लता स्वरूप बना देता है।

9.5.84.. .. अब विधि स्वरूप से सिद्धि स्वरूप बनो। सिद्धि स्वरूप सेवा के निमित्त बनो। विधि अर्थात् पुरुषार्थ के समय पर पुरुषार्थ किया। अब पुरुषार्थ का फल सिद्धि स्वरूप बन सिद्धि स्वरूप सेवा में विश्व के आगे प्रत्यक्ष बनो। अब यह आवाज़ बुलन्द हो कि विश्व में अविनाशी सिद्धि देने वाले, सिर्फ़ दिखाने वाले नहीं, देने वाले सिद्धि स्वरूप बनाने वाले एक ही, यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय ही है। एक ही स्थान है। स्वयं तो सिद्धि स्वरूप बने हो ना!

11.5.84.. .. सारे विश्व की नजर आप आत्माओं की तरफ है। जो मैं करूँगा वो विश्व के लिए विधान और यादगार बनेगा। मैं हलचल में आऊंगी तो दुनिया हलचल में आयेगी। मैं सन्तुष्टताप्रसन्नता में रहूँगी, तो दुनिया सन्तुष्ट और प्रसन्न बनेगी। इतनी ज़िम्मेवारी हर विश्व नव-निर्माण के निमित्त आत्माओं की है। लेकिन जितनी बड़ी है उतनी हल्की है। क्योंकि सर्वशक्तिवान बाप साथ है।

19.11.84... जितना अनुभवी बनते जाते हैं उतना और भी अनुभवों के आधार से आगे बढ़ते रहेंगे। करावनहार ने जो जिससे कराया वह ड्रामा अनुसार अच्छे से अच्छा कराया। निमित्त भाव सेवा करा ही लेता है। तो सेवा कराई, निमित्त बने, जमा हुआ और आगे भी जमा होता रहेगा।

28.11.84... अभी तक अपने जीवन में आये हुए विघ्नों को मिटाने में बिज़ी रहेंगे, उसमें ही शक्ति लगायेंगे तो दूसरों को शक्ति देने के निमित्त कैसे बन सकेंगे? निर्विघ्न बन शक्तियों का स्टाक जमा करो – तब शक्ति रूप बन विघ्न-विनाशक का कार्य कर सकेंगे।

3.12.84.. .. आप निमित्त हो सुनहरे सवेरे का समय लाने लिए। आप समय रूपी रचना के मास्टर रचता, समय अर्थात् युग-परिवर्तक हो। डबल काल पर विजयी हो। एक काल अर्थात् 'समय'। दूसरा काल 'मृत्यु' के वशीभूत नहीं हो। विजयी हो। अमर भव के वरदानी स्वरूप हो।

17.12.84.. . महा-सेवाधारी अर्थात् हर संकल्प से स्वत: ही सेवा के निमित्त बने हुए। हर संकल्प द्वारा स्वत: ही सेवा के निमित्त बने हुए। हर संकल्प द्वारा स्वत: सेवा होती रहती है।

19.12.84... जैसे बाप वैसे निमित्त सेवाधारी। बाप भी निमित्त है तो सेवाधारी भी निमित्त आत्मायें हैं। निमित्त समझने से स्वत: ही बाप समान बनने का संस्कार प्रैक्टिकल में आता है। अगर निमित्त नहीं समझते तो बाप समान नहीं बन सकते। तो एक निमित्त, दूसरा सदा न्यारा और प्यारा। यह बाप की विशेषता है। प्यारा भी बनता और

न्यारा भी रहता। न्यारा बनकर प्यारा बनता है। तो बाप समान अर्थात् अति न्यारे और अति प्यारे। औरों से न्यारे और बाप से प्यारे। यह समानता है। बाप की यही दो विशेषताएँ हैं। तो बाप समान सेवाधारी भी ऐसे हैं। इसी विशेषता को सदा स्मृति में रखते हुए सहज आगे बढ़ती जायेंगी। मेहनत नहीं करनी पड़ेंगी। जहाँ निमित्त हैं वहाँ सफ़लता है ही।

निमित्त शिक्षक अर्थात् उड़ती कला के एक्जैम्पल। जैसे आप उड़ती कला के एक्जैम्पुल बनते वैसे दूसरे भी बनते हैं। न चाहते भी जिसके निमित्त बनते हो उनमें वह वायब्रेशन स्वत: आ जाते है। तो निमित्त शिक्षक, सेवाधारी सदा न्यारे हैं, सदा प्यारे हैं। कभी भी कोई पेपर आवे तो उसमें पास होने वाले हैं। निश्चयबुद्धि विजयी हैं।

14.1.85... शुभचिन्तक बापदादा द्वारा ली हुई शक्तियों के सहारे की टांग दे लंगड़े को भी चलाने के निमित्त बन जायेंगे। शुभ चिन्तक आत्मा अपनी शुभचिन्तक स्थिति द्वारा दिलशिकस्त आत्मा को दिल खुश मिठाई द्वारा उनको भी तन्दुरुस्त बनायेगी।

18.02.85... ऐसे धन द्वारा सेवा के निमित्त बनने वाले 21 जन्म अनगिनत धन के मालिक बन जाते हैं।

21.02.85... सदा बाप समान निमित्त बन अनेक आत्माओं के कल्याण करने की शुभ भावना से आगे बढ़ते रहो। बाप समान निमित्त बनने वाली आत्माओं की सदा सफ़लता है ही।

27.02.85... हर एक की दिल में यही उमंग है कि सबसे ज़्यादा और जल्दी से जल्दी सन्देश देने के निमित्त बन बाप के आगे रूहानी गुलाब का गुलदस्ता लावें।

अगर अपने आराम के लिए कमाते वा जमा करते हैं तो यहाँ भले आराम करेंगे लेकिन वहाँ औरों को आराम देने लिए निमित्त बनेंगे! दास-दासियाँ क्या करेंगे! रायल फैमली को आराम देने के लिए होंगे ना! यहाँ के आराम से वहाँ आराम देने के लिए निमित्त बनना पड़े। इसलिए जो मुहब्बत से सच्ची दिल से कमाते हो, सेवा में लगाते हो, वही सफ़ल कर रहे हो। अनेक आत्माओं की दुआयें ले रहे हो। जिन्हों के निमित्त बनते हो वही फ़िर आपके भक्त बन आपकी पूजा करेंगे। क्योंकि आपने उन आत्माओं के प्रति सेवा की तो सेवा का रिटर्न वह आपके जड़ चित्रों की सेवा करेंगे! पूजा करेंगे! 63 जन्म सेवा का रिटर्न आपको देते रहेंगे।

जो निमित्त समझकर कार्य करते हैं उन्हें 'सफ़लता' स्वत: प्राप्त होती है। 'निमित्त भाव' ही सफ़लता का साधन है। इस स्मृति रूपी चाबी को सदा साथ रखना।

06.03.85... निमित्त लौकिक कार्य है लेकिन लगन बाप और सेवा में है। लौकिक भी सेवा प्रति है, अपने लगाव से नहीं करते, डायरेक्शन प्रमाण करते हैं, इसलिए बाप के स्नेह का हाथ ऐसे बच्चों के साथ है।

12.03.85...स्व उन्नति और सेवा की उन्नति। बैलेन्स रखने से अनेक आत्माओं को स्व सहित ब्लैसिंग दिलाने के निमित्त बन जायेंगे। सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों के हर संकल्प में, हर सेकण्ड में सेवा है।

18.03.85... ब्राह्मण जीवन में सन्तुष्टता की विशेषता को देख अज्ञानी भी प्रभावित होते हैं। यह परिवर्तन अनेक आत्माओं का परिवर्तन करने के निमित्त बन जाता है। सन्तुष्टता की विशेषता स्वयं ही हर कार्य में गोल्डन चांसलर बना देती है। स्वत: ही कार्य अर्थ निमित्त बनी हुई आत्माओं को संतुष्ट आत्मा के प्रति संकल्प आवेगा ही।

सेवा में निमित्त बनना यह भी श्रेष्ठ भाग्य है – इस भाग्य को सदा आगे बढ़ाने के लिए विशेष स्वयं को डबल लाइट समझो। किसी भी प्रकार का बोझ खुशी की अनुभूति सदा नहीं करायेगा। जितना अपने को डबल लाइट अनुभव करेंगे उतना भाग्य पद्मगुणा बढ़ता जायेगा। बापदादा डबल लाइट रहने वाले बच्चों के हर कार्य में मददगार हैं। जितना सेवा में निमित्त बनने का भाग्य मिलता है उतना डबल लाइट स्थिति से उड़ती कला में उड़ने के

विशेष अनुभवी बन सकते हो। डबल लाइट स्थिति में रहने से सदा खुशी में नाचते रहेंगे और खुशी के महादानी बन खुशी की खान बढ़ाते रहेंगे।

21.03.85... सभी प्रकार की मदद आपके साथ है। अभी आप लोगों को महारथी निमित्त आत्माओं की जितनी पालना मिलती है उतनी पहले वालों को नहीं मिली। निमित्त बनना अर्थात् आटोमेटिक चाबी लगाना। अनन्य रत्नों को अनादि चाबी से आगे बढ़ना ही है। आप सबके हर संकल्प में सेवा भरी हुई है। एक निमित्त बनता है अनेक आत्माओं को उमंग-उत्साह में लाने के। बापदादा तो निमित्त बच्चों को देख सदा निश्चिन्त हैं। क्योंकि बच्चे कितने होशियार हैं। बच्चे भी कम नहीं हैं। बाप का बच्चों में पूरा फेथ है तो बच्चे बाप से भी आगे हैं। निमित्त बने हुए सदा ही बाप को भी निश्चिन्त करने वाले हैं।

24.03.85... हर सेकण्ड करावनहार निमित्त बनाए करा रहा है। यह हिसाब किताब साक्षी हो चुक्तू कैसे हो रहा है वह देखते हुए भी मौज में रहने कारण लगता कुछ नहीं है। क्योंकि जो आदि से स्थापना के निमित्त बने हैं तो जब तक है तब तक बैठे हैं या चल रहे हैं, स्टेज पर हैं या घर में हैं लेकिन महावीर बच्चे सदा ही अपने श्रेष्ठ स्टेज पर होने के कारण सेवा की स्टेज पर हैं। आदि रत्न सदा सन शोज़ फ़ादर करने के निमित्त हैं। जो विशेष आत्मायें निमित्त हैं उनको देख सभी को क्या याद आता है? बापदादा याद आ जाता है।

27.03.85... सेवा के सहयोगी होने के कारण, सेवा में वृद्धि करने के निमित्त बने हुए होने के कारण या विशेष कोई विशेषता, विशेष गुण होने के कारण, विशेष कोई संस्कार मिलने के कारण वा समय प्रति समय कोई एक्स्ट्रा मदद देने के कारण, ऐसे कारणों से रूप सेवा का साथी है, सहयोगी है लेकिन विशेष झुकाव होने के कारण सूक्ष्म लगाव का रूप बनता जाता है।

बाप किसको भी सहयोगी निमित्त बनाता है लेकिन बनाने वाले को नहीं भूलो। बाप ने बनाया है। बाप बीच में आने से 'जहाँ बाप होगा वहाँ पाप नहीं'! बाप बीच से निकल जाता तो पाप होता है।

विनाशी साधनों को सहारा, आधार नहीं समझो। यह निमित्त मात्र है। सेवा के प्रति है। सेवा अर्थ कार्य में लगाया और न्यारे।

जो भी निमित्त बनी हुई विशेष आत्मायें हैं उन्हों की विशेषाताओं को, धारणाओं को कैच कर, उन्हें फ़ालो करते आगे बढ़ते चलो। जितना बाप के समीप उतना परिवार के समीप। अगर परिवार के समीप नहीं होंगे तो माला में नहीं आयेंगे।

30.03.85... एक दो को नहीं देखो। यह भी तो ऐसे करते हैं ना! यह तो होता ही है, लेकिन मैं विशेषता दिखाने के लिए निमित्त बन जाऊँ।

स्व उन्नति को छोड़ सिर्फ सेवा की उन्नति नहीं करो। साथ-साथ करो। नहीं तो जिनके निमित्त बनते हैं वह भी कमजोर होते।

बापदादा और सर्व आत्माओं द्वारा जिन्हों के निमित्त बनते हो, उन्हों के दिल की दुआयें प्राप्त होती रहेंगी।

11.04.85... यह संगठन जिसको मीटिंग कहते हो, मीटिंग में आना अर्थात् सदा बाप से, सेवा से, परिवार से, स्नेह के श्रेष्ठ संकल्प के धागे में बंधना और बांधना, इसके आधार रूप हो। इस निमित्त संगठन में आना अर्थात् स्वयं को सर्व के प्रति एग्जैम्पुल बनाना। जितना स्व के उद्धार स्वरूप होंगे उतना ही सर्व के उद्धार स्वरूप निमित्त बनेंगे।

संगठन तो बहुत अच्छा है। सभी नामीग्रामी आये हुए हैं। प्लैन्स भी अच्छे-अच्छे बनाये हैं। प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने के निमित्त हो।

02.09.85.. . इन्हों के नाम से काम करने वाले तैयार हो जायेंगे। अभी देखो वह कब निमित्त बनता है। धरनी तैयार करने के लिए चारों ओर सब गये।

तो सभी देशविदेश और जो भी सेवा के निमित्त बन सेवा द्वारा अनेकों को बापदादा के स्नेही सहयोगी बनाकर आये हैं, उन सभी को विशेष यादप्यार दे रहे हैं। हर बच्चे का वरदान अपना-अपना है। विशेष भारत के सब पदयात्रा पर चलने वाले बच्चों को और विदेश सेवा अर्थ चारों ओर निमित्त बने हुए बच्चों को और मधुबन निवासी श्रेष्ठ सेवा के निमित्त बने हुए बच्चों को, साथ-साथ जो सभी भारतवासी बच्चे यात्रा वालों को उमंग-उत्साह दिलाने के निमित्त बने हैं, उन सभी चारों ओर के बच्चों को विशेष यादप्यार और सेवा की सफलता की मुबारक दे रहे हैं।

देहली से ही विश्व में नाम जायेगा। अपनी-अपनी एरिया में तो कर ही रहे हैं। लेकिन देश-विदेश में तो देहली के ही टी.वी., रेडियो निमित्त बनेंगे।

11.11.85... हम ही बाप द्वारा उन्हों को रिटर्न दिलाने वाले हैं। दिलायेंगे तो बाप द्वारा ही लेकिन निमित्त बनते हैं – इसलिए वह इष्ट देव के रूप में पूजे जाते हैं।

13.11.85... गोल्डन जुबली तक अपने में गोल्डन एज़ड अर्थात् सतोप्रधान संकल्प, संस्कार इमर्ज करने हैं। ऐसी गोल्डन जुबली मनानी है। यह तो निमित्त मात्र रसम-रिवाज की रीति से मनाते हो लेकिन वास्तविक गोल्डन जुबली गोल्डन एज़ड बनने की जुबली है। कार्य सफ़ल हुआ अर्थात् कार्य अर्थ निमित्त् आत्मायें सफ़लता स्वरूप बने। अभी भी समय पड़ा है। इन 3 मास के अन्दर दुनिया की स्टेज के आगे निराली गोल्डन जुबली मनाके दिखाओ। दुनिया वाले सम्मान देते हैं और यहाँ 'समान' की स्टेज की प्रत्यक्षता करनी है। सम्मान देने के लिए कुछ भी करते हो यह तो निमित्त मात्र है।

दुनिया वाले सम्मान देते हैं और यहाँ 'समान' की स्टेज की प्रत्यक्षता करनी है। सम्मान देने के लिए कुछ भी करते हो यह तो निमित्त मात्र है। वास्तविकता दुनिया के आगे दिखानी है। हम सब एक हैं, एक के हैं, एकरस स्थिति वाले हैं।

साकार में तो ब्रह्मा बाप कर्म करके दिखाने के निमित्त बने ना। ऐसे समान बनना अर्थात मास्टर सर्वशक्तिवान बनना।

18.11.85... मातायें अपने त्याग और तपस्या द्वारा विश्व का कल्याण करने के निमित्त बनी हुई हैं। माताओं में त्याग और तपस्या की विशेषता है। इन दो विशेषताओं से सेवा के निमित्त् बन औरों को भी बाप का बनाना, इसी में बिज़ी रहती हो? संगमयुगी ब्राह्मणों का काम ही है 'सेवा' करना। ब्राह्मण सेवा के बिना रह नहीं सकते। जैसे नामधारी ब्राह्मण कथा ज़रूर करेंगे।

25.11.85... जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं उन्हें निमित्त बनने का फल मिलता रहता है। और फल खाने वाली आत्मायें शक्तिशाली होती हैं।

27.11.85... सेवाधारी अर्थात् अपनी शक्तियों द्वारा औरों को भी शक्तिशाली बनाने वाले। सेवाधारी की विशेषता यही है। निर्बल में बल भरने के निमित्त बनना, यही सच्ची सेवा है।

जितनी दृष्टि शक्तिशाली होगी उतना अनेकों का परिवर्तन कर सकेंगे। सदा दृष्टि और श्रेष्ठ कर्म द्वारा औरों की सेवा करने के निमित्त बनो।

04.12.85... संकल्प पहुँचा और प्रैक्टिकल हुआ। एक ने कहा दूसरे ने माना यह भी श्रेष्ठ कर्म करके दिखाने के निमित्त बनो।

हरेक यह क्यों नहीं कहते हो कि – 'मैं बनूँगा'। इसमें जो ओटे सो अर्जुन। जैसे बाप ने स्वयं को निमित्त बनाया ऐसे जो निमित्त बनता वह 'अर्जुन' बन जाता। अर्थात् अव्वल नम्बर में आ जाता है।

09.12.85... **जो सेवा में निमित्त बनते हैं उन्हें खुशी और शक्ति की प्राप्ति स्वतः होती है।** सेवा का भाग्य कोटों में कोई को ही मिलता है।

11.12.85... वह अनुभव करें कि निर्बलता के अंधकार से शक्ति की रोशनी में आ गये हैं वा समझें कि यह आत्मा शक्ति द्वारा मुझे भी शक्तिशाली बनाने में मददगार है। कनेक्शन बाप से करायेगी लेकिन निमित्त बन। ऐसे नहीं कि सहयोग देकर अपने में ही अटका देगी। बाप की देन दे रहे हैं, इस स्मृति और समर्थी से विशेषताओं को सेवा में लगायेंगे।

14.12.85... अपने को देखें – मुझे क्या करना है। मुझे निमित्त बन ओरों को शुभ भावना और शुभ कामना का सहयोग देना है। यह है विशेष धारणा। इसमें सब कुछ आ जायेगा।

16.12.85... अगर यह विशेषतायें नहीं तो स्वतः ही लेफ़्ट हैण्ड हो गये क्योंकि ऊँचे ते ऊँचे बाप को प्रत्यक्ष करने के निमित्त ऊँचे ते ऊँचे कर्म हैं। चाहे रूहानी दृष्टि द्वारा, चाहे अपने खुशी के रूहानियत के चेहरे द्वारा बाप को प्रत्यक्ष करते हो। यह भी कर्म ही है।

सभी स्वयं को सेवा के निमित्त अर्थात् सदा विश्वकल्याणकारी समझ आगे बढ़ने वाले हो! विश्व-कल्याणकारी बेहद में रहते हैं, हद में नहीं आते।

19.12.85... साकार रूप में भी निमित्त बन कर्म सिखलाने के लिए पूरे 84 जन्म लेने वाली ब्रह्मा की आत्मा निमित्त बनी। कर्म में कर्म बन्धनों से मुक्त होने में, कर्म सम्बन्ध को निभाने में, देह में रहते विदेही स्थिति में स्थित रहने में, तन के बन्धनों को मुक्त करने में, मन की लगन में मगन रहने की स्थिति में, धन का एक-एक नया पैसा सफ़ल करने में, साकार ब्रह्मा, साकार जीवन में निमित्त बने।

फालो करने के लिए साकार रूप में ब्रह्मा ही साकार जगत के लिए निमित्त बने। आप सभी भी अपने को शिवकुमार शिवकुमारी नहीं कहलाते हो। ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी कहलाते हो। जगत के आगे सिखलाने वाले 'ब्रह्मा' ही निमित्त बनते हैं। तो हर कर्म में फ़ालो करना है।

जब लोन लेते हैं तो अच्छा मालिक वो ही होता है जो शरीर को, स्थान को शक्ति प्रमाण कार्य में लगावे। फ़िर भी बापदादा दोनों के शक्तिशाली पार्ट को रथ चलाने के निमित्त बना है। यह भी ड्रामा में विशेष वरदान का आधार है।

25.12.85... निराकार बाप ने साकार सृष्टि की रचना के निमित्त ब्रह्मा को बनाया। बीज गुप्त होता है, पहले दो पत्ते, जिससे तना निकलता है – वो ही वृक्ष के आदि देव आदि देवी माता पिता के स्वरूप में वृक्ष का फाउण्डेशन ब्रह्मा निमित्त बनता है।

30.12.85... बापदादा देख रहे हैं कि ऐसी श्रेष्ठ प्राप्ति करने वाले कैसे भोले साधारण आत्मायें विश्व के आगे निमित्त बनी हैं।

हर एक को सोचना है – मुझे नवीनता के लिए सेवा में आगे बढ़ना है। चाहे आगे निमित्त थोड़े को ही बनाना होता है – जैसे भाषण करेंगे तो थोड़े, इतनी सारी सभा करेगी क्या! हर एक की अपनी-अपनी ड्यूटी बाँट करके ही कार्य सम्पन्न होता है। लेकिन सभी को निमित्त बनना है। किस बात में? चारों ओर जहाँ भी हो, जिस भी ड्यूटी के निमित्त हो, लेकिन जिस समय कोई विशाल कार्य जहाँ भी होता है उस समय दूर बैठे भी उतने समय तक सदा हर एक के मन में विश्व-कल्याण की श्रेष्ठ भावना और श्रेष्ठ कामना जरूर होनी चाहिए।

यह विशेष दिन विशेष कंगन बाँधना चाहिए और किसी भी हद की बातों में संकल्प शक्ति, समय की शक्ति, व्यर्थ न गँवाएं, हर संकल्प से, हर समय विशाल सेवा के निमित्त बन मंसा शक्ति से भी सहयोगी बनना है।

कोई साकार में वाणी से, कर्म से निमित्त बनेंगे। कोई मन्सा सेवा में निमित्त बनेंगे। लेकिन जितना दिन प्रोग्राम चलता है चाहे 5 दिन चाहे 6 दिन चलता, इतना ही समय हर ब्राह्मण आत्मा को सेवा का कंगन बंधा हुआ हो कि मुझ आत्मा को निमित्त बन सफ़लता को लाना है।

ऐसी आत्माओं को निमित्त बनाओ जो एक, अनेक आत्माओं की सेवा के निमित्त बन जाये। सोचते ही रहेंगे, लेकिन करेंगेकरेंगे कहते समय बीत जाता है और अन्त में जो भी मिला उसको ही ले आते हो। संख्या तो बढ़ जाती है लेकिन विशाल सेवा का प्रोग्राम रखते ही इसलिए हैं कि ऐसी आत्मायें आवें जो एक अनेकों के निमित्त बन जाए। चारों ओर सेवा चलती रहती है ना। अपने-अपने स्थान पर भी ऐसी आत्माओं का कार्य तो चलाते रहते हो।

01.01.86... ऐसी आत्माओं को निमित्त बनाओ जो एक, अनेक आत्माओं की सेवा के निमित्त बन जाये। सोचते ही रहेंगे, लेकिन करेंगेकरेंगे कहते समय बीत जाता है और अन्त में जो भी मिला उसको ही ले आते हो। संख्या तो बढ़ जाती है लेकिन विशाल सेवा का प्रोग्राम रखते ही इसलिए हैं कि ऐसी आत्मायें आवें जो एक अनेकों के निमित्त बन जाए। चारों ओर सेवा चलती रहती है ना। अपने-अपने स्थान पर भी ऐसी आत्माओं का कार्य तो चलाते रहते हो।

8.1.86.. .. इस समय प्रकृति और व्यक्ति दोनों ही हलचल मचाने के निमित्त हैं लेकिन आप पुरुषोत्तम आत्मायें विश्व को सुख की साँस, शांति की साँस देने के निमित्त हो।

सदा उमंग उत्साह वाले ही नई दुनिया बनाने के निमित्त बनते हैं। जितना नई दुनिया के नजदीक आते जायेंगे उतना ही नई दुनिया की विशेष वस्तुओं का विस्तार होता रहेगा।

15.1.86.. .. जितना स्वयं निमित्त बनी हुई आत्मायें शक्तिशाली होंगी उतनी सेवा भी शक्तिशाली होगी।

18.1.86.. .. यह आदि रतन स्थापना के, आवश्यकता के समय के सहयोगी हैं। इसलिए ऐसे निमित्त बनने वाली आत्माओं को, आईवेले पर सहयोगी बनने वाली आत्माओं को, ऐसी कोई भी वेला मुश्किल की आती है तो बापदादा भी उन्हें उसका रिटर्न देता है। इसलिए आप सभी जो भी ऐसे समय पर निमित्त बने हो उसकी यह एकस्ट्रा गिफ्ट ड्रामा मे नूंधी हुई है।

बेहद के मालिक बनना हैं ना, स्टेट के मालिक तो नहीं बनना है। सेवाधारी निमित्त आत्माओं में जब यह लहर पैदा हो तब वह लहर औरों में भी पैदा होगी। अगर आप लोगों में यह लहर नहीं होगी तो दूसरों में आ नहीं सकती। तो सदा बेहद के अधिकारी समझ, बेहद का प्लैन बनाओ।

जैसे गोल्डन जुबली के निमित्त आत्माओं का स्नेह का संगठन दिखाई देता है और उस स्नेह के संगठन ने प्रत्यक्षफल दिखाया – सेवा की वृद्धि, सेवा में सफलता। ऐसे ही ऐसा संगठन बनाओ जो किले के रूप में हो। जैसे

गोल्डन जुबली वाली निमित्त दीदियाँ, दादियाँ जो भी हैं उन्होंने जब स्नेह और संगठन की शक्ति का प्रत्यक्षफल दिखाया तो आप भी प्रत्यक्षफल दिखाओ। तो एक दो के समीप आने के लिए समान बनना पड़ेगा। संस्कार भिन्न-भिन्न तो हैं भी और रहेंगे भी। अभी जगदम्बा को देखो और ब्रह्मा को देखो – संस्कार भिन्न-भिन्न ही रहे। अभी जो भी निमित्त दीदी-दादियाँ हैं, संस्कार एक जैसे तो नहीं लेकिन संस्कार मिलाना – यह है स्नेह का सबूत। यह नहीं सोचो कि संस्कार मिलें तो संगठन हो, यह नहीं। संस्कार मिलाने से संगठन मजबूत बन ही जाता है।

20.1.86.. ..सभी समर्थ बच्चों का एक ही यह श्रेष्ठ संकल्प है कि यह श्रेष्ठ कार्य होना ही है। इससे भी ज़्यादा यह निश्चित है कि यह कार्य हुआ ही पड़ा है। सिर्फ कर्म और फल के, पुरुषार्थ और प्रालब्ध के निमित्त और निर्माण के कर्म-फिलासफी के अनुसार निमित्त बन कार्य कर रहे हैं। भावी अटल है। लेकिन सिर्फ आप श्रेष्ठ भावना द्वारा, भावना का फल अविनाशी प्राप्त करने के निमित्त बने हुए हैं।

20.1.86.. .. अभी युद्ध के संस्कार, मेहनत के संस्कार, मन को मुँझाने के संस्कार इसकी समाप्ति करो। नहीं तो यही बहुत काल के संस्कार बन, 'अन्त मति सो भविष्य गति' प्राप्त कराने के निमित्त बन जायेंगे। सुनाया ना – अभी बहुत काल के पुरुषार्थ का समय समाप्त हो रहा है और बहुत काल की कमज़ोरी का हिसाब शुरू हो रहा है। समझ में आया! इसलिए यह विशेष परिवर्तन का समय है। अभी वरदाता है फिर हिसाब-किताब करने वाले बन जायेंगे। अभी सिर्फ स्नेह का हिसाब है। तो क्या करना है! स्मृति स्वरूप बनो। स्मृति स्वरूप स्वत: ही नष्टोमोहा बना ही देगा।

18.2.86.. ... आदि में ब्रह्मा बाप मे यह विशेषता देखी, अनुभव की और सेवा की आदि में जब भी जहाँ भी गये, सबने देवियाँ ही अनुभव किया। देवियाँ आई हैं, यही सबके बोल सुनते, यही सभी के मुख से निकलता कि यह अलौकिक व्यक्तियाँ हैं। ऐसे ही अनुभव किया ना? यह देवियों की भावना सभी को आकर्षित कर सेवा की वृद्धि के निमित्त बनी। तो आदि में भी न्यारेपन की विशेषता रही। सेवा की आदि में भी न्यारेपन की, देवी पन की विशेषता रही। अभी अन्त में वही झलक और फलक प्रत्यक्ष रूप में अनुभव करेंगे। तब प्रत्यक्षता के नगाड़े बजेंगे। हर सेकण्ड, हर संकल्प सेवा में बिजी रहेंगे तो समस्याओं का लंगर उठ जायेगा, किनारा हो जायेगा। आप औरों को रास्ता दिखाने के, बाप का खज़ाना देने के निमित्त सहारा बनो तो कमज़ोरियों का किनारा स्वत: ही हो जायेगा। समझा अभी क्या करना है? अभी बेहद को सोचो, बेहद के कार्य को सोचो। चाहे दृष्टि से दो, चाहे वृत्ति से दो, चाहे वाणी से दो, चाहे संग से दो, चाहे वायब्रेशन से दो। लेकिन देना ही है।

साथ रहना और साथी बनना यह विशेष वरदान आदि से अन्त तक मिला हुआ है। स्नेह से जन्म हुआ, .. .ान तो पहले नहीं था ना। स्नेह से ही पैदा हुए, जिस स्नेह से जन्म हुआ वही स्नेह सभी को देने के लिए विशेष निमित्त हो। जो भी सामने आये विशेष आप सबसे बाप के स्नेह का अनुभव करे।

25.2.86.. .. **निमित्त बनना भी एक विशेष गिफ्ट है।** और डबल विदेशियों को यह गिफ्ट मिलती है। थोड़ा ही अनुभव किया और निमित्त बन जाते सेन्टर स्थापन करने के। तो यह भी लास्ट सो फास्ट जाने की विशेष गिफ्ट है। सेवा करने से मैजारिटी को यह स्मृति में रहता है कि जो हम निमित्त करेंगे अथवा चलेंगे, हमको देख और करेंगे। तो यह डबल अटेन्शन हो जाता है। डबल अटेन्शन होने के कारण डबल लिफ्ट हो जाती है।

27.2.86.. .. विश्व कल्याणकारी हो तो विश्व के चारों ओर सेवा बढ़ती है। और निमित्त बनना ही है। कोई भी कोना अगर रह गया तो उल्हना देंगे। अच्छा है – हिम्मते बच्चे मदद दे बाप।

1.3.86.. .. सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है। बापदादा तीन शब्द कहते हैं ना, जो साकार द्वारा भी लास्ट में उच्चारण किये। 'निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी'। यह तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वत: ही आती हैं। निमित्त भाव नहीं तो इन तीनों विशेषताओं का अनुभव नहीं होता। निमित्त भाव अनेक प्रकार का मैं-पन मेरा-पन सहज ही खत्म कर देता है। न मैं, न मेरा। स्थिति में जो हलचल होती है वह इसी एक कमी के कारण। सेवा में भी मेहनत करनी पड़ती और अपनी उड़ती कला की स्थिति में भी मेहनत करनी पड़ती। निमित्त हैं अर्थात् निमित्त बनाने वाला सदा याद रहे। तो इसी विशेषता से सदा सेवा की वृद्धि करते हुए आगे बढ़ रहे हो ना।

4.3.86.. .. किसी भी कार्य के निमित्त बनते भी बेफ़िकर रहना यही विशेषता है। जैसे बाप निमित्त तो बनता है न। लेकिन निमित्त बनते भी न्यारा है इसलिए बेफ़िकर है। ऐसे फ़ालो फ़ादर।

13.3.86.. .. देखो – बापदादा के साथ निमित्त कौन बने हैं। हैं विश्व के आधार लेकिन बने कौन हैं? साधारण! जो दुनिया के लोगों की नजरों में हैं वह बाप की नज़रों में नहीं है और जो बाप की नज़रों में हैं वह दुनिया वालों की नज़रों में नहीं हैं। आपको देखकर पहले तो मुस्करायेंगे कि यह हैं! लौकिक कार्य तो निमित्त मात्र करना ही पड़ता है लेकिन दिल में लगन – याद और सेवा की रहे।

31.3.86.. .. 'सन्तुष्टता, विशालता और प्रसन्नता' यह है 18 अध्याय की समाप्ति। समझा! अब इस रिजल्ट की तपस्या करो। एक दो को नहीं देखना यह तो करता नहीं फिर मैं क्यों करूँ। नहीं। मुझे करके दिखाना है। मुझे निमित्त बन वातावरण में वायब्रेशन फैलाना है। समझा!

निमित्त सेवाधारी बच्चों को बापदादा सदा 'समान भव' के वरदान से आगे बढ़ाते रहते हैं। बापदादा सभी पाण्डव चाहे शक्तियाँ, जो भी सेवा के लिए निमित्त हैं, उन सबको विशेष 'पद्मापद्म भाग्यवान श्रेष्ठ आत्मायें' समझते हैं। सेवा का प्रत्यक्ष फल खुशी और शक्ति, यह विशेष अनुभव तो करते ही हैं। अभी जितना स्वयं शक्तिशाली लाइट हाउस, माइट हाउस बन सेवा करेंगे उतना जल्दी चारों ओर प्रत्यक्षता का झण्डा लहरायेंगे। हर एक निमित्त सेवाधारी को विशेष सेवा की सफलता के लिए दो बातें ध्यान में रखनी हैं – एक बात- सदा संस्कारों को मिलाने की यूनिटी का, हर स्थान से यह विशेषता दिखाई दे। दूसरा-सदा हर निमित्त सेवाधारियों को पहले स्वयं को यह दो सर्टीफिकेट देने हैं। एक 'एकता', दूसरा 'सन्तुष्टता'।

7.4.86.. .. जैसे एक तरफ खूने-नाहक खेल की लहर बढ़ती जा रही है, सर्व आत्मायें अपने को बेसहारे अनुभव कर रहीं हैं, ऐसे समय पर सभी सहारे की अनुभूति कराने के निमित्त आप महातपस्वी आत्मायें हो। चारों ओर इस तपस्वी स्वरूप द्वारा आत्माओं को रूहानी चैन अनुभव कराना है। सारे विश्व की आत्मायें प्रकृति से, वायुमण्डल से, मनुष्य आत्माओं से, अपने मन के कमज़ोरियों से, तन से, बेचैन हैं। ऐसी आत्माओं को सुख-चैन की स्थिति का एक सेकण्ड भी अनुभव करायेंगे तो आपका दिल से बार-बार शुक्रिया मानेंगे। वर्तमान समय संगठित रूप के ज्वाला स्वरूप की आवश्यकता है। अभी विधाता के बच्चे विधाता स्वरूप में स्थित रह, हर समय देते जाओ। अखण्ड महान लंगर लगाओ।

11.4.86.. .. सदा स्मृति में रहे कि –'मैं अविनाशी बगीचे का अविनाशी गुलाब हूँ।' कभी मुरझाने वाला नहीं। सदा खिला हुआ। ऐसे खिले हुए रूहानी गुलाब सदा सेवा में स्वत: ही निमित्त बन जाते हैं। याद की, शक्तियों की, गुणों की यह सब खुशबू सबको देते रहो। स्वयं बाप ने आकर आप फूलों को तैयार किया है तो कितने सिकीलधे हो!

18.1.87.. .. सच्ची गीता-पाठशाला की विधि यह है – पहले स्वयं पढ़ना अर्थात् बनना फ़िर औरों को निमित्त बन पढ़ाना। तो सभी गीता-पाठशाला वाले इस विधि से सेवा करते हो? क्योंकि आप सभी इस विश्व के आगे परमात्म-पढ़ाई का सैम्पल हो। तो सैम्पल का महत्त्व होता है। सैम्पल अनेक आत्माओं को ऐसा बनने की प्रेरणा देता है। तो गीता-पाठशाला वालों के ऊपर बड़ी ज़िम्मेवारी है।

20.2.87.. .. जैसे आजकल के जो बीमारियों को हटाने वाले डॉक्टर्स हैं, वह एक्सरसाइज़ (व्यायाम) कराते हैं, और एक्सरसाइज़ में पहले दर्द होता है, लेकिन वह दर्द सदा के लिए बेदर्द बनाने के निमित्त होता है। जिसको यह समझ नहीं होती है, वह चिल्लाते हैं – इसने तो और ही दर्द कर लिया। लेकिन इस दर्द के अन्दर छिपी हुई दवा है। इस प्रकार रूप भल विघ्न का है, आपको विघ्नकारी आत्मा दिखाई पड़ती लेकिन सदा के लिए विघ्नों से पार कराने के निमित्त, अचल बनाने के निमित्त वही बनते। इसलिए, सदा निर्विघ्न सेवाधारी को कहते हैं – 'सच्चे सेवाधारी'। ऐसे श्रेष्ठ लकीर वाले सच्चे सेवाधारी कहे जाते हैं।

14.10.87.. .. यह भी सुनाया ना प्रत्यक्षता का पर्दा हिलने का अथवा पर्दा खुलने का आधार बना है और बनता रहेगा। सर्व के सहयोगी - जैसे कार्य का नाम है, वैसे ही स्वरूप बन सहज कार्य करते रहेंगे तो मेहनत निमित्त मात्र और सफलता पद्मगुणा अनुभव करते रहेंगे।

17.10.87.. .. आप पूज्य आत्मायें संसार के लिए नई रोशनी हो। आपकी चढ़ती कला विश्व को श्रेष्ठ कला में लाने के निमित्त बनती है। आप गिरती कला में आते हो तो संसार की भी गिरती कला होती है। आप परिवर्तन होते हो तो विश्व भी परिवर्तन होता है। इतने महान और महत्त्व वाली आत्मायें हो!

25.10.87.. .. साधनों के होते, साधनों को प्रयोग में लाते, योग की स्थिति डगमग न हो। योगी बन प्रयोग करना - इसको कहते हैं न्यारा। है ही कुछ नहीं, तो उसको न्यारा नहीं कहेंगे। होते हुए निमित्त-मात्र, अनासक्त रूप से प्रयोग करना; इच्छा वा अच्छा होने के कारण नहीं यूज़ करना – यह चेकिंग ज़रूर करो।

2.11.87.. .. यह अलौकिक ईश्वरीय सेवा एक ही समय पर तीन प्रकार के सेवा की सिद्धि है, वह तीन प्रकार की सेवा साथ-साथ कौनसी है? एक – वृत्ति, दूसरा – वायब्रेशन, तीसरा – वाणी। तीनों ही शक्तिशाली निमित्त, निर्मान और नि:स्वार्थ इस आधार से हैं, तब दिल-पसन्द सफलता होती है। नहीं तो, सेवा होती है, अपने को वा दूसरों को थोड़े समय के लिए सेवा की सफलता से खुश तो कर लेते हैं लेकिन दिल-पसन्द सफलता जो बापदादा कहते हैं, वह नहीं होती है।

बापदादा सभी बच्चों को समान बनाने की शुभ भावना से उड़ाने चाहते हैं। निमित्त बने हुए सेवाधारी बाप-समान बनने ही हैं, कैसे भी बाप को बनाना ही है क्योंकि ऐसे-वैसे को तो साथ ले ही नहीं जायेंगे। बाप की भी तो शान है ना। बाप सम्पन्न हो और साथी लंगड़ा या लूला हो तो सजेगा नहीं। लूले-लंगड़े बाराती होंगे, साथी नहीं। इसलिए शिव की बारात सदा लूली-लंगड़ी दिखाई गई है क्योंकि कुछ कमज़ोर आत्मायें धर्मराजपुरी में पास होने लायक बनेंगी।

आपके पास है – 'ज्ञान अमृत'। जल अल्पकाल की प्यास बुझाए तृप्त आत्मा बना देता है। तो सर्व आत्माओं को अमृत द्वारा तृप्त करने के निमित्त बने हुए हो ना। यह उमंग सदा रहता है? क्योंकि, प्यास बुझाना – यह महान पुण्य है। प्यासे की प्यास बुझाने वाले को पुण्य आत्मा कहते हैं। आप भी महान पुण्य आत्मा बन सभी की प्यास बुझाने वाले हो।

6.11.87.. .. जो निमित्त बनते हैं उन्हों के भी, बाप के साथ-साथ गुण तो गाते हैं ना। इसलिए तो बाप के साथ बच्चों की भी पूजा होती है, अकेले बाप की नहीं होती। सभी को कितनी खुशी प्राप्त हो रही है! यह आशीर्वादों की मालायें भक्ति में मालाओं के अधिकारी बनाती हैं!

10.11.87.. .. वर्तमान समय सर्व की चिन्ता मिटाने के निमित्त बनने वाली शुभ-चिन्तक मणियों की आवश्यकता है जो चिन्ता के बजाए शुभ-चिन्तन की विधि के अनुभवी बना सकें। जहाँ शुभ-चिन्तन होगा वहाँ चिन्ता स्वत: समाप्त हो जाएगी। तो सदा शुभ-चिन्तक बन गुप्त सेवा कर रहे हो ना? वर्तमान समय सर्व की चिन्ता मिटाने के निमित्त बनने वाली शुभ-चिन्तक मणियों की आवश्यकता है जो चिन्ता के बजाए शुभ-चिन्तन की विधि के अनुभवी बना सकें। जहाँ शुभ-चिन्तन होगा वहाँ चिन्ता स्वत: समाप्त हो जाएगी। तो सदा शुभ-चिन्तक बन गुप्त सेवा कर रहे हो ना?

22.11.87.. .. बाप की मदद से आप निर्बल से बलवान बन गये। इतने बलवान बने जो विश्व को चैलेन्ज करने के निमित्त बने हो कि हम विश्व को पावन बना कर ही दिखायेंगे! निर्बल से इतने बलवान बनो जो द्वापर के नामीग्रामी ऋषि-मुनि महान आत्मायें जिस बात को खण्डित करते रहे हैं कि प्रवृत्ति में रहते पवित्र रहना असम्भव है और स्वयं आजकल के समय प्रमाण अपने लिए भी कठिन समझते हैं, और आप उन्हों के आगे नैचरल रूप में वर्णन करते हो कि यह तो आत्मा का अनादि, आदि निजी स्वरूप है, इसमें मुश्किल क्या है? इसको कहते हैं – हिम्मते बच्चे मदद दे बाप।

ब्रह्मा बाप को देखा, अन्तिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तक स्वयं पर, सेवा पर, बेहद की वैराग वृत्ति पर, स्टूडेन्ट लाइफ की रीति से अटेन्शन देकर निमित्त बन कर दिखाया। इसलिए आदि से अन्त तक हिम्मत में रहे, हिम्मत दिलाने के निमित्त बने। तो बाप के नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते भी अलबेले नहीं रहे। सदा अपने तीव्र पुरुषार्थ के अनुभव बच्चों के आगे अन्त तक सुनाते रहे। मदद के सागर में ऐसे समा गये जो अब भी बाप समान हर बच्चे को अव्यक्त रूप से भी मददगार हैं। इसको कहते हैं – एक कदम की हिम्मत और पद्मगुणा मदद के पात्र बनना। ब्रह्मा बाप को देखा, अन्तिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति तक स्वयं पर, सेवा पर, बेहद की वैराग वृत्ति पर, स्टूडेन्ट लाइफ की रीति से अटेन्शन देकर निमित्त बन कर दिखाया। इसलिए आदि से अन्त तक हिम्मत में रहे, हिम्मत दिलाने के निमित्त बने। तो बाप के नम्बरवन मदद के पात्र बन नम्बरवन प्राप्ति को प्राप्त हुए। भविष्य निश्चित होते भी अलबेले नहीं रहे। सदा अपने तीव्र पुरुषार्थ के अनुभव बच्चों के आगे अन्त तक सुनाते रहे। मदद के सागर में ऐसे समा गये जो अब भी बाप समान हर बच्चे को अव्यक्त रूप से भी मददगार हैं। इसको कहते हैं – एक कदम की हिम्मत और पद्मगुणा मदद के पात्र बनना।

22.11.87.. .. इसलिए यह ईश्वरीय विधान ड्रामा अनुसार बना हुआ है। निमित्त मात्र यह विधान नूँधा हुआ है कि एक कदम हिम्मत का और पद्म कदम मदद का। मदद का सागर होते हुए भी यह विधान की विधि ड्रामा अनुसार नूँधी हुई है। तो जितना चाहे हिम्मत रखो और मदद लो। इसमें कभी नहीं रखते। चाहे एक वर्ष का बच्चा हो, चाहे 50 वर्ष का बच्चा हो, चाहे सरेण्डर हो, चाहे प्रवृत्ति वाले हो - अधिकार समान है। लेकिन विधि से प्राप्ति है।

14.12.87.. .. सदा साथ रहो। सदा बाप के साथी बन सेवा करो। करावनहार बाप, निमित्त करनहार मैं हूँ। तो कभी भी सेवा हलचल में नहीं लायेगी। जहाँ अकेले हो तो मैं-पन में आते हो, फिर माया बिल्ली म्याऊं-म्याऊं करती है। आप 'मैं-मैं' करते, वह कहती - मैं आऊं, मैं आऊं। माया को बिल्ली कहते हो ना। तो साथी बन सेवा करो।

23.12.87.. .. जैसे बाप परमधाम से इस पुराने पराये देश में प्रवेश हो आते हैं, ऐसे आप सभी भी परमधाम निवासी श्रेष्ठ आत्मायें, सहजयोगी आत्मायें ऐसे अनुभव करती हो कि हम भी परमधाम निवासी आत्मायें इस साकार शरीर में प्रवेश कर विश्व के कार्य अर्थ निमित्त हैं? आप भी अवतरित हुई ब्राह्मण आत्मायें हो।

27.12.87.. .. निश्चयबुद्धि की वा रूहानी नशे में रहने वाले के जीवन की विशेषतायें क्या होंगी? पहली बात - जितना ही श्रेष्ठ नशा उतना ही निमित्त भाव हर जीवन के चरित्र में होगा। निमित्त भाव की विशेषता के कारण निर्मान बुद्धि। बुद्धि पर ध्यान देना - जितनी निर्मान बुद्धि होगी उतनी निर्मान, नव निर्माण कहते हो ना। तो नव निर्माण करने वाली बुद्धि होगी। तो निर्मान भी होंगे, निर्माण भी होंगे। जहाँ यह विशेषतायें हैं उसको ही कहा जाता है - निश्चयबुद्धि विजयी। निमित्त, निर्मान और निर्माण।

लौकिक कार्य करते भी यह खुशी रहती है कि यह कार्य अलौकिक सेवा के निमित्त कर रहे हैं। अपने मन की तो इच्छायें नहीं है ना। तो जहाँ इच्छा होती है वहाँ मेहनत लगती है। अभी निमित्त मात्र करते हो क्योंकि मालूम है कि तन, मन, धन - तीनों लगाने से एक का पद्मगुणा अविनाशी बैंक में जमा हो रहा है। फिर जमा किया हुआ खाते रहना। पुरुषार्थ से - योग लगाने का, ज्ञान सुनने-सुनाने का, इस मेहनत से भी छूट जायेंगे।

31.12.87.. .. जैसे बाप को याद करते ही खुशी में नाचते हैं, वैसे हर एक ब्राह्मण आत्मा को, हर ब्राह्मण याद करते रूहानी खुशी का अनुभव करे, हद की खुशी का नहीं। हर समय बाप की सर्व प्राप्तियों का साकार निमित्त रूप अनुभव करे। इसको कहते हैं – हर संकल्प वा हर समय एक दो को मुबारक देना।

14.1.88.. .. शरीर निर्वाह करने के लिए निमित्त मात्र काम करना दूसरी बात है लेकिन ऐसा लगे रहना जो न पढ़ाई याद आए, न याद का अभ्यास हो...उसको कहेंगे मोह। तो मोह तो नहीं है ना! जितना नष्टोमोहा होंगे उतना ही स्मृतिस्वरूप होंगे।

18.1.88.. .. अगर कोई भी बात का कोई निमित्त बनता है अर्थात् तुरन्त दान करता तो उसके रिटर्न में महापुण्य की अनुभूति होती है। वह क्या होती है? किसी भी सेवा का पुण्य एकस्ट्रा 'ख़ुशी', शक्ति की अनुभूति होती है।

3.2.88.. .. बापदादा सदा बच्चों को सेवा में आगे बढ़ते, स्नेह के कारण ख़ुश रहें। यह संकल्प कभी भी दिल के स्नेह में उत्पन्न नहीं हो सकता कि बच्चे क्यों सेवा में आगे जायें, निमित्त तो मैं हूँ, मैंने ही इनको निमित्त बनाया। कभी स्वप्न-मात्र भी यह भावना उत्पन्न नहीं हुई। इसको कहा जाता है – सच्चा स्नेह, नि:स्वार्थ स्नेह, रूहानी स्नेह!

चाहे कोई 50-60 सेन्टर्स खोलने के भी निमित्त बन जाए! लेकिन सेवा के खाते में या बापदादा की दिल में सेवा का जमा खाता उतना ही होता है जो माया से मुक्त हो, योगयुक्त हो करते हो। किसके पास दो सेन्टर हैं, देखने में दो सेन्टर की इन्चार्ज आती है, और कोई 50 सेन्टर्स की इन्चार्ज दिखाई देती है, लेकिन अगर दो सेवाकेन्द्र भी निर्विघ्न हैं, माया से, हलचल से, स्वभाव-संस्कार के टक्कर के टक्कर से मुक्त हैं तो दो सेन्टर वाले का भी 50 सेवाकेन्द्र वाले से ज्यादा सेवा का खाता जमा है।

20.2.88.. .. करावनहार एक ही बाप है, किसी की भी बुद्धि को टच कर विश्व-सेवा का कार्य कराते रहे हैं और कराते रहेंगे। सिर्फ निमित्त बच्चों को इसलिए बनाते हैं कि जो करेगा सो पायेगा। पाने वाले बच्चे हैं, बाप को पाना नहीं है। प्रालब्ध पाना या सेवा का फल अनुभव होना – यह आत्माओं का काम है। इसलिए बच्चों को निमित्त बनाते हैं।

20.2.88.. ..करावनहार एक ही बाप है, किसी की भी बुद्धि को टच कर विश्व-सेवा का कार्य कराते रहे हैं और कराते रहेंगे। सिर्फ निमित्त बच्चों को इसलिए बनाते हैं कि जो करेगा सो पायेगा। पाने वाले बच्चे हैं, बाप को पाना नहीं है। प्रालब्ध पाना या सेवा का फल अनुभव होना – यह आत्माओं का काम है। इसलिए बच्चों को निमित्त बनाते हैं। कराने वाला करा रहा है और आप कठपुतली के समान नाच रहे हो। यह सेवा भी एक खेल है। कराने वाला करा रहा है और आप निमित्त बन एक कदम का पद्मगुणा प्रालब्ध बना रहे हो। तो बोझ किसके ऊपर है? कराने वाले पर या करने वाले पर? बाप तो जानते हैं - यह भी बोझ नहीं है। आप बोझ कहते हो तो बाप भी बोझ शब्द कहते हैं। बाप के लिए तो सब हुआ ही पड़ा है। सिर्फ जैसे लकीर खींची जाती है, लकीर खींचना बड़ी बात लगती है क्या? तो ऐसे बापदादा सेवा कराते हैं। सेवा भी इतनी ही सहज है जैसे एक लकीर खींचना। रिपीट कर रहे हैं, निमित्त खेल कर रहे हैं।

20.2.88.. .. सेवा बढ़ना - यह ड्रामा अनुसार बना हुआ ही है। कितना भी आप सोचो - अभी तो बहुत हो गया, लेकिन ड्रामा की भावी बनी हुई है। इसलिए सेवा के प्लैन्स निकलने ही हैं और आप सबको निमित्त बन करनी ही है। यह भावी कोई बदल नहीं सकते। बाप चाहे एक वर्ष सेवा से रेस्ट दे देवें, नहीं बदल सकता। सेवा से फ्री हो बैठ सकेंगे? जैसे याद ब्राह्मण जीवन की खुराक है, ऐसे सेवा भी जीवन की खुराक है। बिना खुराक के कभी कोई रह सकता है क्या? लेकिन बैलेन्स ज़रूरी है। इतना भी ज़्यादा नहीं करो जो बुद्धि पर बोझ हो और इतना भी नहीं करो जो अलबेले हो जाओ। न बोझ हो, न अलबेलापन हो, इसको कहते हैं – बैलेन्स।

28.2.88.. .. स्नेह का वरदान भी सेवा के निमित्त बना देता है। बाप से स्नेह है तो औरों को भी बाप के स्नेही बनाए समीप ले आते हो। जैसे बाप के स्नेह ने आपको अपना बना लिया तो सब कुछ भूल गया। ऐसे अनुभवी बन औरों को भी अनुभवी बनाते रहो।

जिन बच्चों को बाप ने विशेष सेवा के अर्थ निमित्त बनाया है, तो निमित्त बनाने के साथ-साथ सेवा के हर कदम में सहयोगी भी बनता है।

7.3.88.. .. भाग्यवान के नयन अर्थात् दिव्य दृष्टि किसी को भी सदा ख़ुशी की लहर उत्पन्न कराने के निमित्त बनती है। जिसको भी दृष्टि मिलेगी वह रूहानियत का, रूहानी बाप का, परमात्म-याद का अनुभव करेगा।

15.3.88.. .. बाप द्वारा हर आत्मा को मुक्ति वा जीवनमुक्ति का अधिकार प्राप्त कराने के निमित्त बने हुए हो। सर्व की इच्छाओं को पूर्ण करने वाले बाप समान – 'कामधेनु' हो, कामनायें पूर्ण करने वाले हो।

जैसे बाप सदा लाइट-हाउस, माइट हाउस है; ऐसे ब्राह्मण आत्मायें भी बाप समान हो, लाइटहाउस हो। इसलिए हर आत्मा को अपनी मंज़िल पर पहुँचाने के निमित्त हो।

27.3.88.. .. कर्मणा सेवा भल देखने में स्थूल आती है लेकिन सूक्ष्म वृत्तियों को परिवर्तन करने वाली होती है। तो ऐसी सेवा के हम निमित्त हैं - इसी ख़ुशी से आगे बढ़ते चलो।

7.11.89.. .. स्नेह ऐसा रूहानी आकर्षण है जो बच्चों को बाप की तरफ़ आकर्षित कर मिलन मनाने के निमित्त बन जाता है।

30.11.82.. .. सेवाधारी सदा अपने को निमित्त समझेगा, मेरा नहीं समझेगा। और जितना निमित्त भाव होगा उतना निर्मान होंगे, जितना निर्मान होंगे उतना निर्माण का कर्तव्य कर सकेंगे। निमित्त भाव नहीं तो देह-भान से परे निर्मान बन नहीं सकेंगे। इसलिए सेवाधारी अर्थात् समर्पणता।

23.4.93.. .. जैसे बाप ने बच्चों के स्नेह में ''जी हज़ूर, हाज़िर'' करके दिखाया, ऐसे ही सदा बापदादा और निमित्त आत्माओं की श्रीमत वा डायरेक्शन को सदा 'जी हाज़िर' करते रहना। कभी भी व्यर्थ मनमत वा परमत नहीं मिलाना। हाज़िर हज़ूर को जान श्रीमत पर उड़ते चलो।

18.11.93... सभी कार्य अच्छे चल रहे हैं ना? करावनहार करा रहे हैं और निमित्त बन करने वाले कर रहे हैं। ऐसे अनुभव होता है ना? सर्व के सहयोग की अंगुली से हर कार्य सहज और सफल होता है। कैसे हो रहा है - ये जादू लगता है ना। दुनिया वाले तो देखते और सोचते रह जाते हैं। और आप निमित्त आत्मायें सदा आगे बढ़ते जायेंगे। क्योंकि बेफ़िक्र बादशाह हो। दुनिया वालों को तो हर क़दम में चिन्ता है और आप सबके हर संकल्प में परमात्म चिन्तन है इसलिये बेफ़िक्र हैं। सेवा बढ़ाने का चिन्तन अर्थात् प्लैन भले बनाओ। लेकिन चिन्ता से कभी सफलता नहीं होगी। चलाने वाला चला रहा है, कराने वाला करा रहा है इसलिये सब सहज होना ही है, सिर्फ़ निमित्त बन संकल्प, तन, मन, धन सफल करते चलो। जिस समय जो कार्य होता है वो कार्य हमारा कार्य है। जब हमारा कार्य है, मेरा कार्य है तो जहाँ मेरापन होता है वहाँ सब कुछ स्वत: ही लग जाता है। माताओं को सबसे बड़े ते बड़ी खुशी है कि बाप ने हमें अपना बना लिया। नाउम्मीद से सदा के उम्मीदवार बने गये। दुनिया वालों ने नाउम्मीद बनाया और बाप ने उम्मीदों के सितारे बना लिया। जो औरों को भी उम्मीदों के सितारे बनाने के निमित्त बने। एक्स्ट्रा खुशी यह है कि हमें बाप ने पसन्द कर लिया। कितना सहज पसन्द किया।

25.11.93... आप सब एक-एक दर्शनीय मूर्त हो। सबकी नज़र निमित्त आत्माओं तरफ़ जाती है तो दर्शनीय मूर्त हो गये ना।

02.12.93... फालो ब्रह्मा बाप। जैसे ब्रह्मा बाप ने स्वयं, सदा अपने को निमित्त एग्जाम्पल बनाया, सदा यह लक्ष्य लक्षण में लाया–जो ओटे सो अर्जुन अर्थात् जो स्वयं को निमित्त प्रत्यक्ष प्रमाण बनाता है वही अर्जुन अर्थात् अव्वल नम्बर का बनता है। अगर फ़ालो फ़ादर करना है तो दूसरे को देख बनने में नम्बरवन नहीं बन सकेंगे। नम्बरवार बन जायेंगे। नम्बरवन आत्मा की निशानी है–हर श्रेष्ठ कार्य में मुझे निमित्त बन औरों को सिम्पल करने के लिये सेम्पल बनना है। हर एक संकल्प करो कि मुझे सदा गुण मूर्त बन सबको गुण मूर्त बनाने का विशेष कर्तव्य करना ही है। तो स्वयं की और सर्व की कमज़ोरियां समाप्त करने की इस विधि में हर एक अपने को निमित्त अव्वल नम्बर समझ आगे बढ़ते चलो। .. .ज्ञान तो बहुत है, अभी गुणों को इमर्ज करो, सर्वगुण सम्पन्न बनने और बनाने का एग्जाम्पल बनो।

09.12.93.. . हर ब्राह्मण आत्मा की श्रेष्ठ वृत्ति, श्रेष्ठ दृष्टि और श्रेष्ठ कृति विश्व की सर्व आत्माओं के लिये श्रेष्ठ बनाने के निमित्त है। हर आत्मा के ऊपर ये विशेष ज़िम्मेवारी है जो विश्व कल्याण के निमित्त आत्मा हैं वो स्वयं-स्वयं के प्रति अकल्याणकारी संकल्प भी नहीं कर सकते। क्योंकि विश्व की ज़िम्मेवार आप निमित्त आत्माओं की वृत्ति से वायुमण्डल परिवर्तन होना है। तो जैसा संकल्प होगा वैसी वृत्ति ज़रूर होती है।

16.12.93.. . ऐसे नहीं कि बाप तो है ही सूक्ष्म में सहयोग देने वाला। निराकार है, आकार है, साकार तो है नहीं, लेकिन हर सम्बन्ध को साकार रूप में अनुभव कर सकते हो। साकार स्वरूप में साथ का अनुभव कर सकते हो। इस अनुभूति को गहराई से समझो और स्वयं को इसमें मज़बूत करो। तो व्यक्ति, वैभव व साधन अपने तरफ़ आकर्षित नहीं करेंगे। साधनों को निमित्त मात्र कार्य में लाना वा साक्षी हो सेवा प्रति कार्य में लगाना–ऐसी अनुभूति को बढ़ाओ। सहारा नहीं बनाओ, निमित्त मात्र हो। इसको कहा जाता है स्नेह में समाई हुई समान आत्मा।

23.12.93.. . यह शुभ संकल्प इमर्ज हो कि दाता के बच्चे बन सभी आत्माओं को वर्सा दिलाने के निमित्त बनें, कोई वंचित नहीं रहे। जितना-जितना निमित्त बनते हैं उतना कार्य में भी सहज सहयोगी हो जाते हैं। एक ही समय पर मंसा में, वाणी में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क से भी, वायुमण्डल में ये चारों ओर का घेराव हो तभी ये विशेष निमित्त बनने वाली आत्मायें समीप आयेंगी। तो श्रेष्ठ वाब्रेशन्स से उन्हों को समीप लाते रहो। क्योंकि वाणी से समीप जाने का समय तो कम ही मिलता है ना। लेकिन वायब्रेशन, वायुमण्डल बनाने की सेवा सदैव होनी चाहिये। चाहे कोई भी निमित्त सेवा मिली हुई है लेकिन बेहद की हो, हद की नहीं। जहाँ कोई श्रेष्ठ कार्य होगा तो ब्राह्मणों को बुलाते हैं। तो यह आप लोगों के यादगार हैं ना। क्योंकि आप श्रेष्ठ ब्राह्मणों ने सदा श्रेष्ठ कार्य किया है, तभी अब तक भी यादगार में ब्राह्मण श्रेष्ठ कार्य के निमित्त हैं। अगर कोई ब्राह्मण ऐसा कोई काम कर लेता है तो उसको कहते हैं यह ब्राह्मण नहीं है। तो ब्राह्मण अर्थात श्रेष्ठ कार्य करने वाले, श्रेष्ठ सोचने वाले, श्रेष्ठ बोलने वाले।

31.12.93... बड़े निमित्त आत्माओं को समीप लाने के पहले चाहे कोई नेता है, चाहे कोई बड़े इन्डस्ट्रिालिस्ट हैं, चाहे कोई बड़े ऑफ़ीसर हैं, लेकिन उन्हों को समीप लाने का साधन है उन्हों के सेक्रेटरी को अच्छी तरह से समीप लाओ। आप लोग बड़ों के ऊपर टाइम देते हो। चेक करो कि जिस देश के या जिस स्थान के निमित्त बने हैं उस स्थान की कोई भी संस्था वंचित नहीं रह जाये। क्योंकि वर्तमान समय वायुमण्डल परिवर्तन हो गया है। निमित्त आत्मायें हर समय प्रत्यक्षफल खाने वाली। भविष्य तो आपके लिये निश्चित है ही , वह तो होना ही है। लेकिन प्रत्यक्ष फल कितना प्यारा है!

10.01.94... शक्ति सेना तीव्र गति से चल रही है ना। सेना को बापदादा के साथ-साथ आप निमित्त आत्मायें भी चलाने के निमित्त हो। बाप तो सदा साथ है और सदा ही रहेंगे। बाप शक्ति देते हैं, बाप माइट रूप में है लेकिन निमित्त समझाने के लिये माइक तो आप निमित्त हो।

25.01.94... वैसे तो समय से भी स्वयं की गति तीव्र होनी है क्योंकि समाप्ति के समय को लाने वाली आप विशेष आत्मायें निमित्त हो। महाविनाश और रिहर्सल का विनाश, फ़र्क है। महाविनाश अर्थात् महान् परिवर्तन। उसके निमित्त आप हो। सम्पन्न बनेंगे तो समाप्ति होगी।

01.02.94.. . जैसे एक दृष्टान्त सामने रखो कि मुझे सहनशक्ति का प्रयोग करना है तो जब स्वयं में सहनशक्ति का प्रयोग करेंगे तो जो दूसरी आत्मायें आपकी सहनशक्ति को हिलाने के निमित्त हैं वो भी बच जायेंगी ना, उनका भी तो किनारा हो जायेगा। जो निमित्त हैं उनको विशेष नई-नई बातें टच होने का विशेष वरदान है। थोड़ा समय भी बीतेगा तो विचार चलते हैं ना, टचिंग आती है ना कि अभी ये हो, अभी ये हो, अभी ये होना चाहिये। तो निमित्त आत्माओं को विशेष उमंग-उत्साह बढ़ाने के वा परिवर्तन शक्ति को बढ़ाने के प्लैन की ज़रूरत है। इसके बिना रह नहीं सकते हैं।

18.02.94... फ़रिश्ता अर्थात् सहज और स्वत: अनादि और आदि संस्कार सदा इमर्ज स्वरूप में दिखाने वाला। फ़रिश्ता अर्थात् निमित्त भाव, निर्मान स्वभाव और सर्व प्रति कल्याण की श्रेष्ठ भावना वाला। जो निमित्त बनते हैं। चाहे देने की सेवा, चाहे बनाने की सेवा, चाहे आइडिया निकालने की, चाहे लिखने की–सबको दुआयें मिलती हैं। तो कितनी दुआयें मिल रही हैं! बहुत दुआयें मिलती हैं, आप सिर्फ रिसीव करो। एक भी निमित्त बन गये तो अनेकों के भाग्य जगाते रहेंगे। तो ये भी सेवा की रिज़ल्ट अच्छी दिखाई दे रही है। जो भी इस सेवा में निमित्त हैं, उमंग-उत्साह से बढ़ रहे हैं, उन सभी को भी, चारों ओर के भारतवासी बच्चों को, सहयोगी बच्चों को, निमित्त बच्चों को बापदादा मुबारक देते हैं। बाकी जिस कार्य के लिये जो निमित्त बनता है उनका विशेष नाम हो जाता है।

14.04.94... आप सभी सेवा के निमित्त तो अनेक वर्ष बने, अब औरों को निमित्त बनाने की सेवा के निमित्त बनो। माइक वो हो और माइट आप हो। बहुत समय आप माइक बने, अब माइक औरों को बनाओ, आप माइट बनो। आपके माइट से माइक निमित्त बनें। इसको कहा जाता है तीव्र गति के उड़ान की निशानी। जो निमित्त बनते हैं उनका सूक्ष्म वायुमण्डल, वायब्रेशन्स ज़रूर जाता है। पद्मगुणा पुण्य भी मिलता है और पद्म गुणा निमित्त भी बनते हैं।

26.11.94... चाहे लौकिक, चाहे अलौकिक, हर एक को इस जीवन में ये तीन प्राप्तियाँ होती ही हैं। पालना भी मिलती, पढ़ाई भी मिलती और मत भी मिलती है। इन तीनों द्वारा ही हर आत्मा अपना वर्तमान और भविष्य बनाने के निमित्त बनती हैं। जैसे बाप शिक्षक बनकर आते हैं तो बाप समान निमित्त शिक्षक हो। बाप जैसे नहीं हो, लेकिन निमित्त शिक्षक हो। तो टीचर्स की विशेषता निमित्त भाव और निर्मान भाव। सफल टीचर वही बनती है जिसका निर्मल स्वभाव हो।

05.12.94... सेवा कर रहे हो बहुत अच्छा लेकिन अपनी चेकिंग करो कि निमित्त भाव है वा लगाव का भाव है? 'बाबाबाबा' के बदले 'मेरामेरा' तो नहीं आ जाता? मानना है तेरा और बन जाता है मेरा। अभी जोरशोर से सेवा करो। अभी चांस है सेवा करने का। लेकिन निमित्त भाव से करना, 'मेरा' नहीं लाना। निमित्त आत्मायें ही निर्मान बन निर्माण का कर्तव्य बहुत सहज कर सकती हैं। बापदादा तो चार्ट देखते ही हैं ना? फिर भी सेवा के निमित्त हो–ये श्रेष्ठ भाग्य कम नहीं है! ये भी विशेष वर्सा है। तो इस विशेष वर्से के भाग्य के अधिकारी बने हो।

18.1.96... ब्रह्मा बाप का फरिश्ता रूप होना ड्रामा में परमात्म कार्य को प्रत्यक्ष करने का निमित्त कारण बना। ये कार्य कराने वाला बाप परम आत्मा है, निमित्त माध्यम ब्रह्मा बाप है। अभी भी माध्यम ब्रह्मा बाप है। ये पार्ट अलग चीज़ है लेकिन माध्यम ड्रामा में पहले साकार ब्रह्मा रहा और अभी फरिश्ता रूप में ब्रह्मा है। ब्रह्मा को पिता कहेंगे, रचता तो ब्रह्मा है ना। ये तो पार्ट बीच-बीच में बच्चों की पालना करने के लिए निमित्त है।

16.02.96... जो भी बड़े-बड़े एसोसिएशन्स हैं या कम्पनियाँ हैं, सोसाइटीज़ हैं उनमें विशेष निमित्त आत्माओं को परिचय दे समीप लाओ तो एक-एक की अलग-अलग सेवा करने की बजाय एक ही समय अनेक आत्माओं की सेवा हो जायेगी। आप निमित्त बनी हुई आत्मायें लक्ष्य रखो तो आपके लक्ष्य की किरणें सभी को मिलेगी। होना ही है, करना ही है, आप लोगों को तो है लेकिन औरों को भी हिम्मत और उमंग दिलाने में लक्ष्य और दृढ़ रखो। निमित्त आत्मायें अच्छी हो और बापदादा के समीप हो। ऐसे एक-एक देश में, चाहे छोटे, चाहे बड़े कोई न कोई निमित्त बन जायेंगे तो ये वायब्रेशन फैलता जायेगा। क्योंकि आपमें पहले से ही दो विशेषतायें हैं और उन विशेषताओं से आप और जल्दी आगे बढ़ सकते हो। एक तो शुरू से दृढ़ निश्चय वाले हो, करना ही है और दूसरा सेवा के लिये अगर कुछ सहन भी करना पड़ता तो सहनशक्ति भी है। तो जहाँ दृढ़ता और सहनशक्ति है वहाँ जो चाहे वो कर सकते हैं।

10.03.96... सेवा और स्व-पुरुषार्थ का बैलेन्स। सेवा के अति में नहीं जाओ। बस मेरे को ही करनी है, मैं ही कर सकती हूँ, नहीं। कराने वाला करा रहा है, मैं निमित्त 'करनहार' हूँ। तो जिम्मेवारी होते भी थकावट कम होगी। अपने भाई बहिनों के ऊपर रहमदिल बनो, और रहमदिल बन सेवा करेंगे तो उसमें निमित्त भाव स्वत: ही होगा। किसी पर भी चाहे कितना भी बुरा हो लेकिन अगर आपको उस आत्मा के प्रति रहम है, तो आपको उसके प्रति कभी भी घृणा या ईर्ष्या या क्रोध की भावना नहीं आयेगी। रहम की भावना सहज निमित्त भाव इमर्ज कर देती

है। जो सीट मिली हुई है वह विशेष बड़ी सेवा के निमित्त बनाने के लिए मिली है। मिनिस्ट्री की हलचल नहीं देखो, सेवा देखो।

22.03.96...बापदादा को आप परिवार के सिरताज निमित्त आत्माओं के लिए'' सदा जीते रहो, उड़ते रहो और उड़ाते रहो''–यह संकल्प सदा रहता है। निमित्त बनने वालों का विशेष बैकबोन बाप है। चाहे बोल इन्हों के हैं लेकिन बैकबोन बाप है। कभी भी इन्हों के मुख से 'मैं' शब्द नहीं निकलेगा। बाबा-बाबा निकलेगा। तो ये याद का प्रूफ है। 'मैं पन' बाबा में समा गया।

03.04.96... जो निमित्त हैं वह जिम्मेवारी सम्भालते भी सदा हल्के हैं। व्यर्थ संकल्प करना वा दूसरों के व्यर्थ संकल्प चलाने के निमित्त बनना–यह भी अपवित्रता है। निमित्त और निर्माणचित्त–यही सच्चे सेवाधारी के लक्षण हैं। स्वयं को निमित्त करनहार समझो तो कभी थकावट नहीं हो सकती। रहम की भावना सहज ही निमित्त भाव इमर्ज कर देती है।

31.12.96... .. ज्ञान का अर्थ ही है सिर्फ समझना नहीं लेकिन अनुभव करना और जब तक अनुभव नहीं किया है तो औरों को भी अनुभवी नहीं बना सकते। अगर वाणी तक है, अनुभव तक नहीं है तो जिन आत्माओं की सेवा के निमित्त बनते हो वह भी वाणी द्वारा बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, कमाल है–यहाँ तक आते हैं। इस वर्ष का स्लोगन है, मुझे करना है। यह भी होता है, यह भी होता है, नहीं। करना ही है। मुझे करना है। अर्जुन मैं हूँ। दूसरा अर्जुन नहीं है, जिसको देखना है। **मैं अर्जुन हूँ, मैं निमित्त हूँ।**

23.02.97... आप लोग यह नहीं सोचना कि हम लौकिक काम क्यों करें! यह तो आपकी सेवा का साधन है। लौकिक कार्य नहीं करते हो लेकिन अलौकिक कार्य के निमित्त बनने के लिए लौकिक कार्य करते हो। जहाँ भी जाते हो वहाँ सेन्टर खोलने का उमंग रहता है ना। तो लौकिक कार्य कब तक करेंगे–यह नहीं सोचो। लौकिक कार्य अलौकिक कार्य निमित्त करते हो तो आप सरेन्डर हो। लौकिकपन नहीं हो, अलौकिकपन है तो लौकिक कार्य में भी समर्पण हो। लौकिक कार्य को छोड़कर समर्पण समारोह मनाना है – यह बात नहीं है। ऐसा करने से वृद्धि कैसे होगी! इसीलिए लौकिक कार्य करते अलौकिक कार्य के निमित्त बनते हो, तो जो निमित्त लौकिक समझते हैं और रहते अलौकिकता में हैं, ऐसी आत्माओं को डबल क्या, पदम मुबारक है। निमित्त तो कोई बनता ही है। बापदादा ने रिजल्ट देखी कि निमित्त बच्चों ने चाहे रात हो, चाहे दिन हो, चाहे खड़े हों, चाहे बैठे हों, लेकिन अथक बन लक्ष्य रखा, उस लक्ष्य की सफलता हुई। जो जहाँ सहयोगी हो सकते हैं, जैसा कार्य है उस अनुसार सहयोगी आत्माओं को निमित्त बनाओ। जिसको बापदादा कहते हैं छोटे माइक। उसका भी प्रभाव पड़ता है, और जो सम्पर्क में आते हैं उन्हों को समय प्रति समय सहयोगी बनाते रहो। निमित्त बनने वालों के हाँ जी, हाँ जी करने से, एक दो के सहयोग से सफलता समीप आई। इसलिए इस पाठ को सदा याद रखना।

06.03.97... अकेला बाप इस साकार दुनिया में सिवाए बच्चों के कोई भी कार्य कर नहीं सकता। इतना बच्चों से प्यार है। अकेला कर ही नहीं सकता। पहले बच्चों को निमित्त बनाते फिर बैकबोन होकर वा कम्बाइन्ड होकर, करावनहार होकर निमित्त बच्चों से कार्य कराते हैं। साकार दुनिया में अकेला, बच्चों के बिना नहीं पसन्द करता।

03.04.97... ला उठाने वाले के अन्दर का रूप वही क्रोध का अंश होता है। जो निमित्त आत्मायें हैं वह भी ला उठाते नहीं हैं, लेकिन उन्हों को ला रिवाइज कराना पड़ता है। ला कोई भी नहीं उठा सकता लेकिन निमित्त हैं तो बाप द्वारा बनाये हुए ला को रिवाइज करना पड़ता है। निमित्त बनने वालों को इतनी छुट्टी है, सबको नहीं। विशेष योग की सबजेक्ट में आगे रहने वाली ऐसी आत्मायें, योगबल से जन्म देने के निमित्त बन नई सृष्टि की स्थापना

करेंगी। सेवा में पहला सेवा के निमित्त बनना और सेवा में सरेन्डर होना – ये आपका विशेष पार्ट है। निमित्त हैं निमित्त बन अंगुली लास्ट तक देनी है।

13.11.97... ब्राह्मण माना ही ब्रह्मा बाप के साथ स्थापना के कार्य के निमित्त आत्मा। वही ब्रह्माकुमार या ब्रह्माकुमारी कहला सकते हैं। तो ब्रह्माकुमार, कुमारी सभी हो या पुरुषार्थी कुमार कुमारी हो? क्या हो? ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियां अर्थात् जन्म लिया और ब्रह्मा बाप के साथी स्थापना के निमित्त आत्मा बनें। तो ऐसे नहीं सोचना हम तो अभी नये हैं। हम तो अभी छोटे हैं। तो ब्राह्मण आत्माओं को स्थापना के निमित्त बनना ही है। हैं ही निमित्त। इसलिए अभी मास्टर दाता बनो। दान नहीं करो लेकिन सहयोग दो। ब्राह्मण, ब्राह्मण को दान नहीं कर सकता, सहयोग दे सकता है। ड्रामा अनुसार यह निर्माण बनो, कोमल नहीं। बाप की मन्सा आकर्षण का सबूत है जो कितने पक्के हैं। तो अन्त में भी अभी बाप के साथ आपकी भी मन्सा आकर्षण, रूहानी आकर्षण से जो आत्मायें आयेंगी वह समय अनुसार समय कम, मेहनत कम और ब्राह्मण परिवार में वृद्धि करने के निमित्त बनेंगी। वही पहले वाली रंगत अन्त में भी देखेंगे। जैसे आदि में ब्रह्मा बाप को साधारण न देख कृष्ण के रूप में अनुभव करते थे।

28.11.97... दो प्रकार के बच्चे हैं जो पहले वाले हैं वह हैं स्थापना के निमित्त बच्चे और आप लोग हो विशेष सेवा के आदि के बच्चे। यह (दादियां) हैं जड़ स्थापना वाले और आप सब (सेवा के आदि रत्न) हैं पहला-पहला तना। तो तना तो मजबूत होता है ना। तना पर ही सब आधार होता है। तना से ही सब शाखायें निकलती हैं। जड़ वाले तो सूक्ष्म में शक्ति देते हैं लेकिन जो प्रैक्टिकल में होता है, दिखाई देता है, वह तना दिखाई देता है। जब बाप ने आपको आदि में निमित्त बनाया तो जो आदि के हैं, सेवा के निमित्त वा स्थापना के फाउण्डेशन उनको अन्त तक सेवा में रहना ही है। ब्रह्मा बाप का सदा स्लोगन रहा, ब्रह्मा बाप बार-बार याद दिलाते रहे - जो कर्म मैं करूंगा, मुझे देख और करेंगे। जब दूसरे करेंगे तब मैं करूंगा .... यह स्लोगन नहीं। जो मैं करूंगा मुझे देख और करेंगे। नहीं तो स्लोगन चेंज कर दो और जगदम्बा माँ का विशेष स्लोगन रहा – हुक्मी हुक्म चला रहा है। वह चला रहा है, हम निमित्त बन चल रहे हैं। तो दोनों स्लोगन सदा याद रखो, इमर्ज।

14.12.97... न वकील बनो, न जज बनो। यह अथॉरिटी बापदादा ने दी नहीं है, जो निमित्त हैं उनका सहयोग लो। वह निमित्त आत्मायें भी बापदादा की राय से करती हैं। अपनी मनमत नहीं चलाती हैं।तो ब्रह्मा बाप की पालना लेने वाले निमित्त हो, फॉलो ब्रह्मा को करने के लिए। इसमें ऐसे नहीं समझो - यह तो बड़ों की जिम्मेवारी है, हम तो डायरेक्शन पर चलने वाले हैं। नहीं। स्व-परिवर्तन से सर्व के सम्बन्ध-सम्पर्क में परिवर्तन लाने की जिम्मेवारी हर छोटे बड़े की है।जो भी सेवा के निमित्त हैं तो ब्रह्मा बाप की भुजाएं बनकर निमित्त हैं। तो बाप समान सेवा में हैं ना। इसलिए ऐसे निमित्त सेवाधारी बापदादा को सदा याद हैं। ऐसे नहीं समझना कि जिन्हों की गोल्डन जुबली हुई वह याद हैं, आप नहीं। पहले आप।

31.12.97... अगर वाणी तक है, अनुभव तक नहीं है तो जिन आत्माओं की सेवा के निमित्त बनते हो वह भी वाणी द्वारा बहुत अच्छा, बहुत अच्छा, कमाल है–यहाँ तक आते हैं। अनुभवी हो जाएं – वह कोटों में कोई, कोई में भी कोई हैं और प्रत्यक्षता का आधार अनुभव है।तो सब बीज आपको तैयार करने हैं, जो समय पर अपने-अपने डिपार्टमेंट के निमित्त बनेंगे क्योंकि बीज बाप है और आप ब्राह्मण आत्मायें तना हो, सर्व आत्मायें बीज और तना द्वारा ही निकलते हैं।एक शाखा भी कम नहीं, सर्व शाखायें चाहिए। चाहे आपके नव युग में कई वर्ग नहीं होंगे लेकिन उन आत्माओं में भी द्वापर में या कलियुग में जो इन्वेन्टर निमित्त हैं, उन्हों को शक्ति आप द्वारा ही मिलनी

है।सहयोगी बन रहे हैं लेकिन उनमें से अब विशेष आत्मा को सहयोग में आगे बढ़ाओ, निमित्त बनाओ। निमित्त बनाने का बीज डालो।बापदादा आप सभी को विशेष याद भी करता, निमित्त भी बनाया है तो निमित्त बन अपने लौकिक कुल सिन्धियों को जगाओ, रह नहीं जावें।ब्रह्मा का तो चैरिटी बिगन्स एट होम है ना। इसलिए ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को निमित्त बनाया है।

31.01.98...बापदादा कुमारियों के लिए एक बात सदा कहते हैं - सच्ची सेवाधारी कुमारी वह है जो शक्ति रूप कुमारी है। अगर निमित्त सेवाधारी शक्तिशाली नहीं है तो औरों को शक्तिशाली नहीं बना सकती। अगर कुमारी शक्तिशाली नहीं है, कोमल है, एक होती है कोमल और दूसरी होती है किसी के प्रभाव में आने वाली। ज्ञान का प्रभाव डालने वाली नहीं लेकिन कोई के प्रभाव में प्रभावित होने वाली।दफ्तर में जाते हो तो आप जानते हो कि हमारा डायरेक्टर, बॉस बापदादा है, यह निमित्त मात्र है, उनके डायरेक्शन से काम करते हैं। कभी उदास हो जाते हो तो बाप फ्रैन्ड बनकर बहलाते हैं।गीता पाठ- शाला के निमित्त बच्चों को भी बापदादा निमित्त सेवाधारी कहते हैं। अपनी प्रवृत्ति भी सम्भाल रहे हैं और अलौकिक सेवा के निमित्त भी बने हैं तो डबल काम कर रहे हैं। लेकिन गीता पाठशाला के निमित्त आत्माओं की विशेषता है सदा अपने को हर कार्य में ट्रस्टी समझकर चलना। क्योंकि बापदादा ने देखा कि गीता पाठशाला खोलने वाले भिन्न-भिन्न संकल्प से गीता पाठशाला खोलते हैं, कोई तो सच्चे दिल से सेवा प्रति गीता पाठशाला खोलते हैं वा चलाते हैं लेकिन कोई-कोई जब वृद्धि होती है तो कहाँ-कहाँ भावनाओं में भी मिक्स हो जाता है।बापदादा देखते हैं कि कोई-कोई गीता पाठशाला अपने परिवार की पालना अर्थ भी खोलते हैं, परिवार की पालना भी हो और निमित्त सेवा भी हो। तो गीता पाठशाला का अर्थ है ट्रस्टी बनके सेवा करना क्योंकि जो भी आत्मायें आती हैं वह बाप के स्नेह में आती हैं, इसलिए ट्रस्टी बनकर कारोबार चलाना बहुत आवश्यक है।गीता पाठशाला वालों की विशेषता है कि प्रवृत्ति वालों को देख प्रवृत्ति वाले हिम्मत रखते हैं। सेन्टर पर फिर भी सोचते हैं कि पता नहीं हमको भी छोड़ना पड़ेगा लेकिन प्रवृत्ति में रहते सेवा के निमित्त बनने वाले बच्चों को देख और भी प्रवृत्ति वालों को हिम्मत, उमंग-उत्साह आता है।अमृतवेले जो मुख्य प्लैनिंग बुद्धि हैं उन्हों को बापदादा कार्य के निमित्त बनाता है, उन्हों को नई विधियां सेवा की टच होंगी, सिर्फ अपनी बुद्धि को बाप के हवाले करके बैठो। बुद्धिवानों की बुद्धि आपकी बुद्धि को टच करेंगे। यह प्लैनिंग बुद्धि वालों को वरदान मिलना ही है। निमित्त बनो।जो निमित्त बनता है उसको सेवा की सफलता का शेयर मिल जाता है। इसलिए निमित्त बनते जाओ और शेयर्स जमा करते जाओ। अच्छा है जो भी चारों ओर निमित्त बनते हैं उन्हों को एक्स्ट्रा लिफ्ट मिल जाती है।

13.03.98.. .हिम्मत बच्चों की मदद बाप की तो है ही। सिर्फ कोई निमित्त बनें। हर कार्य के लिए कोई न कोई निमित्त बन जाता है और हो भी जाता है क्योंकि ड्रामा में होना नूंधा हुआ है। सिर्फ समय पर कोई निमित्त बन जाता है। तो इस कार्य के लिए भी कोई निमित्त बनना ही है।अभी समय के प्रमाण आप हर निमित्त बनी हुई, सदा याद और सेवा में रहने वाली आत्माओं को स्व परिवर्तन द्वारा विश्व परिवर्तन का वायब्रेशन पावरफुल और तीव्रगति का बढ़ाना है।

30.03.98.. .जो भी डायरेक्शन मिलते हैं, डायरेक्ट बाप द्वारा मिलते हैं, चाहे निमित्त आत्मायें दादियों द्वारा मिलते हैं, उसको रिगार्ड देना अति आवश्यक है। इसमें न बहाना देना, न अलबेलापन करना।अगर ड्रामा ने निमित्त बनाया है तो कोई न कोई विशेषता तो है जिस विशेषता ने मधुबन में निमित्त बनाया है। सिर्फ उस विशेषता को समय प्रति समय थोड़ा सा शान्त भाव, प्रेम भाव से निमित्त बनो। बाकी अथक तो हैं।बापदादा यही वर्तमान

समय देखने चाहते हैं कि जो विशेष निमित्त आत्मायें हैं, जैसे मुख का आवाज साइन्स के साधनों से दूर बैठे पहुंचता है, ऐसे मन का आवाज संकल्प यह भी ऐसे ही पहुंचे, जैसे यह साइन्स द्वारा मुख का आवाज पहुंचता है।निमित्त बनो तो सेवा की सफलता का शेयर मिल जायेगा।

21.11.98.. .अच्छा उमंग है कि सन्देश चारों ओर मिल जाए। यह लक्ष्य बहुत अच्छा है। जहाँ जाते हैं वहाँ कोई-न-कोई को निमित्त बनाने की सेवा का लक्ष्य अच्छा रखते हैं। यह विशेषता है। हर एक जितना हो सकता है उतना अपने आपको सेवा के निमित्त बनाने की आफ़र भी करते हैं और प्रैक्टिकल में भी करते हैं।

12.12.98.. .ब्रह्मा बाप तो अव्यक्त इसलिए बनें कि बच्चों को विश्व-कल्याण का कार्य देकर, बंधन से भी मुक्त हो सेवा की रफ़्तार तीव्र कराने के निमित्त बनना था, जिसका प्रत्यक्ष स्वरूप चारों ओर देख रहे हो।

निमित्त बनने से दुआयें मिलती हैं।यज्ञ हिस्ट्री में जोजो आत्मा जिस कार्य के आदि से अब तक निमित्त बनी है, उनको उस निमित्त बने हुए कार्य की विशेष दुआयें मिलती हैं। निमित्त बनने का समझो एक भाग्य मिलता है। एक तो निमित्त बनने वाले पर सभी की नज़र होने के कारण उसका स्व पर भी अटेन्शन रहता है। उनका पुरुषार्थ अपने प्रति भी सहज हो जाता है।अगर निमित्त बनी हुई आत्मा यथार्थ पार्ट बजाती है तो औरों के सहयोग की भी मदद मिलती है।जो भी यज्ञ के कार्य होते हैं वह यज्ञ के कार्य में विशेष आत्मायें जो निमित्त बनती हैं, उनके ऊपर भी बड़े प्रोग्रामस का, नाम का प्रभाव पड़ता है।

18.01.99.. .अभी चारों ओर पावरफुल तपस्या करनी है, जो तपस्या मन्सा सेवा के निमित्त बनें, ऐसी पावरफुल सेवा अभी तपस्या से करनी है। अभी मन्सा सेवा अर्थात् संकल्प द्वारा सेवा की टचिंग हो, उसकी आवश्यकता है। समय समीप आ रहा है, निरन्तर स्थितियाँ और निरन्तर पावरफुल वायुमण्डल की आवश्यकता है।साकार में निमित्त बच्चे हैं लेकिन भाग्य विधाता ब्रह्मा माँ हर बच्चे के भाग्य को देख बच्चों को विशेष शक्ति, हिम्मत, उमंग-उत्साह की पालना करते रहते हैं। शिव बाप तो साथ में है ही लेकिन विशेष ब्रह्मा का पालना का पार्ट है।

01.03.99...मैं निमित्त सेवाधारी पुण्य आत्मा हूँ, यह स्मृति छोटेछोटे पापों से मुक्त कर देती है। मधुबन वाले समझो विजय प्राप्त करने और कराने के निमित्त हैं।

15.03.99.. .सभी जो भी सेवा के निमित्त हैं अगर संगठित रूप में ऐसी स्टेज बनाते हैं तो मेहनत कम और सफलता ज्यादा होगी। तो विशेष अटेन्शन कन्ट्रोलिंग पावर को बढ़ाओ।

30.03.99.. .आप सभी भी अपने समय का खजाना, श्रेष्ठ संकल्प का खजाना अभी औरों के प्रति लगाओ। अपने प्रति समय, संकल्प कम लगाओ। औरों के प्रति लगाने से स्वयं भी उस सेवा का प्रत्यक्षफल खाने के निमित्त बन जायेंगे।आप निमित्त बनी हुई आत्माओं के उमंग-उत्साह से चारों ओर की आत्मायें उमंग-उत्साह से चल रही हैं क्योंकि एक दो के सहयोगी हो।

22.10.94.. .निमित्त बनी हुई आत्माओं को तो बापदादा अथक और तीव्रगति के कार्य के मदद की मालिश सदा करते रहते हैं। बच्चों ने भी हिम्मते बच्चे मददे बाप का प्रत्यक्ष स्वरूप दिखाया है इसलिए पद्मगुणा स्नेह सम्पन्न मुबारक हो।निमित्त आत्माओं के उमंग और स्नेह, सम्मान के आधार से ही सफलता समीप आनी है। विजय तो निश्चित है ही।

30.07.98.. .ऐसे ही अनुभव होगा जैसे मैं निमित्त मात्र कार्य कर रहा हूँ लेकिन उपराम हूँ, यह अवस्था न केवल आपको ही अनुभव होगी लेकिन आस-पास वालों को भी अनुभव होगी।

06.04.99.. .सभी निमित्त बने हुए सेवाधारी बच्चों को सदा यह प्वाइंट याद रखनी चाहिए कि हम विश्व सेवा की स्टेज पर हैं। सेन्टर पर नहीं हैं लेकिन विश्व के सेवा की स्टेज पर हैं। तो स्टेज पर कितना अटेन्शन से रहते हैं, ऐसी कोई चाल-चलन नहीं हो जो देखने वाले इशारा करें। इसीलिए इन बच्चों को यह अटेन्शन विशेष रखना चाहिए कि हम सेन्टर पर नहीं है लेकिन हम विश्व को परिवर्तन करने की स्टेज पर हैं। तो स्टेज याद होने से अपनी स्टेज भी याद रहेगी और सदा बाबा की जो स्टेज है, वह सामने रहेगी।

17.08.99.. .हरेक अपने को छोटा नहीं समझे लेकिन हर एक को शक्तिरूप बन तीनों ज़िम्मेवारियों के निमित्त-आत्मा समझ बापदादा समान बनना है।

23.10.99.. .सदा अपने को निमित्त, विश्व की स्टेज पर हीरो पार्ट बजाने वाले हीरो एक्टर समझकर चलो।

15.11.99.. .बाप कभी एक बच्चे को भी भूलता नहीं है, तो सभी अपने को; विशेष आत्मा हैं और विशेष कार्य के लिए निमित्त हैं, ऐसे समझ के आगे बढ़ते चलो।

30.11.99.. .जो निमित्त हैं उन्हों को समय पर एक्स्ट्रा शक्ति मिल जाती है।

18.01.00.. .बाप ने ब्रह्मा बाप को साकार में निमित्त बनाया और ब्रह्मा बाप ने बच्चों को 'निमित्त भव' का वरदान दे विल किया। यह विल बच्चों में सहज पावर्स की (शक्तियों की) अनुभूति कराती रहती है।बापदादा ने देखा कि निमित्त बने हुए और साथ देने वाले दोनों प्रकार के बच्चों की दो विशेषतायें बहुत अच्छी रही। पहली विशेषता – चाहे स्थापना के आदि रत्न, चाहे सेवा के रत्न दोनों में संगठन की युनिटी बहुत-बहुत अच्छी रही। किसी में भी क्यों, क्या, कैसे... यह संकल्प मात्र भी नहीं रहा।

15.02.00.. .जिस प्लैन में सब तरफ के निमित्त बनी हुई आत्माओं की दृष्टि पड़ जाती है, वायब्रेशन मिल जाते हैं तो उस प्लैन में दुआयें भर जाती हैं और चारों ओर एक ही सेवा का प्लैन चलने से चारों ओर का फैला हुआ आवाज़, आवाज़ बुलन्द करता है।

20.03.00... सेवा के निमित्त बनने का उमंग आवे। जैसे आदि में बच्चों को ब्रह्मा बाप की अनुभूति होती थी, ऐसे अब आप शक्तियों द्वारा अनुभव हो। बापदादा का भी निमित्त आप द्वारा अनुभव हो, ऐसे मनोबल की पावर को प्रैक्टिकल में लाओ। जैसे वाणी द्वारा बाप के बच्चे बनाये ऐसे और ही मन्सा बल द्वारा तीव्र गति वाली पावरफुल आत्मायें तैयार करो।

08.04.00.. .जैसे बाप मर्सीफुल है तो फालो फादर तो करना ही है क्योंकि आजकल आत्माओं को अपनी समस्याओं का समाधान मिलने की बहुत तड़फ है। ऐसी भटकती, तड़फती आत्माओं प्रति सेवा के निमित्त बनने से उन आत्माओं के दिल द्वारा जो दुआयें मिलती हैं, उससे निमित्त बनने वाली आत्माओं को अपने प्रति भी खुशी, शक्ति, शान्ति प्राप्त करने का, स्व-परिवर्तन करने का एक्स्ट्रा बल मिल जाता है।

26.04.00.. .बाबा ने ऐसी आत्मा को निमित्त बनाया है जो सदा उमंग-हुल्लास में रहती है और दूसरों को भी लाती है। ऐसी श्रेष्ठ आत्मा को भी आप फ़ालो करो तो आप क्या से क्या बन जाओ।

11.11.00.. .विश्व परिवर्तन के निमित्त आत्मायें अब विश्व की आत्माओं के ऊपर रहम करो। होना तो है ही, यह तो निश्चित है और होना भी आप निमित्त आत्माओं द्वारा ही है।प्लैन को प्रैक्टिकल लाने में हिम्मत आपकी और मदद बाप की और ब्राह्मण परिवार की। सिर्फ निमित्त बनना है, बस और मेहनत नहीं करनी है। मैं परमात्म कार्य के निमित्त हूँ। कोई भी कार्य में आओ तो – बाबा, मैं इन्स्ट्रुमेंट सेवा के अर्थ तैयार हूँ, मैं इन्स्ट्रुमेंट हूँ, चलाने वाला आपेही चलायेगा। यह निमित्त भाव आपके चेहरों पर निर्माण और निर्मान भाव प्रत्यक्ष करेगा। करावनहार निमित्त

बनाए कार्य करायेगा। माइक आप और माइट बाप की। तो सहज है ना! तो निमित्त बनके याद में हाजिर हो जाओ, बस। तो आपकी सूरत, आपके फीचर्स स्वत: ही सेवा के निमित्त बन जायेंगे। सिर्फ बोल द्वारा सेवा नहीं करेंगे लेकिन फीचर्स द्वारा भी आपकी आन्तरिक खुशी चेहरे से दिखाई देगी। इसको ही कहा जाता है – 'अलौकिकता'।

25.11.00.. .टीचर अर्थात् निमित्त फाउण्डेशन। अगर फाउण्डेशन पक्का अर्थात् दृढ़ रहा तो झाड़ तो आपेही ठीक हो जायेगा। आजकल चाहे संसार में, चाहे ब्राह्मण संसार में हर एक को हिम्मत और सच्चा प्यार चाहिए।एक पालना लेना और दूसरा निमित्त बनना, यह भी एक ड्रामा में हीरो पार्ट है।जिन आत्माओं ने जिस सेवा के निमित्त बन सेवा की इन्वेन्शन के निमित्त बने हैं, उन्हों को उस सेवा की सफलता के शेयर जमा होते हैं।जिन्होंने भी जो भी इन्वेन्शन की है, निमित्त बने हैं उनको उनकी सेवा का शेयर मिलता है। इसलिए आप फिकर नहीं करो कि मैं सेवा नहीं कर सकता, नहीं, सेवा हो रही है। भिन्न-भिन्न सेवा के निमित्त बने ना।

31.12.00.. .जमा के खाते की चाबी बहुत सहज है, वह डायमण्ड चाबी है, गोल्डन चाबी लगाते हो लेकिन जमा की डायमण्ड चाबी है ''निमित्त भाव और निर्मान भाव''। अगर हर एक आत्मा के प्रति, चाहे साथी, चाहे सेवा जिस आत्मा की करते हो, दोनों में सेवा के समय, आगे पीछे नहीं सेवा करने के समय निमित्त भाव, निर्मान भाव, नि:स्वार्थ शुभ भावना और शुभ स्नेह इमर्ज हो तो जमा का खाता बढ़ता जायेगा।

यह लक्ष्य रखो जैसे ब्रह्मा बाप का स्लोगन था ''ओटे सो अर्जुन'' अर्थात् जो स्वयं को निमित्त बनायेगा वह नम्बरवन अर्जुन हो जायेगा। ब्रह्मा बाप अर्जुन नम्बरवन बना। अगर दूसरे को देख करके करेंगे तो नम्बरवन नहीं बनेंगे। नम्बरवार में आयेंगे, नम्बरवन नहीं बनेंगे।

18.01.01...जो निमित्त हैं उन्हों को इस पालना के निमित्त बनने की आवश्यकता है। जिज्ञासु बढ़ायें, सेवाकेन्द्र बढ़ायें यह तो कामन है, लेकिन हर एक आत्मा को बाप की मदद से शक्तिशाली बनायें, अभी इसकी आवश्यकता है। सेवा तो सब कर रहे हो और करने के बिना रह भी नहीं सकते। लेकिन सेवा में शक्ति स्वरूप के वायब्रेशन आत्माओं को अनुभव हो, शक्तिशाली सेवा हो।

04.02.01...अभी तक जो जो जहाँ तक सेवा के निमित्त हैं, बहुत अच्छी की है और करेंगे भी लेकिन अभी समय प्रमाण तीव्रगति और बेहद सेवा की आवश्यकता है।

20.02.01...मास्टर सर्वशक्तिवान आत्माओं की स्व-स्थिति पर पर-स्थिति प्रभाव नहीं डाले। और ही आत्माओं को मानसिक परेशानियों से छुड़ाने के निमित्त बनो क्योंकि मन की परेशानी आप मेडीटेशन से ही मिटा सकते हो। डाक्टर्स अपना काम करेंगे, साइन्स वाले अपना काम करेंगे, गवर्मेन्ट अपना काम करेगी, आपका काम है मन के परेशानी, टेन्शन को मिटाना। टेन्शन फ्री जीवन का दान देना। सहयोग देना। जैसे वर्तमान समय देश विदेश वाले सहयोगी बन सहयोग दे रहे हैं ना!

20.2.2001.....अभी भिन्न-भिन्न स्थानों पर सहयोगी आत्मायें अच्छी निमित्त बनी हैं। सहयोगी तो बहुत अच्छे हैं, एक कदम सहयोग का है, एक पांव तो बढ़ाया है लेकिन दूसरा पाँव है - सहजयोगी, कर्मयोगी। कर्मयोगी या सहजयोगी भी कुछ कुछ बन गये हैं, यह भी स्टेज दूसरी है।

1.3.2001....इस बारी जो अपने संस्कार परिवर्तन पर ध्यान दे रूह-रूहान की है वा आगे भी प्लान बनाया है, यह भी ज़रूरी है क्योंकि समय की समीपता प्रमाण अभी फारेन के बच्चों को जो आर.सी.ओ वा एन.सी.ओ ग्रुप

की निमित्त आत्मायें हैं उन्हों को विशेष यह ध्यान रहे कि जैसे निमित्त दादियों से रूहानियत का अनुभव होता है और दादियाँ भी समझती हैं कि हमें अपने द्वारा रूहानियत और बाप के सम्बन्ध का अनुभव और आगे बढ़ाने में सहयोग की भासना देनी है।

5.3.2001.....'हम विश्व के बेहद सेवाधारी आत्मायें हैं', यह नशा और सेवा का उमंग कम है। अब समय प्रमाण इन निमित्त आत्माओं को तो अब बेहद दृष्टि, बेहद की वृत्ति, बेहद की स्थिति की आवश्यकता है। जैसे दादियों द्वारा रूहानियत की अनुभूति करते हैं। ऐसे ही रूहानियत की शक्ति अपने में भरनी आवश्यक है क्योंकि अब रूहानी अनुभूतियाँ कराने की ही ज़रूरत होगी।

5.3.2001....अब समय की गति फास्ट रूप दिखा रही है लेकिन आप निमित्त आत्माओं के लिए रुक जाती है। इसलिए बापदादा का बच्चों पर प्यार और नाज़ है कि बनना तो कल्प-कल्प इन बच्चों को ही है और बनना ही है। बापदादा हर बच्चे की विशेषता पर बलिहार जाते हैं - ''वाह मेरे बच्चे वाह!'' के गीत गाते हैं।

25.11.2001.....अभी विश्व की आत्मायें मुक्ति चाहती हैं तो बाप द्वारा मुक्ति का वर्सा दिलाने वाले निमित्त आप हो। तो निमित्त आत्मायें पहले स्वयं को भिन्न-भिन्न समस्याओं के कारण को निवारण कर मुक्त बनायेंगे तब विश्व को मुक्ति का वर्सा दिला सकेंगे।

15.12.2001.....अपने आपको देखो, चेक करो - हमारे संकल्प, बोल में रूहानियत है? रूहानी संकल्प अपने में भी शक्ति भरने वाले हैं और दूसरों को भी शक्ति देते हैं। जिसको दूसरे शब्दों में कहते हो रूहानी संकल्प मनसा सेवा के निमित्त बनते हैं। रूहानी बोल स्वयं को और दूसरे को सुख का अनुभव कराते हैं। शान्ति का अनुभव कराते हैं।

31.12.2001.....जैसे बाप के लिए कहते हैं - ब्रह्मा बाप का सदा यही स्लोगन रहा ''जो कर्म मैं करूंगा वह सब करेंगे''। ऐसे हर एक टीचर को यही स्लोगन सदा याद रहता है कि ''जो कर्म, जो बोल, जो वृत्ति, जो विधि हम करेंगे, हमें देख सर्व करेंगे।'' बापदादा ने ब्रह्मा बाप की गद्दी आप टीचर्स को बैठने के लिए दी है। मुरली सुनाने के लिए निमित्त टीचर्स हैं, बाप की गद्दी मिली हुई है। ड्रामा ने आप टीचर्स को बहुत-बहुत ऊंचा मर्तबा दिया है।

हर एक वर्ग को वारिस निकालने चाहिए। अभी मिक्स तो आते ही रहते हैं, अभी लास्ट में वारिस की माला बनाओ। जैसे आदि में थोड़े से निमित्त वारिस बने, ऐसे अन्त में भी ऐसे वारिस क्वालिटी निमित्त बनेगी।

18.1.2002..... जब तक आप निमित्त बने हुए बच्चे सदा समर्थ नहीं बने हैं तो विश्व की आत्माओं को समर्थी कैसे दिलायेंगे! सर्व आत्मायें शक्तियों से बिल्कुल खाली हो, शक्तियों की भिखारी बन चुकी हैं। ऐसे भिखारी आत्माओं को हे समर्थ आत्मायें, इस भिखारीपन से मुक्त करो।

24.2.2002.....जो सेवा की स्टेज पर निमित्त बच्चे हैं, वह सदा एक ही संकल्प में रहते कि बाप को प्रत्यक्ष कैसे करें, कब होगा! ऐसे संकल्प चलता है ना? बाप फिर बच्चों से पूछते हैं, कि बच्चे आप सभी सम्पन्न, सम्पूर्ण स्वरूप में स्वयं कब प्रत्यक्ष होंगे? बाप का क्वेश्चन है बच्चों प्रति कि वह डेट भी फिक्स की है? कि वह डेट फिक्स नहीं होनी है?

28.3.2002.....निर्माणता हर एक के मन से आपके प्रति दुआयें निकालेगी। बहुत दुआयें मिलेंगी। दुआयें, पुरुषार्थ में लिफ्ट से भी राकेट बन जायेंगी। निर्माणता ऐसी चीज़ है। कैसा भी कोई होगा, चाहे बिजी हो, चाहे कठोर दिल वाला हो, चाहे क्रोधी हो, लेकिन निर्माणता आपको सर्व द्वारा सहयोग दिलाने के निमित्त बन जायेगी।

12.5.2002(अव्यक्त सन्देश).. ..बापदादा आज विशेष हर बच्चे को स्व-परिवर्तन द्वारा सर्व ब्राह्मणों में संस्कार परिवर्तन का सहयोग दे, उमंग-उत्साह बढ़ाने के कार्य में निमित्त बनने की जिम्मेवारी का ताज पहना रहे हैं। बोलो, यह ताज धारण करने की हिम्मत है ना? बस यही हर समय संकल्प हो कि इस कार्य में ''पहले मैं''। मुझे ही निमित्त बनना है, सम्पन्न करना है। किसी भी बातों को देखना नहीं है। आगे बढ़ना है, बढ़ाना ही है।

26.6.2001(अव्यक्त सन्देश).. ..आज बापदादा निमित्त आत्माओं को जिम्मेवारी का ताज पहनाने की ताजपोशी मना रहे हैं क्योंकि बापदादा देख रहे हैं कि समय बहुत फास्ट जा रहा है। प्रकृति भी अपने कार्य में बहुत उग्र रूप से आगे बढ़ रही है। माया भी नये-नये रूपों से बच्चों को आकर्षित करने के पेपर लेने का पार्ट बजा रही है लेकिन बच्चों में अब स्व प्रति वा सेवा साथियों प्रति, निमित्त बने हुए स्थानों प्रति, चारों ओर के वायुमण्डल प्रति रूहानी परिवर्तन करने की जिम्मेवारी को प्रैक्टिकल लाने में बहुत धीमी गति है। इसलिए अब ब्रह्मा बाप भी, साथ में एडवांस पार्टी भी समय सम्पन्न का बहुत इन्तजार कर रहे हैं। अब नये परिवर्तन का पर्दा बदलने का समय समीप आ रहा है। इस नये पर्दे को खोलने की डोरी इन विशेष आत्माओं के हाथ में है इसलिए बापदादा इस बारी जिम्मेवारी के ताज की ताजपोशी मना रहे हैं। ताजपोशी पर राज्य अधिकारी आत्मा को सर्व के आगे कुछ संकल्प भी लेने होते हैं। तो बापदादा भी सब ताजधारी टीचर्स को यही दिल से दृढ़ संकल्प दिलाने चाहते हैं कि ''अब से दृढ़ता, परिपक्वता से, सम्पन्नता से स्व परिवर्तन और सर्व परिवर्तन करना ही है। चाहे कोई भी हलचल की समस्या आवे, चारों ओर के सेवास्थान, सेवा साथियों वा स्टूडेन्टस वा सेवा के साधनों द्वारा पेपर आवें लेकिन हम स्वमान में रह समस्याओं को खेल समझ पार करेंगे क्योंकि विजय हमारा हमारे गले का हार है। इस निश्चय के रूहानी नशे से अचल-अडोल बन, निर्मान बन, विश्व निर्माण के ताज की जिम्मेवारी निभानी ही है। स्व के और दूसरों के विघ्न-विनाशक बनना ही है।'' यही आज बापदादा ताजपोशी मनाने चाहते हैं।जन्म सिद्ध अधिकार है। सफलता हमारे गले का हार है। इस निश्चय के रूहानी नशे से अचल-अडोल बन, निर्मान बन, विश्व निर्माण के ताज की जिम्मेवारी निभानी ही है। स्व के और दूसरों के विघ्न-विनाशक बनना ही है।'' यही आज बापदादा ताजपोशी मनाने चाहते हैं।

24.7.2001(अव्यक्त सन्देश).. ..बापदादा बोले, एक जिम्मेवारी तो यह है जो सदा निमित्त बहनों के साथ-साथ संगठन को और निमित्त बने हुए सेवाकेन्द्र को रूहानी अव्यक्त वातावरण वाला बनाना है। और दूसरा बाबा ने कहा कि सेवा में सदा हाँ जी, अथक और निर्विघ्न स्थिति में रहकर सेवा को आगे बढ़ाना है। समय, संकल्प और कर्म को सफल करना है और श्रेष्ठ खाते में जमा का खाता बढ़ाना है। बोलो, यह जिम्मेवारी निभा रहे हो ना!

2.4.2002(अव्यक्त सन्देश).. .. बाबा बोले बच्ची, आज मेरे निमित्त सर्विसएबुल बच्चों की याद लाई हो? बापदादा तो अपने सेवा के साथियों को सदा अपने दिल में रखते हैं।

5.4.2002(अव्यक्त सन्देश).. .. अब तो इन सब निमित्त सेवाधारी बच्चों को बापदादा इस नज़र से देखते हैं कि जब विश्व परिवर्तन करने की जिम्मेवारी का ताज धारण किया है तो अब समय की, प्रकृति की तीव्र रफ्तार को देख हर एक बच्चे की मूर्त से आत्मिक रूहानी सीरत दिखाई दे। अब तो इन सब निमित्त सेवाधारी बच्चों को बापदादा इस नज़र से देखते हैं कि जब विश्व परिवर्तन करने की जिम्मेवारी का ताज धारण किया है तो अब समय की, प्रकृति की तीव्र रफ्तार को देख हर एक बच्चे की मूर्त से आत्मिक रूहानी सीरत दिखाई दे।

8.10.2002.. ..सभी सेवा के निमित्त अपना भाग्य बनाने वाले हो क्योंकि इस यज्ञ सेवा का पुण्य बहुत बड़ा है। तन से सेवा तो करते हो लेकिन मन से भी सेवा करते रहो, तो डबल पुण्य हो जाता है। मन्सा सेवा और तन की सेवा।

14.11.2002.. .. जैसे बड़े बच्चे बाप के समान हो जाते हैं ना, तो टीचर्स भी गुरूभाई हैं क्योंकि सदा बाप की सेवा के निमित्त बने हुए हैं। बाप समान सेवाधारी हैं। देखो, टीचर्स को बाप का सिंहासन मिलता है मुरली सुनाने के लिए। गुरू की गद्दी मिलती है ना! इसलिए टीचर्स अर्थात् निरन्तर सेवाधारी।

30.11.2002.. .. जैसे बड़े बच्चे बाप के समान हो जाते हैं ना, तो टीचर्स भी गुरूभाई हैं क्योंकि सदा बाप की सेवा के निमित्त बने हुए हैं। बाप समान सेवाधारी हैं। देखो, टीचर्स को बाप का सिंहासन मिलता है मुरली सुनाने के लिए। गुरू की गद्दी मिलती है ना! इसलिए टीचर्स अर्थात् निरन्तर सेवाधारी।

28.2.2003.. .. बच्चे कहते हैं हम नहीं रह जायें। बच्चों से भी श्रृंगार है। छोटे-छोटे बच्चे भी, बापदादा ने सुना कि कई बच्चे, माँ-बाप को ज्ञान में ले आये हैं। वाह! बच्चे वाह! परिवार के कल्याण के लिए बच्चे निमित्त बन जाते हैं। तो बच्चों की भी बलिहारी है।

17.3.2003.. .. समय के तीव्रगति की रफ्तार देख बापदादा यही चाहते हैं कि सिर्फ थोड़ी आत्माओं की सेवा नहीं करनी है लेकिन विश्व की सर्व आत्माओं के मुक्तिदाता निमित्त आप हो क्योंकि बाप के साथी हो, तो समय

की रफ्तार प्रमाण अभी एक ही समय इक्ट्ठा तीन सेवायें करनी हैं :- एक वाणी, दूसरा स्व शक्तिशाली स्थिति और तीसरा श्रेष्ठ रूहानी वायब्रेशन जहाँ भी सेवा करो वहाँ ऐसा रूहानी वायब्रेशन फैलाओ जो वायब्रेशन के प्रभाव में सहज आकर्षित होते रहें।

15.7.2002(अव्यक्त सन्देश).. .... .. बापदादा देख-देख अपनी मीठी दृष्टि में समा रहे हैं। बड़े स्नेह से बोले मेरे विशेष निमित्त सर्विसएबुल, नॉलेजफुल बच्चे आये हैं। तो बापदादा की इन विशेष बड़े बच्चों में बहुत-बहुत उम्मीदें हैं क्योंकि यह मेरे आशाओं के दीपक हैं। अब जल्दी संगठित रूप में एकव्रता, एक लगन, एकरस स्थिति को सैम्पल रूप में विश्व की स्टेज पर प्रत्यक्ष करेंगे। बापदादा तो यही देखने चाहते हैं कि मेरा एक-एक बच्चे का जो बापदादा का संकल्प वह बच्चों का संकल्प, जो बाप का बोल वह बच्चों का बोल, जो ब्रह्मा बाप का कर्म वह बच्चे का हर कर्म, दूसरा न कोई इस दृढ़ निश्चय को स्वरूप में लावे। अब बापदादा इन बड़ें बच्चों को वायदा नहीं कराने चाहते। वायदा निभाने वाले देखने चाहते हैं। संकल्प किया और स्वरूप बनें। वायदे के फाइल तो बापदादा के पास बहुत बड़े-बड़े हैं लेकिन अब फाइनल फ़रिश्ता स्वरूप देखने चाहते हैं।

जब विश्व कल्याण अर्थ निमित्त बने हो तो क्या स्व और साथियों प्रति, सर्व प्रति कल्याणकारी नहीं बन सकते। अब तो बापदादा यह बचपन की बातें, पुरानी रसम, पुराने संस्कार सुनने-कहने भी नहीं चाहते। ओ मेरे निमित्त महान आत्मायें अब परिवर्तन की कमाल दिखाओ। तो संस्कार परिवर्तन से संसार परिवर्तन के नज़ारे सभी के नयनों में, मन में, चलन में, चेहरे में दिखाई दें। यही बापदादा की आप निमित्त बच्चों में श्रेष्ठ आश है। बोलो, फर्स्ट ग्रुप बच्चे – यह फास्ट परिवर्तन की आश पूर्ण कर पास्ट को समाप्त और फ़रिश्ते रूप में प्रत्यक्ष करेंगे और करायेंगे ना! अब तो कारण नहीं निवारण स्वरूप बनो और बनाओ।

7.9.2002.. ..जैसे निमित्त टीचर्स की जिम्मेवारी है ऐसे ही सरेन्डर निमित्त आत्माओं की भी जिम्मेवारी है - वायुमण्डल को रूहानी बनाने की। हम सरेन्डर हैं यह कहलाना, कोई कामन बात नहीं है। एकस्ट्रा प्राप्ति भी है तो जिम्मेवारी भी है।

13.10.2002. (अव्यक्त सन्देश).. अब तक चाहे फारेन में, चाहे भारत में जो भी सेवा के स्थान बने हैं वह सर्व की शुभ भावना, सेवा की भावना से सम्पन्न होते रहे हैं और होने ही हैं क्योंकि निमित्त बने हुए बच्चे सदा सफल करने में होशियार हैं, इसलिए सफलता है ही।. अब तक चाहे फारेन में, चाहे भारत में जो भी सेवा के स्थान बने हैं वह सर्व की शुभ भावना, सेवा की भावना से सम्पन्न होते रहे हैं और होने ही हैं क्योंकि निमित्त बने हुए बच्चे सदा सफल करने में होशियार हैं, इसलिए सफलता है ही।

4.2.2003(अव्यक्त सन्देश).... .. सदा सेवा के साथी बन, संगठन के लिए एग्जैम्पुल बन आगे बढ़ते रहो, उड़ते रहो, यही विधि है ब्राह्मण परिवार के संगठन को निमित्त बन आगे बढ़ाने की।

15.12.2003.. .. आज के बापदादा के बोल का एक शब्द नहीं भूलना, वह कौन सा? परिवर्तन। मुझे बदलना है। दूसरे को बदलकर नहीं बदलना है, मुझे बदलके औरों को बदलाना है। दूसरा बदले तो मैं बदलूं, नहीं। मुझे निमित्त बनना है। मुझे हे अर्जुन बनना है तब ब्रह्मा बाप समान नम्बरवन लेंगे।

31.12.2003.. .. ''इस वर्ष निमित्त और निर्माण बन जमा के खाते को बढ़ाओ और अखण्ड महादानी बनो

जमा का खाता भरपूर करने की गोल्डन चाबी है - कोई भी मन्सा-वाचा-कर्म, किसी में भी सेवा करने के समय एक तो अपने अन्दर निमित्त भाव की स्मृति। निमित्त भाव, निर्माण भाव, शुभ भाव, आत्मिक स्नेह का भाव, अगर इस भाव की स्थिति में स्थित होकर सेवा करते हो तो सहज आपके इस भाव से आत्माओं की भावना पूर्ण हो जाती है।आज के लोग हर एक का भाव क्या है, वह नोट करते हैं। क्या निमित्त भाव से कर रहे हैं, वा अभिमान के भाव से! जहाँ निमित्त भाव है वहाँ निर्मान भाव ऑटोमेटिकली आ जाता है। तो चेक करो - क्या जमा हुआ? कितना जमा हुआ? क्योंकि इस समय संगमयुग ही जमा करने का युग है। फिर तो सारा कल्प जमा की प्रालब्ध है।

2.2.2004.. .. ऐसे ही आजकल के वातावरण में आप पूर्वज भी विशेष सेवा के अर्थ स्वयं को निमित्त समझते हो! सारे विश्व की आत्माओं के निमित्त हैं, यह स्मृति रहती है? सारे विश्व की आत्माओं को आज आपके सकाश की आवश्यकता है।

अभी बापदादा सभी बच्चों को सदा निर्विघ्न स्वरूप में देखने चाहते हैं, क्यों? जब आप निमित्त बने हुए निर्विघ्न स्थिति में स्थित रहो तब विश्व की आत्माओं को सर्व समस्याओं से निर्विघ्न बना सको। इसके लिए विशेष दो बातों पर अण्डरलाइन करो। करते भी हो लेकिन और अण्डरलाइन करो। एक तो हर एक आत्मा को अपने आत्मिक दृष्टि से देखो। आत्मा के ओरीजनल संस्कार के स्वरूप में देखो। चाहे कैसे भी संस्कार वाली आत्मा है लेकिन आपकी हर आत्मा के प्रति शुभ भावना, शुभ कामना, परिवर्तन की श्रेष्ठ भावना, उनके संस्कार को थोड़े समय के लिए परिवर्तन कर सकती है। आत्मिक भाव इमर्ज करो।

अभी समय जल्दी से परिवर्तन की ओर जा रहा है, अति में जा रहा है लेकिन समय परिवर्तन के पहले आप विश्व परिवर्तक श्रेष्ठ आत्मायें स्व परिवर्तन द्वारा सर्व के परिवर्तन के आधारमूर्त बनो। आप भी विश्व के आधारमूर्त, उद्धारमूर्त हो। हर एक आत्मा लक्ष्य रखो - मुझे निमित्त बनना है। सिर्फ तीन बातों का स्व में संकल्प मात्र भी न हो, यह परिवर्तन करो। एक - परचिन्तन। दूसरा - परदर्शन। स्वदर्शन के बजाए परदर्शन नहीं। तीसरा - परमत या परसंग, कुसंग। श्रेष्ठ संग करो क्योंकि संगदोष बहुत नुकसान करता है। पहले भी बापदादा ने कहा था - एक पर-उपकारी बनो और यह तीन पर काट दो। पर दर्शन, पर चिंतन, परमत अर्थात् कुसंग, पर का फालतू संग। पर-उपकारी बनो तब ही दुआयें मिलेंगी और दुआयें देंगे।

निमित्त भाव, यह गुणों की खान है। सिर्फ हर समय निमित्त भाव आ जाए तो और सभी गुण सहज आ सकते हैं क्योंकि निमित्त भाव में मैं पन नहीं है और मैं पन ही हलचल में लाता है। निमित्त बनने से मेरा पन भी खत्म, तेरा, तेरा हो

जाता है। सहजयोगी बन जाते हैं। तो सभी का दादियों से प्यार है, बापदादा से प्यार है, तो प्यार का रिटर्न है - विशेषताओं को समान बनाना। तो ऐसे लक्ष्य रखो। विशेषताओं को समान बनाना है। किसी में भी कोई विशेषता

देखो, विशेषता को भले फालो करो। आत्मा को फालो करने में दोनों दिखाई देंगे। विशेषता को देखो और उसमें समान बनो।

31.1.2014.. .. सर्विस तो चारों ओर कर रहे हो लेकिन कोई भी आसपास की एरिया रह नहीं जाये, उल्हना नहीं मिले, हमारा बाबा आया और हमको पता नहीं पड़ा। यह जिम्मेवारी आप निमित्त बने हुए बच्चों की है। जहाँ तक हो सकता वहाँ सन्देश जरूर दे दो। नोट करो कौन सी एरिया रही हुई है! जो उल्हना रह नहीं जाये कि हमें तो पता नहीं पड़ा। पता देना आपका कर्तव्य है, जाने नहीं जाने, वह जानें। तो हर एक अपनी एरिया के आसपास चेक करो कोई भी एरिया सन्देश के बिना रह नहीं जाए। भाग्य हर एक का खुद है लेकिन सन्देश देना आप भाग्यवान आत्माओं का कर्तव्य है।

27.2.2014.. ..अभी बापदादा बच्चों में विघ्न-विनाशक की विशेषता देख भी रहे हैं और देखने चाहते भी हैं। बाप का निर्विघ्न साथी बनकर चलने का पक्का संस्कार कोई-कोई बच्चों का है, अटेन्शन है लेकिन अटेन्शन का अर्थ है नो टेन्शन, इस बात के ऊपर अच्छा ध्यान है क्योंकि अभी आप निमित्त बने हुए बच्चे निर्विघ्न अवस्था के अनुभवी बनेंगे तभी आपके निर्विघ्नता का वायब्रेशन पुरुषार्थी बच्चों को पहुंचेगा।

30.3.2014.. .. बापदादा आज मन्सा संकल्प के तरफ अटेन्शन खिंचवा रहे हैं, जो निमित्त महारथी हैं अब मन्सा शक्ति के ऊपर अटेन्शन दो। वाणी और कर्म तो आटोमेटिकली ठीक हो ही जायेगा। तो बापदादा आज मन्सा संकल्प के लिए इशारा दे रहे हैं क्योंकि वेस्ट थॉट्स जो आवश्यक नहीं है वह भी टाइम ले लेते हैं। वह समय बचाना है। हो सकता है? हो सकता है हाथ उठाओ।

9. निराकारी, निरंहकारी और निर्विकारी

2.2.69.. .. सर्विस करते-करते यह ध्यान रखना कि मैंने यह किया, मैं ही यह कर सकता हूँ... यह मैं पन आना इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान। इन रूपों में आगे चलकर विघ्न आयेंगे। लेकिन पहले से ही इस मुख्य विघ्न को आने नहीं देना। इसके लिए सदा एक शब्द याद रखना कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से ही निराकारी, निरंहकारी और नम्रचित, नि:संकल्प अवस्था में रह सकते हैं। अगर मैंने किया, मैं-मैं आया तो मालूम है क्या होगा? जैसे निमित्त बनने से निराकारी, निरंहकारी, निरसंकल्प स्थिति होती है वैसे ही मैं मैं आने से मगरूरी, मुरझाइस, मायूसी आ जायेगी। उसकी फिर रिजल्ट क्या होगी? आखरीन अन्त में उसकी रिजल्ट यही होती है कि चलते-चलते जीते हुए भी मर जाते हैं। इसलिए इस मुख्य शिक्षा को हमेशा साथ रखना कि मैं निमित्त हूँ।

2.2.69.. .. साकार रूप में अन्त तक कर्म करके दिखाया। क्या कर्म करके दिखाया? याद है? क्या शिक्षा दी यही कि निरंहकारी और निर्माणचित होकर एक दो में प्रेम प्यार से चलना है। एक माताओं का संगठन बनाना।

4.3.69.. .. जो मालिक और बालक दोनों रीति से चलने वाला होगा उनकी मुख्य परख यह होगी – एक तो निर्माणता होगी उसके साथ निरंहकारी, निर्माण और साथ-साथ प्रेम स्वरूप। यह चारों ही बातें उनके हर चलन से देखने में आयेंगी। अगर चारों में से कोई भी कम है तो कुछ स्टेज की कमी है।

17.4.69.. .. जो ब्रह्मा का संस्कार वह ब्राह्मणों का। साकार ब्रह्मा का मुख्य संस्कार कौन सा था। ब्रह्मा में तो वह संस्कार सम्पूर्ण रूप से देख लिया। लेकिन ब्राह्मणों में यथा योग, यथा शक्ति है। उनका मुख्य संस्कार था – सर्वस्व त्यागी। निरंहकारी का मतलब ही है सर्वस्व त्यागी। अपना सभी कुछ त्याग कर लेते हैं। सर्वस्व त्यागी होने से सर्वगुण आ जाते हैं। दूसरों के अवगुणों को न देखना, यह भी त्याग है। त्याग का अभ्यास होगा तो यह भी त्याग कर सकेंगे। सर्वस्व त्यागी अर्थात् देह के भान का भी त्याग। तो ब्राह्मणों का मुख्य संस्कार है – सर्वस्व त्यागी।

8.5.69.. ..मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों को ठीक करने लिये सिर्फ तीन अक्षर याद रहें। वह तीन अक्षर कौन से हैं? यह तीन अक्षर रोज मुरली में भी आते हैं। मन्सा के लिए है निराकारी। वाचा के लिए है निरंहकारी। कर्मणा के लिए है निर्विकारी। देवताओं का सबूत वाचा और कर्मणा का यही है ना। तो निराकारी, निरंहकारी और निर्विकारी यह तीन बातें अगर याद रखी तो मन्सा-वाचा-कर्मणा तीनों ही बहुत अच्छे रहेंगे। जितना निराकारी स्थिति में रहेंगे उतना ही निरंहकारी और निर्विकारी भी रहेंगे। विकार की कोई बदबू नहीं रहेगी। यह है मुख्य पुरुषार्थ। यह तीन बातें याद रखने से क्या बन जावेंगे? त्रिकालदर्शी भी बन जायेंगे। और भविष्य में फिर विश्व के मालिक। अभी बनेंगे त्रिलोकीनाथ और त्रिकालदर्शी।

26.5.69.. ...निर्भयता कैसे आयेगी? उसके लिए मुख्य क्या पुरुषार्थ हैं? निराकारी बनना। जितना निराकारी अवस्था में होंगे उतना निर्भय होंगे। भय तो शरीर के भान में आने से होता है।

26.6.69.. .. याद की यात्रा भी किसलिये सिखाई जाती है। गुरु रूप से मुख्य फालो यही करना है अशरीरी, निराकारी, न्यारा बनना। याद की यात्रा भी इसलिये करते हैं कि साकार में रहते निराकार और न्यारे अशीररी हो रहे। जब अशरीरी बनेंगे तब ता गुरू के साथ जा सकेंगे। मुख्य रूप से तो यही फालो कर रहे हो और करना है।

निर्णयशक्ति को बढ़ाने लिये मुख्य खुराक यही है जो पहले भी सुनाया। अशरीरी, निराकारी और कर्म में न्यारे। निराकारी वा अशरीरी अवस्था तो हुई बुद्धि तक लेकिन कर्म से न्यारा भी रहे और निराले भी रहें जो हर कर्म को देखकर के लोग भी समझे कि यह तो निराला है। यह लौकिक नहीं अलौकिक है। तो निर्णयशक्ति को बढ़ाने के लिये यह बहुत आवश्यक है।

23.7.69.. .. वास्तव में बिन्दु रूप में स्थित होना कोई मुश्किल बात नहीं है। जितना-जितना न्यारा बनेंगे तो बिन्दु रूप तो है ही न्यारा। निराकार भी है। तो न्यारा भी है आप भी निराकारी और न्यारी स्थिति होंगे तो बिन्दु रूप का अनुभव करेंगे। चलते-फिरते अव्यक्त स्थिति का अनुभव कर सकते हो। प्रैक्टिस ऐसी सहज हो जायेगी कि जो जब भी चाहो तभी अव्यक्ति स्थिति में ठहर जाओगे। एक सेकेण्ड के अनुभव से कितनी शक्ति अपने में भर सकते हो। वह भी अनुभव करेंगे और ब्रेक देने मोड़ने की शक्ति भी अनुभव में आ जायेगी।

15.9.69.. .. अभी-अभी निराकारी, अभी- अभी साकारी। जब ऐसी अवस्था हो जायेगी तब साकार रूप में हर एक को निराकार रूप का आपसे साक्षात्कार हो।

20.10.69.. .. जैसे स्थूल शरीर के हाथ-पांव झट डायरेक्शन प्रमाण-ड्रिल में चलाते रहते हैं, वैसे एक सेकेण्ड में साकारी से निराकारी बनने की प्रैक्टिस है? साकारी से निराकारी बनने में कितना समय लगता है? जबकि अपना ही असली स्वरूप है फिर भी सेकेण्ड में क्यों नहीं स्थित हो सकते?

14.5.70 .. .. अच्छा तीन बातें कौन सी – याद रखनी हैं? एक तो अपने को उपकारी समझकर चलना है, दूसरा निरहंकारी, तीसरा अधिकारी। अधिकार भी सामने रखना है और निरहंकार का गुण भी सामने रखना है और उपकार करने का कर्त्तव्य भी सामने रखना है। यह तीन बातें सदैव याद रखना है। कितना भी कोई अपकारी हो लेकिन अपनी दृष्टि और वृत्ति उपकारी हो। अधिकारी भी समझकर चलना है लेकिन निरहंकारी भी। जितना अधिकारी उतना निरहंकारी। तब यह ताज और तख्त सदैव कायम रहेगा।

03.12.70.. .. कोई भी अहंकार है तो वह अलंकारहीन बना देता है। इसलिए निरहंकारी और निराकारी फिर अलंकारी। इस स्थिति में स्थित होना सर्व आत्माओं के कल्याणकारी बनने वाले ही विश्व के राज अधिकारी बनते हैं। जब सर्व के कलाणकारी बनते हो तो क्या जो सर्व का कल्याण करने वाला है वह अपना अकल्याण कर सकता है?

3.12.70.. .. सदैव अपने आप को देखो कि निराकारी और अलंकारी हूँ। यही है मनमनाभव, मध्याजीभव।

कोई भी अहंकार है तो वह अलंकारहीन बना देता है। इसलिए निरहंकारी और निराकारी फिर अलंकारी। इस स्थिति में स्थित होना सर्व आत्माओं के कल्याणकारी बनने वाले ही विश्व के राज्य अधिकारी बनते हैं।

31.12.70.. .. यही परिवर्तन श्रेष्ठ संकल्प रोज़ क्लास के समय धारण कर पढ़ाई करो। साधारण क्लास नहीं, सुनाने वाले व्यक्ति को नहीं देखो। लेकिन बोलने वाले बोल किसके हैं, उसको सामने देखो। व्यक्त में अव्यक्त बाप और निराकारी बाप को देखो। तो समझा – क्या परिवर्तन करना है।

21.1.71.. .. साकार स्नेही हो या निराकार स्नेही हो? निराकार स्नेही जो होते हैं उनकी यह विशेषता जादा होती है कि वह निराकारी स्थिति में जादा स्थित होंगे, साकार स्नेही चरित्रवान होंगे। उनका एक-एक चरित्र सर्विसएबुल होगा। दूसरा वह औरों को भी स्नेह में जादा ला सकेंगे। निराकारी, निरहंकारी दोनों समान चाहिए।
1.3.71.. .. जो सिम्पल होता है वही ब्युटीफुल होता है। सिम्पलिसिटी सिर्फ ड्रेस की नहीं लेकिन सभी बातों की। निरहंकारी बनना अर्थात् सिम्पल बनना। निरक्रोधी अर्थात् सिम्पूल। निर्लोभी अर्थात् सिम्पुल। यह सिम्पलिसिटी प्योरिटी का साधन है।
4.7.71.. .. चाहे निराकार रूप से संग करो, चाहे साकार रूप में करो लेकिन सत् का संग हो। साकार का संबंध भी सारे कल्प में अविनाशी रहेगा ना। तो साकारी स्मृति हो वा निराकारी स्मृति हो, लेकिन स्मृति ज़रूर होनी चाहिए। बापदादा के संग के सिवाय और कोई भी संग बुद्धि में न हो।

20.8.71.. ..डबल निशाना कौनसा है? जो डबल नशा होगा वही डबल निशाना होगा। एक है निराकारी निशाना। सदैव अपने को निराकारी देश के निवासी समझना और निराकारी स्थिति में स्थित रहना। साकार में रहते हुए अपने को निराकारी समझकर चलना। एक – सोल-कान्सेस वा आत्म- अभिमानी बनने का निशाना और दूसरा – निर्विकारी स्टेज, जिसमें मन्सा की भी निर्विकारीपन की स्टेज बनानी पड़ती है। तो एक है निराकारी निशाना और दूसरा है साकारी। तो निराकारी और निर्विकारी – यह हैं दो निशानी। सारा दिन पुरुषार्थ योगी और पवित्र बनने का करते हो ना। जब तक पूरी रीति आत्म- अभिमानी न बने हैं। तो निर्विकारी भी नहीं बन सकते। तो निर्विकारीपन का निशाना और निराकारीपन का निशाना, जिसको फरिश्ता कहो, कर्मातीत स्टेज कहो।

15.9.71.. .. अगर निराकारी स्थिति में स्थित होकर निरहंकारी बनो तो निर्विकारी आटोमेटिकली हो ही जायेंगे। निरहंकारी बनते ज़रूर हो लेकिन निराकार होकर निरहंकारी नहीं बनते हो। युक्तियों से अपने को अल्प समय के लिए निरहंकारी बनाते हो, लेकिन निरन्तर निराकारी स्थिति में स्थित होकर साकार में आकर यह कार्य कर रहा हूँ – यह स्मृति वा अभ्यास नेचरल वा नेचर न बनने के कारण निरन्तर निरहंकारी स्थिति में स्थित नहीं हो पाते हैं। जैसे कोई कहाँ से आता है, कोई कहाँ से आता है, उसको सदा यह स्मृति रहती है कि मैं यहाँ से आया हूँ। ऐसे यह स्मृति सदैव रहे कि मैं निराकार से साकार में आकर यह कार्य कर रही हूँ। बीच-बीच में हर कर्म करते हुए

इस स्थिति का अभ्यास करते रहो। तो निराकार हो साकार में आने से निरहंकारी और निर्विकारी ज़रूर बन जायेंगे। यह अभ्यास अल्पकाल के लिए करते भी हो, लेकिन अब इसी को सदाकाल में ट्रॉन्सफर करो।

26.10.71.. .. निर्माणता अर्थात् निरहंकारी। तो निर्माणता में देह का अहंकार स्वत: ही खत्म हो जाता है। ऐसे निर्माण स्थिति में रहने वाला सदा निर्वाण स्थिति में स्थित होते हुए भी वाणी में आयेंगे तो वाणी भी यथार्थ और पावरफुल अर्थात् शक्तिशाली होगी।

15.2.72.. .. सदा सम्पत्तिवान समझ कर चलें, इसके लिये तीन शब्द याद रखने हैं। जिन तीन शब्दों को याद करने से सदा और स्वत: ही यह वृति रहती, वह तीन शब्द कौन से? सदा निराकारी, अलंकारी और कल्याणकारी। अगर यह तीन शब्द याद रहें तो सदा अपनी श्रेष्ठ स्थिति बना सकते हो। चाहे मन्सा, चाहे कर्मणा में, चाहे सेवा में – तीनों ही स्थिति में अपनी ऊंची स्थिति बना सकते हो।

9.5.72.. .. जैसे आपके भविष्य यादगारों का गायन है सम्पूर्ण निर्विकारी। तो इसको ही होलीएस्ट कहा जाता है। सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् किसी भी परसेन्टेज में कोई भी विकार तरफ आकर्षण न जाए वा उनके वशीभूत न हो। अगर स्वप्न में भी किसी भी प्रकार विकार के वश किसी भी परसेन्टेज में होते हो तो सम्पूर्ण निर्विकारी कहेंगे? अगर स्वप्नदोष भी है वा संकल्प में भी विकार के वशीभूत हैं तो कहेंगे विकारों से परे नहीं हुए हैं। ऐसे सम्पूर्ण पवित्र वा निर्विकारी अपने को बना रहे हो वा बन गये हो? जिस समय लास्ट बिगुल बजेगा उस समय बनेंगे? अगर कोई बहुत समय से ऐसी स्थिति में स्थित नहीं रहता है तो ऐसी आत्माओं का फिर गायन भी अल्पकाल का ही होता है। ऐसे नहीं समझना कि लास्ट में फास्ट जाकर इसी स्थिति को पा लेंगे। लेकिन नहीं। बहुत समय जो गायन है -- उसको भी स्मृति में रखते हुए अपनी स्थिति को होलीएस्ट और हाइएस्ट बनाओ।

10.5.72.. .. कैसा भी वायुमण्डल विकारी हो लेकिन स्वयं की वृति निर्विकारी होनी चाहिए। जब कहती हो – हम पतित-पावनियां हैं, पतितों को पावन बनाने वाली हैं; जब आत्माओं को पावन बना सकती हो तो क्या वायुमण्डल को पतित से पावन नहीं बना सकतीं? पावन बनाने वाले वायुमण्डल के वशीभूत नहीं होते। लेकिन वायुमण्डल वृति के ऊपर प्रभाव डाल देता है, यह है कमजोरी। हरेक को ऐसा समझना चाहिए कि मुझे स्वयं अपने पावरफुल वृति से जो भी अपवित्र वा कमजोरी का वायुमण्डल है उसको मिटाना है।

21.6.72.. .. जैसे जड़ वस्तु को किस भी रूप में परिवर्तन कर सकते हो, वैसे कर्म-इन्द्रियों को विकारी से निर्विकारी वा विकारों के वश आग में जले हुए कर्म-इन्द्रियों को शीतलता में नहीं ला सकते हो? क्या चैतन्य आत्मा में यह परिवर्तन की शक्ति नहीं आई है?

4.12.72.. .. रूहानी ड्रिल आती है ना। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी आकारी, अभी-अभी साकारी कर्मयोगी। देरी नहीं लगनी चाहिए। जैसे साकार रूप अपना है वैसे ही निराकारी, आकारी रूप भी अपना ही है

ना। अपनी चीज को अपनाना, उसमें देरी क्या? पराई चीज को अपनाने में कुछ समय लगेगा, सोच चलेगा लेकिन यह तो अपना ही असली स्वरूप है। जैसे स्थूल चोले को कर्त्तव्य के प्रमाण धारण करते हो और उतार देते हो, वैसे ही इस साकार देह रूपी चोले को कर्त्तव्य के प्रमाण धारण किया और न्यारा हुआ। लेकिन जैसे स्थूल वस्त्र भी अगर टाइट होते हैं तो सहज उतरते नहीं हैं, ऐसे ही अगर आत्मा का यह देह रूपी वस्त्र देह के, दुनिया के, माया के आकर्षण में टाइट अर्थात् खिंचा हुआ है तो सरल उतरेगा नहीं अर्थात् सहज न्यारा नहीं हो सकेंगे। समय लग जाता है। थकावट होती है। कोई भी कार्य जब सम्भव नहीं होता है तो थकावट वा परेशानी हो ही जाती है। परेशानी कभी एक ठिकाने टिकने नहीं देती। तो यह भक्ति का भटकना क्यों शुरु हुआ? जब आत्मा इस शरीर रूपी चोले को धारण करने और न्यारे होने में असमर्थ हो गई। यह देह का भान अपने तरफ खैंच गया तब परेशान होकर भटकना शुरु किया। लेकिन अब आप सभी श्रेष्ठ आत्माएं इस शरीर के आकर्षण से परे एक सेकेण्ड में हो सकते हो, ऐसी प्रैक्टिस है? प्रैक्टिस की परीक्षा का समय कौन-सा होता है? जब कर्मभोग का जोर होता है। कर्मेन्द्रियां बिल्कुल कर्मभोग के वश अपने तरफ आकर्षण करें, जिसको कहा जाता है बहुत दर्द है। कहते हैं ना – बहुत दर्द है, इसलिो थोड़ा भूल गई। लेकिन यह तो टग ऑफ वार (रस्सा-कशी) का समय है, ऐसे समय कर्मभोग को कर्मयोग मे परिवर्तन करने वाले, साक्षी हो कर्मेन्द्रियों को भोगवाने वाले जो होते हैं, उनको ही अष्ट रत्न कहा जाता है, जो ऐसे समय विजयी बन दिखाते हैं। क्योंकि अष्ट रत्नों में सदैव अष्ट शक्तियां काम रहती हैं। ऐसे अष्ट ही भक्तों को अल्पकाल की शक्तियों का वरदान देने वाले इष्ट बनते हैं।

19.7.72.. ..प्रत्यक्षफल का यह मतलब नहीं कि एक दिन में वारिस बन जायेंगे लेकिन जितनी मेहनत करते हो, उम्मीद रखते हो, उस प्रमाण भी फल निकले तो प्रत्यक्षफल कहा जाये। वह क्यों नहीं निकलता? बापदादा कोई भी कर्म के फल की इच्छा नहीं रखते। एक तो निराकार होने के नाते से प्रारब्ध ही नहीं है तो इच्छा भी नहीं हो सकती और साकार में भी प्रैक्टिकल पार्ट बजाया तो भी हर वचन और कर्म में सदैव पिता की स्मृति होने कारण फल की इच्छा का संकल्प-मात्र भी नहीं रहा। और यहां क्या होता है – जो कोई कुछ करते हैं तो यहां ही उस फल की प्राप्ति का रहता है। जैसे वृक्ष में फल लगता ज़रूर है लेकिन वहां का वहां ही फल खाने लगें तो उसका फल पूरा पक कर प्रैक्टिकल में आवे, वह कब न होगा क्योंकि कच्चा ही फल खा लिया। यह भी ऐसे है, जो कुछ किया उसके फल की इच्छा सूक्ष्म में भी रहती ज़रूर है, तो किया और फल खाया; फिर फलस्वरूप कैसे दिखाई देवे? आधे में ही रह गया ना। फल की इच्छाएं भी भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं, जैसे अपार दु:खों की लिस्ट है। वैसे फल की इच्छाएं वा जो उसका रेस्पान्स लेने का सूक्ष्म संकल्प ज़रूर रहता है। कुछ-ना-कुछ एक-दो परसेन्ट भी होता ज़रूर है। बिल्कुल निष्काम वृति रहे – ऐसा नहीं होता। पुरुषार्थ के प्रारब्ध की नॉलेज होते हुए भी उसमें अटैचमैंट ना हो, वह अवस्था बहुत कम है। मिसाल – आप लोगों ने किन्हों की सेवा की, आठ को समझाया, उसकी रिजल्ट में एकदो आप की महिमा करते हैं और दूसरे ना महिमा, ना ग्लानि करते हैं, गम्भीरता से चलते हैं। तो फिर भी देखेंगे – आठ में से आपका अटेन्शन एक-दो परसेन्टेज में उन दो तीन तरफ जादा जावेगा जिन्होंने महिमा

की; उसकी गम्भीरता की परख कम होगी, बाहर से जो उसने महिमा की उनको स्वीकार करने के संस्कार प्रत्यक्ष हो जावेंगे। दूसरे शब्दों में कहते हैं – इनके संस्कार, इनका स्वभाव मिलता है। फलाने के संस्कार मिलते नहीं हैं, इसलिये दूर रहते हैं। लेकिन वास्तव में है यह सूक्ष्म फल को स्वीकार करना। मूल कारण यह रह जाता है -- करेंगे और रिजल्ट का इंतजार रहेगा। पहले अटेन्शन इस बात में जावेगा कि इसने मेरे लिये क्या कहा? मैंने भाषण किया, सभी ने क्या कहा? उसमें अटेन्शन जावेगा। अपने को आगे बढ़ाने की एम से रिजल्ट लेना, अपनी सर्विस के रिजल्ट को जानना, अपनी उन्नति के लिये जानना – वह अलग बात है; लेकिन अच्छे और बुरे की कामना रखना वह अलग बात है। अभी- अभी किया और अभी-अभी लिया तो जमा कुछ नहीं होता है, कमाया और खाया। उसमें विल-पावर नहीं रहती। वह अन्दर से सदैव कमजोर रहेंगे, शक्तिशाली नहीं होंगे क्योंकि खाली-खाली हैं ना। भरी हुई चीज पावरफुल होती है। तो मुख्य कारण यह है। इसलिये फल पक कर सामने आवे, वह बहुत कम आते हैं। जब यह बात खत्म हो जावेगी तब निराकारी, निरहंकारी और साथ-साथ निर्विकारी – मन्सा-वाचा-कर्मणा में तीनों सब्जेक्ट दिखाई देंगे। शरीर में होते निराकारी, आत्मिक रूप दिखाई देगा। जैसे साकार में देखा– बुजुर्ग था ना, लेकिन फिर भी शरीर को न देख रूह ही दिखाई देता था, वक्त गायब हो अव्यक्त दिखाई देता था! तो साकार में निराकार स्थिति होने कारण निराकार वा आकार दिखाई देता था। तो ऐसी अवस्था प्रैक्टिकल रहेगी। अब स्वयं भी बार-बार देह-अभिमान में आते हो तो दूसरे को निराकारी वा आकार रूप का साक्षात्कार नहीं होता है। यह तीनों ही होना चाहिए – मन्सा में निराकारी स्टेज, वाचा में निरहंकारी और कर्म में निर्विकारी, ज़रा भी विकार ना हो। तेरा-मेरा, शान-मान – यह भी विकार हैं। अंश भी हुआ तो वंश आ जावेगा। संकल्प में भी विकार का अंश ना हो। जब यह तीनों स्टेज हो जावेंगी तब अपने प्रभाव से जो भी वारिस वा प्रजा निकलनी होगी वह फटाफट जा-जाकार तब होगा जब स्नेह और स्वच्छता के साथ-साथ रूहानियत होगी।निकलेगी। आप लोग अभी जो मेहनत का अविनाशी बीज डाल रहे हो उसका भी फल और कुछ प्रत्यक्ष का प्रभाव -- दोनों इकट्ठे निकलेंगे। फिर क्विक सर्विस दिखाई देगी। तो अब कारण समझा ना? इसका निवारण करना, सिर्फ वर्णन तक ना रखना। फिर क्या हो जावेगा? साक्षात्कारमूर्त हो जावेंगे, तीनों स्टेज प्रत्यक्ष दिखाई देंगी।

25.1.74.. ..जिस प्रकार अपना साकार स्वरूप सदा और सहज स्मृति में रहता है, वैसे ही अपना निजी अनादि और निराकारी स्वरूप भी स्मृति में रहना चाहिये। जैसे साइंस वाले हर वस्तु की गुह्यता में जाते हैं, ऐसे ही अपने निजी स्वरूप और उसके अनादि गुण व संस्कार की गहराई में जाना चाहिए। जैसे मछली बिना पानी के नहीं रह सकती ऐसे ही आप सबकी लगन और आकर्षण अपने निजी स्वरूप के भिन्न-भिन्न अनुभव के सागर से होनी चाहिए। जैसे स्थूल वस्तु अपनी भिन्न-भिन्न रसनाओं का अनुभव कराती है, ऐसे ही आप अपने निजी स्वरूप के हर गुण की रसना का अनुभव अन्य आत्माओं को कराओ।

3.2.74.. .. से बाप-दादा को साकार, आकार और निराकार अनुभव करते हो, क्या वैसे ही अपने को भी बाप-समान साकार होते हुए आकारी और निराकारी सदा अनुभव करते हो? यह अनुभव निरन्तर होने से इस साकारी तन और इस पुरानी दुनिया से स्वत: ही उपराम हो जावेंगे। ऐसे अनुभव करेंगे जैसे कि ऊपर-ऊपर से साक्षी हो इस पुरानी दुनिया को खेल सदृश्य देख रहे हैं। ऐसी पॉवरफुल (powerful; शक्तिशाली) स्टेज अभी सदाकाल की होनी चाहिए। ऐसी स्टेज पर स्थित हुई आत्मा में देखने से ही क्या दिखाई देंगी? लाइट हाउस (light house) और पॉवर हाउस (power house), ऐसी आत्मायें बाप-समान विश्व-कल्याणकारी कहलाई जाती हैं। जो भी सामने आये हरेक लाइट और माइट को प्राप्त करती जाय, क्या ऐसे भण्डार बने हो?

8.7.74.. .. अब तक अष्ट रत्नों के अष्ट शक्ति स्वरूप, संकल्प, बोल और कर्म बाप समान बनने की स्टेज प्राप्त करते जा रहे हैं। ऐसे अष्ट रत्नों से मिलने के लिए ड्रामानुसार बाप से मिलने में विशेष अधिकार प्राप्त नूँधा हुआ है। उन्हों को नम्बर मिलाने की आवश्यकता नहीं क्योंकि उन आत्माओं का कनेक्शन निरन्तर है। यह वायरलेस का कनेक्शन वाइसलेस (निर्विकारी) आत्माओं को ही प्राप्त होता है। संकल्प किया और मिलन हुआ। ऐसे वरदानी बच्चे बहुत कम हैं।

30.6.74.. .. आत्मा को निराकारी व अव्यक्त स्टेज से व्यक्त में लाने का कारण क्या होता है? एक कर्मों का बन्धन, दूसरा सम्बन्ध का बन्धन, तीसरा व्यक्त सृष्टि के पार्ट का बन्धन और देह का बन्धन–चोला तैयार होता है और आत्मा को पुराने से नये में आकर्षित करता है–तो इन सब के बन्धनों को सोचो। स्थापना के पार्ट का जो बन्धन है, वह व्यक्त से अव्यक्त रूप में और ही तीव्र गति से हो रहा है। इस कल्प के अन्दर अब अन्य देह के आकर्षण का बन्धन नहीं, देहधारी बन कर्म-बन्धनों में आने का बन्धन समाप्त कर लिया। जब सर्व-बन्धनों से मुक्त आत्मा बन गई, तो यह व्यक्त देह व व्यक्त देश आत्मा को खींच नहीं सकते। जैसे साइन्स द्वारा भी स्पेस (space) में चले जाते हैं और धरनी के आकर्षण से परे हो जाते हैं, तो धरनी उनको खींच नहीं सकती। ऐसे ही जब तक नये कल्प में, नये जन्म और नई दुनिया में पार्ट बजाने का समय नहीं आया है, तब तक यह आत्मा स्वतन्त्र है और वह व्यक्त-बन्धनों से मुक्त है। समझा?

15.9.74.. .. अभी आप लोगों की स्टेज आकारी चाहिए, क्योंकि आकारी से फिर निराकारी सहज बनेंगे। जैसे बाप भी साकार से आकारी बना, आकारी से फिर निराकारी और फिर साकारी बनेंगे।''

5.12.74.. .. जो पहला-पहला वायदा है कि तुम्हीं से सुनूं और तुम्हीं से बोलूं, यह वायदा निभाने के लिये सारा दिन-रात जब तक अव्यक्त व निराकारी स्थिति में स्थित नहीं होंगे, तो क्या बाप-दादा के साथ-साथ रहने का अनुभव कर सकेंगे अर्थात् वायदा निभा सकेंगे? सारे दिन में आप कितना समय, यह वायदा निभाते हो? जिससे मिलना होता है, उसके स्थान पर और वैसी स्थिति, स्वयं की बनानी होती है। वह स्थान और स्थिति ये दोनों ही

बदलनी पड़ेगी, तब ही यह वायदा निभा सकते हो। व्यक्त भाव में आना व कोई भी व्यक्त व वस्तु में भावना रहना कि यह प्रिय है व अच्छी है, यह व्यक्त-वस्तु और व्यक्ति में भावना रहना अर्थात् कामना का रूप हो जाता है। जब तक कामना है, तब तक माया से सम्पूर्ण रीति सामना नहीं कर सकते। जब तक सामना नहीं कर सकते, तब तक समान नहीं बन सकते अर्थात् वायदा नहीं निभा सकते। जैसे आप लोग चित्र में कृष्ण को सृष्टि के ग्लोब पर दिखाते हो–ऐसा ही चित्र अपनी प्रैक्टिकल स्थिति का बनाओ। इस व्यक्त देश व इस पुरानी दुनिया से उपराम। व्यक्त भाव और व्यक्त वस्तुओं आदि सबसे उपराम अर्थात् इनके ऊपर साक्षी होकर खड़े रहें। जैसे पाँव के नीचे ग्लोब दिखाते हैं व ग्लोब के ऊपर बैठा हुआ दिखाते हैं अर्थात् उनका मालिकपन व अधिकारीपन दिखाते हैं तो ऐसे अपना चित्र बनाओ। इस पुरानी दुनिया में, जैसे अपनी स्व-इच्छा से, अपने रचे हुए संकल्प के आधार से अव्यक्त से व्यक्त में आते, व्यक्ति व वस्तुओं के आकर्षण के अधीन होकर नहीं।

अपने को निराकारी स्थिति व अव्यक्त स्थिति में स्थित तो करते हो, लेकिन जितना समय स्थित रहना चाहते हो, उतना समय उस स्थिति में स्थित नहीं हो पाते हो। स्टेज के अनुभव भी प्राप्त करते हो, मेहनत भी करते हो, लेकिन काल पर विजय नहीं कर पाते हो। इसका कारण क्या है? इसका कारण यह है कि बार-बार सारे दिन में समय गँवाने के अभ्यासी हो। व्यर्थ के ऊपर अटेन्शन देने से ही काल पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनेंगे। जब तक समय व्यर्थ जाता है, तब तक विजय पाने में समर्थ नहीं बन सकते। इसी कारण, जो मिलन का अनुभव करना चाहते हो व निरन्तर वायदा निभाना चाहते हो वह निभा नहीं सकते। तो अब, अपनी तकदीर की तस्वीर सर्व-तत्वों पर और काल पर सदा विजयी की बनाओ। जब एक-एक सेकेण्ड, व्यर्थ से समर्थ में चेन्ज करो, तब ही विजयी बनेंगे, अच्छा।

9.1.75.. .. जितना साकारी रूप में स्थित होना सहज अनुभव होता है, उतना ही आकारी स्वरूप अर्थात् अपनी सम्पूर्ण स्टेज में और उतना ही अपनी निराकारी, अनादि स्टेज में स्थित होना सहज अनुभव होना चाहिए।

16.1.75.. .. इस वर्ष में अपनी लास्ट स्टेज, सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, कर्मातीत अवस्था, न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स सदा ठीक रहे। ऐसी निराकारी स्टेज संगठन रूप में बनाओ। तब विनाश के नजारे और साथ-साथ नई दुनिया के नजारे स्पष्ट दिखाई देंगे। सबको इस वर्ष यह पुरुषार्थ करना है। इस लास्ट पुरुषार्थ से ही स्वयं की और विनाश की गति फास्ट होगी।

इस नये वर्ष का विशेष पुरुषार्थ यही होना चाहिये कि वापिस घर जाना है और सब को साथ ले जाना है। इस स्मृति से प्रकृति के सभी आकर्षणों से तथा सभी सम्बन्धों से उपराम हो जायेगे और साक्षी एवं निराकारी बन जायेगे।

29.1.75.. .. सफ़लतामूर्त के सामने प्रकृति व परिस्थिति भी दासी बन जाती है। अर्थात् वे प्रकृति और परिस्थिति के ऊपर सदा विजयी बनते हैं। वे प्रकृति व परिस्थिति के वशीभूत नहीं होते। ऐसे विजयी को ही सदा सफ़लता-

मूर्त कहा जाता है। इसके लिए तीन स्वरूप से बाप की बात याद रखो। तीनों स्वरूप अर्थात् निराकार, आकार और साकार। जैसे तीन सम्बन्धों में सत्-बाप, सत्-शिक्षक और सद्-गुरु की शिक्षायें स्मृति में रखते हो, वैसे ही तीन स्वरूपों से तीन मुख्य बातें स्मृति में रखो। इन तीन स्वरूपों से विशेष तीन वरदान कौन-से हैं? निराकारी स्वरूप की मुख्य शिक्षा का वरदान कौन-सा है? कर्मातीत भव। आकारी स्वरूप अथवा फरिश्तेपन का वरदान कौनसा है? डबल-लाइट भव! डबल लाइट अर्थात् सर्व कर्म-बन्धनों से हल्के और लाइट अर्थात् सदा प्रकाश-स्वरूप में स्थित रहने वाले। तो आकारी स्वरूप का विशेष वरदान है-डबल लाइट भव! इससे ही डबल ताजधारी भी बनेंगे। साकार स्वरूप का विशेष वरदान कौन-सा है? साकार स्वरूप का विशेष वरदान है – साकार समान निरहंकारी और निर्विकारी भव! ये तीन वरदान सदा स्मृति में रखने से सदा के लिये सहज ही सफ़लता-मूर्त बन जायेगे। समझा?

20.9.75.. .. निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति – निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी और निर्विकल्पता की चाहिए। अगर इन चारों में से किसी भी बात की कमी रह जाती है, तो यह श्रेष्ठ धारणा न होने के कारण स्पष्टता नहीं होती है। श्रेष्ठ ही स्पष्ट होते हैं। यही उलझन बुद्धि को स्वच्छ नहीं बनने देती। 'स्वच्छता ही श्रेष्ठता' है। इसलिए अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। तब ही बाप के समान सर्व-गुणों में मास्टर सागर अनुभव कर सकेंगे।

15.10.75.. .. आत्मा की जो श्रेष्ठ व महान् स्टेज है – सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पन्न, मर्यादा पुरुषोत्तम और सम्पूर्ण अहिंसक – इस महानता को कहाँ तक जीवन में लाया है? गुण सम्पन्न अवस्था का केवल गायन ही है और सर्वगुण सम्पन्न की अवस्था में यदि एक भी गुण की कमी है तो उन्हें फुल महिमा के योग्य नहीं कहेगे। तो अपने आप को चेक करो कि सर्व गुणों में से कितने गुणों में और कितने परसेन्टेज में स्वयं में गुणों की कमी है।

सम्पूर्ण निर्विकारी अर्थात् सर्व विकार सर्व वंश-सहित, अंश-मात्र भी अर्थात् संकल्प व स्वप्न-मात्र में भी न हो। उसको कहते हैं सम्पूर्ण निर्विकारी।

24.10.75.. .. मेरा-पन समाप्त होना अर्थात् विकारों से मुक्त, निर्विकारी अर्थात् पवित्र बनना है जिससे प्रवृत्ति भी पवित्र-प्रवृत्ति बन जाती है। विकारों का नष्ट होना अर्थात् श्रेष्ठ बनना है। तो क्या ऐसे अपने को विकारों को नष्ट करने वाली श्रेष्ठ आत्मा समझते हो?

24.10.75.. .. मेरा-पन समाप्त होना अर्थात् विकारों से मुक्त, निर्विकारी अर्थात् पवित्र बनना है जिससे प्रवृत्ति भी पवित्र-प्रवृत्ति बन जाती है। विकारों का नष्ट होना अर्थात् श्रेष्ठ बनना है। तो क्या ऐसे अपने को विकारों को नष्ट करने वाली श्रेष्ठ आत्मा समझते हो?

27.1.76.. .. श्रेष्ठ स्टेज प्राप्त करने के लिए सदैव दो बातें याद रखो। एक – स्वयं को अकालमूर्त समझो, दूसरे – स्वयं को सदा 'त्रिकालदर्शी-मूर्त' समझो। निराकारी स्टेज में – अकालतख्त-नशीन, अकालमूर्त हैं; साकार कर्मयोगी की स्टेज में – त्रिकालदर्शी मूर्त त्रिमूर्ति बाप के तख्त-नशीन। हर संकल्प को स्वरूप में लाने से पहले यह दोनों बातें चेक करो। निराकारी और साकारी दोनों स्वरूप में हैं? इस स्मृति से स्वत: ही समर्थी-स्वरूप बन जायेंगे अर्थात् हेल्थ, वेल्थ और हैप्पीनेस का अनुभव हर समय होगा। चाहे शरीर का कर्मभोग सूली से कितना भी बड़े रूप में हो लेकिन सदा अपने को साक्षी समझने से कर्मभोग के वश नहीं होंगे। हर कर्मभोग सूली से कांटे-समान अनुभव होगा। भविष्य जन्म-जन्मान्तर कर्मभोग से मुक्त होने की खुशी इस कर्मभोग को चुक्ता करने के लिये औषधि का रूप बन जाती है। खुशी दवाई की खुराक बन जाती है।

9.1.75.. .. जितना साकारी रूप में स्थित होना सहज अनुभव होता है, उतना ही आकारी स्वरूप अर्थात् अपनी सम्पूर्ण स्टेज में और उतना ही अपनी निराकारी, अनादि स्टेज में स्थित होना सहज अनुभव होना चाहिए।

16.1.75.. .. इस वर्ष में अपनी लास्ट स्टेज, सर्व कर्म-बन्धनों से मुक्त, कर्मातीत अवस्था, न्यारे और प्यारेपन का बैलेन्स सदा ठीक रहे। ऐसी निराकारी स्टेज संगठन रूप में बनाओ। तब विनाश के नजारे और साथ-साथ नई दुनिया के नजारे स्पष्ट दिखाई देंगे। सबको इस वर्ष यह पुरुषार्थ करना है। इस लास्ट पुरुषार्थ से ही स्वयं की और विनाश की गति फास्ट होगी।

इस नये वर्ष का विशेष पुरुषार्थ यही होना चाहिये कि वापिस घर जाना है और सब को साथ ले जाना है। इस स्मृति से प्रकृति के सभी आकर्षणों से तथा सभी सम्बन्धों से उपराम हो जायेगे और साक्षी एवं निराकारी बन जायेगे।

29.1.75.. .. सफ़लतामूर्त के सामने प्रकृति व परिस्थिति भी दासी बन जाती है। अर्थात् वे प्रकृति और परिस्थिति के ऊपर सदा विजयी बनते हैं। वे प्रकृति व परिस्थिति के वशीभूत नहीं होते। ऐसे विजयी को ही सदा सफ़लता-मूर्त कहा जाता है। इसके लिए तीन स्वरूप से बाप की बात याद रखो। तीनों स्वरूप अर्थात् निराकार, आकार और साकार। जैसे तीन सम्बन्धों में सत्-बाप, सत्-शिक्षक और सद्-गुरु की शिक्षायें स्मृति में रखते हो, वैसे ही तीन स्वरूपों से तीन मुख्य बातें स्मृति में रखो। इन तीन स्वरूपों से विशेष तीन वरदान कौन-से हैं? निराकारी स्वरूप की मुख्य शिक्षा का वरदान कौन-सा है? कर्मातीत भव। आकारी स्वरूप अथवा फरिश्तेपन का वरदान कौनसा है? डबल-लाइट भव! डबल लाइट अर्थात् सर्व कर्म-बन्धनों से हल्के और लाइट अर्थात् सदा प्रकाश-स्वरूप में स्थित रहने वाले। तो आकारी स्वरूप का विशेष वरदान है-डबल लाइट भव! इससे ही डबल ताजधारी भी बनेंगे। साकार स्वरूप का विशेष वरदान कौन-सा है? साकार स्वरूप का विशेष वरदान है – साकार समान निरहंकारी और निर्विकारी भव! ये तीन वरदान सदा स्मृति में रखने से सदा के लिये सहज ही सफ़लता-मूर्त बन जायेगे। समझा?

20.9.75.. .. निर्णय शक्ति को बढ़ाने के लिए अपनी श्रेष्ठ स्थिति – निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी और निर्विकल्पता की चाहिए। अगर इन चारों में से किसी भी बात की कमी रह जाती है, तो यह श्रेष्ठ धारणा न होने के कारण स्पष्टता नहीं होती है। श्रेष्ठ ही स्पष्ट होते हैं। यही उलझन बुद्धि को स्वच्छ नहीं बनने देती। 'स्वच्छता ही श्रेष्ठता' है। इसलिए अपनी निर्णय शक्ति को बढ़ाओ। तब ही बाप के समान सर्व-गुणों में मास्टर सागर अनुभव कर सकेंगे।

6.2.77.. .. राज्य-पद के संस्कार अर्थात् श्रेष्ठ पद के संस्कार क्या दिखाई देंगे? 'अधिकारी और सत्कारी, निराकारी और निरहंकारी।' ये विशेष धारणायें राज्य-पद का विशेष आसन है। यह आसन ही सिंहासन की प्राप्ति कराता है। चारों ही बातों का बैलेन्स हो।

16.6.77.. ..कोई पुरुषार्थी की कर्म इन्द्रियों पर विजय हो जाती है अर्थात् कर्मेन्द्रिय जीत बन जाते हैं और कोई-कोई आँख के धोखे में, मुख द्वारा अनेक रस लेने के धोखे, इसी प्रकार कोई न कोई कर्मइन्द्रिय के धोखे में आ जाते हैं। अर्थात् सम्पूर्ण निर्विकारी, सर्व इन्द्रिय जीत नहीं बन पाते हैं। इसी कारण ऐसे कर्म इन्द्रिय पर हार खाने वाले कमज़ोर पुरुषार्थीयों की, ऊँच ते ऊँच बाप के बच्चे बनने के कारण, ऊँच बाप के संग के कारण, पढ़ाई और पालना के कारण विश्व के अन्दर श्रेष्ठ आत्माएं होने के कारण, आत्मा अर्थात् सालिग्राम रूप में पूजे जाते हैं। लेकिन सर्व कर्मइन्द्रिय जीत न होने के कारण साकार रूप में देवी और देवता के रूप में पूजा नहीं होती है। सम्पूर्ण पवित्र न बनने के कारण सम्पूर्ण निर्विकारी, महिमा योग्य देवी वा देवता रूप की पूजा नहीं होती है। सदा बाप-दादा के दिलतख्त नशीन न बनने के कारण वा सदा दिल में एक दिल लेने वाले बाप की याद वा सदा दिल पर दिलवाला की याद नहीं रहती। इसलिए भक्त आत्माएं भी अष्ट देव के रूप में दिल में नहीं समाती हैं। निरन्तर याद नहीं तो सदा काल का मन्दिर रूप में यादगार भी नहीं। तो फर्क पड़ गया ना? सिंगल पूजा और डबल पूजा में कितना अन्तर रहा! वह प्रजा का पूजन रूप और वह राज्य पद प्राप्त करने वाले पूजा का रूप। इसमें भी अन्तर है।

शक्तियों का पूजन हर देवी देवता की पूजा के रूप में दिखाया हुआ है तो ऐसे पूज्य, जिन्हों के हर श्रेष्ठ कर्म और शक्तियों का पूजन है उसको कहा जाता है – परम पूज्य। तो सदा अपने को सम्पूर्ण बनाओ। चेक करो कि खण्डित मूर्त्ति हूँ वा पूज्य मूर्त्ति हूँ? गायन है सम्पूर्ण निर्विकारी व 16 कला सम्पन्न। सिर्फ निर्विकारी बने हो या सम्पूर्ण निर्विकारी बने हो? अखंड योग है वा खण्डन होता है? अचल है वा हलचल है? बाप क्या चाहते हैं? हर आत्मा बाप समान सम्पूर्ण बनें। और बच्चे भी चाहते सब हैं, लेकिन करते कोई-कोई हैं, इसलिए नम्बर बन जाते हैं। अच्छा, सुनते तो बहुत हो। सुनना और करना – इनको समान बनाओ। समझा क्या करना है?

25.6.77.. .. बाप समान बनना अर्थात् डबल लाईट बनना। दोनों ही लाईट हैं? वह आकरी रूप में, वह निराकारी रूप में। तो दोनों समान हो ना? समान बनेंगे तो सदा समर्थ और विजयी रहेंगे। समान नहीं तो कभी हार,

कभी जीत, इसी हलचल में होंगे। अचल बनने का साधन है समान बनना। चलते-फिरते सदैव अपने को निराकारी आत्मा या कर्म करते अव्यक्त फरिश्ता समझो। तो सदा ऊपर रहेंगे, उड़ते रहेंगे खुशी में।

7.12.78.. .. जैसे साकार स्वरूप अपना अनुभव होता है, स्थित होना नैचुरल अनुभव करते हो – ऐसे अपने अनादि निराकारी स्वरूप में, जो सदा एक अविनाशी है उस सदा एक अविनाशी स्वरूप में स्थित होना भी नैचुरल हो। संकल्प किया और स्थित हुआ – इसी को कहा जाता है बाप समान सम्पूर्ण अवस्था, कर्मातीत अन्तिम स्टेज।

21.12.78.. .. अपने निजस्वरूप और निजधाम की स्थिति सदा याद रहती है? निराकारी दुनिया और निराकारी रूप दोनों की स्मृति इस पुरानी दुनिया में रहते भी सदा न्यारा और प्यारा बना देती है। इस दुनिया के हैं ही नहीं। हैं ही निराकारी दुनिया के निवासी, यहाँ सेवा अर्थ अवतरित हुए हैं - तो जो अवतार होते हैं उन्हों को क्या याद रहता है? जिस कार्य अर्थ अवतार लेते हैं वही कार्य याद रहता है ना! अवतार अवतरित होते ही हैं धर्म की स्थापना के लिए – तो आप सभी भी अवतरित अर्थात् अवतार हो तो क्या याद रहता है? यही धर्म स्थापन करने का कार्य। स्वयं धर्म आत्मा बन धर्म स्थापन करने के कार्य में सदा रहने वाले, तो शक्ति अवतार हो ना!

10.1.79.. .. अभी-अभी आकारी फरिश्ता बन आकारी वतनवासी अव्यक्त रूप का अनुभव करना – अभी-अभी निराकारी बन मूल वतनवासी का अनुभव करना, अभी-अभी अपने राज्य स्वर्ग अर्थात् वैकुण्ठवासी बन देवता रूप का अनुभव करना। ऐसे बुद्धि की एक्सरसाइज़ करो तो सदा हल्के हो जावेंगे। भारीपन खत्म हो जावेगा। पुरुषार्थ की गति तीव्र हो जावेगी। सहारा लेने की आवश्यकता नहीं होगी। सदा बाप के सहारे अर्थात् छत्रछाया के नीचे अनुभव करेंगे। दौड़ लगाने के बजाए हाईजम्प वाले हो जावेंगे।

25.1.79.... पढ़ाई की सर्व सबजेक्ट में फुल अटैन्शन देना – सतगुरू के सम्बन्ध में रिगार्ड रखना – अर्थात् सतगुरु की आज्ञा देह सहित देह के सर्व सम्बन्ध भूलकर देही स्वरूप अर्थात् सतगुरू के समान निराकारी स्थिति में स्थिति रहना। सदा वापस घर जाने के लिए एवररेडी रहना।

28.11.79.. .. जैसे बाप निराकार से आकारी वस्त्र धारण करते हैं। आकारी और निराकारी बाप-दादा बन जाते हैं – आप भी आकारी फ़रिश्ता ड्रेस पहन कर आओ। चमकीली ड्रेस पहन कर आओ, तब मिलन होगा। ड्रेस पहनना नहीं आता है क्या? ड्रेस पहनो और पहुँच जाओ यह ऐसी ड्रेस है जो माया के वाटर या फ़ायर प्रूफ है। इस पुरानी दुनिया के वृत्ति और वायब्रेशन प्रूफ है। इतनी बढ़िया ड्रेस आपको दी है फिर वह एप्वाइंटमेंट के टाइम पर भी नहीं पहनते। पुरानी ड्रेस से ज़्यादा प्रीत है क्या? जब दोनों समान चमकीली ड्रेस वाले होंगे और चमकीले वतन में होंगे तब अच्छा लगेगा। एक पुरानी ड्रेस वाला और एक चमकीली ड्रेस वाला, जोड़ी मिल नहीं सकती, इस लिए अनुभव नहीं होता। पुराने वायब्रेशन्स इन्टरफियर कर देते हैं। इसलिए आपसी रुह-रुहान का रेसपान्स नहीं मिलता है। क्लीयर समझ में नहीं आता। इसलिए औरों का अल्पकाल का सहारा लेना पड़ता है।

24.12.79.. .. अपने फुल स्टाप की स्टेज से प्रकृति की हलचल को स्टाप करो। तमोगुणी से सतोगुणी स्टेज में परिवर्तन करो। ऐसा अभ्यास है? ऐस समय का आह्वान कर रहे हो ना? समेटने की शक्ति बहुत अपने पास जमा करो। इसके लिए विशेष अभ्यास चाहिए। अभी-अभी साकारी, अभी-अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी। इन तीनों स्टेंजेस में स्थित रहना इतना सहज हो जाए। जैसे साकार रूप में सहज ही स्थित हो जाते हो वैसे आकारी और निराकारी स्थिति भी मेरी स्थिति है, तो अपनी स्थिति में स्थित होना तो सहज होना चाहिए।

18.3.81.. .. बापदादा सामने एग्जाम्पल हैं। निराकारी रूप में और साकार रूप में दोनों ही रूप में बाप को देख फालो करते चलो। वैसे भी कहावत है जैसा बाप वैसे बच्चे और सन शोज फ़ादर भी गाया हुआ है। बाप और बच्चे का सम्बन्ध ही है फालो फादर करने का।

24-10-81.. .. माशूक कहते हैं – हल्के बन जाओ। तो क्या करते हैं? हल्के होने का साधन जो एक्सरसाइज है, वह करते नहीं। तो हल्के कैसे बने? रूहानी एक्सरसाइज तो जानते हो ना! अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी अव्यक्त फ़रिश्ता, अभी-अभी साकारी कर्मयोगी। अभी-अभी विश्व सेवाधारी। सेकेण्ड में स्वरूप बन जाना, यह है रूहानी एक्सरसाइज। और कौन-सा बोझ अपने ऊपर रखते हैं? वेस्ट की वेट बहुत है इसलिए हल्के नहीं हो सकते। कोई समय के वेस्ट के वेट में है, कोई संकल्पों के और कोई शक्तियों को वेस्ट करते हैं। कोई सम्बन्ध और सम्पर्क वेस्ट अर्थात् व्यर्थ बना लेते हैं। ऐसे भिन्न-भिन्न प्रकार के वेट बढ़ने के कारण माशूक समान डबल लाइट बन नहीं सकते। सच्चे आशिक की निशानी है – ''माशूक के समान'' अर्थात् माशूक जो है, जैसा है वैसे समान बनना। तो सभी कौन हो? आशिक तो हो ही लेकिन माशूक समान आशिक हो? समानता ही समीपता लाती है! समानता नही तो समीप भी नहीं हो सकते। गायन भी करते हैं कि 16 हज़ार पटरानियाँ थीं। 16 हजार में भी नम्बर तो होंगें ना! एक माशूक के इतने आशिक दिखाये तो हैं लेकिन अर्थ नहीं समझते हैं। रूहानियत को भूल गये हैं। तो आज रूहानी माशूक, आशिकों को कहते हैं – ''समान बनो'' अर्थात् समीप बनो।
22.10.81.. .. जो कमज़ोर आत्मा है, अप्राप्त आत्मा है, किसी-न-किसी बात के वशीभूत आत्मा है – ऐसी आत्मायें दया वा कृपा की इच्छा रखती हैं वा उनकी इच्छा न भी हो तो आप दाता के बच्चे उन आत्माओं को शुभ-इच्छा से देने वाले हो। सारे दिन में जिन भी आत्माओं के सम्पर्क में आते हो, चाहे ज्ञानी, चाहे अज्ञानी, सबके प्रति सदा यही दृष्टि रहती है वा दूसरी-दूसरी दृष्टि भी रहती है? जिसमें दया भाव होगा वह सदा निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी होगा। मंसा निराकारी, वाचा निर्विकारी, कर्मणा निरअहंकारी। इसको कहा जाता है दयालु और कृपालु आत्मा। तो, हे दया से भरपूर भण्डार आत्मायें, समय पर किसी आत्मा के प्रति दया भाव की अंचली भी नहीं दे सकते हो? भरपूर भण्डार से अंचली दे दो तो सारे ब्राह्मण परिवार की समस्यायें ही समाप्त हो जाएं।

3.4.82.. .. इस पुराने शरीर में ऐसे ही निवास करो जैसे बापदादा पुराने शरीर का आधार लेते हैं लेकिन शरीर में फँस नहीं जाते हैं। कर्म के लिए आधार लिया और फिर अपने फ़रिश्ते स्वरूप में स्थित हो जाओ। अपने

निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। न्यारेपन की ऊपर की ऊँची स्थिति से नीचे साकार कर्मेन्द्रियों द्वारा कर्म करने लिए आओ, इसको कहा जाता है – 'मेहमान अर्थात् महान'। ऐसे रहते हो? त्याग का पहला कदम पूरा किया है?

28.4.82.. .. सर्वंश त्यागी बच्चों की विशेषता क्या है, जिन विशेषताओं के आधार पर समीप वा समान बनते हैं? साकार तन द्वारा भी लास्ट बोल में तीन विशेषतायें सुनाई थीं: – 1. संकल्प में सदा निराकारी सो साकारी, सदा न्यारी और बाप की प्यारी आत्मायें। 2. वाणी में सदा निरअहंकारी अर्थात् सदा रूहानी मधुरता और निर्मानता। 3. कर्म में हर कर्मेन्द्रिय द्वारा निर्विकारी अर्थात् प्युरिटी की पर्सनैलिटी वाली।

6.1.83.... डबल विदेशी बच्चों को वैसे भी छुट्टी के दिनों में कहाँ दूर जाकर एक्जरशन करने की आदत हैं। तो बापदादा भी डबल विदेशी बच्चों को विशेष निमंत्रण दे रहे हैं। जब भी फ्री हो तो वतन में आ जाओ। सागर के किनारे मिट्टी में नहीं जाओ। ज्ञान सागर के किनारे आ जाओ। बिगर खर्चे के बहुत प्राप्ति हो जायेगी। सूर्य की किरणें भी लेना, चन्द्रमा की चाँदनी भी लेना, पिकनिक भी करना और खेल कूद भी करना। लेकिन बुद्धि रूपी विमान में आना पड़ेगा। सबका बुद्धि रूपी विमान एवररेडी है ना। संकल्प रूपी स्विच स्टार्ट किया और पहुँचे। विमान तो सबके पास रेडी है ना कि कभी-कभी स्टार्ट नहीं होता है वा पेट्रोल कम होता आधा में लौट आते। वैसे तो सेकण्ड में पहुँचने की बात है। सिर्फ डबल रिफाइन पेट्रोल की आवश्यकता है। डबल रिफाइण्ड पेट्रोल कौन सा है? एक है निराकारी निश्चय का नशा कि मैं आत्मा हूँ, बाप का बच्चा हूँ। दूसरा है साकार रूप में सर्व सम्बन्धों का नशा। सिर्फ बाप और बच्चे के सम्बन्ध का नशा नहीं किन प्रवृत्ति मार्ग पवित्र परिवार है। तो बाप से सर्व सम्बन्धों के रस का नशा साकार रूप में चलते फिरते अनुभव हो। यह नशा और खुशी निरंतर सहज योगी बना देती है। इसलिए निराकारी और साकारी डबल रिफाइण्ड साधन की आवश्यकता है।

25.5.83.. ..सदा न्यारे और सदा बाप के प्यारे। न किसी व्यक्ति के, न किसी हद के प्राप्ति के प्यारे बनना। ज्ञानी तू आत्मा के आगे यह हद की प्राप्तियाँ ही सोने हिरण के रूप में आती हैं। इसलिए, हे आदि रत्नो, आदि पिता समान 'सदा निराकारी, निर्विकारी, निरअहंकारी रहना'। समझा। अच्छा

मेहनत करना ठीक लगता या मालिक बनना ठीक लगता? क्या अच्छा लगता है? सुनाया ना – इसके लिए सिर्फ़ यह एक अभ्यास सदा करते रहो –''निराकार सो साकार के आधार से यह कार्य कर रहा हूँ।'' करावनहार बन कर्मेन्द्रियों से कराओ। अपने निराकारी वास्तविक स्वरूप को स्मृति में रखेंगे तो वास्तविक स्वरूप के गुण शक्तियाँ स्वत: ही इमर्ज होंगे।

21.2.85.. .. ऐसे ही विकारों की आग के अंश मात्र से बचने का साधन है – अपने आदि-अनादि वंश को याद करो। अनादि बाप के वंश सम्पूर्ण सतोप्रधान आत्मा हूँ। आदि वंश-देव आत्मा हूँ। देव आत्मा 16 कला सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी है। तो अनादि-आदि वंश को याद करो तो विकारों का अंश भी समाप्त हो जायेगा।

15.3.85.. .. निर्वाण स्थिति निर्विकल्प स्थिति है। निर्वाण स्थिति निर्विकारी स्थिति है। निर्वाण स्थिति सदा निराकारी सो साकार स्वरूपधारी बन वाणी में आते हैं। साकार में आते भी निराकारी स्वरूप की स्मृति, स्मृति में रहती है। मैं निराकार, साकार आधार से बोल रहा हूँ। साकार में भी निराकार स्थिति स्मृति में रहे – इसको कहते हैं निराकार सो साकार द्वारा वाणी में, कर्म में आना। असली स्वरूप निराकार है, साकार आधार है। यह डबल स्मृति – 'निराकार सो साकार' शक्तिशाली स्थिति है।

15.3.85.. ..निर्वाण स्थिति सदा निराकारी सो साकार स्वरूपधारी बन वाणी में आते हैं। साकार में आते भी निराकारी स्वरूप की स्मृति, स्मृति में रहती है। मैं निराकार, साकार आधार से बोल रहा हूँ। साकार में भी निराकार स्थिति स्मृति में रहे – इसको कहते हैं निराकार सो साकार द्वारा वाणी में, कर्म में आना। असली स्वरूप निराकार है, साकार आधार है। यह डबल स्मृति – 'निराकार सो साकार' शक्तिशाली स्थिति है। साकार आधार ले निराकार स्वरूप को भूलो नहीं। भूलते हो इसलिए याद करने की मेहनत करनी पड़ती है। जैसे लौकिक जीवन में अपना शारीरिक स्वरूप स्वत: ही सदा याद रहता है कि मैं फ़लाना वा फ़लानी इस समय यह कार्य कर रही हूँ या कर रहा हूँ। कार्य बदलता है लेकिन मैं फ़लाना हूँ यह नहीं बदलता, न भूलता है। ऐसे, मैं निराकार आत्मा हूँ, यह असली स्वरूप कोई भी कार्य करते स्वत: और सदा याद रहना चाहिए। जब एक बार स्मृति आ गई, परिचय भी मिल गया – मैं निराकार आत्मा हूँ। परिचय अर्थात् नालेज। तो नालेज की शक्ति द्वारा स्वरूप को जान लिया। जानने के बाद फ़िर भूल कैसे सकते? जैसे नालेज की शक्ति से शरीर का भान भुलाते भी भूल नहीं सकते। तो यह आत्मिक स्वरूप भूल कैसे सकेंगे? तो यह अपने आपसे पूछो और अभ्यास करो। चलते-फ़िरते कार्य करते चेक करो – निराकार सो साकार आधार से यह कार्य कर रहा हूँ! तो स्वत: ही निर्विकल्प स्थिति, निराकारी स्थिति, निर्विघ्न स्थिति सहज रहेगी। मेहनत से छूट जायेंगे।

15.3.85.. .. जैसे नालेज की शक्ति से शरीर का भान भुलाते भी भूल नहीं सकते। तो यह आत्मिक स्वरूप भूल कैसे सकेंगे? तो यह अपने आपसे पूछो और अभ्यास करो। चलते-फ़िरते कार्य करते चेक करो – निराकार सो साकार आधार से यह कार्य कर रहा हूँ! तो स्वत: ही निर्विकल्प स्थिति, निराकारी स्थिति, निर्विघ्न स्थिति सहज रहेगी। मेहनत से छूट जायेंगे।

18.11.85.. ..भाग्यवान आत्मा जितना ही भाग्य अधिकारी उतना ही त्यागधारी आत्मा होती है। भाग्य की निशानी त्याग है। त्याग भाग्य को स्पष्ट करता है। भाग्यवान आत्मा, सदा भगवान समान निराकारी, निरअहंकारी

और निर्विकारी, इन तीनों विशेषताओं से भरपूर होती है। यह सब निशानियाँ अपने में अनुभव करते हो? भाग्यवान की लिस्ट में तो हो ही ना! लेकिन यथाशक्ति हो वा सर्वशक्तिवान हो? मास्टर तो हो ना? बाप की महिमा में कभी यथा शक्ति वा नम्बरवार नहीं कहा जाता, सदा सर्वशक्तिवान कहते हैं। मास्टर सर्वशक्तिवान फिर यथाशक्ति क्यों? सदा शक्तिवान। यथा शब्द को बदल सदा शक्तिवान बनो और बनाओ। समझा।

9.12.85.. .. तुम ब्राह्मण बच्चे भी बालक बनते हो तब ही अभी भी बेफ़िकर बादशाह बनते हो और भविष्य में विश्व के मालिक या बादशाह बनते हो। ''बालक सो मालिक हूँ'' यह स्मृति सदा निर-अंहकारी, निराकारी स्थिति का अनुभव कराती है। बालक बनना अर्थात् हद के जीवन का परिवर्तन होना।

1.3.86.. ..सेवा में निमित्त भाव ही सेवा की सफलता का आधार है। बापदादा तीन शब्द कहते हैं ना, जो साकार द्वारा भी लास्ट में उच्चारण किये। 'निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी'। यह तीनों विशेषतायें निमित्त भाव से स्वत: ही आती हैं। निमित्त भाव नहीं तो इन तीनों विशेषताओं का अनुभव नहीं होता।

25.03.86.. .. यह संगमयुग होली जीवन का युग है। तो रंग में रंग गये अर्थात् अविनाशी रंग लग गया। जो मिटाने की आवश्यकता नहीं। सदाकाल के लिए बाप समान बन गये। संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत निराकारी स्थिति का अनुभव करते हो और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का समान अनुभव करते हो। तो आपकी होली है 'संग के रंग' में बाप समान बनना। यह संगमयुग होली जीवन का युग है। तो रंग में रंग गये अर्थात् अविनाशी रंग लग गया। जो मिटाने की आवश्यकता नहीं। सदाकाल के लिए बाप समान बन गये। संगमयुग पर निराकार बाप समान कर्मातीत निराकारी स्थिति का अनुभव करते हो और 21 जन्म ब्रह्मा बाप समान सर्वगुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी श्रेष्ठ जीवन का समान अनुभव करते हो। तो आपकी होली है 'संग के रंग' में बाप समान बनना।

18.1.87.. .. अभी बापदादा क्या चाहते हैं? वरदान तो मिला, अब इस वर्ष बहुतकाल बन्धनमुक्त अर्थात् बाप समान कर्मातीत स्थिति का विशेष अभ्यास करते दुनिया को न्यारा और प्यारा-पन का अनुभव कराओ। कभी-कभी अनुभव करना – अभी इस विधि को बदल बहुतकाल के अनुभूतियों का प्रत्यक्ष बहुतकाल अचल, अडोल, निर्विघ्न, निर्बन्धन, निर्विकल्प, निर्विकर्म अर्थात् निराकारी, निर्विकारी, निरंहकारी – इसी स्थिति को दुनिया के आगे प्रत्यक्ष रूप में लाओ। इसको कहते हैं बाप समान बनना। समझा?

21.10.87.. .. दीपमाला अविनाशी, अनेक जगे हुए दीपकों का यादगार है। तो अपना दिन मना रहे हो। एक तरफ़ चैतन्य दीपक के रूप में जगमगाते हुए विश्व को दिव्य रोशनी दे रहे हो, दूसरे तरफ़ अपना यादगार भी देख रहे हो। देख-देख हर्षित होते हो ना? यह दीपकों के रूप में क्यों दिखाया है? क्योंकि आप चमकती हुई आत्मायें दीपक की लौ मिसल दिखाई देती, इसलिए चमकती हुई आत्मायें, दिव्य ज्योति का यादगार रूप है। एक तरफ़

निराकारी आत्मा के रूप का यादगार रूप है, दूसरी तरफ़ आप ही के भविष्य साकार दिव्य स्वरूप लक्ष्मी के रूप में यादगार है। यही दीपमाला देव-पद प्राप्त करती है। इसलिए, निराकार और साकार - दोनों रूपों का साथ-साथ यादगार है।

23.11.89.. ..बाप तो निराकार और आकार है, इसलिए सेवा साथी है। और तो कुछ नहीं है। क्योंकि निराकारी, आकारी मिलन मनाने के लिए स्वयं को भी आकारी, निराकारी स्थिति में स्थित होना पड़ता है। वह कभी-कभी मुश्किल लगता है। इसलिए समय के लिए साकार साथी चाहिए। जब दिमाग में बहुत बातें भर जायेंगी तो क्या करेंगे? सुनने वाला तो चाहिए ना! एकव्रता आत्मा के पास ऐसी बोझ की बातें इकट्ठी नहीं होतीं जो सुनानी पड़ें। एक तरफ़ बाप को बहुत ख़ुश करते हो – बस, आप ही सदैव मेरे साथ रहते हो, सदा बाप मेरे साथ है, साथी है। फ़िर उस समय कहाँ चला जाता है? बाप चला जाता या आप किनारे हो जाते हो? हर समय साथ है वा 6-8 घण्टा साथ है। वायदा क्या है? साथ है, साथ रहेंगे, साथ चलेंगे, यह वायदा पक्का है ना! ब्रह्मा बाप से तो इतना वायदा है कि सारे चक्र में साथ पार्ट बजायेंगे! जब ऐसा वायदा है, फ़िर भी साकार में कोई विशेष साथी चाहिए? बापदादा के पास सबकी जन्मपत्री रहती है। बाप के आगे तो कहेंगे आप ही साथी हो। जब परिस्थिति आती है फ़िर बाप को ही समझाने लगते कि यह तो होगा ही, इतना तो चाहिए ही.....। इसको एकव्रता कहेंगे? साथी हैं तो सब साथी हैं, कोई विशेष नहीं। इसको कहते हैं – एकव्रता।

13.12.89.. .. सेवा की विशेषता है जो ब्रह्मा बाप ने साकार रूप में अंतिम वरदान रूप में स्मृति दिलाई – 'निराकारी, निर्विकारी और निरअहंकारी'। निराकारी स्थिति में स्थित होने के बिना किसी भी आत्मा को सेवा का फल नहीं दे सकते। क्योंकि आत्मा का तीर आत्मा को लगता है। स्वयं सदा इस स्थिति में स्थित नहीं हैं तो जिनकी सेवा करते वह भी सदा स्मृतिस्वरूप नहीं बन सकते। ऐसे ही निर्विकारी – कोई भी विकार का अंश अन्य आत्मा के शूद्र वंश को परिवर्तन कर ब्राह्मण वंशी नहीं बना सकता। उस आत्मा को भी मेहनत करनी पड़ती है। इसलिए मुहब्बत का फल सदा अनुभव नहीं कर सकते। निरअहंकारी सेवा का अर्थ ही है फलस्वरूप बन झुकना। बिना निर्मान के निर्माण अर्थात् सेवा में सफलता नहीं मिल सकती। तो निराकारी, निर्विकारी, निरअहंकारी – इन तीनों वरदानों को सदा सेवा में प्रैक्टिकल में लाना। इसको कहते हैं – अखण्ड भाग्य की रेखा। अब चारों ही भाग्य की रेखाओं को चेक करो कि अखण्ड हैं या खण्डित हैं, स्पष्ट हैं या अस्पष्ट हैं? कोटो में तो बन गये हैं लेकिन बनना है कोई में भी कोई। जो कोई में कोई होगा वही अब सर्व का माननीय और भविष्य में पूजनीय बनता है। जो अखण्ड भाग्य के लकीरवान हैं उसकी निशानी है- वह अब भी सर्व ब्राह्मण-परिवार का प्यारा होगा। माननीय होने के कारण सर्व की दुआयें, श्रेष्ठ आत्माओं के भाग्य की लकीर को चमकाती रहती। तो अपने आपसे पूछो - मैं कौन? तो सुना, आज क्या देखा!

कोई-कोई टीचर्स भी चाहती हैं - योग में बैठते हैं तो आत्म-अभिमानी होने बदले सेवा याद आती है। लेकिन ऐसा नहीं होना चाहिए। क्योंकि लास्ट समय अगर अशरीरी बनने की बजाए सेवा का भी संकल्प चला तो सेकण्ड के पेपर में फेल हो जायेंगे। उस समय सिवाय बाप के, निराकारी, निर्विकारी, निरहंकारी - और कुछ याद नहीं। ब्रह्मा बाप ने अंतिम स्टेज यही बनाई ना - बिल्कुल निराकारी। सेवा में फिर भी साकार में आ जायेंगे। इसलिए यह अभ्यास करो - जिस समय जो चाहे वह स्थिति हो, नहीं तो धोखा मिल जायेगा। ऐसे नहीं सोचो - सेवा का ही तो संकल्प आया, खराब संकल्प विकल्प तो नहीं आया। लेकिन कण्ट्रोलिंग पावर तो नहीं हुई ना। कण्ट्रोलिंग पावर नहीं तो रूलिंग पावर आ नहीं सकती, फिर रूलर बन नहीं सकेंगे। तो अभ्यास करो। अभी से बहुत काल का अभ्यास चाहिए। इसको हल्का नहीं छोड़ो। तो सुना, टीचर्स को क्या अभ्यास करना है? तब कहेंगे - टीचर्स बाप को फ़ालो करने वाली हैं। सदा ब्रह्मा बाप को सामने रखो और तीन वरदान याद रखो और फ़ालो करो। यह तो सहज है ना। यह अन्तिम वरदान बहुत शक्तिशाली है। इन तीन वरदानों को अगर सदा स्मृति में रखते प्रैक्टिकल में आओ तो बाप के दिलतख्त और राज्य-तख्त के अधिकारी ज़रूर बनेंगे।

13.12.91.. .. लास्ट समय चारों ओर व्यक्तियों का, प्रकृति का जलचल ओर आवाज़ होगा - चिल्लाने का, हिलाने का - यही वायुमण्डल होगा। ऐसे समय पर ही सेकेण्ड में अव्यक्त फरिश्ता सो निराकारी अशरीरी आत्मा हूँ - यह अभ्यास ही विजयी बन-येगा। यह स्मृति सिमरणी अर्थात विजय माला में लायेगी। इसलिए यह अभ्यास अभी से अति आवश्यक है। इसको कहते हैं -प्रकृतिजीत, मायाजीत। मालिक बन चाहे तो मुख का साज़ बजाएं, चाहें तो कानों द्वारा सुनें, अगर नहीं चाहें तो सेकेण्ड में फुलस्टॉप। आधा स्टॉप भी नहीं, फुलस्टॉप। यही है ब्रह्मा बाप के समान बनना।

24.9.92.. .. यह लक्ष्य रखो कि हर कर्म बाप समान हो। ब्रह्मा बाप को फालो करना तो सहज है ना। निराकारी बनना अर्थात् सदा निराकारी स्थिति में स्थित होना। उसके बजाय कर्म में फालो करना उससे सहज है। तो ब्रह्मा बाप तो सहज काम दे रहा है, मुश्किल नहीं। तो सभी लक्ष्य रखो कि मधुबन में जहाँ देखें, जिसको देखें–ब्रह्मा बाप के कर्म दिखाई दें। कर्म में सर्वव्यापी ब्रह्मा कर सकते हो। जहाँ देखें ब्रह्मा समान! हो सकता है ना।

12.11.92.. .. स्व-परिवर्तन का विशेष संस्कार क्या है? जो ब्रह्मा बाप के संस्कार वो बच्चों के संस्कार। तो ब्रह्मा बाप ने अपना संस्कार क्या बनाया, जो साकार शरीर के अन्त में भी याद दिलाया? निराकारी, निर्विकारी, निरअहंकारी–ये हैं ब्रह्मा बाप के अर्थात् ब्राह्मणों के संस्कार। तो ये संस्कार नेचुरल हों। निराकार तो हो ही ना, ये तो निजी स्वरूप है ना। और कितने बार निर्विकारी बने हो! अनेक बार बने हो ना। ब्राह्मण जीवन की विशेषता ही है निरहंकारी। तो ये ब्रह्मा के संस्कार अपने में देखो कि सचमुच ये संस्कार बने हैं? ऐसे नहीं–ये ब्रह्मा के संस्कार हैं, ये मेरे संस्कार हैं। फालो फादर है ना। पूरा फालो करना है ना। तो सदा ये श्रेष्ठ संस्कार सामने रखो। सारे दिन में जो भी कर्म करते हो, तो हर कर्म के समय चेक करो कि तीनों ही संस्कार इमर्ज रूप में हैं? तो बहुत समय के संस्कार सहज बन जायेंगे। यही लक्ष्य है ना! पूरा बनना है तो जल्दी-जल्दी बनो ना। समय आने पर नहीं बनना है, समय के पहले अपने को सम्पन्न बनाना है। समय रचना है और आप मास्टर रचयिता हैं। रचता शक्तिशाली होता है या रचना? तो अभी पूरा ही स्व-परिवर्तन करो। ब्राह्मणों की डिक्शनरी में कब-कब नहीं है। अब। तो ऐसे पक्के ब्राह्मण हो ना।

10.12.92.. .. बाप समान निराकारी और आकारी–इसी स्थिति में स्थित रहने वाली आत्मायें अनुभव करते हो? क्योंकि शिव बाप है निराकारी और ब्रह्मा बाप है आकारी। तो आप सभी भी साकारी होते हुए भी निराकारी और

आकारी अर्थात् अव्यक्त स्थिति में स्थित हो सकते हो। या साकार में ज्यादा आ जाते हो? जैसे साकार में रहना नेचुरल हो गया है, ऐसे ही मैं आकारी फरिश्ता हूँ और निराकारी श्रेष्ठ आत्मा हूँ–यह दोनों स्मृतियां नेचुरल हों। क्योंकि जिससे प्यार होता है, तो प्यार की निशानी है समान बनना। बाप और दादा–निराकारी और आकारी हैं और दोनों से प्यार है तो समान बनना पड़ेगा ना। तो सदैव यह अभ्यास करो कि अभी-अभी आकारी, अभी-अभी निराकारी। साकार में आते भी आकारी और निराकारी स्थिति में जब चाहें तब स्थित हो सकें। जैसे स्थूल कर्मेन्द्रियां आपके कन्ट्रोल में हैं। आंख को वा मुख को बंद करना चाहो तो कर सकते हो। ऐसे मन और बुद्धि को उसी स्थिति में स्थित कर सको जिसमें चाहो। अगर फरिश्ता बनने चाहें तो सेकेण्ड में फरिश्ता बनो–ऐसा अभ्यास है या टाइम लगता है? क्योंकि हलचल जब बढ़ती है तो ऐसे समय पर कौनसी स्थिति बनानी पड़ेगी? आकारी या निराकारी। साकार देहधारी की स्थिति पास होने नहीं देगी, फेल कर देगी। अभी भी देखो–किसी भी हलचल के समय अचल बनने की स्थिति फरिश्ता स्वरूप या आत्म-अभिमानी

स्थिति ही है। यही स्थिति हलचल में अचल बनाने वाली है। तो क्या अभ्यास करना है? आकारी और निराकारी। जब चाहें तब स्थित हो जाएं–इसके लिए सारा दिन अभ्यास करना पड़े, सिर्फ अमृतवेले नहीं। बीच-बीच में यह अभ्यास करो।

26.3.93 बापदादा ने लक्ष्य और लक्षण में अन्तर होने की विशेष एक ही बात देखी। चाहे आकारी फरिश्ता, चाहे निराकारी निरन्तर, नेचुरल नेचर हो जाये–इसका मूल आधार है निरहंकारी बनना। सम्पूर्ण निरहंकारी बनना अर्थात् आकारी-निराकारी सहज बनना।

जब निरहंकारी बन जायेंगे तो आकारी और निराकारी स्थिति से नीचे आने की दिल नहीं होगी। उसी में ही लवलीन अनुभव करेंगे। क्योंकि आपकी ओरीजिनल अनादि स्टेज तो निराकारी है ना। निराकार आत्मा ने इस शरीर में प्रवेश किया है। शरीर ने आत्मा में नहीं प्रवेश किया, आत्मा ने शरीर में प्रवेश किया। तो अनादि ओरीजिनल स्वरूप तो निराकारी है ना।

अहंकार आने का दरवाजा एक शब्द है, वो कौनसा? 'मैं'। तो यह अभ्यास करो–जब भी 'मैं' शब्द आता है तो ओरीजिनल स्वरूप सामने लाओ–'मैं' कौन? मैं आत्मा या फलाना-फलानी? औरों को ज्ञान देते हो ना–'मैं' शब्द ही उड़ाने वाला है, 'मैं' शब्द ही नीचे ले आने वाला है। 'मैं' कहने से ओरीजिनल निराकार स्वरूप याद आ जाये, ये नेचुरल हो जाये तो यह पहला पाठ सहज है ना। तो इसी को चेक करो, आदत डालो–'मैं' सोचा और निराकारी स्वरूप स्मृति में आ जाये। कितनी बार 'मैं' शब्द कहते हो! मैंने यह कहा, 'मैं' यह करूँगी, 'मैं' यह सोचती हूँ.....–अनेक बार 'मैं' शब्द यूज़ करते हो। तो सहज विधि यह है निराकारी वा आकारी बनने की–जब भी 'मैं' शब्द यूज़ करो, फौरन अपना निराकारी ओरीजिनल स्वरूप सामने आये। ये मुश्किल है वा सहज है? फिर तो लक्ष्य और लक्षण समान हुआ ही पड़ा है। सिर्फ यह युक्ति–निरहंकारी बनाने का सहज साधन अपनाकर के देखो। यह देहभान का 'मैं' समाप्त हो जाये।

26.3.93.. .. सभी के दिल में एक ही संकल्प है, उमंग है कि–हम सभी बाप समान साकारी सो आकारी और आकारी सो निराकारी बाप समान बनें। बापदादा सभी के इस लक्ष्य और लक्षण को देख रहे हैं। क्या दिखाई दिया?

बापदादा ने लक्ष्य और लक्षण में अन्तर होने की विशेष एक ही बात देखी। चाहे आकारी फरिश्ता, चाहे निराकारी निरन्तर, नेचुरल नेचर हो जाये–इसका मूल आधार है निरहंकारी बनना। अहंकार अनेक प्रकार का है। सबसे

विशेष कहने में भल एक शब्द 'देह-अभिमान' है लेकिन देह-अभिमान का विस्तार बहुत है। एक है मोटे रूप में देह-अभिमान, जो कई बच्चों में नहीं भी है। चाहे स्वयं की देह, चाहे औरों की देह–अगर औरों की देह का भी आकर्षण है, वो भी देह-अभिमान है। कई बच्चे इस मोटे रूप में पास हैं, मोटे रूप से देह के आकार में लगाव वा अभिमान नहीं है। परन्तु इसके साथ-साथ देह के सम्बन्ध से अपने संस्कार विशेष हैं, बुद्धि विशेष है, गुण विशेष हैं, कोई कलायें विशेष हैं, कोई शक्ति विशेष है–उसका अभिमान अर्थात् अहंकार, नशा, रोब–ये सूक्ष्म देह-अभिमान है। अगर इन सूक्ष्म अभिमान में से कोई भी अभिमान है तो न आकारी फरिश्ता नेचुरल-निरन्तर बन सकते, न निराकारी बन सकते। क्योंकि आकारी फरिश्ते में भी देहभान नहीं है, डबल लाइट है। देह-अहंकार निराकारी बनने नहीं देगा। सभी ने इस वर्ष अटेन्शन अच्छा रखा है, उमंग-उत्साह भी है, चाहना भी बहुत अच्छी है, चाहते भी हैं लेकिन आगे और अटेन्शन प्लीज! चेक करो–''किसी भी प्रकार का अभिमान वा अहंकार नेचुरल स्वरूप से पुरुषार्थी स्वरूप तो नहीं बना देता है? कोई भी सूक्ष्म अभिमान अंश रूप में भी रहा हुआ तो नहीं है जो समय प्रमाण और कहाँ सेवा प्रमाण भी इमर्ज हो जाता है?'' क्योंकि अंश-मात्र ही समय पर धोखा देने वाला है। इसलिए इस वर्ष में जो लक्ष्य रखा है, बापदादा यही चाहते हैं कि लक्ष्य सम्पन्न होना ही है।

9.3.94.. .. आपके जड़ चित्रों का भी सदा ही निर्विकारी कहकर गायन करते हैं। यह किसकी महिमा करते हैं? आपकी है या भारतवासियों की है? तो प्रैक्टिकल चेतन में बने हैं तब तो महिमा हो रही है। यह पक्का निश्चय है ना कि यह हम ही हैं! तो ब्राह्मण अर्थात् प्योरिटी की रॉयल्टी में रहने वाले। आपके जड़ चित्रों का भी सदा ही निर्विकारी कहकर गायन करते हैं। यह किसकी महिमा करते हैं? आपकी है या भारतवासियों की है? तो प्रैक्टिकल चेतन्य में बने हैं तब तो महिमा हो रही है। यह पक्का निश्चय है ना कि यह हम ही हैं! तो ब्राह्मण अर्थात् प्योरिटी की रॉयल्टी में रहने वाले।

6.3.97.. ..अमृतवेले देखो माया ऐसे झुलाती है जो सूक्ष्मवतन में आने के बजाए, निराकारी दुनिया में आने के बजाए निद्रालोक में चले जाते हैं। कहते हैं योग डबल लाइट बनाता है लेकिन माथा भारी हो जाता है। तो माया भी झूला झुलाती है लेकिन माया के झूले में नहीं झूलना। आधाकल्प तो माया के झूले में खूब झूलकर देखा है ना। क्या मिला? मिला कुछ? थक गये ना! अभी अतीन्द्रिय सुख के झूले में झूलो, खुशी के झूले में झूलो। शक्तियों की अनुभूतियों के झूले में झूलो। इतने झूले आपको मिले हैं जो यहाँ के प्रिन्स-प्रिन्सेज को भी नहीं होंगे। चाहे जिस झूले में झूलो। अभी प्रेम के झूले में झूलो, अभी आनंद के झूले में झूलो। अभी ज्ञान के झूले में झूलो। कितने झूले हैं! अनगिनत। तो झूले से उतरो नहीं।

30.3.98.. .. क्या करूं, कैसे करूं, ऐसे करूं या वैसे करूं... इन सब क्वेश्चन्स का एक शब्द में जवाब है - फालो फादर। साकार कर्म में ब्रह्मा बाप को फालो करो, निराकारी स्थिति में अशरीरी बनने में शिव बाप को फालो करो। दोनों बाप और दादा को फालो करना अर्थात् क्वेश्चन मार्क समाप्त होना वा श्रीमत पर चलना। यह मुश्किल है? पूछने की आवश्यकता पड़ती है क्या? कापी करना है, अपना दिमाग नहीं चलाना है। बाप समान बनना अर्थात् फालो फादर करना।

30.3.99.. .. आप जैसी पवित्र आत्मायें तन से भी, मन से भी देव रूप में सर्व गुण सम्पन्न, सम्पूर्ण निर्विकारी और कोई बनता नहीं है। और फिर हाइएस्ट भी हो, होलीएस्ट भी हो साथ-साथ रिचेस्ट भी हो।

31.7.99.. .. दिव्य-सन्देश .. .. बाबा ने कहा - बच्ची, तुमने सारा सिंहासन ध्यान से देखा। उस सिंहासन में जो चार पाँव थे - उनमें लिखत थी - एक में लिखा था - निराकारी, दूसरे में निर्विकारी, तीसरे में निरहंकारी और चौथे में था निर्विघ्न। जैसे योगी के चार स्तम्भ (नियम) दिखाते हैं, ऐसे ही उसमें निराकारी, निरंहकारी, निर्विकारी और निर्विघ्न लिखा हुआ था। तो बाबा ने कहा कि अगर बच्चों के जीवन में यह चार स्तम्भ पक्के हैं तो बेगमपुर के बादशाह हैं। यदि बच्चे इन चार स्तम्भ के सिहांसन को कभी न छोड़ें तो खुद भी बेगमपुर के बादशाह रहेंगे और दूसरों को भी बनायेंगे।

15.2.2000.. ..ब्रह्मा बाप की विशेषता – निर्णय-शक्ति सदा फास्ट रही। तो बापदादा ने रिज़ल्ट देखी। सबको साथ तो ले ही जाना है। बापदादा के साथ चलने वाले हो ना! या पीछे-पीछे आने वाले हो? जब साथ चलना ही है तो फ़ालो ब्रह्मा बाप। कर्म में फ़ालो ब्रह्मा बाप और स्थिति में निराकारी शिव बाप को फ़ालो करना है। फ़ालो करना आता है ना?

19.3.2000 ...सरल स्वभाव वाले सदा निर्माणचित, निरहंकारी, निर-स्वार्थी होते हैं। होलीहंस की विशेषता – सरल-चित, सरल वाणी, सरल वृत्ति, सरल दृष्टि।

1.1.2002.. .. पहली जनवरी 2000 प्रात: (रात्रि 12.00 बजे के बाद) बापदादा ने सभी बच्चों को नये वर्ष, नई सदी की मुबारक दी सभी ने न्यु ईयर मनाया। चारों ओर के बच्चों को नये वर्ष, नये युग की, नये जीवन की मुबारक हो, मुबारक हो, मुबारक हो! इस नये वर्ष में ब्रह्मा बाप के द्वारा उच्चारे हुए महावाक्य सदा याद रखना - निराकारी, निरंहकारी साथ में नव निर्माणधारी। सदा निर्मान और निर्माण के कर्तव्य का बैलेन्स रखते उड़ते रहना। इस वर्ष में विशेष स्व-परिवर्तन की विशेषता को सामने रखते हुए उड़ते और उड़ाते रहना। सदा ब्रह्मा बाप को हर कदम में फ़ालो फ़ादर करते रहना। तो मुबारक हो, मुबारक हो! पद्मगुणा मुबारक हो!!

18.1.2002.. .. सेकण्ड में साकार स्वरूप में आओ, सेकण्ड में निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बार-बार करो। ऐसे नहीं सिर्फ याद में बैठने के टाइम निराकारी स्टेज में स्थित रहो लेकिन बीच-बीच में समय निकाल इस देहभान से न्यारे निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो। कोई भी कार्य करो, कार्य करते भी यह अभ्यास करो कि मैं निराकार आत्मा इस साकार कर्मेन्द्रियों के आधार से कर्म करा रही हूँ। निराकारी स्थिति करावनहार स्थिति है। कर्मेन्द्रियां करनहार हैं, आत्मा करावनहार है। तो निराकारी आत्म स्थिति से निराकारी बाप स्वत: ही याद आता है। जैसे बाप करावनहार है ऐसे मैं आत्मा भी करावनहार हूँ। इसलिए कर्म के बन्धन में बंधेंगे नहीं, न्यारे रहेंगे क्योंकि कर्म के बन्धन में फंसने से ही समस्यायें आती हैं। सारे दिन में चेक करो - करावनहार आत्मा बन कर्म करा रही हूँ? अच्छा! अभी मुक्ति दिलाने की मशीनरी तीव्र करो।

18.1.2002 ...ब्रह्मा बाप ने आज के दिन तीन शब्दों में शिक्षा दी, (निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी) इन तीन शब्दों के शिक्षा स्वरूप बनो। मनसा में निराकारी, वाचा में निरहंकारी, कर्मणा में निर्विकारी।

18.1.2002.. ..जैसे आज समर्थ दिवस मनाया, ऐसे ही अब हर दिन समर्थ दिवस हो। किसी भी प्रकार की हलचल न हो। जो ब्रह्मा बाप ने आज के दिन तीन शब्दों में शिक्षा दी, (निराकारी, निर्विकारी और निरंहकारी) इन तीन शब्दों के शिक्षा स्वरूप बनो। मनसा में निराकारी, वाचा में निरहंकारी, कर्मणा में निर्विकारी। सेकण्ड में साकार स्वरूप में आओ, सेकण्ड में निराकारी स्वरूप में स्थित हो जाओ। यह अभ्यास सारे दिन में बार-बार

करो। ऐसे नहीं सिर्फ याद में बैठने के टाइम निराकारी स्टेज में स्थित रहो लेकिन बीच-बीच में समय निकाल इस देहभान से न्यारे निराकारी आत्मा स्वरूप में स्थित होने का अभ्यास करो।

3.2.2002 अव्यक्त संदेश.. ..अभी बापदादा कहते हैं साक्षी होकर खेल देखा, इन्जाय किया, अभी एक सेकण्ड में एकदम देह से न्यारे पावरफुल आत्मिक रूप में स्थित हो सकते हो? फुलस्टाप। (बापदादा ने बहुत पावरफुल ड्रिल कराई) अच्छा - यही अभ्यास हर समय बीच-बीच में करना चाहिए। अभी- अभी कार्य में आये, अभी-अभी कार्य से न्यारे, साकारी सो निराकारी स्थिति में स्थित हो जाएं। ऐसे ही यह भी एक अनुभव देखा, कोई समस्या भी आती है तो ऐसे ही एक सेकण्ड में साक्षी दृष्टा बन, समस्या को एक साइडसीन समझ, तूफान को एक तोहफा समझ उसको पार करो। अभ्यास है ना? आगे चलकर तो ऐसे अभ्यास की बहुत आवश्यकता पड़ेगी। फुलस्टाप। क्वेश्चन मार्क नहीं, यह क्यों हुआ, यह कैसे हुआ? हो गया। फुलस्टाप और अपने फुल शक्तिशाली स्टेज पर स्थित हो जाओ। समस्या नीचे रह जायेगी, आप ऊंची स्टेज से समस्या को साइडसीन देखते रहेंगे। अच्छा।

03.02.2002.. .. जितना बारी भी मैं-मैं शब्द बोलते हो, उतना समय यह याद करो कि मैं निराकार आत्मा साकार में प्रवेश किया है। जब निराकार स्थिति याद होगी तो निरंहकारी स्वत: हो जायेंगे। देह-भान खत्म हो जायेगा। वही पहला पाठ मैं कौन? यह स्मृति में रख करके मैं कौन-सी आत्मा हूँ, आत्मा याद आने से निराकारी स्थिति पक्की हो जायेगी। जहाँ निराकारी स्थिति होगी वहाँ निरहंकारी, निर्विकारी हो ही जायेंगे। तो कल से नोट करना - जब मैं शब्द कहते हो तो क्या याद आता है? और जितना बारी मैं शब्द यूज़ करो उतना बारी निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी स्वत: हो जायेंगे।

28.3.2002.. .. निर्माणता निरंहकारी स्वत: ही बना देती है। निरंहकारी बनने का पुरुषार्थ करना नहीं पड़ता है।

23.9.2002.. ..बापदादा को इन विशेष बच्चों को देख साकार रूप द्वारा लास्ट उच्चारे हुए वरदानी महावाक्य याद आ रहे हैं कि बच्चे सदा निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी रहना है। इन्हीं तीन शब्दों में 4 ही सबजेक्ट समाई हुई हैं। बस इन्हीं तीन शब्दों को याद रखो तो त्रिकालदर्शी बन, सदा विघ्न-विनाशक बन औरों को भी बनाते रहेंगे।

23.9.2002 दिव्य-सन्देश.. .. बापदादा को इन विशेष बच्चों को देख साकार रूप द्वारा लास्ट उच्चारे हुए वरदानी महावाक्य याद आ रहे हैं कि बच्चे सदा निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी रहना है। इन्हीं तीन शब्दों में 4 ही सबजेक्ट समाई हुई हैं। बस इन्हीं तीन शब्दों को याद रखो तो त्रिकालदर्शी बन, सदा विघ्न-विनाशक बन औरों को भी बनाते रहेंगे।

14.11.2002.. .. जब बाप समान बनना है तो एक है - निराकार और दूसरा है – अव्यक्त फ़रिश्ता। तो जब भी समय मिलता है सेकण्ड में बाप समान निराकारी स्टेज पर स्थित हो जाओ, बाप समान बनना है तो निराकारी स्थिति बाप समान है। कार्य करते फ़रिश्ता बनकर कर्म करो, फ़रिश्ता अर्थात् डबल लाइट। कार्य का बोझ नहीं हो। कार्य का बोझ अव्यक्त फ़रिश्ता बनने नहीं देगा। तो बीच-बीच में निराकारी और फ़रिश्ता स्वरूप की मन की एक्सरसाइज़ करो तो थकावट नहीं होगी। जैसे ब्रह्मा बाप को साकार रूप में देखा - डबल लाइट। सेवा का भी बोझ नहीं। अव्यक्त फ़रिश्ता रूप। तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे। आत्मा भी निराकार है और आत्मा निराकार स्थिति में स्थित होगी तो निराकार बाप की याद सहज समान बना देगी। अभी-अभी एक सेकण्ड में निराकारी स्थिति में स्थित हो सकते हो? हो सकते हो? (बापदादा ने ड्रिल कराई) यह अभ्यास और अटेन्शन

30.11.2002 ..जब सम्बन्ध-सम्पर्क में आत्मिक रूप की स्मृति रहती है तो सदा निराकारी और निरहंकारी रहते हैं। ब्रह्मा बाप के लास्ट के तीनों शब्द याद रहते हैं? निराकारी, निरहंकारी वही निर्विकारी।

30.11.2002.. .. बापदादा वाली एक्सरसाइज़ याद है? अभी-अभी निराकारी, अभी- अभी फ़रिश्ता...यह है चलते फिरते बाप और दादा के प्यार का रिटर्न। तो अभी-अभी यह रूहानी एक्सरसाइज़ करो। सेकण्ड में निराकारी, सेकण्ड में फ़रिश्ता। (बापदादा ने ड्रिल कराई) अच्छा - चलते-फिरते सारे दिन में यह एक्सरसाइज बाप की सहज याद दिलायेगी।

30.11.2002.. .. जो निर्माण नहीं है उसमें थोड़ा बहुत सूक्ष्म, महान रूप में अभिमान नहीं भी हो तो रोब होगा। ये रोब, यह भी अभिमान का अंश है और बोल में सदा निर्मल भाषी, मधुर भाषी। जब सम्बन्ध-सम्पर्क में आत्मिक रूप की स्मृति रहती है तो सदा निराकारी और निरहंकारी रहते हैं। ब्रह्मा बाप के लास्ट के तीनों शब्द याद रहते हैं? निराकारी, निरहंकारी वही निर्विकारी। अच्छा, फ़ालो फ़ादर। पक्का रहा ना! अगले वर्ष की मुख्य लक्ष्य स्वरूप की स्मृति है – यह तीन शब्द, निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी। अंश भी नहीं हो। मोटा-मोटा रूप तो ठीक हो गया है लेकिन अंश भी नहीं हो क्योंकि अंश ही धोखा देता है। फ़ालो फ़ादर का अर्थ ही है - इन तीन शब्दों को सदा स्मृति में रखें। ठीक है?

15.12.2002.. ..फ़रिश्ता बनना वा निराकारी कर्मातीत अवस्था बनने का विशेष साधन है - निरहंकारी बनना। निरंहकारी ही निराकारी बन सकता है। इसलिए बाप ने ब्रह्मा द्वारा लास्ट मन्त्र निराकारी के साथ निरहंकारी कहा। सिर्फ अपनी देह या दूसरे की देह में फंसना, इसको ही देह अहंकार या देह- भान नहीं कहा जाता है। देह अहंकार भी है, देह भान भी है। अपनी देह या दूसरे की देह के भान में रहना, लगाव में रहना - उसमें तो मैजारिटी पास हैं। जो पुरुषार्थ की लगन में रहते हैं, सच्चे पुरुषार्थी हैं, वह इस मोटे रूप से परे हैं। लेकिन देह-भान के सूक्ष्म अनेक रूप हैं, इसकी लिस्ट आपस में निकालना। बापदादा आज नहीं सुनाते हैं। आज इतना ही इशारा बहुत है क्योंकि सभी समझदार हैं। आप सब जानते हो ना, अगर सभी से पूछेंगे ना, तो सब बहुत होशियारी से सुनायेंगे। लेकिन बापदादा सिर्फ छोटा-सा सहज पुरुषार्थ बताते हैं कि सदा मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में लास्ट मन्त्र तीन शब्दों का (निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी) सदा याद रखो।

15.12.2002.. .. बापदादा सिर्फ छोटा-सा सहज पुरुषार्थ बताते हैं कि सदा मन-वचन-कर्म, सम्बन्ध-सम्पर्क में लास्ट मन्त्र तीन शब्दों का (निराकारी, निरहंकारी, निर्विकारी) सदा याद रखो। संकल्प करते हो तो चेक करो - महामन्त्र सम्पन्न है? ऐसे ही बोल, कर्म सबमें सिर्फ तीन शब्द याद रखो और समानता करो। यह तो सहज है ना? सारी मुरली नहीं कहते हैं याद करो, तीन शब्द। यह महामन्त्र संकल्प को भी श्रेष्ठ बना देगा। वाणी में निर्माणता लायेगा। कर्म में सेवा भाव लायेगा। सम्बन्ध-सम्पर्क में सदा शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना की वृत्ति बनायेगा।

31.12.2002.. .. अच्छा - एक सेकण्ड में मन की ड्रिल याद है? हर एक सारे दिन में कितने बार यह ड्रिल करते हो? यह नोट करो। यह मन की ड्रिल जितना बार करेंगे उतना ही सहज योगी, सरल योगी बनेंगे। एक तरफ मन्सा सेवा दूसरे तरफ मन्सा एक्सरसाइज़। अभी-अभी निराकारी, अभी-अभी फ़रिश्ता। ब्रह्मा बाप आप फ़रिश्तों का आह्वान कर रहे हैं। फ़रिश्ता बनके ब्रह्मा बाप के साथ अपने घर निराकार रूप में चलना। फिर देवता बन जाना।

10 निश्चय बुद्धि

21.1.69.. .. .. निश्चय उसको कहा जाता है जिसमें किसी भी प्रकार का, किसी भी स्थिति अनुसार, विघ्न के समय संशय नहीं आता। परिस्थितियाँ तो बदलनी ही हैं, बदलती ही रहेंगी। लेकिन आप जैसे गीत गाते हो ना- बदल जाए दुनिया न बदलेंगे हम.. तो ऐसे ही आप सभी निश्चय बुद्धि आज के संगठन में बैठे हुए हो? आपकी मम्मा आप सबको कहा करती थी कि निश्चय के जो भी आधार अब तक खड़े हैं वह सब आधार निकलने ही हैं और निकलते हुए भी उसकी नींव मजबूत है। अगर नींव मजबूत नहीं तो आधार की आवश्यकता है। आधार कौनसा? बाबा का आधार, संगठन का आधार, परिवार के नियमों का आधार नहीं छोड़ना। परन्तु परीक्षा के समय जो सीन सामने आती है उसमें निश्चय तो नहीं टूटा। निश्चय अटूट होता है। वह तोड़ने से टूटता नहीं। ऐसे ही निश्चय बुद्धि गले के हार हैं।

8.5.69.. .. .. निश्चय बुद्धि में नम्बर नहीं होते। वा तो है निश्चय वा संशय। निश्चय में अगर जरा भी संशय है चाहे मन्सा में, चाहे वाचा में अथवा कर्मणा में, लेकिन मन्सा का एक भी संकल्प संशय का है तो संशय बुद्धि कहेंगे। ऐसे निश्चय बुद्धि सभी हैं? निश्चय बुद्धि की मुख्य परख कौन-सी है? उनके नयन, उनकी वृत्ति उस समय एक ही तरफ होगी। तो जो ऐसा निश्चय बुद्धि पक्का होगा उनके चेहरे से ऐसे महसूस होगा जैसेकि कोई निशान-बाज है। आप लोगों का मुख्य शिक्षा मिलती है एक निशान को देखो अर्थात् बिन्दी को देखो। तो बिन्दी को देखना भी निशान को देखना है। तो निश्चय बुद्धि की निशानी क्या होगी? पूरा निशाना होगा। निशान जरा भी हिल जाता है तो फिर हार हो जाती है। निश्चय बुद्धि के नयनों से ऐसे महसूस होगा जैसे देखते हुए भी कुछ और देखते हैं। उनके बोल भी वही निकलेंगे। यह है निश्चय बुद्धि की निशानी। निशान-बाज की स्थिति नशे वाली होती है तो निश्चय बुद्धि की परख है निशाना और उनकी स्थिति नशे वाली होगी। यह प्रैक्टिस अभी करो।

26.5.69....सिर्फ बाप, टीचर, सतगुरु में निश्चय नहीं लेकिन इस निश्चय के साथ-साथ उनके फरमान, उनकी पढ़ाई और उनके श्रीमत पर भी सम्पूर्ण निश्चय बुद्धि होकर चलना है। इसमें कमी है जिसको अभी भरना है?

28.9.69....जब अपने को निश्चय बुद्धि कहते हैं तो कोई भी बात में ना बाप में, ना बाप की नालेज में, ना बाप के परिवार में संशय वा विकल्प उठना चाहिए। हम शिवबाबा के हैं तो फिर सर्वशक्तिमान के बच्चे निश्चय बुद्धि हैं। यह कौन बोलता है? सर्वशक्तिवान के बच्चे बोलते हैं। निश्चय रखने से ही विजय हो जायेगी। भल करके अन्दर समझो ना मालूम क्या होगा? परन्तु फिर भी निश्चय में विजय हो जायेगी। अगर निश्चय नहीं है तो आपका कर्म भी वैसा ही चलेगा। निश्चय रखेंगे कि हमको करना ही है तो कर्म भी वैसा ही होगा। अगर ख्याल करेंगे कि अच्छा देखेंगे, करेंगे। तो कर्म भी ढीला ही चलेगा। कभी भी अपने में कमज़ोरी की, संशय की फीलिंग नहीं आनी चाहिए। कमज़ोरी के संकल्प ही संशय है। अब कहाँ तक यह पुराने संस्कार और संकल्प रहे। पुराने संस्कार भी नहीं। संस्कार तो मोटी चीज़ है। लेकिन पुराने संकल्प खत्म होने चाहिए।

जितना आप अपने में निश्चय रखेंगे उतना बापदादा भी अवश्य मददगार बनते हैं। स्नेही को अवश्य सहयोग मिलता है।

24.1.70.. .. .. निश्चय की निशानी क्या है? विजय । जितना निश्चयबुद्धि होंगे उतना ही सभी बातों में विजयी होंगे। निश्चयबुद्धि की कभी हार नहीं होती। हार होती है तो समझना चहिए कि निश्चय की कमी है। निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों में से हम एक रत्न हैं ऐसे अपने को समझना है। विघ्न तो आयेंगे, उन्हों को खत्म करने की युक्ति है – सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है। कोई भी विघ्न आए तो उनको पेपर समझ पास करना है। बात को नहीं देखना है लेकिन पेपर समझना है।

कमज़ोरी को मिटाने के लिये कोशिश शब्द को मिटाना है। निश्चय से विजय हो जाती है। संशय लाने से शक्ति कम हो जाती है।

निश्चाबुद्धि बनेंगे तो सभी का सहयोग भी मिलेगा। कोई भी कार्य करना होता है तो सदैव यही सोचा जाता है कि मेरे बिना कोई कर नहीं सकता तब ही सफ़लता होती है। आज से कोशिश अक्षर खत्म करो। मैं शिवशक्ति हूँ। शिवशक्ति सभी कार्य कर सकती है। शक्तियों की शेर पर सवारी दिखाते हैं। किस भी प्रकार माया शेर रूप में आये डरना नहीं है। शिवशक्ति कभी हार नहीं खा सकती। अभी एकरस स्थिति में रहने की प्रतिज्ञा करो – तो प्रत्यक्षता समीप आयेगी। समय के पहले अपने को बदलने से एक का लाख गुणा मिलेगा। बदलना ही है, तो ऐसे बदलना चाहिए। याद आता है कि अगले कल्प भी वर्सा लिया था। अपने को पुराना समझने से वह कल्प पहले की स्मृति आने से पुरुषार्थ सहज हो जाता है। क्योंकि निश्चय रहता है कल्प पहले भी मैंने लिया था, अब भी लेकर छोड़ेंगे। कल्प पहले की स्मृति शक्ति दिलाने वाली होती है।

11.7.70.. .. .. फेथफुल अर्थात् निश्चाबुद्धि। एक तो अपने में फेथ दूसरा बाप-दादा में और तीसरा सर्व परिवार की आत्माओं में फेथफुल होना पड़ता है। जितना फेथफुल बनकर निश्चयबुद्धि होकर कोई कर्तव्य करेंगे तो निश्चयबुद्धि की विजय अर्थात् फेथफुल होने से सक्सेसफुल हो ही जाता है। उसका हर कर्तव, हर संकल्प, हर बोल पावरफुल होगा। ऐसे क्वालिफाइड को ही यह डिग्री प्राप्त हो सकती है।

योगयुक्त और निश्चयबुद्धि बनकर के कर्तव्य करने से सफलता प्राप्त हो ही जाती है। पहले से ही अगर यह संकल्प बुद्धि में होता है कि करते हैं परन्तु मिलता मुश्किल है। तो यह संकल्प भी निश्चय की परसेन्ट को कम कर देता है। निश्चयबुद्धि हो करें तो फेल नहीं होंगे। समस्याओं का सामना करने से सफलता मिलती है। विघ्न तो आयेंगे लेकिन लगन की अग्नि से विघ्न भस्म हो जायेंगे

29.10.70.. .. ...करेंगे, हो ही जायेगा, पुरुषार्थ कर रहे हैं, यह शब्द भी न निकले। करके ही दिखायेंगे, बनकर ही दिखायेंगे। यह है निश्चयबुद्धि विजयी रत्नों के बोल।

18.4.71.. .. ...निश्चाबुद्धि होकर उमंग को तीव्र बनाओ तो इच्छायें पूर्ण हो जायेंगी।

24.5.71.. .. .. निश्चाबुद्धि बनने से विजय अवश्य प्राप्त हो जाती है। यह कभी भी नहीं सोचो कि यह कोई और महारथियों का है, हम तो पुरुषार्थी हैं। अगर निश्चय में, स्वरूप की स्मृति में ही कमज़ोरी होगी तो कर्म में भी कमजोरी आ जायेगी। तो सदैव हर संकल्प निश्चयबुद्धि का होना चाहिए। कर्म करने के पहले यह निश्चय करो कि विजय तो हमारी हुई पड़ी है। अनेक कल्प विजयी बने हो।

22.6.71 .. .. .. जितना बाप बच्चों में निश्चयबुद्धि है, बच्चे अपने में निश्चयबुद्धि कम हैं। इसलिए हर कार्य में विजय हो, यह रिज़ल्ट कभी-कभी दिखाई देती है। जैसे बाप में निश्चय, पढ़ाई में निश्चय है वैसे ही अपने में भी हर समय और हर संकल्प निश्चयबुद्धि बनकर करना, उसकी कमी है। जो तीव्र पुरुषार्थी हैं उनके मुख से 'कभी' शब्द नहीं निकलेगा। वह सदैव 'अभी', सिर्फ कहेंगे भी नहीं, लेकिन अभी- अभी करके दिखाोंगे। यह है तीव्र पुरुषार्थ।

11.7.71.. .. .. चाहे दैवी वा ईश्वरीय आत्माओं द्वारा वा संसारी आत्माओं द्वारा भले कोई भी डगमग कराने के कारण बनें। लेकिन अपने आप में भी निश्चयबुद्धि की कमी नहीं होनी चाहिए। इसलिए रुहाब के साथ रहम भी रखना है। अकेला रुहाब नहीं, रहम भी हो।

निश्चयबुद्धि हो कल्याण की भावना रखने से दृष्टि और वृत्ति दोनों ही बदल जाते हैं।

3.2.72.. .. .. जैसे गाड़ी अगर ठीक पट्टे पर चलती है तो निश्चय रहता है – एक्सीडेंट हो नहीं सकता। बेफिक्र हो चलाते रहेंगे। वैसे ही अगर स्वयं की स्मृति का नशा है, फाउन्डेशन ठीक है तो कर्म और वचन संयम के बिना हो नहीं सकता।

जैसे निश्चय की विजय अवश्य है, इसी प्रकार ऐसे निश्चयबुद्धि के हर कर्म में विजय है; अर्थात् हर कर्म संयम के प्रमाण है तो विजय है ही है। ऐसे अपने को चेक करो – कहाँ तक इस स्टेज के नजदीक हैं? जब आप लोग नजदीक आयेंगे तब फिर दूसरों के भी नम्बर नजदीक आयेंगे।

27.2.72.. .. .. स्व स्मृति में रहने वाला सदैव जो भी कार्य करेगा वा जो भी संकल्प करेगा उसमें उसको सदा निश्चय रहता है कि यह कार्य वा यह संकल्प सिद्ध हुआ ही पड़ा है अर्थात् ऐसा निश्चयबुद्धि अपनी विजय वा सफलता निश्चित समझ कर चलता है। निश्चय ही है, जो ऐसे निश्चित सफ़लता समझकर चलने वाले हैं उनकी स्थिति कैसी रहेगी? उनके चेहरे में क्या विशेष झलक दिखाई देगी? निश्चय तो सुनाया कि निश्चय होगा–विजय हमारी निश्चित है; लेकिन उनके चेहरे पर क्या दिखाई देगा? जब विजय निश्चित है तो निश्चिन्त रहेगा ना। कोई भी बात में चिन्ता की रेखा दिखाई नहीं देगी। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी, निश्चित और सदा निश्चिन्त रहने वाले हो? अगर नहीं तो निश्चयबुद्धि 100% कैसे कहेंगे? 100% निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चित विजयी और निश्चिन्त। अब

इससे अपने आपको देखो कि 100% सभी बातों में निश्चय बुद्धि हैं? सिर्फ बाप में निश्चय को भी निश्चय बुद्धि नहीं कहा जाता। बाप में निश्चाबुद्धि, साथ-साथ अपने आप में भी निश्चयबुद्धि होने चाहिएं और साथ-साथ जो भी ड्रामा के हर सेकेण्ड की एक्ट रिपीट हो रही है-उसमें भी 100% निश्चयबुद्धि चाहिए – इसको कहा जाता है निश्चाबुद्धि। ऐसे निश्चयबुद्धि ही मुक्ति और जीवन-मुक्ति में बाप के पास रहते हैं। ऐसे निश्चयबुद्धि को कब क्वेश्चन नहीं उठता। ''क्यों, क्या'' की भाषा निश्चयबुद्धि की नहीं होती। क्यों के पीछे क्यू लगती है ज्ञान अर्थात् प्राप्ति की घड़ियां, मिलन की घड़ियां। ऐसे निश्चयबुद्धि हो ना। ऐसे निश्चय बुद्धि आत्माओं की यादगार यहां ही दिखाई हुई है। अपनी यादगार देखी है? अचल घर देखा है? जो सदा सर्व संकल्पों सहित बापदादा के ऊपर बलिहार हैं उन्हों के आगे माया कब वार नहीं कर सकती।

27.5.72.. .. .. जितना ही निश्चय होगा उतना निर्भय होकर नशे में बोलते हैं। ऐसे ही देखो, जब आप सभी ऑलमाइटी अथार्टी हो, सभी से श्रेष्ठ अथार्टी वाले हो; तो कितना नशा रहना चाहिए और कितना निश्चय से बोलना चाहिए! और फिर निर्भाता भी चाहिए। कोई भी किस भी रीति से हार खिलाने की कोशिश करे लेकिन निर्भाता, निश्चय और नशे के आधार पर कब हार खा सकेंगे? नहीं, सदा विजयी होंगे।

25-11-93.. .. .. कर तो रहे हैं, चल तो रहे हैं, देख लेंगे, हो जायेगा, होना तो चाहिए–तो ये शब्द नहीं आयेंगे। पता नहीं क्या होगा, होगा या नहीं होगा–यह निश्चय के बोल हैं? निश्चयबुद्धि विजयी–यह गायन है ना? तो जब प्रैक्टिकल हुआ है तब तो गायन है। निश्चयबुद्धि की निशानी है–विजय निश्चित।

9-12-93.. .. .. चिंताओं से फ्री सदा निश्चिंत वा बेफ़िक्र बादशाह रहने के लिए निश्चयबुद्धि बनो.

निश्चय की निशानी है–हर कार्य में मंसा में भी, वाणी में भी, कर्म में भी, सम्बन्ध-सम्पर्क में भी हर बात में सहज विजय हो। मेहनत करके विजयी बने, वह विजय नहीं है। सहज विजय ये। तो निशानी दिखाई देती है या विजय प्राप्त करने में मेहनत लगती है? कभी सहज, कभी मेहनत? लेकिन निश्चय की निशानी है सहज विजय । अगर मेहनत लगती है तो समझो कुछ मिक्स है। संशय नहीं भी हो लेकिन कुछ व्यर्थ मिक्स है इसलिये सहज विजय नहीं होती। नहीं तो विजय निश्चयबुद्धि आत्माओं के लिये तो सदा एवररेडी है। उसका स्थान ही वह है। जहाँ निश्चय है, वहाँ विजय होगी। निश्चय वालों के पास ही जायेगी ना। तो निश्चय सब बातों में चाहिये। सिर्फ़ बाप में निश्चय नहीं। लेकिन अपने आपमें भी निश्चय, ब्राह्मण परिवार में भी निश्चय, ड्रामा के हर दृश में भी निश्चय। तभी कहेंगे कि सम्पूर्ण निश्चाबुद्धि। अगर बाप में निश्चय है लेकिन अपने में नहीं है, चलते-चलते अपने से दिलशिकस्त होते हैं तो निश्चय नहीं है तब तो होते हैं। तो वह भी अधूरा निश्चय हुआ। बाप में भी है, अपने आपमें भी है लेकिन परिवार में नहीं है। परिवार के कारण डगमग होते हैं। तो भी अधूरा निश्चय कहेंगे। ड्रामा में भी फुल निश्चय हो। जो हुआ सो अच्छा हुआ। इसको कहते हैं ड्रामा में निश्चय। ऐसे सम्पूर्ण निश्चयबुद्धि हैं? कभी तो फुल है, कभी आधा

है। जब अनेक बार का नशा है तो अनेक बार विजयी बने हो, अब रिपीट कर रहे हो। कोई नई बात नहीं कर रहे हो, रिपीट कर रहे हो। तो रिपीट करना तो सहज होता है ना। तो निश्चयबुद्धि विजयी–सदा इह स्मृति में रहे। निश्चय भी है और विजय भी है। ये नशा हो कि हमारी विजय नहीं होगी तो किसकी होगी। विजय है और सदा होगी। तो अटल निश्चय हो। टलने वाला नहीं हो, थोड़ी सी बात हुई और निश्चय अटल नहीं रहे, ऐसा निश्चय नहीं हो। अटल निश्चय तो अटल विजय होगी। विजय की भावी टल नहीं सकती। अटल है। तो ऐसे निश्चयबुद्धि सदा हर्षित रहेंगे, निश्चिंत रहेंगे। क्योंकि चिन्ता खुशी को खत्म करती है। और निश्चिन्त हैं तो खुशी सदा रहेगी। तो निश्चयबुद्धि की दूसरी निशानी है निश्चिन्त। नहीं तो थोड़ी बात भी होगी तो चिन्ता होगी कि ये क्या हुआ, ये ऐसा हुआ। इस क्यों क्या से भी निश्चिन्त। क्या, क्यों, कैसे–ये चिन्ता की लहर है। अभी बड़ी चिन्ता नहीं होगी, इस रूप में होगी। होना नहीं चहिये था, हो गया, ऐसा, वैसा, क्यों, क्या, कैसा, ये शब्द बदल जाते हैं। तो ऐसा है कि कभी-कभी क्वेश्चन मार्क होता है? कई कहते हैं ना कि मेरे पास ही ये क्यों होता है? मेरे से ही क्यों होता है? मेरे पीछे ये बंधन क्यों है, मेरे पीछे माया क्यों आती है, मेरा ही हिसाब किताब कड़ा है क्यों? तो 'क्यों' आना माना चिन्ता की लहर है। तो इस चिन्ताओं से भी परे–इसको कहा जाता है निश्चिन्त। तो कौन हो? निश्चिन्त हो या थोड़ी-थोड़ी क्यों, क्या है? निश्चिन्त आत्मा का सदा सलोगन है अच्छा हुआ, अच्छा है और अच्छा ही होना है। बुराई में भी अच्छाई अनुभव करेंगे। बुराई से भी अपना पाठ पढ़ लेंगे। बुराई को बुराई के रूप में नहीं देखेंगे। इसको कहा जाता है निश्चाबुद्धि, निश्चिन्त। 'चिन्ता' शब्द से भी अविद्या हो। जैसे गायन है ना इच्छा मात्रम अविद्या। ऐसे चिन्ता की भी अविद्या हो। चिन्ता क्या होती है–यह अनुभव नहीं हो। तो ऐसी अवस्था इसको कहा जाता है निश्चिन्त। कोई भी बात आये तो 'क्या होगा' नहीं आयेगा, फ़ौरन ही यह आयेगा 'अच्छा होगा', बीत गया अच्छा हुआ। जहाँ अच्छा है वहाँ सदा बेफ़िक्र बादशाह हैं। तो निश्चयबुद्धि का अर्थ है बेफ़िक्र बादशाह।

10-1-94.. .. .. हर कर्म में विजय का निश्चय और नशा हो। नशे का आधार है ही निश्चय। निश्चय कम तो नशा कम। इसीलिये कहते हैं निश्चयबुद्धि विजयी। तो फ़ाउन्डेशन क्या हुआ? निश्चय। निश्चय में कभी-कभी वाले नहीं बनना। नहीं तो अन्त में रिज़ल्ट के समय भी प्राप्ति कभी-कभी की होगी फिर पश्चाताप् करना पड़ेगा। अभी प्राप्ति है, फिर पश्चाताप होगा। तो प्राप्ति के समय प्राप्ति करो, पश्चाताप के समय प्राप्ति नहीं कर सकेंगे। कर लेंगे, हो जायेगा! नहीं, करना ही है–यह निश्चय हो। कर लेंगे.... दिलासे पर नहीं चलो। कर तो रहे हैं ना.. और क्या होगा... हो ही जोंगे.... नहीं, अभी होना है। गें-गें नहीं, हैं। जब दूसरों को चैलेन्ज करते हो कि श्वास पर कोई भरोसा नहीं, औरों को ज्ञान देते हो ना तो पहले स्वयं को ज्ञान दो। कभी करने वाले हैं या अब करने वाले हैं? तो सदा विजय के अधिकारी आत्मायें हो। विजय जन्म-सिद्ध अधिकार है–इस स्मृति से उड़ते चलो। कुछ भी हो जाो, ये स्मृति में लाओ कि मैं सदा विजयी हूँ। क्या भी हो जाये, निश्चय अटल है, कोई टाल नहीं सकता।

9.1.95.. .. .. निश्चय का फाउण्डेशन चारों ओर से मजबूत है या चारों ओर के बजाय कभी एक ओर कभी दो ओर ढीले हो जाते हैं? कोई भी चीज को मजबूत किया जाता है तो चारों ओर से टाइट किया जाता है ना। अगर

एक साइड भी थोड़ासा हलचल वाला हो तो हिलेगा ना! तो चारों प्रकार का निश्चय अर्थात् बाप में, आप में, ड्रामा में और ब्राह्मण परिवार में निश्चा। ये चार ही तरफ के निश्चय को जानना नहीं लेकिन मानकर चलना। अगर जानते हैं लेकिन चलते नहीं हैं तो विजय डगमग होती है। जिस समय विजय हलचल में आती है, तो चेक करना कि चारों तरफ से कौनसा तरफ हलचल में है?

जैसे ये पक्का है कि मैं शरीर नहीं हूँ, मैं आत्मा हूँ और कौनसी आत्मा हूँ, ये भी पक्का है, ऐसे निश्चयबुद्धि की विजय भी इतनी निश्चित है। हार असम्भव है और विजय निश्चित है। और ये भी निश्चित है कि बातें भी अन्त तक आनी हैं। लेकिन उसमें विजयी बनने के लिए एक ही समय पर चारों ही तरफ का निश्चय पक्का चाहिये। तीन में निश्चय है और एक में नहीं है तो विजय निश्चित नहीं है लेकिन मेहनत से विजय होगी। निश्चित विजय वाले को मेहनत नहीं करनी पड़ेगी। ब्राह्मण परिवार में हर परिस्थिति में निश्चयबुद्धि, तब राज्यभाग में भी सदा राज अधिकारी होंगे। तो ऐसे नहीं समझना–कोई बात नहीं, परिवार से नहीं बनती है, बाप से तो बनती है! ड्रामा अगर भूल जाता है तो बाप तो याद रहता ही है! लेकिन कोई भी कमजोरी एक ही समय पर होती है, स्व स्थिति अर्थात् स्वनिश्चय भी अगर कमजोर होता है तो विजय निश्चित के बजाय हलचल में आ जाती है। निश्चयबुद्धि की निशानी जैसे निश्चित विजय है वैसे निश्चिन्त होंगे। कोई भी व्यर्थ चिन्तन आ ही नहीं सकता। सिवाए शुभ चिन्तन के व्यर्थ का नामनिशान नहीं होगा। निश्चय की निशानियाँ निश्चिन्त स्थिति, इसका अनुभव करो। होगा, नहीं होगा, क्या होगा, कर तो रहे हैं, देखें क्या होता है–इसको निश्चिन्त नहीं कहेंगे। और फिर बाप के आगे ही फरियाद करते हैं–आप मददगार हो ना, आप रक्षक हो ना, आप ये हो ना, आप ये हो ना। फरियाद करना अर्थात् अधिकार गँवाना। अधिकारी फरियाद नहीं करेंगे–ये कर लो ना, ये हो जाये ना। तो निश्चयबुद्धि अर्थात् निश्चिन्त। निश्चयबुद्धि की निशानी –निश्चित विजयी और निश्चिंत।

11. निश्चिन्तता

4.7.74.. ..जैसे साकार में मात-पिता को देखा कि दोनों के ही नशे में संकल्प की भी हलचल नहीं थी। सम्पूर्ण अचल और अटल निश्चय था कि यह तो बना हुआ ही है अथवा यह तो निश्चित ही है। तो नशे की निशानी अटल निश्चय और निश्चिन्त अनुभव होगी। निशाने की निशानी नशा और नशे की निशानी निश्चय और निश्चिन्त। साथ-साथ माया के किसी भी प्रकार का वार होने से और हार खाने से भी निश्चिन्त। ना मालूम माया हार नहीं खिलावे, विजयी बनेंगे या नहीं–इस कमजोर संकल्प से भी निश्चिन्त, क्योंकि सामने दिखाई दे रहा है, क्या ऐसा अनुभव होता है? कमजोर संकल्पों की चिन्ता में कि माया आ नहीं जावे, कमजोर हो न जाऊँ, और मुझे सफ़लता मिलेगी अथवा नहीं? क्या इस भय के भूत के वश अपना समय और शक्तियाँ व्यर्थ तो नहीं गँवाते हो? ऐसा कमजोर संकल्प करना अर्थात् स्वयं में संशय का संकल्प रखने से कभी भी सम्पूर्ण नहीं बन सकेंगे।

18.1.75.. .. वाचा और मन्सा पर अटेन्शन चाहिए। जैसे बीज बो कर पानी डालते हो कि बीज पक्का हो जाये। बीज को रोज-रोज पानी देना होता है, वैसे ही संकल्प रूपी बीज को रिवाइज (Revise) करना है। उसमें कमी रह जाती है और आप निश्चिन्त हो जाते हो – आराम पसंद हो जाते हो। आराम पसन्द के संस्कार नहीं, मगर चिन्तन का संकल्प होना चाहिए, एक-एक संस्कार की चिन्ता लगनी चाहिए।

2.2.75.. .. करने के कुछ समय के बाद अलबेलापन क्यों होता है? मुख्य बात यही है कि अब तक समय की समाप्ति का बुद्धि में निश्चय नहीं है। निश्चित न होने के कारण निश्चिन्त रहते हो! जैसे सर्विस के प्लैन्स का समय निश्चित करते हो, तब से निश्चिन्त रहना समाप्त हो जाता है, ऐसे ही स्वयं की उन्नति के प्रति भी अगर समय निश्चित करते हो तो उसका भी विशेष रिजल्ट अनुभव करते हो न? जैसे विशेष मास याद की यात्रा के प्रोग्राम का निश्चय किया तो चारों ओर विशेष वायुमण्डल और रिजल्ट, विधि का सिद्धि स्वरूप प्रत्यक्ष फल के रूप में देखा। ऐसे ही अपनी उन्नति के प्रति जब तक समय निश्चित नहीं किया है कि इस समय के अन्दर हर विशेषता का सफ़लता स्वरूप बनना ही है व समय के वातावरण से स्व-चिन्तन के साथ-साथ शुभ-चिन्तक भी बनना ही है, तब तक सफ़लता-स्वरूप कैसे बनेंगे? नहीं तो अवहेलना की समाप्ति, अर्थात् सम्पूर्णता हो न सकेगी। स्वयं का स्वयं ही शिक्षक बनकर जब तक स्वयं को इस बन्धन में नहीं बाँधा है, तब तक अन्य आत्माओं को भी सर्व-बन्धनों से सदा के लिये मुक्त नहीं कर पाओगे। समझा? अभी क्या करोगे? जैसे सेवा में भिन्न-भिन्न टॉपिक्स का सप्ताह व मास मनाते हो, स्वयं का प्रोग्राम बनाने से प्रोग्रेस होती है।वैसे ही सेवा के साथ-साथ स्वयं के प्रति भी भिन्न-भिन्न युक्तियों के आधार पर समय निश्चित करो। यह वर्ष ऐसे खास पुरुषार्थ का है। समय अब भी कम तो होता ही जाता है परन्तु ऐसे ही आगे चलकर स्वयं के प्रति विशेष समय और ही कम मिलेगा। फिर क्या करेंगे? जैसे आज के मनुष्य यही कहते हैं कि पहले फिर भी समय मिलता था लेकिन अब तो वह भी समय नहीं मिलता, ऐसे ही स्वयं का स्वयं के प्रति यह उलाहना न रह जाये कि स्वयं के प्रति जो करना था वह किया ही नहीं क्योंकि समय जितना

समीप आता जा रहा है, उस प्रमाण इतने विश्व की आत्माओं को महादान और वरदान का प्रसाद बाँटने में ही टाईम चला जायेगा। इसलिये स्व-चिन्तक बनने का समय ज्यादा नहीं रहा है। अच्छा!

6.2.76.. ..अब अपने को चेक करो कि राइट हैण्ड हो या लेफ्ट हैण्ड; लॉयर हो या लॉ फुल हो? बाप-दादा के तो दोनों ही सहयोगी हैं। सदा अपने को सहयोगी समझने से सहज योगी बन जायेंगे। करावनहार बाप-दादा के निमित्त करनहार समझ कर चलने से सदैव निश्चिन्त और हर्षित रहेंगे।

7.2.76.. .. जैसे वृक्ष को हिलाते हैं ना। तो निश्चय की नींव अर्थात् फाउन्डेशन (Foundation) को हिलाने के पेपर्स भी आयेंगे। फिर पेपर देने के लिये तैयार हो अथवा कमजोर हो? पाण्डव सेना तैयार है या शक्तियाँ तैयार हैं अथवा दोनों तैयार हैं? होशियार स्टूडेण्ट पेपर का आह्वान करते हैं और कमजोर डरते हैं। तो आप कौन हो? निश्चयबुद्धि की निशानी यह है कि वह हर बात व हर दृश्य को निश्चित जानकर सदा निश्चिन्त होगा, ''क्यों, क्या और कैसे'' की चिन्ता नहीं होगी। फरिश्तेपन की लास्ट स्टेज की निशानी है – सदा शुभचिन्तक और सदा निश्चिन्त। ऐसे बने हो? रियलाइजेशन कोर्स में स्वयं को रियलाइज करो। और अब अन्तिम थोड़े-से पुरुषार्थ के समय में स्वयं में सर्वशक्तियों को प्रत्यक्ष करो।

17.1.77.. .. आज सबके संकल्प पहुँचे, सबको इन्तजार था 18 तारीख को क्या सुनायेंगे। अब सुना? बाप-दादा साथ हैं; कोई कुछ कर नहीं सकता; कह नहीं सकता, जलती हुई भट्टी में भी पूंगरे सलामत रहे, यह तो कुछ भी नहीं है। बाल भी बांका नहीं कर सकता। साधारण साथ नहीं, सर्वशक्तिवान का साथ है। इसलिए 'निश्चयबुद्धि विजयन्ति'। कभी भी फ़ाइनल विनाश की डेट फ़िक्स नहीं हो सकती। अगर डेट फ़िक्स हो जाए तो सब सीट्स भी फ़िक्स हो जाएं, फिर तो पास विद् ऑनस की लम्बी लाइन हो जाए। इसलिए डेट से निश्चिन्त रहो। जब सब निश्चिन्त होंगे तो डेट आ ही जायेगी। जब सभी इस संकल्प से निरसंकल्प होंगे वही डेट विनाश की होगी।

5.5.77.. .. निश्चय बुद्धि की निशानी है सदा निश्चिन्त।' जो निश्चिन्त होगा वही एक रस रहेगा, डगमग नहीं होगा। अचल रहेगा। कुछ भी हुआ, सोचो नहीं। क्यों, क्या में कभी नहीं जाओ, त्रिकालदर्शी बन निश्चिन्त रहो। हर कदम में कल्याण है। जिस बात में अकल्याण भी दिखाई देता उसमें भी कल्याण समाया हुआ है, सिर्फ अन्तर्मुखी हो देखो। ब्राह्मणों का कभी भी अकल्याण हो नहीं सकता। क्योंकि कल्याणकारी बाप का हाथ पकड़ा है ना! अकल्याण को भी वह कल्याण में परिवर्तन कर देगा। इसलिए 'सदा निश्चिन्त रहो।'

6.1.79.. .. सूर्यवंशी सदा निश्चय बुद्धि का प्रत्यक्ष स्वरूप सदा निश्चिन्त और सदा स्वयं को कल्प-कल्प के निश्चित विजयी अनुभव करेंगे।

12.12.79.. .. पहले भी पदमा पदम भाग्यशाली बने थे अब भी बन रहे हो। ऐसे सहयोगी हो। उनकी निशानी तथा रहन-सहन का चित्र कौन-सा दिखाया है? विष्णु की शेष शैया अर्थात् साँप को भी शैया बना दिया अर्थात् वह

अधीन हो गए वह अधिकारी हो गए। नहीं तो साँप को कोई हाथ नहीं लगाता, साँपों को शैया बना दिया अर्थात् विजयी हो गये। विकारों रूपी साँप ही अधीन हो गये अर्थात शैया बन गये तो निश्चिन्त हो गये ना। जो विजयी होते हैं वह सदा निश्चिन्त विष्णु के समान सदा हर्षित रहते हैं। हर्ष भी तब होगा जब ज्ञान का सुमिरण करते रहेंगे। तो यह चित्र आप का ही है ना। जो भी बाप के बच्चे बने और विजयी हो रहे हैं, उन सब का यह चित्र है। सदा सामने देखो कि विकारों को अधीन किया हुआ अधिकारी हूँ। आत्मा सदा आराम स्थिति में रहे। शरीर को सोने का आराम नहीं, वह तो सेवा में हड्डियाँ देनी हैं लेकिन आत्मा की निश्चिन्त स्थिति – यह है आराम? क्योंकि कि अब भटकने से बच गये।

15.3.81.. .. कहाँ भी जायेंगे बापदादा साथ छोड़ नहीं सकते। बाप छोड़ने चाहें तो भी नहीं छोड़ सकते, बच्चे छोड़ने चाहें तो भी नहीं छोड़ सकते। दोनों बंधन में बँधे हुए हैं। (सतयुग में तो छोड़ देते) सतयुग में भी राज्यभाग देकर खुश हो जाते हैं। फेथ है ना बच्चों में कि यह अच्छा राज्य करेंगे इसलिए निश्चिन्त रहते हैं।

23.11.81.. .. जितना स्वयं हल्के होगे उतना सेवा और स्वयं सदा ऊपर चढ़ती रहेंगी अर्थात् उन्नति को पाती रहेंगी। जब मै-पन आता है तो बोझ हो जाता है और नीचे आ जाते हो। इसलिए इस बोझ से भी निश्चिन्त। सिर्फ़ याद के नशे में सदा रहो। बाप के साथ कम्बाइन्ड सदा रहो तो जहाँ बाप कम्बाइन्ड हो गया वहाँ सेवा क्या है? स्वत: हुई पड़ी है। अनुभवी हो ना?

12.3.82.. .. जैसे अभी चल रहे हो उस में ही कल्याण है। ऐसे नहीं समझो हम सरेन्डर नहीं हैं। सरेन्डर हो, डायरेक्शन प्रमाण कर रहे हो। अपने मन से करते हो तो सरेन्डर नहीं हो। इसमें अगर अपनी मत चलाते हो, कि नहीं! मैं तो नहीं करुंगी, और ही मनमत है। इसलिए स्वयं को सदा हल्का रखो। जो निमित्त बनी हुई आत्मायें हैं वह अगर कहती हैं तो समझो इसमें हमारा कल्याण है। इसमें आप निश्चिन्त रहो। इसमें जो ज्यादा सोचेंगे – मेरा शायद पार्ट नहीं है, मेरे को क्यों नहीं कहा जाता है, यह फिर व्यर्थ है। समझा।

25.12.82.. .. बाप का वायदा है, बाप सदा साथ निभाते रहेंगे। अपना संकल्प भी बाप के ऊपर छोड़ दो। सर्विस बढ़ेगी या नहीं बढ़ेगी, बाप जाने। नहीं बढ़ेगी तो बाप ज़िम्मेवार है, आप नहीं। इतनी निश्चिन्त रहो। आपने तो बाप के आगे अपना संकल्प रख दिया ना। तो ज़िम्मेवार कौन? सिकीलधी हो – कितने सिक से बाप ने ढूँढ़ा। पहला-पहला सेवा का रत्न सारी विश्व से चुना है, इसलिए भूलो नहीं। अच्छा।'

9.1.83.. ..जैसे कहावत है ना – या होगा बाप या होगा पाप। जब बाप को बीच से निकालते हो तब पाप आता है। ईर्ष्या भी पाप कर्म है ना। अगर समझो बाप ने निमित्त बनाया है तो बाप जो कार्य करते उसमें कल्याण ही है। अगर उसकी कोई ऐसी बात अच्छी न भी लगती है, रांग भी हो सकती है, क्योंकि सब पुरुषार्थी हैं। अगर रांग भी है तो अपनी शुभ भावना से ऊपर दे देना चाहिए। ईर्ष्या के वश नहीं। लेकिन बाप की सेवा सो हमारी सेवा है – इस

शुभ भावना से, श्रेष्ठ जिम्मेवारी से ऊपर बात दे देनी चाहिए। देने के बाद खुद निश्चिन्त हो जाओ। फिर यह नहीं सोचो कि यह बात दी फिर क्या हुआ? कुछ हुआ नहीं। हुआ वा नहीं यह जिम्मेवारी बड़ों की हो जाती है। आपने शुभ भावना से दी, आपका काम है अपने को खाली करना। अगर देखते हो बड़ों के ख्याल में बात नहीं आई तो भल दुबारा लिखो। लेकिन सेवा की भावना से। अगर निमित्त बने हुए कहते हैं कि इस बात को छोड़ दो तो अपना संकल्प और समय व्यर्थ नहीं गँवाओ। ईर्ष्या नहीं करो। लेकिन किसका कार्य है, किसने निमित्त बनाया है, उसको याद करो। किस विशेषता के कारण उनको विशेष बनाया गया है वह विशेषता अपने में धारण करो तो रेस हो जायेगी न कि रीस। समझा। अपसेट कभी नहीं होना चाहिए। जिसने कुछ कहा उनसे ही पूछना चाहिए कि आपने किस भाव से कहा? – अगर वह स्पष्ट नहीं करते तो निमित्त बने हुए से पूछो कि इसमें मेरी ग़लती क्या है? अगर ऊपर से वेरीफाय हो गया, आपकी ग़लती नहीं है तो आप निश्चिन्त हो जाओ। एक बात सभी को समझनी चाहिए कि ब्राह्मण आत्माओं द्वारा यहाँ ही हिसाब-किताब चुक्तू होना है। धर्मराजपुरी से बचने के लिए ब्राह्मण कहाँ न कहाँ निमित्त बन जाते हैं। तो घबराओ नहीं कि यह ब्राह्मण परिवार में क्या होता है। ब्राह्मणों का हिसाब-किताब ब्राह्मणों द्वारा ही चुक्तू होना है। तो यह चुक्तू हो रहा है इसी खुशी में रहो। हिसाब-किताब चुक्तू हुआ और तरक्की ही तरक्की हुई। अभी एक वायदा करो – कि छोटी-छोटी बात में कन्फ़्यूज नहीं होंगे, प्राब्लम नहीं बनेंगे लेकिन प्राब्लम को हल करने वाले बनेंगे।

14.4.83.. .. आप बच्चों के मनन का चित्र भक्ति में भी दिखाया है। कैसे मनन करो वह चित्र याद है! विष्णु का चित्र नहीं देखा है? आराम से लेटे हुए हैं और मनन कर रहे हैं, सिमरण कर रहे हैं। सिमरण कर, मनन कर हर्षित हो रहे हैं। तो यह किसका चित्र है? शैया देखो कैसी है! सांप को शैया बना दिया अर्थात् विकार अधीन हो गये। उसके ऊपर सोया है। नीचे वाली चीज़ अधीन होती है, ऊपर मालिक होते हैं। मायाजीत बन गये तो निश्चित। माया से हार खाने की, युद्ध करने की कोई चिन्ता नहीं। तो निश्चिन्त और मनन करके हर्षित हो रहे हैं। ऐसे अपने को देखो, मायाजीत बने हैं। कोई भी विकार वार न करे। रोज़ नई नई पाइंट स्मृति में रख मनन करो तो बड़ा मज़ा आयेगा, मौज में रहेंगे। क्योंकि बाप का दिया हुआ खजाना मनन करने से अपना अनुभव होता है। जैसे भोजन पहले अलग होता है, खाने वाला अलग होता है। लेकिन जब हजम कर लेते तो वही भोजन खून बन शक्ति के रूप में अपना बन जाता है। ऐसे ज्ञान भी मनन करने से अपना बन जाता, अपना खज़ाना है यह महसूसता आयेगी।
19.4.83.. .. सदा अपने को विश्व के अन्दर कोटो में से कोई हम हैं – ऐसे अनुभव करते हो? जब भी यह बात सुनते हो – कोटों से कोई, कोई में भी कोई तो वह स्वयं को समझते हो? जब हूबहू पार्ट रिपीट होता है तो उस रिपीट हुए पार्ट में हर कल्प आप लोग ही विशेष होंगे ना! ऐसे अटल विश्वास रहे। सदा निश्चयबुद्धि सभी बातों में निश्चिन्त रहते हैं। निश्चय की निशानी है निश्चिन्त। चिन्तायें सारी मिट गई। बाप ने चिंताओं की चिता से बचा लिया ना! चिंताओं की चिता से उठाकर दिलतख्त पर बिठा दिया। बाप से लगन लगी और लगन के आधार पर लगन की अग्नि में चिन्तायें सब ऐसे समाप्त हो गई जैसे थी ही नहीं। एक सेकण्ड में समाप्त हो गई ना! ऐसे अपने को शुभचिन्तक आत्मायें अनुभव करते हो!

12. न्यारा और प्यारा

5.4.70... अगर सर्व का अतिप्यारा बनना है, तो सर्व बातों से जितना न्यारा बनेंगे उतना सर्व का प्यारा । जितना न्यारापन उतना ही प्यारा पन। और ऐसे जो न्यारे प्यारे होते हैं उनको बापदादा का सहारा मिलता है। न्यारे बनते जाना अर्थात् प्यारे बनते जाना। अगर मानो कोई आत्मा के प्यारे नहीं बन सकते हैं उसका कारण यहा होता है कि उस आत्मा के संस्कार और स्वभाव से न्यारे नहीं बनते। जितना जिसका न्यारापन का अनुभव होगा उतना स्वत: प्यारा बनता जायेगा। प्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं, न्यारेबनने का पुरुषार्थ करना है। न्यारे बनने की प्रालब्ध है प्यारा बनना। यह अभी की प्रालब्ध है। जैसे बाप सभी को प्यारा है वैसे बच्चों को सारे जगत की आत्माओं का प्यारा बनना है। उसका पुरुषार्थ सुनाया कि उसकी चलन में न्यारापन। तो यह पुष्प है जग से न्यारे और जग से प्यारे बनने का।

25-3-71.. ईश्वरीय जन्म का नशा और निशाना याद रहता है? साथ-साथ पारलौकिक अर्थात् भविष्य का नशा और निशाना याद रहता है? अगर दोनों ही हर समय रहें तो क्या बन जायेंगे? अलौकिक नशे और निशाने से बनेंगे न्यारे और पारलौकिक नशे और निशाने से बनेंगे विश्व के प्यारे। तो दोनों ही नशे और निशाने से न्यारे और प्यारे बन जायेंगे। समझा? अभी सभी से न्यारा बनना है। अपनी देह से ही जब न्यारे बनना है, तो सभी बातों में भी न्यारे हो जायेंगे। अब पुरुषार्थ कर रहे हो न्यारे बनने का। न्यारे बनने से फिर स्वत: ही सभी के प्यारे बन जाते हो। प्यारे बनने का पुरुषार्थ नहीं होता है, पुरुषार्थ न्यारे बनने का होता है। अगर सबका प्यारा बनना है तो पुरुषार्थ क्या करना है? सर्व से न्यारे बनने का। अपनी देह से न्यारे तो बनते ही हो लेकिन आत्मा में जो पुराने संस्कार हैं उन्हों से भी न्यारे बनो। प्यारे बनने के पुरुषार्थ से प्यारे बनेंगे तो रिजल्ट क्या होगी? और ही प्यारे बनने की बजाय बापदादा के दिल रूपी तख्त से दूर हो जायेंगे। इसलिए यह पुरुषार्थ नहीं करना है। कोई भी न्यारी चीज़ प्यारी ज़रूर होती है। इस संगठन में अगर कोई न्यारी चीज़ दिखाई दे तो सभी का लगाव और सभी का प्यार उस तरफ चला जायेगा। तो आप भी न्यारे बनो। सहज पुरुषार्थ है ना। न्यारे नहीं बन पाते हैं, इसका कारण क्या है? आजकल का लगाव सारी दुनिया में किस कारण से होता है? (अट्रेक्शन पर) अट्रेक्शन भी स्वार्थ से है। इस समय का लगाव स्नेह से नहीं लेकिन स्वार्थ से है। तो स्वार्थ के कारण लगाव और लगाव के कारण न्यारे नहीं बन सकते। तो उसके लिये क्या करना पड़े? स्वार्थ का अर्थ क्या है? स्वार्थ अर्थात् स्व के रथ को स्वाहा करो। यह जो रथ अर्थात् देह-अभिमान, देह की स्मृति, देह का लगाव लगा हुआ है। इस स्वार्थ को कैसे खत्म करेंगे? उसका सहज पुरुषार्थ, 'स्वार्थ' शब्द के अर्थ को समझो। स्वार्थ ग़या तो न्यारे बन ही जायेंगे। सिर्फ एक अर्थ को जानना है, जानकर अर्थ-स्वरूप बनना है। तो एक ही शब्द का अर्थ जानने से सदा एक के और एकरस बन जायेंगे।

29.4.71.. .. पेपर हाल में जाने के पहले अपने को तैयार करने के लिए अभी समय है। जैसे सुनाया था कि ब्रह्माकुमार के साथ में तपस्वी कुमार भी दिखाई दे। वह अपने नयनों में, चेहरे में रूहानियत धारण की है, जो जाते ही अलौकिक न्यारे और सब के प्यारे नज़र आओ? न सिर्फ भट्ठी वालों को लेकिन जो भी मधुबन में आते हैं, उन सभी को यह धारणायें विशेष रूप से करनी हैं।

4.7.71.. .. जब यह याद का कोर्स सहज हो जायेगा तब कोई को कोर्स देने में याद का फोर्स भी भर सकेंगे। सिर्फ कोर्स देने से प्रजा बनती है लेकिन फोर्स के साथ कोर्स में समीप सम्बन्ध में आते हैं। बिल्कुल ऐसे अनुभव करेंगे जैसे न्यारे और प्यारे। तो सभी सहज योगी हैं।

18.7.71.. .. जैसे अन्त में आत्माएं जो संस्कार ले जाती हैं वही मर्ज होते हैं, फिर वही संस्कार इमर्ज होंगे। इस रीति से यह भी दिन को जब समाप्त करते हो तो संस्कार न्यारे और प्यारेपन के हो गए ना। इसी संस्कार से सो जाने से फिर दूसरे दिन भी इन संस्कारों की मदद मिलती है। इसलिए रात के समय जब दिन को समाप्त करते हो तो याद-अग्नि से वा स्मृति की शक्ति से पुराने खाते को समाप्त अथवा खत्म कर देना चाहिए। हिसाब चुक्तू कर देना चाहिए।

31.11.71.. .. जैसे अन्त में आत्माएं जो संस्कार ले जाती हैं वही मर्ज होते हैं, फिर वही संस्कार इमर्ज होंगे। इस रीति से यह भी दिन को जब समाप्त करते हो तो संस्कार न्यारे और प्यारेपन के हो गए ना। इसी संस्कार से सो जाने से फिर दूसरे दिन भी इन संस्कारों की मदद मिलती है। इसलिए रात के समय जब दिन को समाप्त करते हो तो याद-अग्नि से वा स्मृति की शक्ति से पुराने खाते को समाप्त अथवा खत्म कर देना चाहिए। हिसाब चुक्तू कर देना चाहिए।

15.2.72.. .. कदम-कदम पर पद्म के समान न्यारे और प्यारे बन चलने से ही हर कदम में पद्मों की कमाई होती है। ऐसी श्रेष्ठ आत्मायें बनी हो? दोनों ही प्रकार की स्थिति बनाई है? एक कदम में पद्म तो कितने खजाने के मालिक हो गो! ऐसे अपने को अविनाशी धनवान वा सम्पतिवान और अति न्यारे और प्यारे अनुभव करते हो? यह चेक करना है कि एक भी कदम पद्म समान स्थिति में रहते हुए पद्मों की कमाई के बगैर न उठे।

12.11.72...जैसे कला दिखाने वाले कलाबाज वा सर्कस में काम करने वाले हर कर्म करते हुए, हर कर्म में अपनी कलाबाजी दिखाते हैं। उन्हों का हर कर्म कला बन जाता है। तो क्या आप श्रेष्ठ आत्माएं, कर्मयोगी, निरंतर योगी, सहयोगी, राजयोगी हर कर्म को न्यारे और प्यारे रहने की कला में नहीं कर सकते? जैसे उन्हों के शरीर की कला देखने के लिये कितने लोग इच्छुक होते हैं! आपकी बुद्धि की कला, अलौकिक कर्म की कला देखने के लिए सारे विश्व की आत्माएं इच्छुक बन कर आवेंगी। तो क्या अब यह कला नहीं दिखावेंगे? जैसे वह लोग शरीर के कोई भी अंग को जैसे चाहें, जहां चाहें, जितना समय चाहें कर सकते हैं, यही तो कला है। आप सभी भी बुद्धि को जब चाहो, जितना समय चाहो, जहां स्थित करना चाहो वहां स्थित नहीं कर सकते हो? वह है शरीर की बाजी, यह है बुद्धि की। जिसको यह कला आ जाती है वही 16 कला सम्पन्न बनते हैं। इस कला से ही अन्य सर्व कलाएं स्वत: ही आ जाती हैं। ऐसे एक देही-अभिमानी स्थिति सर्व विकारों को सहज ही शान्त कर देती है। ऐसे यही बुद्धि की कला सर्व कलाओं को अपने में भरपूर कर सकती है वा सर्व कला सम्पन्न बना सकती है। तो इस कला में कहां तक अभ्यासी वा अनुभवी बने हो? अभी-अभी सभी को डायरेक्शन मिले कि एक सेकेण्ड में अशरीरी बन जाओ; तो बन सकते हो? जब बहुत कर्म में वस्त हों ऐसे समय भी डायरेक्शन मिले। जैसे जब युद्ध प्रारम्भ होता है तो अचानक आर्डर निकलते हैं -- अभी-अभी सभी घर छोड़ बाहर चले जाओ। फिर क्या करना पड़ता है? ज़रूर करना पड़े। तो बापदादा भी अचानक डायरेक्शन दें कि इस शरीर रूपी घर को छोड़, इस देह-अभिमानी की स्थिति को छोड़ देही-अभिमानी बन जाओ, इस दुनिया से परे अपने स्वीटहोम में चले जाओ; तो कर सकेंगे? युद्धस्थल में रुक तो नहीं जावेंगे? युद्ध करते-करते ही समय तो नहीं बिता देंगे कि – ''जावें न जावें? जाना ठीक होगा वा नहीं? यह ले जावें वा छोड़ जावें?'' इस सोच में समय गंवा देते हैं। ऐसे ही अशरीरी बनने में अगर युद्ध करने में ही समय लग गया तो अंतिम पेपर में मार्क्स वा डिवीजन कौन-सा आवेगा? अगर युद्ध करते-करते रह गो तो क्या फर्स्ट डिवीजन में आवेंगे? ऐसे उपराम, एवररेडी बने हो?

25.11.93.. .. नष्टोमोहा, सेन्टर भी याद नहीं आये। (टीचर्स को देखते हुए) ऐसे नहीं कोई जिज्ञासू याद आ जाये, कोई सेन्टर की वस्तु याद आ जाये, कुछ किनारे किया हुआ याद आ जाये ...। सबसे न्यारे और बाप के प्यारे। पहले से ही किनारे छुटे हुए हों। कोई किनारे को सहारा नहीं बनाना है। सिवाए मंज़िल के और कोई लगाव नहीं हो। अच्छा!

23.12.93.. .. सदा अपने को कमल पुष्प समान न्यारे और बाप के प्यारे अनुभव करते हो? क्योंकि जितना न्यारापन होगा उतना ही बाप का प्यारा होगा। चाहे कैसी भी परिस्थितियां हो, समस्यायें हों लेकिन समस्याओं के अधीन नहीं, अधिकारी बन समस्याओं को ऐसे पार करें, जैसे खेल-खेल में पार कर रहे हैं। खेल में सदा खुशी रहती है। चाहे कैसा भी खेल हो, लेकिन खेल है तो कैसा भी पार्ट बजाते हुए अन्दर खुशी में रहते हो? चाहे बाहर से रोने का भी पार्ट हो लेकिन अन्दर हो कि यह सब खेल है। तो ऐसे ही जो भी बातें सामने आती हैं–ये बेहद का खेल है, जिसको कहते हो ड्रामा और ड्रामा के आप सभी हीरो एक्टर हो, साधारण एक्टर तो नहीं हो ना। तो हीरो एक्टर अर्थात् एक्यूरेट पार्ट बजाने वाले। तब तो उसको हीरो कहा जाता है। तो सदा ये बेहद का खेल है–ऐसे अनुभव करते हो? कि कभी-कभी खेल भूल जाता है और समस्या, समस्या लगती है। कैसी भी कड़ी परिस्थिति हो लेकिन खेल समझने से कड़ी समस्या भी हल्की बन जाती है। तो जो न्यारा और प्यारा होगा वो सदा हल्का अनुभव करने के कारण डबल लाइट होगा। कोई बोझ नहीं।

सदा कमल पुष्प का दृष्टान्त स्मृति में रहे कि मैं कमल पुष्प समान न्यारी और प्यारी हूँ। जब आपकी रचना 'कमल' न्यारा रह सकता है तो आप मास्टर रचता उससे भी जादा रह सकते हो। तो सभी कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे हो ना और चाहिये ही क्या, जब परमात्मा के प्यारे हो गये तो और क्या चाहिये! दुनिया में जो भी मेहनत करते हैं, जो भी कुछ प्रयत्न करते हैं, किसलिये? प्यारा बनने के लिये। प्यार मिले और प्यार दें। और आपको परमात्म प्यार का अधिकार मिला है। तो जहाँ प्यार है वहाँ सब-कुछ है, और जहाँ सब-कुछ है और प्यार नहीं है वहाँ कुछ नहीं है। तो आप कितने लक्की हो परमात्म प्यार के पात्र बन गये! और कितना सहज! कोई मुश्किल हुआ क्या?

31.12.93.. .. भी अपने को प्रवृत्ति में रहते न्यारे और प्यारे अनुभव करते हो? कि प्रवृत्ति में रहने से प्रवृत्ति के प्यारे हो जाते हो, न्यारे नहीं हो सकते हो? जो न्यारा रहता है वही हर कर्म में प्रभु प्यार अर्थात् बाप के प्यार का अनुभव करता है। अगर न्यारे नहीं रहते तो परमात्म प्यार का अनुभव भी नहीं करते और परमात्म प्यार ही ब्राह्मण जीवन का विशेष आधार है। वैसे भी कहा जाता है कि प्यार है तो जीवन है, प्यार नहीं तो जीवन नहीं। तो ब्राह्मण जीवन का आधार है ही **राजऋषि के साथ-साथ बेहद के वैरागी बनो।**परमात्म प्यार और वह तब मिलेगा जब न्यारे रहेंगे। लगाव है तो परमात्म प्यार नहीं। न्यारा है तो प्यार मिलेगा। इसीलिये गायन है जितना न्यारा उतना प्यारा। वैसे स्थूल रूप में लौकिक जीवन में अगर कोई न्यारा हो जाये तो कहेंगे कि ये प्यार का पात्र नहीं है। लेकिन यहाँ जितना न्यारा उतना प्यारा। ज़रा भी लगाव नहीं, लेकिन सेवाधारी।

10.1.94.. .. जैसे सेवा स्थान की विधि होती है उसी विधि प्रमाण चलते हो कि गृहस्थी प्रमाण चलते हो? सेवास्थान समझने की विधि है न्यारे और बाप के प्यारे। ज़रा भी मेरेपन का प्रभाव नहीं पड़े। आग है लेकिन सेक नहीं आये। क्योंकि साधन हैं ना। जैसे आग बुझाने वाले आग में जाते हैं लेकिन खुद सेक में नहीं आते, सेफ़ रहते हैं क्योंकि साधन हैं, अगर आग बुझाने वाले ही जल जायें तो लोग हंसेंगे ना। तो चाहे वाुमण्डल में परिस्थितियों की आग हो लेकिन प्रभाव नहीं डाले, सेक नहीं आये। ऐसे नहीं कि परिस्थिति नहीं है तो बहुत अच्छे और

परिस्थिति आ गई तो सेक लग गया। तो ऐसे फ़रिश्ते हो ना। फ़रिश्ता कितना प्यारा लगता है! अगर स्वप्न में भी किसके पास फ़रिश्ता आता है तो कितना खुश होते हैं। फ़रिश्ता जीवन अर्थात् सदा प्यारा जीवन। बाप प्यारे से प्यारा है ना तो बच्चे भी सदा सर्व के प्यारे से प्यारे हैं। सिर्फ बाल बच्चे, पोत्रे धोत्रों के प्यारे नहीं, हद के प्यारे नहीं, बेहद के प्यारे। क्योंकि सर्व आत्मायें आपका परिवार हैं, सिर्फ 10-12 का परिवार नहीं है। कितना बड़ा परिवार है? बेहद। सर्व के प्यारे। चाहे कैसी भी आत्मा हो, लेकिन आप सर्व के प्यारे हो। जो प्यार करे उसके प्यारे हो, ये नहीं। सर्व के प्यारे। लड़ाई करने वाले, कुछ बोलने वाले प्यारे नहीं। ऐसे नहीं, सर्व के प्यारे। आप लोगों ने द्वापर से बाप को कितनी गाली दी, फिर बाप ने प्यार किया या घृणा की? प्यार किया ना। तो फ़ालो फ़ादर। कैसी भी आत्मायें हो लेकिन अपनी दृष्टि, अपनी भावना प्यार की हो–इसको कहा जाता है सर्व के प्यारे। 1-2 के प्यारे हैं, एक के प्यारे नहीं। नहीं, सर्व के प्यारे। ऐसे है या किसी आत्मा के प्रति थोड़ा-थोड़ा आ जाता है? कोई थोड़ा इन्सल्ट करते हैं, कोई घृणा करते हैं तो प्यार आता है या घृणा आती है? नहीं, परवश आत्मायें हैं। सर्व के प्यारे–इसको कहा जाता है फ़रिश्ता। कोई-कोई के प्यारे हैं तो फ़रिश्ते नहीं। अभी सोचकर बताओ कि कौन हो? मातायें क्या कहेंगी? सासू बहुत खराब है, नन्द बहुत खराब है। नहीं, सब प्यारे हैं। किसी से और कोई भावना नहीं। चाहे वो क्या भी कहे, क्या भी करे लेकिन आपकी भावना शुद्ध हो। इसका भी कल्याण हो। सर्व प्रति कल्याण की भावना हो – इसको कहते हैं फ़रिश्ता।

23.12.94.. .. फ़रिश्ता अर्थात् जिसका पुरानी देह और पुरानी दुनिया से रिश्ता नहीं। ये सभी को याद है ना? कि अभी भी वो रहा हुआ है? पुरानी देह से लगाव है क्या? देह के सम्बन्ध से हल्के हो गये हो कि नहीं? काका, चाचा, मामा, उससे न्यारे हो गये हो ना? कि अभी भी हैं? न्यारे और प्यारे हैं? प्यारे हैं लेकिन न्यारे होकरके प्यारे बनते हैं, ये ग़लती हो जाती है। ये मिस हो जाता है। या तो न्यारे हो जाना सहज लगता है या तो प्यारा होना सहज लगता। लेकिन ये देह के सम्बन्ध काका, चाचा, मामा, ये फिर भी सहज हैं। सहज हैं या थोड़ाथोड़ा स्वप्न में, संकल्प में आ जाता है? जब ब्राह्मण परिवार में कोई परिस्थिति आती है तो चाचा, काका, मामा याद आते हैं? बापदादा देखते हैं कि परिस्थिति के समय कई आत्माओं को ब्राह्मण परिवार के बजाय लौकिक सम्बन्ध जल्दी स्मृति में आता है। परिस्थिति किनारे के बजाय सहारा अनुभव कराती है। जब मरजीवा बन गये तो अगले जन्म के सम्बन्धी काका, चाचा, माँ, बाप, याद हैं क्या? स्वप्न में भी आते हैं क्या? तो सम्बन्ध, जन्म बदल गया ना। तो फ़रिश्ता अर्थात् पुराने से रिश्ता नहीं।

31.3.95.. .. प्रवृत्ति का अर्थ क्या है? पर वृत्ति में रहने वाले। प्रवृत्ति का अर्थ ये नहीं है–मेरा पोत्रा, मेरा धौत्रा। नहीं, पर वृत्ति में रहने वाले। लेकिन होता क्या है? बापदादा कहते हैं न्यारे और प्यारे रहो, तो प्यारे बनेंगे लेकिन न्यारे बनकर प्यारे नहीं बनते। ये गलती करते हैं। प्यारे तो बन जाते हैं लेकिन नारापन भूल जाता है। तो प्यारे भी और नारे भी ये प्रवृत्ति वालों को आता है ना! प्यारे और न्यारे रहने में होशियार हैं ना? अभी ये नहीं लिखना कि माया आ गई क्या करें? माया को हमेशा के लिए भगा दिया–ऐसा पत्र लिखना।दो शब्दों में लिखो, डिटेल में नहीं लिखो।

अव्यक्त वाणी संकलित दिव्य गुणों की माला

भाग - 1

आकर्षणमूत
अचल / अखंड / अड़ोल
आज्ञाकारी
ऑलराउण्डर / एवररेडी
अलर्ट
अनासक्त
अन्तर्मुखता
एकांत एकांतप्रिय
एकाग्रता
एकरस / एकमत / एकता
एकनामी, इकॉनामी

भाग - 2

अनुभवीमूर्त
अटूट / अटल / अथक
अधिकारी
ब्लिसफूल
चियरफुल
केयर फुल
नालेजफुल
पॉवरफुल
सक्सेसफुल / सफलता
सेंन्सीबल / इसेन्सफुल
सर्विसएबल
दिव्यता
दृढ़ता

भाग - 3

इजी और अलर्ट
फेथफुल
फ्राकदिल
गम्भीरता ,
रमणीकता
गुह्यता
हर्षितमुख
हिम्मत / साहस
होलिएस्ट / ऑनेस्ट
जिम्मेवार
खुशी
क्षमा

भाग - 4

लॉ-फुल / ला मेकर
लकी और लवली
मधुरता
महीनता / महानता
नम्रता,
निर्माणता
नष्टोमोहा / मोहजीत
निद्राजीत
निमित्त
निराकारी/निर्विकारी/निरंहकारी
निश्चय
निश्चिंत
न्यारा और प्यारा

भाग - 5

परोपकारी
पवित्रता, रियल्टी, रॉयल्टी
रहमदिल, दयाभाव
रिगार्ड रिस्पेक्ट/सत्कारी
रुहानियत
सदा ब्रह्मचारी
सहनशीलता / सरल चित
संतुष्टता / स्पष्टता
संयम
संतुलन (बैलेन्स)
शीतलता
शुभचिंतक

भाग - 6

स्नेह सहयोग
स्वतंत्रता
समीपता
साक्षीपन / साथीपन / ट्रस्टी उपराम
सर्वस्व त्यागी
सिम्पलिसिटी
सच्चाई, सत्यता, निर्भयता
उमंग उत्साह
वफादार / फरमानबरदार
वैराग्य

अन्य किताबें

- मेरे ब्रह्माबाबा
- विकर्माजीत भव भाग 1-8
- दिव्य शक्तियाँ भाग 1-4
- सहज योग भाग 1-4
- उदाहरण मूर्त भव।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क : बी.के.निलिमा (मो) 9869131644,8422960681

स्वतंत्रता